यह दोहा यह नायिका के तनमें यौवन अबहीं आयो नाहीं अरु नायक की आसक्ति पहलेही अधिक देखी सो सखी सखीसों भ्रमको प्रसंग करि कहत है ॥ सवैया ॥ नाहिं पराग नहीं मकरन्द अजौं प्रकटी न सुवास बिकासर । जानेको आगे वा हूहै कहा गति ऐसो पर्‍यो अबहीं इक आसर ॥ फूली घनी फुलवारी रसाल पै काहूको मानत नेक न तासर । रीझरली मति कंजकली पै अली मड़रानो रहै निशिबासर ॥ ३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० लाल अलोलकलरकई, लखिलखिसखीसिहाति ।
आजकाल्हि मैं देखियतु, उर उकसौंहीं भांति ४

यह नायिका को यौवन अंकुरित है सो सखी नायक सों निवेदन करतु है नायिका अंकुरितयौबना ॥ सवैया ॥ कैसी सुहाई लला लरकाईं मे यौवन ज्योति लै सोहीं भई है । बाल बिनोदन ते उचटी रुचि कामकला सुरसोहीं भई है ॥ वाही बिलोकि सिहात सखी बतियान की खान हसोंहीं भई है । आजुही काल्हिमें बालबधू की कछू छतियां उकसोंहीं भई है ॥ ४ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० हेरि हिंडोरे गगनतें, परी परीसी टूटि ।
धरी धाय पिय बीचही, करी खरी रस लूटि ५

यह नायिका मुग्धा है हिंडोरे तें नायकको देखिके लाजके आधिक्य तें भांजिबे को भई सों टूटिपरी सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ बाल छबीली सखीनके संग बनी ठनी झूलति रंग हिंडोरे । नंदलले लखि ऊंच ते टूटपरी ज्यों परी अति लाज निहोरे ॥ चाले को चूंदरी चारु कुसुंभी सुगन्ध सनी दमकै तनगोरे । प्राणपियारे ने बीचही धाय करी रस लूटि भई भरि कोरे ॥ ५ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भावकउभरोहीं भयो, कछुक पर्‍यो भरुआय ।

सीपहरा के मिस हियो, निशिदिनहेरब जाय ६

यह नायिका मुग्धा ज्ञातयौवना सखी नायक सो कहत है सखी को बचन सखी सों है ॥ कवित्त ॥ प्यारे नंदलाल वह बाल अलबेली नव यौबन की ज्योति दिन द्वैकते भरति है। दम्पति चरित्र चित्र दुर चितवन लागी काम की कहानी कछू कान न धरति है ॥ रञ्चक उरोजन की कोर उकसोंही भई नैसकल ज्योंहीसी चितौनिहू ढरति है। सबकी बचाय दीठि निज छाती बारबार गुञ्जहार मिसकरि हेरबो करति है ॥ ६ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तियतिथितरुणाकिशोरबय, पुण्यकालसमदोनु ।
काहू पुण्यन पाइयतु, बैससन्धि संक्रोनु ७

यह नायिका लरकाई अरु तरुणाई बैसकी सन्धि है सो सखी नायक सो कहति है ॥ सवैया ॥ उत सूरज राशि तजै जबलौ नहीं दूसरी राशि दबावतु है । तबलौं वह अन्तर को समयो अति उत्तम बेद बतावतु है ॥ इतहू जब बैस किशोर दिनेशहुहू बय अन्तर आवतु है । सुकृती कोउ पूरब पुण्यन ते बिबिसंक्रमको छनु पावतु है ॥ ७ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छुटी न शिशुताकी झलक, झलक्यो यौबनअङ्ग ।
दीपति देह दुहून मिलि, दिपति ताफता रङ्ग ८

यह दोऊ बैसको संगम है सखी सखी सों कहति अथवा नायक सो सखी निवेदन करतु है ॥ सवैया ॥ बानि वहै बतियान के है पै कछूक हरैं मुसकान ढरी है । सूधी चितौन बिलोकतिहै परि लोकता रञ्चक जानिपरी है ॥ छूटी नहीं शिशुता की प्रभा नवयौबन की द्युति आनि धरी है । सङ्ग दुहून के ताफता रंग दिपै तनकी द्युति रंग भरी है॥८॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अपने अङ्गके जानिकै, यौबननृपति प्रवीन ।

*** स्तनमननैननितम्बको, बड़ो इजाफा कीन ६**

यह नायिका नवयौबनभूषिता मुग्धा सखी को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ यौबन भूप महापरबीन विचक्षणताइ हरी तर्ठई है । राज लह्यो नवला तनको कटि शत्रुकी सम्पाति लूटिलई है ॥ दूरि किये शिशुता के सहायक चातुरता चित चारु भई है । नैन उरोज नितम्बन को अपने गनिकै बढ़वारि दई है ॥ ६ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० अरतेटरत न बरपरे, दई मरकमनु मैन ।
होड़ाहोड़ी बढ़िचले, चित चतुराई नैन १०

यह नायिका को यौबन आयो है ॥ सुचतुराई ॥ नेत्र बढ़न लागे ॥ सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नैनन की बढवारि लखै चित चातुरी की उमँगी अधिकाई । चातुरी की अधिकाई लखी तब नैनन और गही सरसाई ॥ कृष्ण कहैं बर बांध्यो दुहून इते पर धौस मनोजकी पाई । होड़ी येहोड़ा चली बढ़ मानो बिलोचन औ चितकी चतुराई ॥१०॥

पयोधर अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० निरखि नवोढ़ा नारि तन, छुटति लरकई लेश ।
भौप्यारौ प्रीतम मनो, चहत चलन परदेश ११

यह नायिका नवोढ़ा है याको यौबन देखि सौति निराश भई है सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ कुन्दन सी दिपै देह की दीपति मैंनु मनो निज मोहनी घालतु । छूटति सी लरिकाई कछू तरुणापन रङ्ग तरङ्ग उछालतु ॥ बालबधू तन यौबन आवत सौतिन के उर शूलसी सालतु । प्राणन ते अति प्यारो लग्यो पति मानु कहो परदेश को चालतु ॥ ११ ॥

---

* पाठान्तर—अस्तन नैन नितम्ब को बड़ो इजाफा कीन ।

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गाढ़े ठाढ़े कुचन ठिलि, को पिय हिय ठहराय।
उकसोहैंईतो हिये, दई सबै उकसाय १२

यह नायिका नवोढ़ा है नायक की वाही सों बहुत आसक्ति है सो सखी नायक सो कहति है ॥ सवैया ॥ पीन पयोधर भूधर सी तिय तो उर है पर ह्वै है जबै। को बसिहै पियके हिय भामिनि सुन्दररूप अनूप तबै ॥ नेक बिलोचन लोल भये नवयौबन ज्योति जगी न अबै। ते उकसे उर जातनुही पिय के हियते उकसाय सबै ॥ १२ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बाढ़त तोउर उरजभरु, भरतरुणाई बिकास।
बोझनसों तिनके हिये, आवत रुधी उसास १३

यह नायिका नवयौबनभूषिता है याको देखिकै सौतिन के दुःख होत है सखी नायिका सो कहति है ॥ सवैया ॥ तोसी तुही रमणी कमनीय भये अति तो बश प्यारे बिहारी। बैस बिलास जग्यो जबते तबते यह अद्भुत बात निहारी ॥ बाढ़तु है नवनागरितो उरमे उर जातनु को भरु भारी। ताभरि सौतिनसास उसासति पीरहि सौ हिय होत दुधारी ॥ १३ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मानहु मुखदिखरावनी, दुलहिनिकरि अनुराग।
सासुसदनमनललनहूं, सौतिनदयोसुहाग १४

यह नायिका नवोढ़ा याको यौबन देखि नायक बश भयो अरु सौतिनहूं को सुहाग इन तीनो सो सखी सखी सो कहति है ॥ कबित्त ॥ गौन आई दुलहिनि लोने बनवारी मानु जगर मगर होत भवन को भागु है। बिधिनै सुधारी गुन चातुरी की सींव जाके रूप आगे रतिको रतीकहू न लागु है ॥ मेरे जानु मुखदिखरावनी को नेगु जानि आपही ते सौंप दीनो

कीनो अनुरागु है । सासु सुभवन दीनो प्यारेलाल मन दीनो अरु प्रीति मन दीनो सौतिन सुहागु है ॥ १४ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देह दुलहियाकी चढ़ै, ज्यों ज्यों यौबनज्योति । त्योंत्योंलखिसौतिनसबै,बदनमलिनद्युतिहोति १५

यह नायिका नवयौबना प्रोषिता नवोढ़ा है याको यौबन बढ़त देखि सौतिन को मोह फीको होत है सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ मन्थर गौन गहै पद पङ्कज मत्तगयन्दन दूखन लागे । मैन के टोने से बैन भये तिनके सम ऊख मयूखन लागे ॥ ज्यों बृषभानुलली तन यौबन ज्योति के लक्षण से अब लागे । त्यों त्यों बिलोकि भई मलिनद्युति सौतिन के मुख सूखन लागे ॥ १५ ॥

बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० ज्योंज्योंयौबनजेठदिन,कुचमतिअतिअधिकाति। त्योंत्योंछिनछिनकटिछपा,छीनपरतनितजाति १६

यह नायिका आरूढ़यौबना है याको यौबन बढ़त है तैसे कुच बढ़त हैं तैसे कटि घटति है सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नैसक बोध भौकञ्ज हिये जड़ता अलिनी मतिराम न भागी । चञ्चलता तम शेष रह्यो अरुणोदय लाज कला चित जागी ॥ तारक ज्योति घटी नवलाकटि चातुरता चकई अनुरागी । यौबन भानुकी आमदनी शिशुता रजनी तनु बीतन लागी ॥ १६ ॥

त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० नवनागरितनमुलकलहि, यौबनआमिलजोर । घटिबढ़ितैंबढ़िघटिरकम, करी औरकी और १७

यह नायिका के तन में यौबन आयो अंग बढ़ि हैं सो घटिभये अंग

घटि हैं सो बढ़ि भये यह आमिल को परसंग करि सखी सखी सों कहति है अरु नायक को बचन सुन सखी को संभव है ॥ सवैया ॥ शोर परयो जु शरीरबिषे निकसी सिरकार गई लरकाई । ठौरहि ठौर भयो कछु और फिरी अँग अंग अनंग दुहाई ॥ आयगयो अफताली दोऊ कुच छाय धरे शिर श्याम सुहाई । आल में लाल रसाल की सों सिकदार भई तनमे तरुणाई ॥ १७ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० भेटत बनत न भावतो, चिततरसत अतिप्यार।
धरत लगाय लगाय उर, भूषन बसन हथ्यार १८

यह नायिका मध्या लाज काम दोऊ समान है सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ प्यारी को नेह लग्यो हरि प्यारे सों ध्यान में प्राण रहे दिन राती । भेटबे को न उपाय बनै गुरुलोगन के उपहास सकाती ॥ जान के प्रीतमके तनके मिलके मिलबेको हिये उकलाती । भूषणबास अबास के कोन में बारहिबार लगावत छाती ॥ १८ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छुटी न लाज न लालचौ, प्यौंलखि नैहर गेह।
सटपटात लोचन खरे, भरे सकोच सनेह १९

यह नायिका मध्या लाज काम समानहै सखी सखी सों कहतिहै ॥सवैया॥ माइके में मनभावन को लखि प्यारी निशङ्क ह्वै देखि सकैना । देखिबे को तरसे हियरा दिखसाध लगी चित चैन लहैना ॥ छूटै न लाज अछूटै न लालच लोक की लीक उलंघ परैना । तातें सकोच सनेह भरे अकुलात खरे जलजात से नैना ॥ १९ ॥

बिल अक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२ ॥

दो० समरस मसरसकोचबश, बिबशनठिकठहराय।
फिरिफिरिउझकतफिरदुरत,दुरिदुरिउझकतजाय२०

यह नायिका मध्या है पूर्ववत् ॥ सवैया ॥ आनन मांझ वसी पिय मूरति नैनन मांझ सकोचबेकौ । झांकि झरोखा दुरै फिरि झांकै दुरै बहुरौ ठहरात न एकौ ॥ त्रास इतै गुरुलोगन को उत लालच मोहन के लखिबेकौ । लाज औ कामके वीचहु वीच परी यों चलाचल हाल हियेकौ ॥ २० ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नईलगनिकुलकीसकुचि,बिकलभई अकुलाइ ।
दुहूं ओर ऐंची फिरै, फिरकी लौं दिन जाइ २१

यह नायिका मध्या है परकीया हू कहिये । नई लगनि कुलकी सकुच या पद तें सखी सखी सों कहति है ॥ अरु नायकहूसो सखीको बचन है ॥ कवित्त ॥ नई लगी लगन रसिक मनमोहन सों उर अभिलाषनकी उमँग भरति है । कुल की सम्हार की सुरति आये शारी होत अतिही बिकल जिय कल न धरति है ॥ देखिबेकौ ढराति डरति मनही मन में भरत उसास पै प्रकाश न कराति है । चाह कुलकाने वीच फिरकीलो बालबधू इतउत ऐंची ऐंची फिरिबो करति है ॥ २१ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० छला छबीले लालको, नवलनेह लहि नारि ।
चाहतचूमतलाय उर, पहिरति धरति उतारि २२

यह नायिका को सनेह नायक मे अधिक है सु वाके छलाको पति मिलै को सो सुख मानत है लाजते मिले को भी प्रयास नाहीं करत ॥ नायिका मध्या परकीयाहू होय सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नागरसो नव नेह लग्यो नवनागरि आलिनहूं सों दुरावै । देखिबेको उकलात हिये अति लाजनसों बनपै नहीं आवै ॥ नन्दलला की छला लहिकै तकि ताहि रही न निमेष लगावै । चूमति छावति आंखिनसों कबहूं पहिरै कबहूं उरलावै ॥ २२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चाले की बातें चलीं, सुनत सखिन के टोल ।
गोयेहू लोयन हसति, बिहसति जात कपोल २३

यह नायिका मध्या सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ सोहै सखीन समाज मे राधिका जाहि लखे रतिरूप लजायो । एकही बैस सबै गुण आगरि चौपरि खेल भलो बनि आयो ॥ चाले की बातें चली तबहीं सुनिकै मुँह आंचर भीने दुरायो । नैननि लाज कपोलन हांसी दुहूं मिलिकै अतिरंग दिखायो ॥ २३ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बर उर भर्यो चितचार सों, गुरु गुरुजन की लाज ।
चढ्यो हिंडोरे से हिये, किये बनै गृहकाज २४

नायिका मध्या सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ हरिमुख जोवत जरूरन सौ भयभीति नीलकण्ठ मैन को मरूरनि मरति है । बसन की बासन की सुधि परिहरी पुनि हरै हरै दीरघ उसासनि भरति है ॥ मुरछित होति पर क्षिति पै परत नाहीं सरलो सम्हारि फेरि धीरज धरति है । बैठि बहराय रीझि जिय तहराय फिर लाजहि बुलाय गृहकाजहि करति है ॥ २४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सटपटात सी ससिमुखी, मुख घूंघटपट ढांकि ।
पावकझर सी झमकि कै, गई झरोखे झांकि २५

यह नायिका मध्या लाज काम दोऊ समान नायक सखी सों जैसी भांति देखी है तैसी अवस्था निवेदन करत है सखी सखी, सो बचन कहति है ॥ कबित्त ॥ मोहनी सी मुरली की धुनि सुनि श्रवणनु ललकति आई शशिमुखी सटपट सो । नैसुक उझकि आनि अवलोकिबे कों उर दाब लीनो आनन लजाय पटपट सो ॥ कहैं कबि कृष्ण वाल जानिकैं निकाई देखिबे कूं दृग आकुल झरोखा झटपट सो ॥ २५ ॥

प्रौढ़ा बर्णन । चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिहँसिबुलायबिलोकिअति, प्रौढ़प्रिया* रसघूमि । पुलकि पसीजति पूतको, पियचूम्यो मुँहचूमि २६

यह प्रौढ़ा नायिका है सुस्नेह की अधिकाईसे पिय ने चूम्यो वही पूत को मुँह चूमि आनन्द मानत है ॥ सवैया ॥ पूरण प्रेम उमाह तें प्यारी फिरै सब मांझ हिये हुलसाती । पूत को आनन चूम्यो पिया तिय चूमत ताहि महारसमाती ॥ चाहि उतै मुसकाय बुलाय हिये सुख पाय लगावत छाती । गात पसीज रोमांचित होति भई अनुराग के रंगमे राती ॥ २६ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कोटि यतन कीजै तऊ, तनकी तपनि न जाय । जौलौं भीजे चीर लौं, रहै न प्यौलपटाय २७

यह नायिका प्रौढ़ा है कामको वेग अधिक है नायिका को बचन सखी सों सखी कहति है ॥ कबित्त ॥ किये कोटि यतन न तनकी तपन जाय अतन की पीर अतिबर सरसाति है । दूरितें बिलोकै चित चौगुनौ उमङ्गै चाव ढिग आये भेंटबे को मति अकुलाति है ॥ लीजिये भुजानि भर कीजिये न न्यारो कहूं जीवन सफल जौलौं योंही बिन राति है । आले पट कीसी भांति प्राणपति आठौ याम रहै लपटानो छाती तोही लौं सिराति है ॥ २७ ॥

मराल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० छिनकु उघारत छिनछुवत, राखतछिनकुछिपाय । सबदिनुपियखण्डितअधर, दरपनदेखतजाय २८

यह नायिका प्रौढ़ा है नायक सों सनेह अधिक है या नायक रति सुरति के चिह्न को मन लगावत है सखी को वचन सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ राति रति रंग हरिसंग मिलि कीनो अंग अंग मनमथकी

* पाठान्तर–तिया ।

तरंग रंग सरसै । भोर भये बाल सजनी गण मे बैठिके निशाकी बाते सुमिरि सुमिरि जिय तरसै ॥ प्यारे के रदन को अधर पर चिह्न ताहि आरसी लै बार बार देखे रस बरसै । कबहूँ उघारै कबहूँक ढाँकि राखै अनुराग मै उमंग पानि पल्लव सों परसै ॥ २८ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दुखहायनु चरचा नहीं, आनन आनन आन ।
लगी रहति ढूका दिये, कानन कानन कान २६

यह नायिका प्रौढ़ा प्रौढ़ा नायिका को बचन सखी सों परकीया हू होय ॥ कबित्त ॥ लाल मिलि भावन सों मिलिकर आप रसकेलि के मनोरथ बिबिध बिधि मानहीं । कृष्ण प्राणप्यारो मेरी ओर ठरो ताकूँ चहरु मेरेई चवाइन को ठानही ॥ कुंजवन बीथी मों या खिरकी किवार द्वार लागी रहै निशि दिन ढूका दिये कानहीं । देखा माई इन दुखहाइनके उलटि जु आनन आननप्रति आन चरचा नहीं ॥ २९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पहुँचति झट रन सुभट लौं, रोंकि सकै सब नाहिं ।
लाखनहूं की भीर मैं, आंख वहीं चलि जाहिं ३०

यह नायिका प्रौढ़ा है परकीया नायिकाकी चितवनि देखि सखी सखी सो कहति है ॥ सवैया ॥ मान कियो तिय मानै न कैसेहू आली रही बहु भांति मनायकै । सोइ गई रिसही जिय मे धरि सोय रह्यो ढिग मोहन आयकै ॥ रोसहूं में सरसायो रहै कहतै न बनै जू रही छबि छायकै । इन्दुमुखी सुपने कै सुभाय रही पियकै पिय सो लपटायकै ॥ ३० ॥

करभ अक्षर ३१ गुरु १६ लघु १५ ॥

दो० अपनी गरज न बोलियत, कहा निहोरो तोहि ।
तू प्यारो मो जीय को, मो जिय प्यारो मोहि ३१

यह नायिका प्रौढ़ा है सो नायक सो अपने जीव की व्यवस्था

कहति है कि तेरे बिना देखे मेरो जीव रहत नाही यातें अपनोउ रखिबे को तो सों बोलत हूं नायिका को बचन नायक सों ॥ कबित्त ॥ अपन अपन प्राण सबही को प्यारे होत जात भांति राखिबो सबहि चहियतु है। ऐसी कछू आनि आनि परी मेरे प्राणन कूं तोहिं देखौं जौलौं तौलौं चैन लहियतु है ॥ करत उपाव हौं तौ तिनही के राखिबे को कृष्ण प्राण-प्यारे कित न्यारे रहियतु है। तातें लाल बोलियत आपनी ये गरज न ताको कछु तुम सों निहोरो कहियतु है ॥ ३१ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जात सयान अयान हैं, वै ठग काहि ठगैं न।
को ललचाय न लालके, लखि ललचौहैं नैन ३२

यह नायिका प्रौढ़ा है ॥ सखी शिक्षा देति है ताको उत्तर कहत हैं कि वे नेत्र देखिकै को तू ललचात नाही स्नेह को आधिक्य नायिका को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ को न रहै ठगमूर सी खाय के भूलत को न बि-बेक कलैं। काहि न वे बिसरावै सबै सुधि मोहन वे कहिका अबलैं ॥ होत सयान अयान सबै चतुराय अनेक न एक चलै। आली री मोहन-लाल के लोल बिलोचन देखत को न छलै ॥ ३२ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० इहि कांटै मो पांय गड़ि, लीनी मरत जिवाय।
प्रीति जनावत भीत से, मीत जु काढ़्यो आय ३३

सवैया ॥ जा दिन तै मिलि मैनकी मूरसी डारि गयो वह छैल सुहायो। तादिन ते अकुलात हैं लोचन देखिबे को कछू दावँ न पायो ॥ मो पग मैं मग में लगि कै इह कांटे ने आज अमी बरसायो। प्रेम जनावत पै भयभीत सों मोहन मीत जू काढ़न आयो ॥ ३३ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कीनेऊं कोटिक यतन, अब कहि काढ़ै कौन।

भौ मनमोहन रूप मिलि, पानी में को लौन ३४

यह नायिका परकीया नवोढ़ा ॥ अपने मन की आसक्ति सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ जा दिन से वर बानिक सों निरख्यो बलबीर कलिन्दी के तीर मै । ता दिन तें न सुहात कछू सुधि को लवलेश रह्यो न शरीर मै ॥ नैनन मांझ बसी वह मूरति जाय परयो मन तो छबि भीर मैं । कोटि उपाय किये कढ़े कैसे बिलाय गयो सखी लौन ज्यों नीर मै ॥३४ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ । परकीया गुप्ता ॥

दो० केसर केसरि कुसुम के, रहे अङ्ग लपटाय ।
लगैजानिनखअनखुली, कतबोलतअनखाय ३५

यह नायिका परकीया भूत सुरत गुप्ता ॥ नायिका को बचन सखी सो जो नायक के प्रत्यक्ष सखी नायिका सों कहै तो खण्डिताहू संभवै है ॥ सवैया ॥ तोहिं तो बान परी अनखैबे की ऐसेही क्यों सतराहट ठानै । कीजिय तो निरधार कछू किये भौंह चढ़ाय को बोल बखानै ॥ केसर सो उबव्यो तनु सो कछु केसर द्वैक रहे लपटानै । आवरी तोहिं दिखाऊं नजीक ह्वै बावरी ते वे नखच्छत जानै ॥ ३५ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कारे बदन डरावने, किन आवत इहि गेह ।
कोउ लाल यों सखि लखे, लागे थरहर देह ३६

यह नायिका परकीया हेतु गुप्ता नायक को देखि सात्त्विक भये है ॥ तिनको सखी सो दुरायबे को कहति है ॥ कबित्त ॥ आपु कारे रंग रँगे छिरमि को छरा धरे ओढ़िबे को कारी एक कामरि याही विसाति । शीश पर फेटा एक पीरो सो अमेठि बाँध्यो तापै एक गिरही की पखीया फरहराति ॥ मटक्क चलत डरपावनो सो स्वांगु किये जब जब यहि ओर आवत अहीर जाति । तब तब देखि सखी केऊ बेर देख्यो याहि देखैं उर लागैं देह पुलकि थरहराति ॥ ३६ ॥

परकीया वाग्विदग्धा । शार्दूल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रह्यो मोहु मिलनौ रह्यो, यों कहि गहे मरोर ।
उत दै आलिहि उराहनौ, इत चितई मो ओर ३७

नायिका परकीया बाग्बिदग्धा जु क्रय करि गई है सुनायक कों सखी सों सखी कहति है ॥ सवैया ॥ ता दिनकी वह वालि गली मे मिली हुती काल्हि गई चितचोरि कै । एकहि ठौर करी इकठौरि मनो ब्रिधि रूप की राशि बटोरि कै ॥ छांड़्यो मया करिबो मिलबोउ परोसिनी सो कह्यो भौंह मरोरि कै । यों सजनी सों उराहनो दै परि मोतन हेरि गई मुँह मोरि कै ॥ ३७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कर-मूंदर की आरसी, प्रतिबिम्ब्यो प्यो आय ।
पीठ दियो निधरक लखै, इकटक डीठ लगाय ३८
पूसमास सुनि सखिन पै, साईं चलत सवार ।
लै कर बीन प्रबीन तिय, गायो रागमलार ३९

नायिका क्रिया बिदग्धा मुख्य तौ परकीया को भेद है स्वकीयाहू होय तौ होय ॥ सखी को बचन सखी सो कहति है ॥ सवैया ॥ शीत समै परदेश को पीय पयान सुन्यो वह रोवन लागी । या ऋतु मैं हर क्यों हूं रहै घर देवता पूज मनावन लागी ॥ और उपाय तक्यो न कछू तब साजिकै बीन बजावन लागी । प्यारी प्रबीन भरे स्वर मेघ मलार अलापि कै गावन लागी ॥ ३८ । ३९ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मज्जन करि खञ्जननयनि, बैठी ब्यौरति बार ।
कच अँगुरी बिच दीठ दै, चितवत नन्दकुमार ४०

यह नायिका क्रियाविदग्धा जात बर्णन होत हैं सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ मञ्जुमुखी करि मञ्जन चन्दन चौकी पै बैठी

सनेह सँवारति । पङ्कज पांखुरी सी अंगुरीन सों ब्यौरत बार हिये रसि पारति ॥ कुन्तल औ करपल्लव रन्ध्रनि बीच तै दीठ इतौत न टारति । सुन्दर श्रीनँदनन्दन को मुख खञ्जननैनि निशङ्क निहारति ॥ ४० ॥

बगज अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० न्हाइ पहरि पटु भट कियो, बेंदी मिसि परनाम ।
दृग चलाय घरको चलत, बिदा किये घनश्याम ४१

यह नायिका परकीया बिदग्धा सखी को बचन सखी सों ॥ कबित्त ॥ न्हाय पटु पहरि मृगाछी चारु चातुरी सों भटि मन भावन को मुरि मुसकानी है । कृष्ण कहै बेदी के सुधारिबे को मिस करि कीनो प्राणपति अति हित सुखसानी है ॥ कहा कहौ आली कछु कहत बनै न क्यो हूं जैसी वह सरस सनेही रीति ठानी है । घरको चलतु चारु लोचन चलाचलकै चातुरी सौं चाहि बिदा कीनों दधिदानी है ॥ ४१ ॥

ललिता । मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पूछे क्यों रूखी परति, सगिबगि रही सनेह ।
मनमोहन छबि परगटी, कहै कटयानी देह ४२

यह नायिका लक्षिता है रुखाई करके सखी सो दुरावति है पै रोमांच देखि परगट करति है सखी को वचन नायिका सो कहति है ॥ सवैया ॥ पूछत क्यों बहरावत बात कहांते अनोखी रुखाई तैं ठानी । प्यारे के प्रेम पै पागि रही अब होत कहा मुकरे हम जानी ॥ क्यो बर अन्तर को दुरै प्रीति सनेह की रीति रहै नही छानी । तू मनमोहन की छबि पै जु फटी सु कहै यह देह कट्यानी ॥ ४२ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० औरे ओप कनीनिकनि, गनी घनी शिरताज ।
मनी धनी के नेह की, बनीछनी पट लाज ४३

यह नायिका लक्षिता सखी को बचन नायिका सों नायक को सनेह यासों अधिक है सो नेत्रन की शोभा और भई है या भेद ते प्रेमगर्विता होय ॥ सवैया ॥ केलि किलोलके रंग में सुन्दरि प्रीतम संग रमी रजनी है । नेह सनी दरसाति भटू अरसाति प्रभा सरसाति घनी है ॥ और इसो भय गंतिन ओप अनन्तनिकी शिरमौर गनी है । कान्हके प्रेम की सौहै मनी पट लाज मे चारु छनीसी बनी है ॥ ४३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० प्रेम अडोलैं डुलै नहिं, मुँह बोले अनखाय।
चितउनकी मूरतिबसी, चितउनमाहिंलखाय४४

यह नायिका परकीया स्नेह लक्षिता है सखी को बचन नायिका सों है ॥ सवैया ॥ बोले तू क्यो न छितो अनखाय कहौ तू कहा अब साधै रुखाई । तेरे हिये थिर प्रेम की बानि सुजानि परी री दुरै न दुराई ॥ तू हरि के हिय माहिं रही खुभि तेरोई नाम रटै सुखदाई । प्यारे की मूरति तो चित मांझ बसी सुचितौन में देत दिखाई ॥ ४४ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० रुख रूखी मिस रोख-मुख, कहत रुखौंहे बैन।
रूखे कैसे होत ये, नेह चीकने नैन ४५

यह नायिका लक्षिता है परकीया रुखाई करि सखी सों दुरावति है पै प्रीति के नेत्र देखि सखी नायिका सों कहति है ॥ कबित्त ॥ भृकुटी मरोर मुँह मोर रोसमिस करि ऊपर रुखाई साधि कहे रूखे बैन है । आलिन को यहै पन प्रीतिही को धरे तन कैसेजु दुराओं कछु इनसों दुरै न है ॥ हरिके सनेह सानि कैसे धौ रहति छानि कहै देत प्रकट छबीली छबि ऐन है । रूखो रुख करि रूखी बानि टानि बैठी परि रूखे कैसे होत नेहचीकने ये नैन है ॥ ४५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बहके सब जिय की कहति, ठौर कुठौर लखै न।
छिन औरै छिन और से, ये छबिछाके नैन ४६

यह नायिका लक्षिता सखी नायिका सो कहति है। जो नायक सो कहै तौ थिरताहू होय॥ सवैया॥ देखत नाहिं नै ठौर कुठौर रहै जितही तित चाह चके हैं। और घरी पल औरहीं दीसत झूमत आरस मै बिथके है॥ लाज तजै शिथिलाई गहै अपने बश नाहिन यों बहके है। देत कहे जिय की सब बात बिलोचन ये छबिछाक छके है॥ ४६॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० नांव सुनत ही ह्वैगयो, तन औरे मन और।
दबै नहीं चित चढ़ि रह्यो, अबै चढ़ो है त्यौर ४७

यह नायिका सखीसो रिस के मिस करिके स्नेह दुरावति है। ये नाव सुनेतें चित्तकी रीति अरु क्रिया औरही भांति भई यातें सखीने नीके करि जानी। नायिका लक्षिता सखी को बचन नायक सो॥ सवैया॥ नांव सुनेही भयो मन औरही औरै भयो तनु चेतन नेरै। नेह की रीति यहै नवनागरि नेकलगैं निबरै न निबेरै॥ क्यों हमते सतराय बिलोकति होत कहा अब त्योरी तेरै। ऐसे किये कहि कैसे दुरै हरि प्यारेको प्रेम चढ्यो चित तेरै॥४७॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० रहि मुँह फेर किहेरइत, हित समुझौं चित नारि।
डीठि परस उठि पीठि के, पुलके कहैं पुकारि ४८

यह नायिका परकीया है सखी देखत पीठि दै बैठी दुरायबे कौं रोमांच पीठ पै भये ते देखि सखी कहति नायिका लक्षिता॥ कवित्त॥ हितकों निरखियतु हरषै हितू को मनु हमतो धरयोई तनु प्रेम की प्रतीति को। तिन्है तू भुरावति है बात बहरावति है काहे को दुरावत नवेली नेह

नीति को ॥ भावै इत हेर भावै रहि मुँह फेरि तेरे चित सनमुख बीसबिसे रस रीति को । डीठिके परस होते उठी यह पीठि पै पुलकि पति प्रगट कहत तेरी प्रीतिको ॥ ४८ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० लखि लोने लोयननु के, कोयनु होय न आजु ।
कौन गरीब निवाजिबो, कितु तूठ्यो रतिराजु ४९

यह नायिका कुटिला कौन गरीब निवाजिबो या पदतें बहुत नायकनुकी प्रतीति भई । सखी को बचन नायिकासों जो नायिका की सखी नायक सों कहत हू बनै ॥ सवैया ॥ सरसीरुह खजन मीन कुरंग प्रभा इनकी सहजै हरिबो । इतने पर चाह के चायनु सों चहुँओर चलाचल को करिबो ॥ चितयो रतिनाथ सनाथ भयो वह को सुकृती जिह पै ढरिबो । इन सुन्दर लोचन कोरनि सों लखि कौन पै आजु मया करिबो ॥ ४९ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० फिर फिर दौरत देखियै, निचले नैक रहै न ।
ये कजरारे कौन पर, करत कजाकी नैन ५०

यह नायिका परकीया कुलटा कौन पै करत कजाकी इतै बहु नायकन सों प्रीति जानी सखी को बचन नायिका सों ॥ कबित्त ॥ कानन के निकट निशंक है बिहार करैं काहू ते न डरैं चितवतु हरि लैन ये । नृपति मनोज के प्रबल असिबाहक है घायल करत बर धरम धुरैन ये ॥ घूंघट की ओट गहैं घाट हेरि फेरि फेरि दौरतही देखियत निचले रहैं न ये । चंचल ढरारे अनियारे रतनारे कारे कौन पर करत कजाकी तेरे नैन ये ॥ १ ॥ यथा—कबित्त ॥ कजरा कवच हिये बरुनी के शर लिये भौहैं धनु किये जैतवार जंग ऐन हैं । इनकी कजाकी आगे कजाकी कछू न चलै वहू मलै हाथ ये तौ वाहू दुखदैन हैं ॥ वाकी सूधी चितवनि दोऊ तरवारि बांधैं करैं आधै आधै कहूं मारत डरै न है । कहैं ऊधोराम

सजे बजे रहैं आठोयाम मैन बादशाही के सिपाही दोऊ नैन हैं ॥ ५० ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० खेलन सिखये अलि भले, चतुर अहेरी मार।
कानन चारी नैन मृग, नागर नरनु शिकार ५१

यह नायिका परकीया कुलटा सखी को बचन नायिका सों है। नागरनरनु शिकार या पदतें बहुत नायकन की प्रतीति भई ॥ सवैया ॥ काननचारी कहावैं इते पर दौर करै पुरमें मृगया ये। ओट अभेड़ी अचूक हनैं मुनि आगर नागर मारि गिराये ॥ घायल कौं फिरि लेत सुध्यौ न पलो न थकै अति कौतुक छाये। नीके मनोज प्रबीन करो लये खेलनि नैन कुरंग सिखाये ॥ ५१ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० चलतु देत आभरन सुनि, वही परोसिहि नाँह।
लसी तमासे की दृगनि, हाँसी आंसुन माँह ५२

यह नायिका परकीया मुदिता है चाहयंती बात भई जानि प्रसन्नता की हांसी भई सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ देखि परोसीकी चीकनी चाहनि प्यारी हिये पर प्रेमकी फांसी। त्यों प्रिय जात बिदेश लख्यो बिलखी बिरहातुर सासविसांसी ॥ वाही परोसीसों बोलि कही पति है इत तोसो हमारी निसांसी। त्यों लसी अम्बुजनैनीके नैनन आंसुन मांझ तमाशे की हांसी ॥ ५२ ॥

अनुशयना मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघ २२ ॥

दो० सन सूख्यो बीत्यो बनो, ईखौ लई उखारि।
अरी हरी अरहर अजौं, धरि धरहरि जिय नारि ५३

यह नायिका अनुशयना सङ्केत की ठौर जाति जानि शोच करति है सो सखी समाधान करति है प्रत्युत्तर ॥ सवैया ॥ बीनन फूल सहेली के संग चली मृगलोचनि मोद भरी हैं। की थल जीव जरी अवलोकि

॥उसासभरी अलि-सौं उचरी हैं॥बीत गये बन सूख्यो सनौं अरु ऊंखौ उखारि लई सगरी हैं। यो हहरो मति धीर धरो अबहीं तौ अराहर प्यारी हरी हैं॥५३॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० फिरफिर बिलखीहै लखति, फिर फिर लेत उसास।
साइ शिर कच श्वेत ज्यौं, बीत्यौ चुनति कपास५४

यह नायिका अनुशयना सहेट की ठौर बीती जानि बिलखति है सो सखी सखी सो कहति है॥ कबित्त ॥ बालम के शिरके शिरोरुह ज्यों सेत ऐसे लेत चुनि चुनि शिर धुनि मुरझाति है। बीनति है तूल ऐसे शूल मे सलत हिये मानि दुख मूल फूल जिमि कुम्हिलाति है॥ बारबार कहत अली सो कैसी भली रीति केलिके बिलासथल लोयो चलि जाति है। बिलखि बिलखि के उसासै लेत बालबधू लखि बन बीत्यो मन अति अकुलाति है॥ ५४॥

नायिका अनुकूला। पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नहिं हरि लौं हियरा धरौ, नहिं हर लौं अरधङ्ग।
एकतही करि राखिये, अङ्ग अङ्ग प्रति अङ्ग ५५

यह नायिका अनुकूला है सु नायक के मनको बिचार जानिये॥ सवैया॥ जो अबके मिलिये तो रहो मिलिकै भरे बादि बियोग बृथाहीं। न्यारी न कीजिये ताहि कहूं पल लीजे छिपाय मिलै छतियाहीं॥ बारही बार बिचारतहूं चित और कछू जिय आवत नाहीं। राखिये कै हरलौ अरधङ्ग कि राखिये लै हरिलौ हियमाहीं॥ ५५॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० गोपिन सँग निशि शरद की, रमत रसिक रसरास।
लहा छेह अति गतिनु की, सबनु लखे सब पास५६

यह नायक दक्षिण है सु रास मण्डल में अपनी चतुराई करिकै सबको प्रसन्न राखि एक के आधीन काहू नै न जान्यो सखी को बचन

सखीसों ॥ कबित्त ॥ यमुन के पुलिन सुहाई छबिछाई तैसी शरद की रैनि जोन्ह बिशद बिलास हैं । गोपिकानि सङ्ग रसरङ्ग की उमङ्ग रमैं रसिक-मनमोहनु रमत रसरास हैं ॥ अबला अनेकन में कीन्हीं नन्दलाल कछू अदभुत चातुरी की कला यो प्रकास है । सबही की बांह गहि सबही के सग नाच्यो सबनु बिलोक्यो कान्ह सबही के पास है ॥ ५६ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० वेई गड़ि गाड़ैं परी, उपट्यो हार हियै न ।
आन्यो मोरि मतङ्ग मनु, मार गुरेरन मैन ५७

यह नायक शठ है । बिनु गुनहार के चिह्न मीठी बात कहि दुरावत है नायिका को बचन नायक सों कहै तो खण्डिताहू होय ॥ कवित्त ॥ आज मनमोहन मया कै मेरे आये लाल सोहत सिंगारु चारु मेरे मन मान्यो है । आलस बलित दृग घूमत ललित गति शिथिल कलितरूप मोहनी सो मान्यो है ॥ कृष्ण प्राणप्यारे यहै उरमे उवट रह्यो बिन गुनहार जात प्रगट न जान्यो है । वेई गड़िगाड़ै परी सुमन मतङ्ग मानौ मदन गुरेरन तै मारि मोरि आन्यो है ॥ ५७ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बाल काहि लाली भई, लोयन-कोयनु मांह ।
लाल तिहारे दृगन की, परी दृगन मैं छांह ५८

यह प्रत्युत्तर नायक शठ नायिका खण्डिता ॥ सवैया ॥ चारु निकाई लखैं जिनकी रद लागत औ परती पलकी है । प्राणपियारी कहा इन नैननु आजु ललाई इती ललकी है ॥ बैन सुने जबहीं पियके करि क्रोध सो बाल हिये दलकी है । लोचन लाल तिहारे लखै तिनकी इत आनि प्रभा झलकी है ॥ ५८ ॥ यथा—सवैया ॥ रुचि पङ्कज चन्दन वन्दन कञ्चन रञ्चन रोचनहू को बची । कहिये केहि कारण कोपते लायक कापर भामिनि भौह नची ॥ वन मानतही अँखिया लखि लाल ये नाहिंतै रातिके

रोषरची। तनतेरे बियोग तच्यो तरुणी तिन मानहुँ मोहियमांहि तची॥५८॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सकत न तुव ताते बचन, मोरस को रस खोय।
खिन खिन औटै खोर त्यों, खरो सवादिल होय ५९

यह नायक शठ सापराध आयो है ॥ नायिका क्रोध तै कटु बचन कहति है । ताको मीठी बात कहि कोप निवारण करत है नायिका अधीरा जानिये । नायक को बचन नायिकासो ॥ कबित्त ॥ मोते तो कछु न अपराध पस्यो प्राणप्यारी मानकर रही योंहीं काहे को अरसतैं। लोचन चकोर मेरे होतहैं शीतल तेरे तरुण उदित मुखचन्दके दरसतैं ॥ कहैं मतिराम उठ लागि कण्ठ मेरे क्त करति कठोर मनु आनँद बरसतैं । कोपे तैं कटुक बोल बोलतिहै तऊ मोकों मीठे होत अधर सुधारस परसतैं ॥५९॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मारो मनुहारन भरी, गास्यो खरी मिठाहि।
वाको अतिअनुखाहटौ, मुसकाहट बिनुनाहि ६०

यह नायक धृष्ट है नायक का बचन सखी सो है याते गुण कथन में नीके संभवतु है । वाको या पदतैं परोक्ष की प्रतीति भई॥ सवैया॥ मारे तौ फूलन की छटिका सों तऊ मनुहार अनेक जतावै । गारि जो देय कहा कहिये मधुराई इतेक सुधा कित पावै॥ वारति मूरति को सतराहटु मैं रहिये अतिमोद बढ़ावै । शील सुभाय सुहागिल को रसहू रिसहू हसिही हसि आवै ॥ ६० ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० लरिका लेबे के मिसनु, लङ्गर मो ढिग आय।
गयो अचानक आंगुरी, छाती छैल छुवाय ६१

यह नायक धृष्ठ नायक की कर्तव्यता नायिका सखी सों कहति है॥ सवैया ॥ गोरस के मिस रोक रहैं बन गैल न छांड़त छैल चवाई ।

भौनभरे मैं कहा कहौं जैसी करी यशुदा के लला लँगराई॥ मोढिग आय हरैंईहरैं कछू कीनी सनेह सनी चतुराई। छोहरो लेइबे कै उठिलानि अचानक आंगुरी छाती छुवाई॥ ६१॥ यथा—सवैया॥ खेलत मे बृषभानुसुता कहू धायधसी बनकुञ्जन में है। डारसो हार तहाँ उरझ्यो सुरझाय रही कबिदेव सखी है॥ तौ लगि आय कहूं उततै सु नजीक परयो चितबीच पखो है। छोहरवा हरवा हरवाय दै छोरिदये छलसो छतियाँ छ्वै॥ ६१॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६। यत बय यति॥

दो० कुञ्ज-भवन तजि भवन कों, चलिये नन्दकिशोर।
फूटत कली गुलाब की, चटकाहट चहुं ओर ६२

यह नायिका स्वकीयाहू होय नायिका को बचन नायक सों॥ कबित्त॥ मुकलित कली जलजात की कछूक भई भौरन की गुञ्ज मञ्जु श्रवणन धारिये। फूटत गुलाब कलिकान की सुगन्ध पौन चिटका शबद मृदु मोद बर धारिये॥ कल धुनि करत अनन्द खग बृन्दनि अनन्तछबि लसत बिहारी यों बिहारिये। आगम बिभास को बिलोकिये छबीले लाल सुन्दर निकुञ्ज तजि सदनु सिधारिये॥ ६२॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८। अथ रूपनिवेदन नायिका को नायिका सों॥

दो० रही लूट ह्वै लाल हौं, लखि वह बाल अनूप।
कितौ मिठास दयो दई, इते सलोने रूप ६३

यह नायिका को रूप सखी नायिका सो निवेदन करत है सलोनेरूप में मिठास यह अद्भुत है॥ कबित्त॥ जैसी जहाँ चाहियत तैसी तहाँ बनी बिधिहूं पै धुनि आखर के न्याय बनिआई है। सुखद सुहाई कापै बरनि बताई जाति रतिहू ने जाकी तिलु समता न पाई है॥ बाल छबि छाई तामें और अधिकाई दई दई या लुनाई मांझ कितनी मिठाई है। सुन्दर कन्हाई

हो तौ निरखि बिकाई वह रूपकी निकाई मानो देहधरि आई है ॥ ६३ ॥

नर अक्षर २३ गुरु १५ लघु १८ ॥ यह नायक को
रूप निवेदन नायिका सों ॥

दो० मोहिं भरोसो रीझिहैं, उझकि झांकि इकबार ।
रूप रिझावनहार वह, यह नैना रिझवार ६४

यह नायक को रूप सखी नायिका सों निवेदन करतु है सखी को प्रयोजन प्रीति करायबो ॥ सवैया ॥ सुन्दर जो कहिये तौ तिहूं पुर मे इक नन्ददुलारोइ है । यामै कहा कहनावति है कछू प्रेम को पन्थ निरारोइ हैं ॥ नेक झरोखा ह्वै झांको बलायल्यों मोंहिं भरोसो तिहारोइ है । रिझवार है तो दृग रीझैंइंगे वह रूप रिझावनहारोइ है ॥ ६४ ॥

नर अक्षर २३ गुरु १५ लघु १८ ॥
गातवर्णनम् ॥

दो० हौं रीझी लखि रीझि हो, छबिहि छबीले लाल ।
सौनजुही सी होत दुति, मिलति मालती-माल ६५

यह गात वर्णन नायिका के अङ्ग की छबि नायक सो निवेदन करति है ॥ सवैया ॥ नीकी लसै बृषभानुलली नवयौबन ज्योति जगी अँग-अङ्गहि । ताहि बिलोकि लला मन मेरो समीयरह्यो अति रीझ तरङ्गहि ॥ छैल छबीले लखै छवि रीझिहौं क्यों न हिये रसभाव उमङ्गहिं । मालती माल तनूद्युति सों मिलि सौनजुही के प्रकाश तरङ्गहि ६५ ॥ यथा—सवैया ॥ चौसर चारुचमेली के फूलनि को सखियानि सँवारिकै आन्यो । सो पहिखो गुन गौरि धुरन्धर कञ्चन से तन मे मन मान्यो ॥ है गई सौनजुही कीसी माल सु अङ्ग के रङ्ग में भेद न जान्यो । दन्तनकी द्युतिसो मुसिकाय कै फेर नॅवेलिही को ठहरान्यो ॥ ६ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अंग अंग नग जगमगति, दीपशिखासी देह ।
दिया बढ़ायेहूं रहै, बड़ो उजारो गेह ६६

यह नायिका की छबि देहकी दीप्ति सखी नायक सो निवेदन करति है ॥ कबित्त ॥ दीपकीसी लोय ऐसी दूसरी न कोय रही दृगनि समोय मानो मोहनी लसति है । जटित जवाहर के भूषण ललित अङ्गअङ्गनि मिलत जगाज्योतिसी जगति है ॥ दीपक बढ़ेहू भये देहके उजास होत बड़ोई प्रकाशकरि चौधिसी लगति है । दीपतिकी द्युति भरि भवन अखिल जाल रन्ध्रनि ह्वै बाहिर की ओर बहलति है ॥ ६६ ॥

नर अक्षर २३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० वाहि लखै लोयनु लगै, कौन युवतिकी जोति ।
जाके तनकी छांहढिग, जोन्हछांहसी होति ६७

यह नायिका की दीप्ति सखी नायक सो निवेदन करति है जो नायक सखी सों कहै तौ गुणकथन हूं संभवतुहै ॥ कबित्त॥ यौबन की जोति जगै तनकी बनक कीनी हीरनकनक छबि महल बिलन्द की । ललित बिलास कोटि मन्द मृदुहास मतिराम अग बासु मृगमद बासु मन्दकी ॥ मदके मदनबन मद नैन मन्दिर से गति गरबीली मद मैकल गयन्दकी । अधिक अँध्यारी मे उजारी होत चन्द की त्यौ चन्दकी उजारी में उजारी मुखचन्दकी ॥ ६७ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भई जु तन छबि बसन मिलि, बरन सकै सुनि बैन ।
अङ्गओप आंगी दुरी, आंगी अङ्ग दुरै न ६८

यह नायिकाकी शोभा सखी नायकसो निवेदन करति है ॥ सवैया ॥ हरि कञ्चन बेलीसी बालकी देहकी दीपति को बरणै कवि है । अरु ताहि मिली द्युति कञ्चुकी की जु अनूपम ओप रही फबि है । कछु जात

कहीं नहिं अङ्गप्रभा अरु चीर मिलै जु भई छवि है । वह आंगी गई दबि अङ्गकी ओप में आंगी में अङ्ग कहा दबि है ॥ ६८ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो॰ देखी सौनजुही फिरति, सौनजुही से अङ्ग।
द्युति लपटनु पट सेत हूं, करत बनौटी रङ्ग ६६

यह नायिका के अङ्ग की गुराई सखी नायकसों निवेदन करति है ॥ कबित्त ॥ सहज सिंगार द्युति लसति अपार लखि मुनिहूं के मन भाव उपजै अनङ्गको । अति सुकुमार यातैं लचकत लांकुभार सहि न सकत बिबि उरज उतङ्गको ॥ रूपकी रसाल तुम देखी सो न बाल लाल कहा कहो बनक बरन वाके अङ्गको । चारु तन सुख पट पहिरत नख वाहि तन द्युति मिलि होतु केसरिया रङ्गको ॥ ६९ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो॰ दीठि न परतु समान द्युति, कनक कनक से गात।
भूषण कर करकस लगत, परस पिछाने जात७०

यह नायिका के अङ्ग की दीप्ति सखी नायिका सों कहति है । नायकहू सखी सों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ ओप अनूपम आननकी अरु अम्बुज नैनन अञ्जनु आनै । देखतही मनही मनसों चित आजु कहा जनु भूषण ठानै ॥ ऐसे मे आय गयो रिझवार सुडीठ परे तब घूंघट तानै । भूपण जानि परै न सखी ब्रजभूषण देखत भूषण जानै ॥७०॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो॰ करतु मलिन आछी छबिहि, हरत जु सहजबिकासु।
अङ्गरागु अङ्गन लगो, ज्यों आरसी उसासु ७१

यह नायिका के अङ्ग में केसर लगी है नायकको इतनो हूं अन्तराय सुहातु नाहीं यह जानि सखी नायक सों कहति है जो नायिका नायक सो कहै तो रूपगर्विता होय ॥ सवैया ॥ मैन की मोहनी सी लखि न्याय

ही मोहन रीझ रहे रस पागै।यौबनरूप सुहागसनी लखि सौतिन्नके उर दाहनि दागैं ॥ ऊजरो लागै न और कछू नवनागरि तेरी गुराई के आगै । केसर लागेते अङ्ग लखात ज्यों आरसि देखैं उसासु के लागैं ॥ ७१ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पहिर न भूषण कनक के, कहि आवत यहि हेत। दरपन केसे मोरचे, देह दिखाई देत ७२

यह सखी नायिका के अङ्ग की निकाई कहत है जो भूषणहू को अन्तराय जानि नायिका सो कहै तो वनत है ॥ कबित्त ॥ हितकी तो बात हितहू सों कहि आवै तिहि ताते तोसों कहत छबीली प्रेमपागिकै । तेरी समता को रति रम्भा उरबशी है न तेरे अनुराग प्यारो रह्यो अनुरागिकै ॥ लोनो तेरो तन तामे सुबरन गहने ये तूतो पहिरति इन्है अबही दे त्यागिकै । नीके नीके तन पर फीके फीके लागत है मोरचा रहै है मानों मुकुर मे लागिकै ॥ ७२ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३ ॥

दो० कञ्चन तन धन बरन बर, रह्यो रङ्ग मिलि रङ्ग । जानी जात सुबास ही, केसर लाई अङ्ग ७३

यह नायिका के अङ्गकी गुराई सखी नायिकासो कहति है अथवा लेचलिबे की उतावलकरि अङ्गराग को निवारण करतु है अन्तराय जानि नायक नायिका सो कहतु है ॥ सवैया ॥ जो कछु तो तन मे तरुणी सुरती न लहै रति रूप निकाई । तापर यौवन जोति जगै कबिको बरनै छबिकी सरसाई ॥ रङ्ग मे रङ्ग समोयगयो जब कञ्चन से तनमे घसिलाई । अङ्ग सुगन्धनि की न लहै सर केसर बासुही ते लखि पाई ॥ ७३ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० है कपूर मनिमें रही, मिलि तन द्युति मुकतालि । छिनछिन खरीबिचक्षनौं, लखतिछ्वायतिनुआलि ७४

यह अङ्गदीप्ति की निकाई सखी नायक सों कहति है ॥ कबित्त ॥ कुन्दन से गात जलजात से नयन जाकी दीपति जुन्हाई सो भवन मांझ वैरही । कञ्चन की चौकी पर बैठि बर बाल साजैं सकल सिंगार ज्योति जगमग ह्वैरही ॥ मोतिन की माल सजनी तैं पहराई सुतो तनु द्युति मिलित कपूरकीसी ह्वैरही । एक अली चतुर जकीसी चकिरही एक करिबे को निहचे तिनूकी हाथ लैरही ॥ ७४ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० केसरि कै सरि क्योंसकै, चम्पक कितकि अनूप ।
गातरूप लखि जात दुरि, जातरूप को रूप ७५

यह नायिकाके अङ्गकी दीप्ति सखी नायकसों निवेदन करति है ॥ कबित्त ॥ चम्पकचमक चारु कुन्दन मे कहा ओजु केसरी कुसुमको जु सेंध करै गातकी । कोकिलाकी कूक हू ते पावन पियूख हू ते मधुर मयूख हू ते मधुराई बातकी ॥ मैनकाहू मैनछबि मैनद्युति रही दबि मैन गिरिधर ऐसी नैन बनितातकी । देखि दृग भास मृगजात पछितात मन जलजात लजिजात जलिजात जातकी ॥ ७५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बरन बास सुकुमारता, सबबिधि रही समाय ।
पखुरी लगी गुलाब की, गात न जानी जाय७६

यह नायिकाकी सहज सुगन्ध यौवनकी अरुणाई सुकुमारता सखी नायक सो निवेदन करति है जो नायक के सेजकी पाखुरी जानि सखी नायिका सो कहै तो लक्षिता होय ॥ सवैया ॥ बीनति फूल भरे बर फूल प्रभातसमै सुख सेजते जागी । आयो तहां मनमोहन प्यारो प्रभा लखि रीझि रह्यो अनुरागी ॥ वैसोई रङ्ग सुगन्ध है वैसोई वैसीही कोमलता रसपागी । कौनहू भांति सों जानि परी न गुलाब की पांखुरी गात सों लागी ॥ ७६ ॥

मद्कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० सोहत धोती सेत में, कनक बरन तन बाल।
सारद बारिद बीजुरी, भा रद कीजति लाल ७७

यह नायिकाकी गुराई सखी नायकसों कहति है ॥ कबित्त ॥ कञ्चन बरन तन बनक अनूप मानो रूप की अवधि मनमथकी रसाल है। एक धोती सेत में अनेक छबि देती बाल मानो हसमण्डली में चम्पक की माल है ॥ शरद घटानि मधि दामिनी लसति किधौ क्षीरसिन्धु मांझ बड़वानल की ज्वाल हैं। सुरसरि सोत मे सुधानिधिकी कला किधौं शंकरके अङ्ग लसै पारबती बाल है ॥ ७७ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० कहा कुसुम कित कौमुदी, कितक आरसी जोति।
जाकी उजराई लखे, आंख ऊजरी होति ७८

यह नायिका की उजराई सखी नायकसो कहति है नायकहू कहै तो संभव है ॥ कबित्त ॥ देखी सुनी होत कहूं रेसम रसम कोऊ करी कैसी कइयो कमाई मृदु मूजरी। इन्दु होड़ बदत पै कहा होहि ऊजरी न पून्यों कीसी पूरण प्रकाश पावै दूजरी ॥ उबटि अन्हाय औ अँगोछनि अँगोछो तन रहोउ अछन अछवाई आछी गूजरी। लाख करो कोऊ पटतर वाकी पूजति न जाकी उजराई देखे आंख होत ऊजरी ॥ ७८ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रञ्चक लखि पति पहिरि यों, कञ्चनसे तनबाल।
कुम्हिलानी जानी परति, उर चम्पे की माल७९

यह नायिका के अङ्गकी गुराई ऐसी है जु चम्पेकी माला जानि नाही जाति सो सखी नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ लाई, बनाय प्रवीन अली नवचम्पक माल सुगन्ध भरी है। लै अपने करमें नवनागरि कृष्ण कहै उरमे पहरी है ॥ कञ्चन से तनकी छबि मांझ गई मिलि

रङ्ग नहीं उघरी है । चाहिरही सजनी चकसी कुम्हिलाय गई तब जानि परी है ॥ ७९ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सघन कुञ्ज घन घन तिमिरु, अधिक अँधेरी राति।
तऊ न दुरिहै श्याम यह, दीपशिखासी जाति८०

यह नायिका के अङ्गको प्रकाश सखी नायकसों कहति है जो संयोग समय गुरु सखी कहे तो शिक्षाहू संभव है परकीया ॥ सवैया ॥ याके समीप न होउ दुरै लखि लेत वे दूरहीते उपहासी । कीजै कहा अबतो कहि जो विधि या बिधि दीपतही परकासी ॥ काहू कि आंखिन मूंदन जानि तहौ बलिजाउँ न हूं जिव दासी । ल्याऊं सकेसे सुराति अँधेरी उजेरी जु नागरि दीपशिखासी ॥ ८० ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० लिखन बैठि जाकी सबिहि, गहि गहि गरब गरूर।
भये न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ८१

यह नायिकाकी निकाई सखी नायकसो कहति है कि वाहि देखे शान्तिकभाव होत हैं याते चितेरे ऊपर क्यो हूं लिखत बनै नाहीं ॥ कवित्त ॥ रूपकी अवधि ऐसी और न वनाई विधि जाको लिखिबे को लाल देवता मनायबो । ताकी शोभा लिखिबे को बैठति गरब करि अनतही मन होत घूम घननायबो ॥ ऐसी भांति आप आप कूर कहवाय गये चतुर चितेरे तिन्है कहाँलौ गिनायबो । कृष्ण प्राण प्यारे वहि चित्रिनी विचित्र गति काहू पै न वन्यो वाके चित्र को वनायबो ॥ ८१ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अंग अंग छबि की लपट, उपटति जात अछेह।
खरी पातरी हू तऊ, लगे भरी सी देह ८२

यह नायिका की नाजुकताई अरु दीति सखी नायिकासो कहति है ॥

सवैया ॥ कंचन कंज कुरंग कलानिधि कंचुकी शोभा सुभाय रहीसी। ता नवनागरि की निशि द्योस रहैं नित नैननि मांझ धरीसी ॥ अंगनि अंग उमंग अछेह प्रभाकी तरंग सुरंग खरीसी। पातरि वाकी अंगेट तऊ छबि पुंजन लागति देह भरीसी ॥ ८२ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अंग अंग प्रतिबिम्ब परि, दरपन से सब गात।
दुहरे तिहरे चौहरे, भूषण जाने जात ८३

यह नायिका के अंगकी उजराई सखी नायकसो कहै है सखी सों नायक कहै अरु नायिका सों कहै सो सब भांति संभवति है अरु नायिका सखी सो कहै तो रूपगर्विता होय ॥ कबित्त ॥ बदन बिलोकि शशि समता लहै न क्योंहू लोचन बिलोकि जलजातहू लजात है। नागर नवेली नखशिख लौ निकाई भरी बानक बिचित्र लखि लोचन सिरात है ॥ कृष्ण प्राणप्यारे अति उज्वल लसत वाके मुकुरसे गात महाशोभा सरसात है। अग अंग प्रति प्रतिबिम्ब परि केऊ ठौर एक एक भूषण अनेक जाने जात है ॥ ८३ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० बाल छबीली तियनमें, बैठी आपु छिपाय।
अगट ही फानूस सी, परगट होत लखाय ८४

यह नायिका के अंगकी दीप्ति सखी नायक सो निवेदन कराति है नायकहू कहै तो संभव है ॥ कवित्त ॥ चन्दकी कलासी चपलासी तिय सेनापति बालम के वरबीज आनन्द के बोतिहै। जाके आगे कंचन मे रंचक न पैये द्युति मानो मन मोतीलाल माल आगे पोति है ॥ देखी प्रीति गाढ़ी पहिने तन सुख ठाढ़ी जोर यौबन की बाढ़ी छिन छिन औरै होति है। गोरी देह झीने बसन मे झलकत मानों फानुसके अन्दर दिपति दीप जोति है ॥ ८४ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मानहुँ बिधि तन अच्छ छबि, स्वच्छ राखिबे काज।
दृग पग पोछन को किये, भूषण पायंदाज ८५

यह नायिका के तन की छबि सखी नायकसों कहति है अरु सखी को बचन नायिका सों होत है ॥ कवित्त ॥ तूही तीनों लोककी लुनाई लूटल्याई देखै रूपकी निकाई नन्दलाल ललचाये हैं । तेरी द्युति आगे आली कंचन के गहने ये फीके फीके लागैं ऐसे गात छबि छाये हैं ॥ दीठिके परसहीते मैले होत अंग ऐसी उज्ज्वलता सहित बिरंचि ने बनाये है । तिन की निकाई स्वच्छ राखिबे के हेतु ये तो दृगन को मानों पग पोछना बिछाये हैं ॥ ८५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० लीनैऊं साहस सहस, कीने यतन हजार।
लोयन लोयनु सिन्धु तन, पैरि न पावत पार८६

यह नायिका के अंग अंग की सुन्दरता देखि कै तहां नायक के नेत्र तहांई थकित ह्वै रहत है शोभा एक सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ जा तनकी छबि को कबि कोबिद केतेकि तीर प्रमाण बतावत । ता तनकी छबि देखिबे को तव नैन लगे व्रत ध्यान लगावत ॥ साहसको रस पान बिषे बहुभांति अनेक उपाय बनावत । शोभाके सागर मांझपरे अब पैरत कैसहू पार न पावत ॥ ८६ ॥

स्वप्नदर्शन। नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० देखौ जागि तवै सखी, सांकर लगी कपाट।
कित ह्वै आवतजातभजि, को जाने केहि बाट ८७

यह स्वप्नदर्शन नायिका सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ रंचक नींद परै जबहीं तबहीं ढिग आनि टिकै खगिकै । हेरि हँसै रसको बरसैं बतरात महाहित सो पगिकै ॥ जागौ तौ डीठि परै न कछू अरु

त्योंही कपाट रहै लगिकै । इह जाने को आवत धौं कित है पुनि जात कबै कित है भगिकै ॥ ८७ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सोवत सपने श्याम घन, हिलि मिलि हरत बियोग ।
तबहीं टरि कितहूं गई, नींदौ नींदन योग ८८

यह स्वप्नदर्शन नायिका सखी सो कहति है नींद की निन्दा करति है ॥ सवैया ॥ आली बिछोहु भयो जबते छतियां बहुभांति बियोग बईरी । आजु लला मनमोहनसो सपने में अचानक भेट भईरी ॥ नेसु बिथा बहरायबे को हिलिकै मिलिकै रसकेलि ठईरी । नींदहूं नींद बिलोयक है तबहीं कहुँ भाजिगई सुगईरी ॥ यथा—आवतमें हरिको सपने लखि नेसुक बाट सँकोचनि छोड़ी । आगे है आड़ेभये मतिराम औ लीने चितै चख लालची वोड़ी ॥ ओठनुकों रस लैनको मेरी गही करकंजनि कम्पत ठोड़ी । और भटू न कछू भइ बात गई इतनेही मे नींद निगोड़ी॥८८॥

अहिबर अक्षर ३४ गुरु ५ लघु २९ ॥

साक्षात् दर्शन नायक का नायिका को ॥

दो० लटकि लटकि लटकतु चलत, झटत मुकुटकी छांह ।
चटकभर्योनटुमिलिगयो, अटकभटकबटमांह८९

यह साक्षात् दर्शन जैसी छबिसों देखो है नायक को तैसे नायिका सखी सो कहति है ॥ कबित्त ॥ लटकि लटकि चलि निरखत बार बार फेरि फेरि ग्रीव छाँह मंजुल मुकुटकी । केसर की खौरपरि कलित रुचिर भाल कुण्डल ललित सोहै बनमाला ठटकी ॥ है गई बिपिन मग अटक भटक भेट तबहींते नैनन मे खुभी शोभा नटकी । भूली सुधि घटकीरी लोकलाज सटकीरी अटकी हिये मे फहरानि पीरे पटकी ॥ ८९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

साक्षात् दर्शन नायक को नायिका का ॥

दो० चुनरी श्याम सतार नभ, मुख शशिकी उनहारि ।
नेह दबावत नींदलौं, निरखि निशा सी नारि ६०

यह साक्षात् दर्शन जैसे नायिका देखी है तैसेही नायक सखीसों कहत है ॥ सवैया ॥ चूनरि श्याम सतारमयी नभ तारक ज्यों मन भावतु है । उन्नत पीन उरोजन को जुगु कोकनु की छबि पावतु है ॥ मुख सोहत सोम जुहै यहसी द्युति दीप कुमोद बढ़ावतु है । यह यामिनि सी गजगामिनि देखत नींद ज्यो नेह दबावतु है ॥ ६० ॥

दृष्टानुराग नायक को । त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० सनिकज्जल चख झखलगन, उपज्यो सुदिनसनेह ।
क्यों न नृपति ह्वै भोगवै, लहि सुदेश सब देह ६१

यह दृष्टानुराग है नायिकाके नेत्र अंजनसहित देख नायक के अनुराग उपज्यो सो सखी नायिकासो कहति है नायिका परकीया ॥ कबित्त ॥ देखी एक बनिता बिचित्र बर बानिकसो जाकी ज्योति ही सों जगमगि रह्यो गेहु है । बिहँसि बिहँसि मृदु बोलत सरस बानी बरसत अमी मानो बूंदनको मेहु है ॥ कहै कवि कृष्ण क्यों न भूपति ह्वै भोग करै रजधानी सकल सुदेश पाय देहु है । नैन मीन लगत पै अंजन लसतु सनी ऐसे शुभयोग समै उपज्यो सनेहु है ॥ ६१ ॥

दृष्टानुराग नायक को । मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मोहू सों तजि मोह दृग, चले लाग वहि गैल ।
छिनकु छाय छबि गुरु डरी, छले छबीले छैल ६२

यह दृष्टानुराग है नायकको देख नायिका में अनुराग उपज्यो है सो नायिका सखी सों कहतिहै नायिका परकीया प्रौढ़ा ॥ कबित्त ॥ जा घरी ते मोहनी को मन्त्र डारि दीनों उन रूपकी मिठाई ता घरी

कलमले हैं । ज्यों ज्यों हठ करि रोक रही ओट अंचल में त्यों त्यों अति बल करि उतही को हले हैं ॥ मोहूसो जहूतो नतो पलकमें करि हातो छोड़ि सब नातो वाकी गैल लाग चले है । नन्दको कुँवर आली बीस बिसु ठगु है री देखत हीं देखि मेरे दोऊ नैन छले है ॥९२॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० फेरि कछू करि पौरि तैं, फिरि चितई मुसकाय।
आई जामनि लैन जिय, नेहे गई जमाय ९३

यह नायिका परकीया जो चेष्टा याकी देखी है सो नायक सखी सों कहत है ॥ कबित्त ॥ केसर बरन सुबरनहु बरन जीतो बरनी न जाति अबरन बान वैगई । कहत बिहारी सुन सरस पियूष मीठी मति करि सीठी बंक नैनन चितैगई ॥ भौंहनि चढ़ाय चाई मृदु मुसकाय नेकु चंचल चलाय चख चेरो चितै कैगई । लीने करबेली अलबेली सी अकेली तिय जावन को आई जिय जावन सो दैगई ॥ ९३ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० चितवनि भोरे भाय की, गोरे मुँह मुसकानि।
लागनिलटकीअलिगरे,चितखटकतानितआनि ९४

यह नायिकाकी चेष्टा नायक सखी सों कहत है पूर्वानुराग होत हैं ॥ कबित्त ॥ भूलत न क्योंहूं बृषभानु तनया की बानि वह अँगिरान अँगुरिन चटकायकै । वह गोरे बटुरारे बेदनकी मुसकानि वह चहचही चितवनि भोरे भायकै ॥ घूंघट फरानि करकमल उसारि वह लटकि मिलनि सजनीसों लपटायकै । ऐसी भांति जबते मै निरखी है तबहीं ते पलपल मांझ खटकत चित आयकै ॥ ९४ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० इती भरी हू भेदिकै, कितहू ह्वै इत आय।

फिरै डीठ जुर दीठ सों, सबकी दीठ बचाय ९५

यह नायिका के चितैबेकी चतुराई सखी सखीसों कहति है । नायकहू सखी सों कहै तो होय नायिका परकीया ॥ सवैया ॥ बैठी सखीन की सोभ सभा सबही के सुनैनन माहिं बसैं । पूछेत बात बनाय कहै मनकी मनके सब दास हँसैं ॥ खेलतहैं इत खेल उतै पिय चित्र खिलावत यों बिलसैं। कोउ जानै नहीं दृग दौरि कबै कित ह्वै पिय आनन छ्वै निकसै ॥ ९५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० गड़ी कुटुँब की भीर में, रही बैठि दै पीठि।
तऊ पलक परिजातु इत, सलज हँसोंही दीठि ९६

यह नायिका के सनेहकी निकाई अरु चितैबे की चतुराई सखी नायक सों कहति है नायिका परकीया ॥ सवैया ॥ प्यारी प्रबीण सनेह सनी, नखते शिख लौं सुख की निधि त्योंहीं । कैसेहुँ मों बरते न टरै जु चुभी चित चाहनि नेह निचोंहीं ॥ बैठी बधू गुरु नारिन में जऊ नारि नवाय खरी सकुचोंहीं । लाज पगी पल एक तऊ परिजात इतै वह दीठ हँसोंहीं ॥९६॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नहिं नचाइ चितवति दृगनि, नहिंबोलतमुसकाय।
ज्यों ज्यों रुख रूखोकरै, त्योंत्यों चित चिकनाय९७

यह नायिकाकी चेष्टा नायक सखी सों कहत है कि यह रुखाई मेरे चित्त को चिकनावतु है ॥ कबित्त ॥ जोरत न लोचन नचाई नेहचाई भरे मृदु मुसकानि कौन भाव दरशात है । बोलत न कहूं मनमोहन मधुर बैन मोरति न भृकुटी मरोरत न गात है ॥ कहै कबि कृष्ण वाकी गरबीली बानि कछू सहज वशीकर को मन्त्र जान्यो जात है । ज्योंहीं ज्यों रहत प्यारी राधा रुख रूखो करि त्योंहीं त्यो खरोई खरो चित्त चिकनातु है ॥ ९७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० चितई ललचौहैं चखन, डट घूंघट पटमांह।
छल सों चली छुवायकै, छिनक छबीली छांह ६८

यह नायिका परकीया है चेष्टा करिगई है सो नायक सों सखी कहत है ॥ कबित्त ॥ पूरण सुधानिधिसो बदन दिखाय फिर घूंघटकी ओट कीनी कछुक लजायकैं। घूंघटके पटमे ह्वै निरखि निशंक चितवनि ललचोंही चाह चौकनौ जतायकैं ॥ कहै कविकृष्णा मृदु मुलकि अलीकी ओर चली काहू छल सो छबीली छांह छायकै। हाहा कहि कोही जाहि एती छबि सोहीं वह मोही ते न टरत रही जू रीझि छायकै ॥ ९८॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० त्रिबली नाभि देखाय करि, शिर ढकि सकुच समाय।
अली गली की ओट ह्वै, चली भली बिधि चाय ९९

नायिका परकीया की चेष्टा देखी है सो नायक सखी सो कहत हैं॥ कबित्त ॥ भोरी बैस इन्दुमुखी साँकरी गली में मिलि सुन्दर गोविन्द को अचानकही आयकै। कालिदास जगै जब अंगनि जवाहिर की बाहिर ह्वै फैली चांदनी सी छबि छायकै ॥ नेरो गह्यो श्याम सोहै बिहँसि बिलोकी बाम हेर्‌यो तिरछौंहैं नारि नैसुक नवायकै। गोरे तनु चोरे चित जोरे दृग मोरे मुख थोरे बीच फोरे लागि चली मुसकायकै ॥ ९९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० डग कुडगतिसी ह्वै चली, टुक चित चली निहारि।
लिये जासु चित चोरटी, इहै गोरटी नारि १००

यह नायिका की चेष्टा नायक सखीसों कहत है ॥ सवैया ॥ भानुसुता जल न्हानहि जात सुजानु सखीन मे आनँद बाढ़ी। पीछेते आय सुनाय कछू कहिकै बतियां छतियां करि गाढ़ी ॥ या पलकै पलकैं चितई

सुचितो ढिग च्यार रही फिर ठाढ़ी । चोरिकै चित्त चमंकि चली सु गुराई भरी जु मनोज की डाढ़ी ॥ १०० ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० भौंहँ उचै आंचरु उलटि, मोरि मोरि मुँह मोरि । नीठि नीठि भीतर गई, डीठि डीठि सों जोरि १०१

यह नायिका की क्रिया जो देखीहै सो नायक के चित्तमें बसी है बारबार सखी सों कहत है नायिका परकीया ॥ कवित्त ॥ रूप की अपार राधा ठाढ़ी निज द्वार पर जाकी छबि पर रति वारिये करोरिकै । मोहिं देखि नेसुक लजाय कै ढ़ढ़ाय भौंह बाजी चितवनि मांझ लीनो चित चोरिकै ॥ मोरि मोरि मुँह जमुहान अँगरानी पुनि आलस बलित नैन बटुरारे ढोरिकै । नीठि नीठि गई भौन भीतर सरोजमुखी डीठि सो मिलाय डीठि नीके नेह जोरिकै ॥ १०१ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० ऐंचत सों चितवनि चितै, भई ओट अलसाय । फिरिउझकनिकोमृगनयन,दृगनलगनियालाय१०२

यह नायिका की चितवन नायकके चित्तमें बसी है सो नायक सखी सों कहत है वैसेही फिरि चितवै यह अभिलाष ॥ कवित्त ॥ खिरकी उघारि नवनागरि निहारि इत ठाढ़ो बनवारी मनमथ छबि छायकै । बिहँसि बिलोकि शशिबदनी लजायकै सुऐंचतसी मनु भई ओट अलसायकै ॥ लगन लगाई चित लैगई चुरायकै बिहारीलाल रह्यो ठगकीसी मूरि खायकै । उत चितवत सब काज बिसरायकै सु फिर अवलोकिबे की आश उरलायकै ॥ १०२ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० वे ठाढ़े उमदात उत, जल न बुझै बड़वागि ।

जाही सों लाग्यो हियो, ताहीके हिय लागि १०३

यह नायिका परकीयाकी प्रकाश चेष्टाहै नायक को देखिकै सखी को आलिंगन करत है सो सखी प्रकट कहति है ॥ कबित्त ॥ मेरो मुँह चूमे तेरी पूजी साध चूमिबे को चाटे ओस आसु क्यो सिरत प्यास डाढ़ेहै । छोटे कर मेरे कहा छ्वावति छबीली छाती छुवो जाके छ्वायबे को अभिलाष बाढ़े है ॥ खेलन जो आयेहौ तौ खेलौ जैसे खेलियतु केसोराय कीसौ ते ये कौन खेल काढ़े है । फूल फूल भेदति है मोहिं कहा मेरी भटू भेटै किन जायवे जु भेटबेको ठाढ़े है ॥१०३॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देख्यो अनदेख्यो कियो, अँग अँग सबै दिखाय।
पैठतिसी तन में सकुचि, बैठी चितै लजाय १०४

यह नायिका परकीया को चितैकै लाज करिबो देखो सो नायक सखीसो कहत है ॥ कबित्त ॥ सोहत स्वरूप सनी बैठीही छबीली राधा हौंहूं तहां निकस्यो अचानकही आयकै । मेरी ओर देख उन देखो करि मुसकानि अंग अंग सकल सुसुन्दर दिखायकै ॥ पैठतसी तनमें सकुचात न रोचतसी चितवन चाह बैठी सिमट लजायकै । वह मुसक्यान चितवन सकुचनि क्योहूं टरत न रही मेरे हियमे डरायकै ॥ १०४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चिलक चिकनई चटकिसों, लफतिसटकलौं आय।
नारि सलोनीसांवरी, नागिनिलौंडसिजाय १०५

यह नायिका की सांवरी सूरति देखि आसक्त भयो सो सखी सों कहत है ॥ कबित्त ॥ चिलकति चारु चिकनाई की चटक भरी चलति लफति जैसे लंक लचकति है । सांवरी सलोनी अति लोनी अजौं हौंनी बैस शोभा सनीसी समनि सहत लसति है ॥ कुटिल सुभाई

चितवनि प्रेम बिषभरी नागिनि ज्यो यह ब्रजनागरि बसति है । मनको डसति अरु तनको लहरि आवै लागत न यंत्र मंत्र अदभुत गति है॥१०५॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० मैं हौं जान्यों लोयननु, जुरत बाढ़ि है जोति।
को हौंजानतु डीठि को, डीठि किरकटी होति १०६

यह नायिका अपने नेत्रन को आसक्त सखीसों कहति है अरु यह प्रकट करति है किं जबते वे आंख देखीं तबते और कछू सूझत नाहीं ॥ कबित्त ॥ जा दिन ते आली तैं कही कि मनमोहनके लोचन सलोने देखे अतिहित बाढ़ि है । ता दिना ते मैं हूं यह जानी चारि नैन भये ज्योतिकी प्रकाश कछू अधिकाई चाढ़ि है॥ जोरत ही नैन बिथा तनमें ब्रगरि गई मदन हुताशन बरत जाहि जाढ़ि है ।कौन यह जानत हो डीठि ही की डीटि बीर होत किरकटी कोऊ सकत न काढ़ि है ॥ १०६ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० त्यों त्यों प्यासेहीरहत, ज्यों ज्यों पियत अघाय।
सुगन सलोने रूपको,जु न चष तृषा बुझाय१०७

यह नायिका के नेत्र लगे है सो सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ हरि मुखचन्द त्यों चकोर है रहति जानि लोचन कमल गति भौरकी गहत हैं । देखतहू देखत रहत दिखसाध लागी होत अनमेष यों बिशेष उमँगत है ॥ टोनो कछु प्राणप्यारे को सलोनो रूप ताते नेकु न बुझात तृषा कल न लहत है । तृपत न होत क्योहूं माईरी नयन मेरे पियत अघाय त्यों त्यो प्यासेई रहत है ॥ १०७ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० अलि इन लोयन शरनको, खरो विषम संचार।
लगे लगाये एक से, दोउन करत शुमार १०८

यह अपने नेत्रकी अवस्था सखीसों कहत है अथवा नायक कहै॥ कबित्त॥ शर जाके लागै ताहि सुधि न रहत कछू जो हनत ताके उर रंचक बिथा न हैं। तिनते अधिक कुसुमायुध के पांचों बान जिनके लगे ते टरैं मुनिन के ध्यान है॥ कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई जिय जानी अली सबहीतें बिषम बिशेष नैनबान हैं। दुहूंन बिकल करैं जतन लगै न आन दुहूं भांति लगेहू लगायेहू समान है॥ १०८॥

त्रिकल अक्षर ३१ गुरु ६ लघु ३०॥

दो० दृगनि लगत बेधत हियहि, बिकलकरतअँग आन।
ये तेरे सबते बिषम, ईछन तीछन बान १०९

यह नायिका के नेत्र देखि नायक को बिकलताई भई सो सखी नायक सों कहति है॥ सवैया॥ भौंह कमान बिना जिहते छुटि टेढ़े चलै दुहुँ ओर अनेरे। नैनन आनि अचूक लगे हिय बेधत क्योंहू फिरै नहिं फेरे॥ और सबै अँग ब्याकुल ह्वै सरसात बिथा घहलात घनेरे। रीति गहैं सबते बिषमै बिषमै शर ईछन तीछन तेरे॥ १०९॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

सो० कौड़ा आँसू बूंद, कसि सांकर बरुनी सजत।
कीने बदननि मूंद, दृग मलङ्ग डोरे रहत ११०

यह नायिका को देख नायक के नेत्र बिवश भये हैं आंसूपरत है मूंदे रहत हैं सो सखी सों सखी कहति है॥ सवैया॥ तै जबते बृषभानुसुता हरि के दृग नेक निहार हरे हैं। वे तबते न हल न चले रहे वाहि चितौन कि चाह भरे है॥ कोड़ा किये अँसुवान कि बूँद जँजीर बड़ी बरुनी जकरे है। नेक अबै उनकी सुधिलेहु मलङ्ग मनो मुहँ मूँद परे हैं॥ पुनः—कबित्त॥ तपै बिरहानल मै पलक उठाये भुजा ध्यान लीन मन निशि बासर बिहात हैं। डोरे लाल सेली साज अँसुव टपक माल कोये सोये बसन भगौहैं दरशात है॥ आठो याम जागै अङ्ग त्रिशद बिभूति

भरे बोलत न मुख दुख सहे शीत बात हैं । तेरे मिलबे के बेष योगी होन हेतु राधे योगी युग लोचन बियोगी के लखात है ॥ ११० ॥

शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० कहत सबै कबि कमल से, मो मत नैन पखान ।
नतरु कुकत इनघिसिलगत, उपजत बिरह कृशान १११

यह नेत्र लगनि है आंख लगेते बिरहरूपी अग्नि होत है यह बचन नायक कहे तो बनै ॥ कबित्त ॥ बरनि बरनि दृग कहत सकल कबि कमल कुरङ्ग मीन खञ्जन समान है । कहैं कबिकृष्ण रचिपाचि चतुरानन ने लोचन ये पाहन बनाये मेरे जान है ॥ कमल सों कमल लगाय देखै कैयोबेर एक आंक क्योंहू उपजतु न कृशान हैं । लागतही तिय नैन तबही उपजि उठैं लगनि अगनि याते प्रकट प्रमान है ॥ १११ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सबही तन समुहाति छिनु, चलत सबन दै पीठि ।
वाही तन ठहरात यह, किबिलनुमा लौं डीठि ११२

यह नायिका लक्षिता है सखी नायकसों कहति है सखीको बचन सखीसों, बनै ॥ कबित्त ॥ लाल मनमोहन की छबिपर तूतो बालि रीझि रही आहिं बहरावति है भोरी ज्यों । प्रीति उर अन्तर की प्रकट बिलोकि प्रति सोंह किये कैसे निबहत चोरीचोरी ज्यो ॥ सब त्यों लखत मिले काहूसों न तेरी डीठि प्रीठि दै चलति पुनि सबही की ओरी ज्यो । इत उत हेरि चितचोरि हीकी ओर आई रहत है ठहराय मन्त्र की कटोरी ज्यों ॥११२॥

करभ अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० ढरे ढारते ही ढरति, दूजे ढार ढरै न ।
क्यों हों आनन आनसों, नैना लागत नैन ११३

यह नायक अपने नेत्रन की आसक्ति कहतु है अरु नायिका के भ्रम हैं

कि नायक और सों आसक्त है सो नायक नायिका को भ्रम दूर करतहै जो नायक सों कहै तो उरहनोहू सम्भव है ॥ सवैया ॥ और ते वान परी सु परी न टरै वह कोटि उपाय कियेहूं । कृष्ण कहै जिहि रीझि रचे तितते न लचै न कहूं ललचेहूं ॥ त्योंहीं ढरे जिह ढार ढरे नहिं दूसरे ढार ढरे सपनेहूं । आन किये कहूं आनन आन सों नैनहूं नेक न लागत केहूं ॥ ११३ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० हरि छबि जल जबतें परैं, तबतें छिन बिछुरै न ।
भरत ढरत बूड़त तिरत, रहट घरी लौं नैन ११४

यह नायिका अपने नेत्रनकी आसक्ति सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ आजु निरख्यो मै ब्रजराज को कुँवर कान्ह जाके अङ्ग अङ्ग आली मनही हरतु है । कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई वा निकाई देखे कोरि रतिपति अति लाजनि मरतु है ॥ ताकी शोभा सलिल में जबते नयनपरे तबते घरीलौं छिनहू न बिछुरतु है । ऐसे भये रचतही करत अनेक भाइ भरत ढरत पुनि बूड़त तिरतु है ॥ ११४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० ललन तुम्हारे रूपकी, कहौ रीति यह कौन ।
जासों लागत पलकपलु, लागतपलकपलौ न ११५

यह नायिका की अवस्था सखी नायक सों कहति है कि जबते तुम देखो हो तबते वाके पलकहू नाहिं लागत नायिकाहू नायकसों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ बारक देखै सुध्यो न रहै दिखसाध लगै कुलकानि भगैं । मोहनी रीति कछू मनमोहन रावरे रूपको यों उमगै ॥ कौन ठगौरी लही कितकीहू रमानो बशीकर मन्त्र पगैं । जाकी कहूं पल एक लगे पल ताकी पलौं पलकै न लगै ॥ ११५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० है हिय रहत हई छई, नई जुगत जग जोय ।
डीठिहि डीठि लगे दई, देह दूबरी होय ११६

यह नायिका के नेत्र नायक को देखके लगे अरु देह दूबरी होति है । सो नायिका सखी सों कहति है सखी सखी हू सों कहै तो बनै अद्भुतहू है ॥ सवैया ॥ देखत देखतहू न लहै कल प्रेम मरोरि उठै अति भारी । देखे बिना न सोहाय कछू पुनहार रटे अति होत दुखारी ॥ व्याकुल ह्वै अकुलाय महा मुरझाय रहै निशि नींद बिसारी । नैनलगे तन दूबरो होय अनोखी सनेह की रीति निहारी ॥ ११६ ॥

चल अक्षर ३७-गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० देखत कछु कौतुक इतै, देखौ नेक निहारि ।
कबकीइकटकडटिरही, टटियांअँगुरिनफारि ११७

यह नायिका कहति है नायिका को देखति है सो सखी नायक के चाव बतावत है । सखी को बचन नायक सों प्रीति करायबो प्रयोजन ॥ कबित्त ॥ मैनहूं ते ऐन मनमोहन तिहारी छबि नैनन में खुभी ब्रजबाल रिझवारिकै । बगर को बासु सासु ननँद को तिरास तातैं निरखिसकै न प्यारी बदन उघारिकै ॥ बिन देखे कल न परत याते देखिबे को कस्यो है उपाउ देखौ इतधा निहारिकै । कबकी निमेष भूलि लोचन लगाय इत डटि रही टाटी करपल्लव सों फारिकैं ॥११७॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० इनअँखियांदुखियानको, सुख सिरजोही नाहिं ।
देखे बनै न देखिबो, बिन देखे अकुलाहिं ११८

यह अपने नेत्रनकी लगनि नायिका सखी सों कहति है प्रौढ़ा परकीया ॥ कबित्त ॥ आप ही ते लागें येतो कहे काहू के न लागें

रैनदिन जागे हैं बियोग आगि धखियां। रूपमाधुरी को ज्यों ज्यों पीवैं त्यों त्यों भूखी रहैं होंहिं न अदूखी ये बिदूखी सदा लखियां॥ लपट निपट पट संपुट न रोंकी रहै अकुलाय ढहै जाय मधुवी समधियां। चैन है न आठौयाम इनहीं को ऊधोराम तनु सुबिहायो तामें दुखिहाई अँखियां ११८॥

सेनक अत्तर २९ गुरु १९ लघु १०॥

दो० चकी जकी सी ह्वै रही, बूझे बोलत नीठि।
कहूं दीठि लागी लगी, कै काहूकी दीठि ११९

यह नायिका लज्जिता है सखी नायक सों कहति है सखीहू सों कहति है॥ सवैया॥ आज चकीसी जकीसी कहा कछु अङ्ग सम्हार हिराइसी हेरी। बूझे हूं नीठ कहै मुख बैन हलै न चलै जनु चित्रन केरी॥ मेरी लखे यह तेरी नई गति मोमति शोच समूहन घेरी। दीठि लगी किधौ काहूकि तोहिं कि दीठि लगी कहुँ काहूसो तेरी॥ ११९॥

मराल अत्तर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० नेह न नैनन को कछू, उपजी बड़ी बलाय।
नीर भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय १२०

यह नायिका अथवा नायक अपने नेत्रनकी आसक्ति सखीसों कहै है सखी सखी सों इनकी व्यवस्था कहै तऊ संभव है॥ सवैया॥ एक पलौ न लगै पलकै ललकै लखिबे किहि लागी चटी। नीरभरी निशि द्यौस रहै न मिटै तऊ भूरि तृषा उपटी॥ आठहू याम तपै तरफै उपचारहू सों न घटै न घटी। यह रीति लगी नहिं आंखिन को कोऊ पावक ब्याधि प्रलै प्रकटी॥ १२०॥

मराल अत्तर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० कै वा आवत यह गली, रहै चलाय चलै न।
दरशन की साधैं रहैं, सूधे होयँ न नैन १२१

यह नायिका अपने नेत्रन की दशा सखी सों कहति है यह नायिका मध्या परकीया है ॥ सवैया ॥ कान्ह अली बहुबेर गली महँ आवत चारु सिंगार कियेहूं । देखिबे को तबहीं तब हौं ललचाइ रहौं न चलाय चलेहूं ॥ लाज अचानक आय गहै पछितात यहै अपने जियमेंहूं । सोहैं चितैबे की साध रहै बर सूधो बिलोचन होत न केहूं ॥ १२१ ॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० साजै मोहन मोह को, मोहीं करत कुचैन।
कहा करौं उलटे परैं, टोने लोने नैन १२२

यह नायिका प्रौढ़ा परकीया नायक को देख नेत्र याके अकुलात हैं सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ बूझतहौ सतभाय सखी यह सीख इन्हैं सिखई कहु कौने । मैं सजे मोहन मोहिबे को बहु अञ्जनसाज बनाय सलोने ॥ देखतही ललचाय रहे अब ये अपने सपनेहु न होने । मोहींको दैनलगे दुख नैन ये ज्यों उलटे परिजात हैं टोने ॥ १२२ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मोहूं सों तजि मोह दृग, चले लागि उहि गैल।
छिनक छ्वाय छबि गुरु डरी, छले छबीले छैल १२३

यह नायिका अपने नेत्रन की आसक्ति सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ जा घरीते मोहनी को मन्त्र डारदीनो उन रूप की मिठाई ता घरी ते कलमले हैं । केतो हठकरि रोकिहारी ओट अञ्चल की त्यो त्यों अति बलुकरि उतही को हले हैं ॥ मोहूं सों जु होतो नातो पलक मैं करि होतो छोड़ि सब तातो वाकी गैल लागि चले है । नन्द को कुँवर आली बीस बिसे ठगु है री देखत ही देख मेरे दोऊ नैन छले है ॥ १२३ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० लोभ लगे हरि रूप के, करी साट जुरि जाय।

हौं इन बेची बीच ही, लोयन बड़ी बलाय १२४

यह नायिका अपने नेत्रन की आसक्ति सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नन्दकिशोर की मोहनी मूरति देखतही अति मो मन भाई। तौ लगि लोभ लगे दृग आगेई जायमिले मिलिसाद मिलाई ॥ आपनो स्वारथ साध्यो सबै बिधि होई न बीचही बीपरी माई। कैसे करौं न कछू बनिआवत नैननके मतमें तो ठगाई ॥ १२४ ॥

चल अक्षर २७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यश अपयश देखत नहीं, देखत श्यामल गात।
कहा करौं लालच भरे, चपल नैन चलिजात १२५

यह नायिका को सखी शिक्षा देत है तासो अपने नेत्रन की आसक्ति कहति है ॥ सवैया ॥ सासु रिसाति झखै ननँदी जानि तू सिखवै सखि सीख के बैना। है ब्रजबास चवायमई चहुँओर चले उपहास की सैना ॥ देखत सुन्दर सांवरी मूरति लोक अलोककी लीक लखैना। कैसी करौं हटके न रहैं चलिजात तऊ लचि लालची नैना १२५ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० नैना नेक न मानहीं, कितो कह्यो समझाय।
तन मन हारे हूं हँसैं, तिन सों कहा बसाय १२६

यह नायिका अपने नेत्रन की आसक्ति कहति है ॥ सवैया ॥ सहिये जगके उपहास नितै रहिये गुरुलोगन मांझगसे। डर आनि यहै अपने उर हौ समझाय रही नहिं नेक त्रसें ॥ अरु रञ्जक मेरो कह्यो न करैं तनहूं मनुहारे तऊ हुलसें। यह नेम गह्यौ सजनी इन नैननु पै हरि हेर हँसेई हँसें ॥ १२६ ॥

चल अक्षर २७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सके सताइ न तम बिरह, निशि दिन सरससनेह।

रहै वहै लागी दृगनि, दीप-शिखा सी देह १२७

यह नायिका को ध्यानहूं करत है तऊ बिरह घटत नाहिं सों नायक सखी सो कहत है ॥ सवैया ॥ वा मृगलोचनि के बिछुरे जु भई गति सो नहिं जात उचारी । शुद्ध दशा परिपूरण नेह निबात थली उर अन्तर धारी ॥ यद्यपि दीपशिखा सम नैनन लागि रहै तनकी द्युति प्यारी । तद्यपि सूझै हिये न कछू भरिपूर रह्यो बिरहातम भारी ॥ १२७ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० लाज लगाम न मानहीं, नैना मो बश नाहिं ।
ये मुहँजोर तुरङ्ग लौं, ऐंचत हू चलिजाहिं १२८

यह नायिका सखी सों अपनी आसक्ति नेत्रन की अवस्था कहति है ॥ सवैया ॥ देखत वा नटनागरकी छबि फांदिपरै हटके न रहाहीं । लोचन लोल तुरी मुँहजोर सुलाज लगाम को मानत नाहीं ॥ ऐंचत हौं अपने इतको बलिये बलकैं उतही चलिजाही । कैसी करों नहिं मो बश ये कुलकानि के चाबुक ते न डराहीं ॥ १२८ ॥

अथ चित्तलगानि । मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० फिर फिर चित उतहीं रहत, टुटी लाज की लाव
अङ्ग अङ्ग छबि झौंर में, भयो भौंर की नाव १२९

यह नायक के अङ्ग की छबि पै रीझी है सो अपने चित्त की आसक्ति सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ यौबन महानद में रूप को सलिल भय्यो तरल तरङ्ग हावभावन को भाव है । अङ्ग अङ्ग छबिकी उमङ्ग झरझरी भौर चपल कटाक्ष तहां फँस्यो चित नाव है ॥ चालि पै न सकत भ्रमत रहै वाही ठौर तरकि तनूका जिमि टूटी लाज लाव है । लागत न क्योहीं कुलकानि की बिशाल बली धीरज प्रवल पतिवारी को न दाव है ॥ १२९ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० इतते उत उतते इते, छिन न कहूं ठहराति।
जनकुफिरतचकईभई, फिरिफिरिआवतजाति १३०

यह नायिका मध्या परकीया है सो याकी व्यवस्था सखी सखी सो कहति है जो सखी नायक सो कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ जबते अटकी नवनागरसो तबते न कहूं मन लावत है। ठहरात नही छिन एक कहूं निशि बासर ज्यो बहरावत है॥ कबहू इतते उत धावत है कबहूं उतते इत आवत है। चकरी जिमि आवत जात वधू पलकौ न कहूं कल पावत है॥ १३०॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० को जानै ह्वैहै कहा, ब्रज उपजी अति आगि।
मनु लागे तनु ना लगै, चलै न मग लगि लागि १३१

यह नायक अथवा नायिका के दृष्टानुरागते विरह भयो है सो बिरह की आग सों मन व्याकुल है सो सखी सों कहत है॥ सवैया॥ दीसै न धूम बरै विन ईंधन उन्नत है प्रकटे न शिखा है। नैसुक नैनन लागत ही मनु आगि लगे सव अंगन दाहै॥ लोचन नीर ढरै न बुझै उपजी ब्रज मे कोउ आग महा है। देखेहू दीठ परै न कछू अब जाने धौ आगे को ह्वै है कहा है॥ १३१॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० डर न टरै नींद न परै, हरै न काल बिपाकु।
छिनकछाकुउछकैनफिर, खरोबिषमछबिछाकु १३२

यह नेत्र लगनि है सो नायिका अथवा नायक सखी सो कहै है कि छबि को छकु छकोखरो विषम है सो विषमता वर्णन करै है॥ कवित्त॥ सुधि कौन करै नींद नैसको न परै महाभय ते न टरै मुख निकरै न

चाकु है । कहैं कबि कृष्ण क्योंहू एकबेर छकै सो तो उछकै न नेको न समैको परिपाकु है ॥ सीरो लागे बरे निशिदिन तरफरै पलकनि गति हरै धरै काहूको न धाकु है । और मतवारे ते तो मेरे मतवारे यह सबहीते बिकट बिषम छबि छाकु है ॥ १३२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघ २० ॥

दो० उड़ीगुड़ी लखि ललन की, अँगना अङ्गनमांह ।
बौरी लों दौरी फिरत, छुवति छबीली छांह १३३

यह नायिका परकीया प्रौढ़ा है सो नायक की चंग की छांह छुयेते मिलेही को सुख मानतु है सखी सखी सो कहति है ॥ सवैया ॥ नन्दलला नवनागरि पै निजरूप दिखाइ ठगोरीसी नाई । बाहर जात बनै गृहते न बिलोकिबे को अतिही अकुलाई ॥ प्यारे की चंग इतेमें उड़ी लखि मोद भरी निज आंगन आई । होत गुड़ीकी जितै जित छांह तितै तित छूवेको डोलत धाई ॥ १३३ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० चलत घेर घर घर तऊ, घरी न घर ठहराय ।
समझ उहीं घरको चलै, भूल वही घरजाय १३४

यह नायिका प्रौढ़ा परकीया है जहां चित्त लाग्यो है तहां जातहै सखी सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ निधरक भई आनि गावत है नंदघर और ठोर कहूं टोहै हू न अहटाति है । पौरिपाछे पिछवारे देहरी उसारे द्वारे आंगन अटारी इही बीच मँड़राति है ॥ हरि रसराती सिख नेकहूं न होती होति प्रेम रसमाती न गनति दिन राति है । जब जब आवति है तब कछू भूलि जात भूल्यो लेन आवति है फेरि भूलिजात है ॥ १३४ ॥

मरकट अक्षर ३८ गुरु १७ लघु २१ ॥

दो० ह्याँ ते ह्वाँ ह्वाँ ते यहां, नेको धरत न धीर ।

निशिदिन डाढ़ी सी फिरत, बाढ़ी गाढ़ी पीर १३५

यह नायिका के चित्त में लगन लगी है सो याको मन कहूँ कल पावत नाहीं याकी दशा सखी सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ शोभा मनमोहन की परम रसाल चित्त चुभि ब्रजबालकै न छिन बिसरे कहूं। बरसत जल तरसत दृग देखिबे को कहो ऐसी लगनि दुराये हूं दुरे कहूं ॥ घरते बगर आवै बगर ते घरधावै फिरै ज्यों बिकल पल कल न लहै कहूं। बाढ़ो मनमथ बीर नैसको धरै न धीर डाढ़ी सी फिरत ठाढ़ी छिनु न रहै कहूं ॥ १३५ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० पल न चलै जक सी रही, थक सी रही उसास।
अबहीं तनुरितयोंकहौं,मनपठयोकिहिपास १३६

यह नायिकाकी प्रीति लगीय लगी है सुरति वहीं जाय है सो याकी दशा देखि सखी कहति है ॥ कबित्त ॥ सासन उसासति है बासकी सम्हार है न ऐसी हैकै कौन कैधौ हितमे हितैरही। कितुहै री तेरी मनुरीतो सों लगत तन अबहीं तू सुध बुध काहि क्यो बितैरही ॥ चित्र की सी लिखी डरी जकित अचेत भई, पलक न लगत भूल चकित चितैरही। काहू हेरि हरी मति बिसरी सबै सुरति होंतो तेरी यह गति देखि थकितैरही ॥ १३६ ॥

पयोधर अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० ज्योंज्योंआवतनिकटनिशि,त्योंत्योंखरीउताल।
झमकि झमकि टहलैं करै, लगी रहचटैंबाल १३७

यह नायिका प्रौढ़ा है सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ गौनो भये दिन कैयो भये हियमे हरि हेत कि ज्योतिसि जागी। बासर ज्यों बहरावत नीठि बिधी चसकैं रसमें अनुरागी ॥ आवत ज्यों ज्यों

नजीक निशा तिय त्यों त्यों उछाह उमङ्गनि पागी । सत्वर काज करै घरके रवनी रतिकेलिकै लाहक लागी ॥ १३७ ॥

त्रिकल अक्षर ३१ गुरु ६ लघु २० ॥

दो० भृकुटी मटकनि पीत पट, चलत लटकती चाल।
चलचखचितवनचोरचित, लियोबिहारीलाल १३८

यह नायिका प्रौढ़ा है नायक की शोभा देखि मोहित भई है, सो अपने चित्त की वृत्ति सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ बनते निकस्यो बनमाल गरैं बनिता मृग बागुरिमे दृग कीने । फेंट कसे कटि पीतपटी उपटी छबि सिन्धु सुधारस भीने ॥ कै नटनागर चेटक सो चल चाहनि ही चितु गो सँग लीने । लीनों सो कौन किशोर कन्हा मुरली कर मोरपखा शिर दीने ॥ १३८ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० छुटन न पैयतु बसि छिनकु, नेह नगर यह चाल।
मार्यो फिरफिर मारिये, खूनीफिरैखुस्याल १३९

यह लगन को बर्णन है जाके लगति है ताको अधिक दुखहै जाकी लगति हैं ताके कछु मनहू मे नाहीं आवत सो नायिका अवस्था सखीसो कहति है सखी सखीहू सो कहै तो बनै ॥ कबित्त ॥ छिन बसे छूटिये न बिन बसे बनपटी नेह नगरी मे यह अटपटी रीति है । लीजत छोड़ाय मनु रतन यतन नाहिं अतनुमहीप तहां अधिक अनीति है ॥ मारेही को मारियतु खुशीभये खूनी फिरै जीतेही की हारि अरु हारेही की जीति है । सरबसु दीजे तऊ परबश परियतु जहां कछु लोक परलोक की न भीति है ॥ १३९ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० क्यों बसिये क्यों निबाहिये, नीति नेह पुर नाहिं।

लगालगी लोयन करैं, नाहक मन बँधि जाहिं १४०

यह लगन है नेत्रन के लगे मन बंधतु है यह अद्भुत अनीति है सो नायिका अथवा नायक सखी सो कहै है ॥ कबित्त ॥ पावक प्रचण्ड याते भागेहूं न छूटियतु बरियतु ज्यो ज्यो उपचार कीजियतु है। प्रबल कजाकनु पै मग न चलन पैये चित बितु दीजै तऊ हित भीजियतु है ॥ ऐसे प्रेमपुर कैसे बसिये निबहिये क्यो देखे ये अनीति छिनु छिनु छीजियतु है। लोगनि करत धाय नैन मैन मतवारे नाहक बिचारो मनु बांधि लीजियतु है ॥ १४० ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० झमकि चढ़त उतरत अटा, नेक न थाकत देह।
भई रहत नट को बटा, अटकी नागरि नेह १४१

यह प्रौढ़ा नायिका नायक की शोभा देखि आसक्ति भई सो देखिबे को चढ़ति उतराति है सो याकी व्यवस्था सखी सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ कान्हर की बनक बिलोकि कै बिकानी बाल तादिनते देखिबे को यतन करतु है। सुरभी चराय ब्रज आइबे की बेर जानि सरबस होत गृहकाज बिसरतु है ॥ साक गुरुजन की निसांक ह्वै न ठाढ़ी रहै छिन इत छिन उत याविधि ढराति है। नटके बटा ज्यो नट-नागर के नेह पागी ऊंचे अटा झमकि चढति उतराति है ॥ १४१ ॥

पयोधर अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मैं तोसे कैबर कह्यो, तू जिन इन्हैं पत्याव।
लगालगी कर लोयननु, उरमें लाई लाव १४२

यह लगन है नायिका अथवा नायक अपने मन सो कहै है सखी सो कहिबो संभवित नाही ॥ कबित्त ॥ तोसो मै कहीही कैयो बेर समझाय इन नैनन के मतलागे भारी खता खायवो। तब तोन सिखं मानी

इनहीं की मति ठानी अब कहा होत परबश पछतायबो ॥ लगालगी इन कीनी उरको लगाय दीनी लगनि अगनि ताके कहां भजि जायबो। कीजत यतन सीरो त्यों त्यों होत दुख नेरो निशिदिन अनत अनंग को सतायबो ॥ १४२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सारी डारी नील की, चोट अचूक चुकै न।
मो मन मृग करतर गह्यो, अहे अहेरी नैन १४३

यह नायिका के नेत्र देख नायकको मन हाथ रहत नाहीं सो सखी सों कहै तौहू बनै ॥ कबित्त ॥ जाइ चढ़े यौबन के बनमें बिहार करैं काहू के न रोंके रहैं बिक्रम अकथके। भृकुटी कुटिल चाल अञ्जन असित बास तरल कटाक्ष गहै आयुध सुहथके ॥ सारी नीली टाटी ओट आवत अचानक ही करत अचूक चोट रहत नथथके। मो मन कुरंग को ये करलेत हथाथके राधे तेरे नैन ये अहेरी मनमथके ॥१४३॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० जे तब होत दिखादिखी, भई अमी इक आंक।
गै तिरछी दीठनि अबै, ह्वै बीछी के डांक १४४

यह पूर्बानुराग जे चितवन संयोग मे सुख दीन्हों ते बियोग मे सुधि आयो सालति है सो सखी नायिका अथवा नायक सखीसों कहै है बिरह की दशा अवस्थान मे सुमिरन कहिये॥ सवैया ॥ रंगरली में भलीबिधि सों बहुभांतिन के सुखदेत हैं जेई। ते इन कुंज भये प्रतिकूल बिलोक हिये दुखसूल सलेई ॥ नेहके आदि रसीली चितौन हुती इकआंक अमी सम तेई। बीस बिसे बिष शायक ह्वै उर सालत बांकी बिलोकनि वेई॥१४४॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नेको वह न जुदी करी, हरष जु दी तुम माल।

उर ते बास छुट्यो नहीं, बास छुटेहू लाल १४५

यह पूर्बानुराग है नायिका की प्रीति सखी नायकसों कहति है तो तुमसों कहा कस नहीं ॥ सवैया ॥ जादिन वाही अलीनको देखत रीझि हिये हितु मानकै भारी । आपनेहीते उतारदई तुम फूलकी माल बिशाल बिहारी ॥ तादिनते वह वा रिझवार को प्राणहुँते सु लगी अतिप्यारी । बास गई कुँभिलाइ गई पै करी न तऊ उरते छिनु न्यारी ॥ १४५ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० खिन खिनमें खटकत सुहिय, खरी भीर में जात ।
कह जु चली बिनही चितैं, ओठन ही में बात १४६

यह नायिका परकीया है कही भीर में नायक देखो है सो वाने जो कियो सो कीनों इन देखी पै बांत न सुनी सो सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ आज मिली ब्रजबाल अचानक मोमति वाके सनेह गई है । जाती हुती अति भीर मे सुन्दरि मोतनु हेरि हियो उमही है ॥ लाजते पै न बिलोकि सकी बन कीन तऊ रस रीति सही है । ओटनही में गई जु कछू कहि मैं न सुनी पछतावो यही है ॥ १४६ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० बन तनको निकसत लसत, हँसत हँसत इत आय ।
दृगखञ्जन गहि लैगयो, चितवनि चोप लगाय १४७

यह नायिका प्रौढ़ा है जैसी छबिसो श्रीकृष्ण देखत हैं तैसेही अपने नेत्रन की लगनि सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ आज कढ्यो बनको इतहै बनि, बानिकसो यशुदा को कन्हाई । मोर किरीट लसै मुरली लकुटी अरु पीतपटी छबिछाई ॥ मो ढिग आय भख्यो रसभाय हरे मुसकाय मुख्यो सुखदाई । कैपिकी चाहन चोप लगायकै लेगयो नैन में मोलिनि माई ॥ १४७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जबजबवहसुधिकीजियतु,तबहिंसबहिसुधिजाहिं।
अँखियनआँखिलगीरहैं,आंखौलागत नाहिं १४८

यह पूर्बानुराग नायिका अथवा नायक सखी सों अपनी बात कहै है ॥ सवैया ॥ यह प्रीति कि रीति अनोखी लखी कछु जानि न जात कहा गति है । चित चाह की चोप चढ़ोये रहै अरु प्रेमबिथा उर पागति है ॥ नित आंखिनसों वेई आंखि लगी रहै आंखि न कैसहू लागति है । जबहीं जब वे सुध कीजतहै तबहीं सबही सुधि भागति है ॥ १४८ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० जहां जहां ठाढ़ो लख्यो, श्याम सुभग शिरमौर ।
बिनहूं उनछिनुगहिरहत,दृगनअजौंवहठौर १४९

यह पूर्बानुराग है जहां श्रीकृष्ण देखे हैं तेई ठौर श्रीकृष्ण की भावना करिकै नेत्रन को आग्रहन करतु है सो नायिका सखी सो कहै है ॥ कबित्त ॥ केलि सुखसागर में झेलि रंगरली परि पूरन बिबिधबिध करती मनोरथनु । तनमन बाढ़ तो उमंगि अनुरागु भागु आगत हो मघवा शची को अनहूते अनु ॥ कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई अतिछबि छाई जिन जिन कुंजनि मिलत होरी श्याम घनु । तेई तेई कुंज अबड़ी-नहूं बिलोकैं बिनु माई गहि राखत घरीकलौं अजौं दृगनु ॥ १४९ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सघन कुञ्जछाया सुखद, सरसिजसुरभि समीर।
मन ह्वै जात अजौं वहै, उहि यमुना के तीर १५०

यह पूर्बानुराग है सो यमुना के तीर संयोग में जो चित्त की वृत्ति होतही सो वही भावना करिबो सही होतिहै सो नायिका सखीसों कहति है ॥ कबित्त ॥ सघन निकुंज छाये सुखर सुहाये अरु मण्डित

सरस गुंजपुंज मधुपन की । प्रफुलित मंजु अरबिन्दन के बृन्द आवैं त्रिबिध बयारि लै सुगन्ध कुसुमन की ॥ लतिका लालित छबि बालित लह लहाति जेहूती बिहारभूमि नन्द के सुमन की । कृष्ण प्राणप्यारे कीसों वेई यमुनाके तीर अजहूं निरखि वह गति होति मनकी ॥ १५०॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० फिरिफिरि बूझत कहि कहा, कह्यो सांवरे गात।
कहा करत देखे कहा, अली चली क्यों बात १५१

यह नायिका अधिक आसक्त है सो सखीको बेरबेर वाहीकी बात बूझति है ॥ कबित्त ॥ कबहूंक आलीपर अंगिराय डारें अंगु दिन बहरावे क्योहूं कलन परति है । ऊतर सहेली लाय उनके संदेशो सुनि सुनिते प्रसिद्ध मनु ऐसिये अरति है ॥ हाहा कहि कैसेगई कैसी कैसी बातैंभई कहाहे ललन मन धीर न धरति है । एक बेर बूझि फिरि बूझि औरों बूझि फेरि फेरि फेरि वहै बात बूझिबो करति है ॥ १५१ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मन न धरत मेरो कह्यो, तू आपने सयान।
अहे परनि पर प्रेम के, परहथ पारि न प्रांन १५२

सखी नायिका सों कहति है कि प्रीतिके प्रसंग ते प्राण पराये हाथ परति हैं सतमति करै तो यह प्रसन्न है कि सखी प्रीति करति मने क्यों करति है सो मनौ नाहिं करति प्रीति दृढ़ावति है कि प्राण पराये हाथ परैगे जो तोहिं कहति है तो कर मानवती के प्रसन्न सखी नायिका सों कहै तो येहू बनै कि प्रेमकी पराग मे तू पर अरु प्राणजु है नायक ताहि पराये हाथ मतिपारै ॥ सवैया ॥ तू नहिं मानत मेरो कह्यो अपने मनमान सयानपु भारी । देखबेको ललचावति ज्यो कछु धोसनि तै यह रोस निहारी ॥ नेह कहूं नँदनन्दन सो लागिजैहै

तो फेरि न ह्वै है रारी । बेचत प्राणनु क्यों परहाथ फँसै मति प्रेमफँदा ब्रजनारी ॥ १५२ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चितवत बचत न हरत हठि, लालन दृग बरजोर । सावधान के बटपरा, ये जागत के चोर १५३

यह नायक के नेत्रनपै आसक्त सो नायक के नेत्र याके मनको जोरावरी हरि लेत हैं सो नायिका सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ राखत सलूक मिले मदन महीपतिसों सुतनु सरकि जात कानन की ओर हैं । चपरि हरति ब्रजबालनके मन धनु मरति मरोर भरे यौबन मरोर हैं ॥ जागतिहूँ मुसै सावधान को बिबश करै चपल चितौन शर वेधत सजोर है । मोसों कहि आली ब्रजलाड़िले के लोलदृग ठग है कजाक हैं डकैत हैं कि चोर हैं ॥ १५३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नावक शर से लाय कैं, तिलकु तरुणि इत ताकि । पावक झरसी झमकिकै, गई झरोखा झांकि १५४

सवैया ॥ साजे शृंगार भरी छबिभार हिये बिरहागिनि बारिगई है । चोप भरी कछु ओखे सों ओढ़ झरोखहू नेक निहारिगई है ॥ पावक ज्वालसि बाल बिलोकिकै नावक तीर से मारिगई है । झांकत बाँक लखी जबते तबते सुधि मोहिं बिसारिगई है ॥ १५४ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ नायकको ध्यान नायिका ॥

दो० कबकी ध्यान लगी लखों, यह घर लागि है काहि । डरियतु भृङ्गीकीट लौं, मत वहई ह्वै जाहि १५५

यह नायिका नायकके ध्यान में लीन ह्वैरही है सो सखी सखीसो कहति है ॥ सवैया ॥ ठाढ़ि विलोकति हौं कबकी यह पूरण प्रेम हिये

ढरिबो । पाहन की पुतरी ह्वैरही बिसर्यो उर अंचलको धरिबो ॥ ध्यानहिं ध्यानमें जो कबहूं यह होय वही तौ कहा करिबो । याको धरा अब लागिहै काहि कहा गति है हियहै डरिबो ॥ १५५ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सरसतु पोंछतु लखि रहतु, लगि कपोल के ध्यान ।
करलेप्यो पाटल बिमल, प्यारी पठये पान १५६

यह नायिका की आसक्ति नायक सों अधिक है सो वाके हाथ के पान देखि जो चेष्टा करतु है सो सखी सखी सो कहति है ॥ सवैया ॥ प्राणपियारे तिया पठये करहेतु हिये सरसें परसें । पाटल पान खरे सुथरे जिनकी छबि देखि हिये तरसें ॥ पोंछत हैं पटलै कबहूं कबहूं दरसे कबहूं परसें । ध्यान कपोलन को कबहूं करि चुम्बत यों रसकी बरसें ॥ १५६ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १७ लघु २१ ॥

दो० अधर धरत हरि के परति, ओठ दीठि पट जोति ।
हरित बांस की बांसुरी, इन्द्रधनुष रँग होति १५७

यह नायिका मुरली बजावत देखि रीझी है सो वह शोभा भांति २ कर कहति है । सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ चलि देखुरी बानक-सी बनिकै ब्रजराजको लाड़िलो आवत है । मुखचन्द कि चीर मरीचिन सों बलि नैन चकोर सिरावत है ॥ जब दीठिको ओठन को पटको मुस-कानको रंग मिलावत है । तब बांसुरी बांस हरे कि लला सुरचापके रंग दिखावत है ॥ १५७ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कितीनगोकुलकुलवधू, काहि न किहि सिखदीन ।
कौन तजी न कुल गली, ह्वै मुरली सुर लीन १५८

यह मुरलीकी धुनिपै रीझी सो सखी शिक्षा देतिहै तासों वा मुरली

की मोहनता कहतिहै ॥ सवैया ॥ कौन ठगोरीभरी हरि आज बजाई है बांसुरिया रसभीनी । तान सुनी जिनहीं जिनहीं तिंनहीं तिन लाज बिदा करदीनी ॥ घूमे खरी खरी नन्द के बार नवीनी कहा अरु बाल प्रबीनी । या व्रजमण्डल मे रसखानि सुकौन भटू जु लटू नहीं कीनी ॥ १५८ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० लई सौंह सी सुनन की, तजि मुरली धुनि आन ।
किये रहत दिनरात दिन, कानन लागे कान १५९

यह मुरली सुनी है तबते और कछु सुनत नाहीं सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ मोहनकी मुरलीकि अली जबते मधुरी धुनि कान परा है । बाल भई तबहीं ते लटू इह काज समाज सब बिसरी है ॥ कानन कानन ओर किये रहै काम खरी कलकान करी है । बात सुहात न होत कछू सुनिबेकि मनो मन आनिकरी है ॥ १५९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० उर लीनै अति चटपटी, सुनि मुरली धुनि धाय ।
हौं निकसी हुलसी सुतो, गो हुलसी उरलाय १६०

यह मुरली सुनि सब काम छांड़ि हुलसी निकसी वह न देख्यो तब जु कछू अवस्था भई सो सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ भौनके कोन मे बैठीहुती हों कछू गृहकाजके साजपगीरी । बारक कान्ह करी तबहीं मुरली धुनि प्रानन आन खगीरी ॥ हौं लखिबेको उछाह भरी निकरी वह दीठि परयो न ठगीरी ॥ नैनन को अरु काननको मनको तबते तलावेली लगीरी ॥ १६० ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० फूले फदकत लै फरी, पल कटाक्ष कर वार ।
करत बचावत त्रिय नयन, पाइक घाइ हजार १६१

यह दोनों के नेत्र आपसमें कटाक्षनकी चोट करत हैं औरन की दृष्टि बचावत हैं सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ अर्जुन अग अछेक छनी सिखिये नव यौबन नायक है । फांदत फूले निसांक गहे करवाल कटाक्ष सहायक हैं ॥ ओटको ढाल करी पलकै ललकैं अति जोम सों लायक है । बिबि लोचन चोट बचावति है तिय नैन कि मन के पायक है ॥ १६१ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० कहतनटतरीझतखिझत, मिलतखिलतलजिजात।
भरे भौन में कहत है, नैनन हीं सों बात १६२

यह दोऊ भरे घरमें नेत्रनहीमें सब बात करत हैं सो सखी सखी सो कहति है ॥ सवैया ॥ जानत लालकि जानत बाल सखीहूं कहूं न लखी अनखातें । नचि है नारि निहारि प्रसिद्ध भौ मानु बसीठ दुहूंकी दिशातें ॥ चोरिही में चित चोरिबो जोहनि नैन निहोरिबो नेहकी घातें । रीझि रिसानि हँसी हठसों हम नैननही निबही सब बाते ॥ १६२ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० डीठि परत बाँधी अटनि, चढ़ि आवत न डरात।
इतें उतें चित दुहुन के, नट लों आवत जात १६३

यह दोउनके चित्त लगे हैं सुपरस्पर अपने अटापरते निंशक देखतहैं सो सखी सखी सो कहति है ॥ कबित्त ॥ नैनके झरोखे आनि डीठ न परत बांधि गाढ़े सुत जोरते तनाव कराखे हैं । अनमिल्यो तनमिले इभि फरि भाषत है ऐसो मन मिले मिलबो न अभिलाखे है॥ नटकी अटकी कहूं नट की सी कला कत ता ऊपर दौरि दौरि दोऊ रसचाखे हैं । बड़े बंस बीच रस रीतनसों बांधि राखे चढ़ि उतरत तेतौ उतरत भाखे है॥ १६३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जुरे दुहुन के दृग झमकि, रुके न झीने चीर।
हलकी फौज हरौल ज्यों, परत गोल पर भीर १६४

यह दोउन के नेत्र घूंघटकी ओट पेलकै मिल गये है सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ बैठी अलीगण मैं नवनागरि आयो तहां चलि प्यारो बिहारी। लालकी दीठि बचायबे को मुख घूंघट ओट करयो न निहारी ॥ नैनसों नैन उमंग मिले न रहै पटओट कितो पचिहारी । रोकिसकै न हरौल की फौज ज्यों गोलपै आनिपरै भरु भारी ॥ १६४ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दूख्यो खरो समीप कौ, लेत मानि मन मोद।
होत दुहुन के दृगन हीं, बतरस हँसी बिनोद १६५

यह दोऊ नेत्रनही मे वात करत है मिलिबेकोसो सुख मानतहै सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ प्रेमप्रभाव दुहूनके कैसेहूं मोपे वने न बखानत हैं। चारु कली चितचातुरीकी रस भाइभरी उर आनत है॥ यद्यपि दूर खरे उत ऊचे समीपही को सुख मानत है। तद्यपि होत हँसी वरु रानि सुदोउन के दृग जानत है ॥ १६५ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० उन हाँकी हँसि कै इतै, इन सौंपी मुसकाय।
नैन मिले मन मिलगये, दोऊ मिलवत गाय १६६

यह दोऊ गाय मिलवति मन मिलगये सो सखी सखी सों कहति है नायिका परकीया ॥ कवित्त ॥ उन हँसि हांकिये यहांकी है नईसी गाय मोपै न धराति काल्हि केते दुख दये है। इन मुसकाय कही भृकुटी नचाय येतौ गाय है हमारी ही लै और सब गये है ॥ मोहिं

भटकाय लाय आनहिं दिखावै आय इमि बतराय मनमथ छबि छये हैं । कहैं कविकृष्ण मिले बैननिसों बैन अरु नैनन सों नैन रीझि रसबश भये है ॥ १६६ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यदपि चवाइन चीकनी, चलति चहूंदिशि सैन ।
तदपि न छांड़त दुहुन के, हँसी रसीले नैन १६७

यह नायिका परकीया है सो दोउन के नेत्र देखत है तब हँसतही है सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ नेहकी घात लगी जबते तबते रस रीति रहै नहिं ढांकी । देखतही उर मोद भरै उर कौन करै कुलकान कहांकी ॥ यद्यपि सैन चलाय बसी उपहास समेत चलै चहुँघाकी । तद्यपि छांड़ न नैन दुहूँ के रसीली हसीर बिलोकनि बांकी ॥ १६७ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १२ लघु २० ॥

दो० झूठे जानि न संग्रहे, मन मुँह निकसे बैन ।
याही ते मानो किये, बातन को बिधि नैन १६८

यह दोऊ आपसही में बात करति है सो सखी सखीसों कहति है कवि की उक्तिहू होय ॥ कबित्त ॥ इत ब्रजराज को कुँवर रसराशि उत बीन बृषभानु की कुँवरि बरबानिकै । ठाढ़े हितबाढ़े आप अपने अटानिपै करत कटाक्ष मनमथ की कलानिकै ॥ बदनते निकसे ते झूठे होत मेरे जान बैनन को संग्रह करयो न यह जानिकै । परम प्रबीन दोऊ याही ते परस्पर लोचननही मे बतरात सुख मानिकै ॥ १६८ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चितवत जितवत हित हिये, किये तिरीछे नैन ।
भीजे तन दोऊ कँपत, क्योंहू जप निबैरन १६९

यह दोऊ परस्पर आसक्त हैं सो जप करत देखत हैं सखीसों सखी कहति है ॥ कबित्त ॥ यमुना के तीर नर नारिनकी भारी भीर तदपि निरख बिनु हरषे रहे न हैं । कहै कबिकृष्ण चित्तचौंपसों स्वगत अनुरागसों पगत उमगत मन मन हैं ॥ योंहीं दिन बितवत हियहेत जितवत चितवत चायसो तिरीछे किये नैन हैं । भीजे पट कंपत न काहू दे चपत दोऊ अधिक जपत क्योंहों जप निबरे न है ॥ १६९ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० घाम घरीक निवारिये, कलित ललित अलिपुंज।
यमुना तीर तमालतरु, मिलति मालतीकुंज १७०

यह नायिका परकीया वाग्बिदग्धा स्वयंदूती नायिका को बचन नायक सो ॥ सवैया ॥ चारु तमाल कलिन्दी के तीर उसीर सुगन्ध समीर हरै मन । मालतीमाल निकुंजनि में मिल गुंजत मत्त मधुव्रत के गन ॥ फूलनि के भरि झूमलता रही बेलि लगी लपटाय तमालन । कीजै विराम घरीक इतै यह आतप नेक निवारिये लालन ॥ १७० ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छ्वै छिगुनी पहुँच्यो गिलति, अति दीनता दिखाय।
बलिबावनकोब्योंतसुनि, कोबलितुम्हैंपत्याय १७१

यह नायक के चित्त की वृत्ति ललचौं देखि नायिका प्रीति बढ़ाइबे को कहत है पर सापराध देखि खंडिताहू कहै सो सम्भव है ॥ कबित्त ॥ झूठ काज को बनाय मिसहीं सों घर आय सेनापति श्याम बतियानि उघरत हैं । आयकै समीप कर हँसी सुसयान ही सों हँसि हँसि बातनहीं बांहको धरतहै ॥ मैं तो सब रावरे के बात जियमें की जानि जाके परपंच येते हमसों करत हैं । कहां ऐसी चतुराई पढ़ी आप यदुराई अंगुरी पकरि पहुँचे को पकरत हैं ॥ १७१ ॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० लाई लाल बिलोकिये, जियकी जीवन मूल।
रही भौन के कोन में, सोनजुही सी फूल १७२

यहि नायिका को सखी ले आई है सो नायकसो कहति है ॥ सवैया ॥ जाहि बिलोकिकै प्यारे बिहारी सम्हार तुम्है सब भूल रही है। आई सुजीवनमूल बिलोकिये तो हितसो अनुकूल रही है ॥ बैठी दुकूलमें अंग दुराय तऊ तनकी द्युति भूल रही है। चौधत लोचन भौनके कोनमें सोनजुही मनो फूल रही है ॥ १७२ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १२ लघु २० ॥

दो० रही पैज कीनी जु मैं, दीन्हीं तुम्हैं मिलाय।
राखहु चम्पक माल लौं, लाल हिये लपटाय १७३

यह सखी नायिका को लै आई है सो नायकसों कहति है ॥ कबित्त ॥ नैनन के तारेन मे राख्यो प्यारी पूतरीकै मुरलीज्यो लाय राखौ दसन बसनमें। राखौ भुजबीच बनमाली बनमालाकरि चंदन ज्यो चतुर चढ़ाय राखौ तनमे ॥ केशोराय कलकण्ठ राखी बलिकंठुलकै करमकरम क्योंहूं आनी है भवन मे। चम्पककलीसी बाल सूंघि सूंघि देवतासी लेहु प्यारेलाल इन्हे मेलि राखौ मन में ॥ १७३ ॥

मदकल अक्षर २५ गुरु १२ लघु २३ ॥ अथ समागम ॥

दो० दोऊ चाह भरे कछू, चाहत कह्यो कहै न।
नहिं याचक सुनि सूम लौं, बाहर निकसत बैन १७४

यह प्रथम दर्शनागम में लाज के अधिक दोऊ कछु कहिसकत नाही सो सखी सखीसो कहति है ॥ सवैया ॥ आज दुहूं मिलिकै सजनी मन-मोहन सांकरी खोर मिलायो। ठाढ़े ठगेसे रहै टक लायकै नेहको मेह तहीं बरसायो ॥ चाह भरे दोऊ चाह कह्यो कछू बोलत यो मुख

आव न पायो। सूम ज्यो आवै न भौनते बाहिर द्वार सुनै जबै याचक आयो ॥ १७४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कर समेट कच भुज उलटि, खये सीस पटु डारि।
काको मन बांधे न यह, जूरा बांधन हारि १७५

यह जूराबांधत नायिका नायक ने देखी सो सखी कहति है जाति वर्णन होय ॥ कबित्त ॥ नैन ऐन मैन कैसे बान खरसान धरे आनन की वोप कछू जैसे चन्दपूरे की। कनकलतासी भुज उरज उतंग गोरे खुलिखुभी कंचुकी सवज रंग रूरेकी ॥ कहै कबिकृष्ण मटकीली चारु-चितवन चटकीली चूनरी चटक चोखे चूरेकी। सीस पटु टारि भुज उलटि समेटि कच क्यो न मन बांधे बांकी बांधनि सु जूरेकी ॥ १७५ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० सहज सचिक्कन श्याम रुचि, शुचि सुगध सुकुमार।
गनत न मन पथ अपथ लखि, बिथरे सुथरे बार १७६

यह नायिकाके केशनकी शोभापै आसक्त नायक है सो सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ निंदतहै तमपुंज प्रभा जिनकी छबि हेरि शिली-मुख हारे। श्याम सुगन्ध सुभाय सचिक्कन सोहत सुन्दर लांबे लछारे ॥ मैन मनो अपने करिकै मखतूलके चीर बनाय सँवारे। देखतही मन थाकि रह्यो नवनागरि केश सुदेश तिहारे ॥ १७६ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० वेई कर ब्यौरन वहै, ब्यौरौ कौन बिचार।
जिनही उरझ्यो मो हियो, तिनही सुरझे बार १७७

यह नायककी आसक्ति नायिकाके हाथनपै है सो बार ब्यौरत देख नायक सखी सो कहत है ॥ सवैया ॥ पान लसे सरसीरुह से तिन

ऊपर मों दृग भौर भये हैं । केलि फिरोसी खरो सुथरी अंगुरी नख चंद प्रभानि छुये हैं ॥ वेही है हाथ वहै चलिबो कहि यामें बिचार कहाधौ ठये है । मेरो हियो उरझ्यो जिनसों तिन ब्यौरे नहीं सुरझे कच ये है ॥ १७७ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० छुटे छुटावत जगत ते, सटकारे सुकुमार।
मन बांधत बेनी बँधे, नील छबीले बार १७८

यह नायिका के बार पै नायक को मन रीझ्यो है सो नायिका सो कहत है अथवा सखी सों कहत है कबिहूकी उक्ति होय ॥ सवैया ॥ सोहत है सुकुमार महा उपमा को सिवार न लागत नेरे । मेचक लांबे सुगन्ध लसैं छबि देखत नेक फिरैं नहीं फेरे ॥ छूटे छुटावत है जगते इनके कछु कोटिक टोना से हेरे । नीरज नैनी कहा कहिये मनु बांधत बेनी बँधे कच तेरे ॥ १७८ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कुटिल अलक छुटि परत मुख, बढ़िगो इतो उदोत।
बंक बिकारी देत ज्यों, दाम रुपैया होत १७९

यह मुखपै बार छूटेते शोभा अधिक भई है सो सखीसो कहति है सखी नायक सों कहै नायिकासों कहै कबिकी उक्ति होय ॥ सवैया ॥ मान भुजंग निकंज चढ़ी मुख ऊपर एक छुटी अलकै यो । कारी महा सटकारी है सुन्दर भीजरही मिल सौधे नहीं यो ॥ लटी लटवाड़लकी ढिग वोर गई बढ़िकै छबि आननकी यों । आंक वही दिये दूजे बेकारिकै होत रुपैयन ते मुहरै ज्यो ॥ १७९ ॥

अहिषर अक्षर ४३ गुरु ५ लघु ३८ ॥

दो० खौरि पनच भृकुटी धनुष, बधिक सुमर तजि कान।

हनत तरुन मृग तिलक सर, सुरख भाल भरि तान १८०

यह नायिका कुलटा ललाट शृंगार है सो सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ कुंचित भौंह कमान कसे तिहिको जिहिके शिर खोरि बनाई । ताकूं लै तीर करयो तिल है सुरकै गहि तापर भाल लगाई ॥ खेलत यौवन के बनमे यह साज शृँगार मनोज अठाई । हेरि हनैं जु प्रबीन कुरंगन हीन दया उरकै कठिनाई ॥ १८० ॥

बारन अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नीको लसत ललाट पर, टीको जटित जराय ।
छबिहिं बढ़ावतरबिमनो, शशिमण्डल में आय १८१

यह ललाट पर टीको है ताकी उपमा सखी नायक सो कहति है कविकी उक्ति हू होय ॥ सवैया ॥ यौवनज्योति जगामग होति शृँगार प्रभा सरसावत है । रीझरहै लखि लालके लोचन मोद हिये भर आवत है ॥ सोहत वांको जराय जरयो तिय भाल महाछबि छावत है । मानहुं चन्द्रके मण्डल मे दिननायक शोभा बढ़ावत है ॥ १८१ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० झीने पट में झलमली, झलकति ओप अपार ।
सुरतरु की मनु सिन्धु में, लसी सुपल्लव डार १८२

यह झुलमलनिको बर्णन है सो उपमा सखी नायक सों कहै सखी सों कहै कविकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ जाके करणाभरण वृष के दिवाकर से नयनदी वरण की छवि सरसाति है । अधर सुधाधर सुधाधर से वदनमें फिलकति ललित कपोलन की काँति है ॥ अंतर ललित झीने बसन मे झलमली कहैं कविकृष्ण झलकत ऐसी भाँति है । मेरे जान सागर में डार कलपद्रुमकी पल्लवानि सहित प्रगट दरसाति है ॥ १८२ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तिय मुख लखि हीरा जरी, बेंदी बढ़त बिनोद ।
सुत सनेह मानो लियो, बिधुपूरन बुध गोद १८३

यह नायिका के भाल में हीरेकी बेंदी है सो सखी शोभा उपमा नायक सों कहति है ॥ कवित्त ॥ कनकबरण तन जगर मगर होत सो उपज बास भौन आस पास कीनो है । सकल सकेलरूप बिरचि बिरंचि बाल खीन कटि कठिन उरोजयुग पीनो है ॥ ललित ललाट पर हीरा की लसत बेंदी कहै कविकृष्ण देखे मनु नेह भीनो है । मेरे जान मोदभरि अधिक सनेहकरि पूरन मयंक भरि अंक बुध लीनो है ॥ १८३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कहत सबै बेंदी दिये, आँकु दशगुनो होत ।
तिय ललाट बेंदी दिये, अगणित बढ़त उदोत १८४

यह बेंदी दियेते मुखकी शोभा अधिक बढ़ी है सो नायक सखी सो कहै अथवा सखी नायक सों कहै कविकी उक्ति होय ॥ कवित्त ॥ यौबन मो मिलि जगमगत अपार ओप महामुनिहू को मन देखे रसभोत है । कहैं कविकृष्ण छबि पुंजन सों छाजिरह्यो सरस शृंगार बरसत सुधासोत है ॥ सब कोऊ ऐसीही कहत महिमण्डल मे बेदी के दियेते आंक दशगुनो होत है । वह नरनागरि के ललित लिलार पर बेंदी लगी अगणित बढ़ो सुउदोत है ॥ १८४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पँचरँग रँग बेंदी खरी, उठत ऊगि मुख जोति ।
पहिरे चीर चनोठिया, चटक चौगुनी होति १८५

यह नायिका नायक ने जैसी छबि देखी है तैसी भांति सखी सों

कहति है ॥ सवैया ॥ बेंदी लिलार लसे पँचरंग लसे बिडरे कच कुंचित भौंहै। अंजनरंजित दीरघनैन बड़े गथके मुकता नथ सोहै ॥ चीर त्वनोठिया में चमकै कछु गोरो अगोटि उरोज उठो हैं। भेदकी बात लखी बतरात परोसिनि सोहै कपोल हँसो हैं ॥ १८५ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० भाल लाल बेंदी ललन, अक्षत रहे बिराज।
चन्द्रकला कुजमें बसी, मनो राहु भय भाज १८६

यह शिखनख मे ललाट बेदी आखतन की शोभा है सो सखी नायकसों कहति है अरु कबिहू की उक्ति होय ॥ कबित्त ॥ उदय समय केरे राका चन्दसों बदन तैसेई तरुनकी उमंग गोरे रंग मे। कंचनकी नारी बारी काफरेजी सारी तामें दुरयो दरशतु कच बूंदत उमंग में ॥ भालपर रोचनको विन्दु छबि देत तामें अलख लसै ज्यों गंग सरसुती संग मे। त्रासु मानि तमको सुधाकरकी कला मानों बसी है निशंक ह्वै अवनिसुत अंग में ॥ १८६ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० भाल लाल बेंदी छये, छुटे बार छबि देत।
गह्यो राहु अति आहकरि, मनुशशि सूरसमेत १८७

यह नायिका के ललाटपै बेदी है अरु तापर बार छूटे है सो शोभा सखी कहति हैं नायकसो अथवा सखीसों कबिहूकी उक्ति होय ॥ सवैया ॥ रमें रुचिसों रति संपति दंपति कान्ति दुहूंकी तहां सरसी। बृषभानुसुता घन में जिमि दामिनि श्याम के संग सुरंग लसी ॥ क्रीड़त बार छुटे इकत्रार तिरयोना ढपै मुख ओप गसी। मनो रोषसों दोऊ गहे स्वरभानु अचानक आनि कै भानु शसी ॥ १८७ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

सो० मंगल बिन्दु सुरंग, मुख शशि केसरि आड़ गुरु।
इक नारी लहि संग, रसमय किय लोचन जगत १८८

यह शिख नखमें ललाट शृंगार है सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ मंगल बिन्दु सुरंग बिराजत भामिनि भाल महाछबि छायो। आनन चन्द्रकला परिपूरण केसरि आड़ मनों गुरु आयो ॥ कृष्ण कहैं इक नारी मे आई मनो परिपूरण योग लखायो। नैन भरे रस की बरषा करि चैनसमूह हिये उमगायो ॥ १८८ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हाहा बदन उघारिदृग, सफल करैं सब कोय।
रोज सरोजन के परैं, हँसी शसी की होय १८९

यह मुख बर्णन है सो सखी नायिका सो कहै है नवोढ़ा के प्रसंग मे बनै मान छुड़ायबे को कहै तो बनै ॥ कबित्त ॥ लोचन लहे को फल सफल हमारो करि प्यारी प्राणप्यारे को सनेहरस लीन करि। तैंहीं पाई परम निकाई की अवधि अब ये तो बृषभानु की कुँवर अरबीन करि ॥ टारि पट घूंघट को हाहा हे उघारि मुख निजछबि पानिप मे पीके नैन मीन करि। कंज छबि छीन करि शशिहि मलीन करि सौतिन को दीन करि प्यारे को अधीन करि ॥ १८९ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥ डिठौनाबर्णन ॥

दो० लौने मुँह डीठ न लगै, यों कहि दीनों ईठि।
दूनी ह्वै लागन लगी, दिये डिठौना डीठि १९०

यह डिठौना को बर्णन नायक सखी सो कहै नायिका सो कहै सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ तोहिं लखे रतिकी द्युति लाजत राजत ओप शृँगार कियेते। भौहनकी बरणी न परै छबि मोहन न्यायही मोल लिये ते ॥

सुन्दर आनन डीठि न लागे कह्यो अलि यों हित मान हिये ते । तो मुख तैं अब लागन लागीरी दूनी है डीठि डिठौना दियेते ॥ १९० ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु १३ लघु २६ ॥

दो० सूर उदित हू मुदित मन, मुख सुखमा की ओर । चितैरहै चहुँ ओर ते, निहचल चखन चकोर १९१

यह मुख वर्णन सखी नायिकासो कहै ॥ कबित्त ॥ सुखको समूह वृषभानु की कुँवरि तेरे मुख को प्रकाश जगमगत अमन्द है । याहिते विलोकि छवि हरषि लटू है भटू भांवरी भरत फिरै प्यारो नँदनन्द है ॥ धोसहू निशाको रहै बिधिन बिनान कछु देखे उमगत अति आनन्द को वृन्द है । सकल बिलास छोड़ि एक आश लगे रहैं भौर जाने कमल चकोर जाने चन्द है ॥ १९१ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० पिय तिय सों हँसि कै कह्यो, लख्यो डिठौना दीन । चन्द्रमुखी मुखचन्द्र ते, भलोचन्द्रसमकीन १९२

यह डिठौना वर्णन नायक नायिकासो कहै अथवा शृंगारकर्त्ता सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ प्यारी को चारु शृंगार निहारि हिये पति के अति मोद भरयो है । चाहिचषोड़ा कही मुसकाय सही बिधिरूप सकेल धरयो है ॥ जा मुखकी अकलंक प्रभा सकलंक मयंक खरो निदरयो है । सो मुखतें वे डिठौनादे आजु भलो यह चन्द्र समान करयो है ॥ १९२ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० छप्यो छबीली मुख लसैं, नीले अंचल चीर । मनौं कलानिधि झलमलै, कालिंदी के नीर १९३

यह नायिका के मुख को वर्णन सखी नायकसो कहै है नायिकाहू सो कहै है ॥ कबित्त ॥ भावती तिहारी को गईही लैन गिरिधारी ताहि

देखे मेरो मन परयो छबि भीर में। कृष्ण प्राणप्यारे सुखकारे की लुनाई होत जगर मगर वाके सोने से शरीर में॥ खंजन भँवर बिम्ब कीर की प्रभा निदर बदन दुराय बैठी झीने नीले चीर मे। मेरे जान पूरण कलानिसों झलमलात परत सुधानिधि कलिन्दजाके नीरमे॥१९३॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४।

दो० किय घायल चित चारु लगि, बजि पायल तुव पायँ।
पुनिसुनिसुनिमुखमधुरधुनि, क्यों न लाललचायँ १९४

यह नायिका की आसक्ति जानि सखी नायकसों प्रीति बढ़ायबेको कहति है बाणीबर्णन॥ कबित्त॥ गजगति तेरी हरी लटू तबहींते भयो तापै सुनी पायलकी झनक सुहाईरी। तबहींते वाके उरलागी अति चटपटी तुव मिलबे को ललकतु है कन्हाईरी॥ बीनाके सुरनहूते मधुर सरस धुनि काल्हि कतहूँ ते उन बानी सुनि पाईरी। काहेते न वाके उर मदन मरूरि उठै कहोसेही कहन जरूर तोसों आईरी॥१९४॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० छिनकु छबीले लाल वह, नहिं जौ लगि बतरात।
ऊष महूष पियूष की, तौलगि भूख न जात १९५

यह नायिका के बातकी मधुराई सखी नायकसो कहति है॥ सवैया॥ जाके सुने धुनि बीन कहा गहि लाज पिकी बन भागत है। जो सुनिकै कबिकृष्ण कहैं मुनि की मनसा अनुरागत है॥ जौलो छबीले लला तुमसो वह बाल न बातन पागत है। तौलों महूष पियूषकी ऊषकी भूख न कैसेहुँ भागत है॥१९५॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० जरी कोर गोरे बदन, बड़ी खरी छबि देख।
लसत मनो बिजुरीकिये, शारद शशिपरिबेख १९६

यह नायिका के मुखपै किनारी की शोभा नायक सखीसों कहत है ॥ कवित्त ॥ पून्योसी तिहारी लाल प्यारे मै निहारी वह तारेसम मोतिन शृंगारही को साजिकै । झीनो पट गोरोगात चँदनीसी अवदात लोचन चकोरनको देखे दुखभाजिकै ॥ सेनापति तन सुखसारी की किनारी वीच नारी के बदन अछि छबि रही छाजिकै । पूरणशरदचन्द बिम्ब ताके आसपास रह्यो है अखण्ड मानो मण्डल बिराजिकै ॥ १९६ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नासा मोर नचाय दृग, करी कका की सौंह ।
कांटे सी कसकत हिये, गड़ी कटीली भौंह १९७

यह नायिकाकी भौंह नचायवेकी चेष्टा देखि नायक सखीसो कहत है ॥ सवैया ॥ मोतन हेरि परोसिन सों बतरात कछू बनते रसछाकी । एक रती रतिकी द्युति होत न वाकी निकाई लखे समताकी ॥ नाक चढ़ाई उँचायके ओठ नचाय करी दृग सौंह ककाकी । वा छबिकी वे कटीली सी भौंह करेजे में शूलसी सालत वाकी ॥ १९७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ नेत्र बर्णन ॥

दो० वारों बलि तो दृगन पर, अलि खंजन मृग मीन ।
आधी डीठि चितौन जिहि, किये लाल आधीन १९८

यह नायिकाके नेत्रनकी अधखुली चितवन देखि नायक आधीन भयो सो सखी नायकसों कहै ॥ कबित्त ॥ कारे झपकारे रतनारे अनियारे सोहैं सहज ढरारे मनमथ मतवारे हैं । लाज भरि भोरे भारे चपल तिहारे तारे सांचे कैसे ढारं प्यारे रूपके उधारे है ॥ आधी चितवन ही में आधीन किये तै हरि टोनेसे वशीकरके लोने ये निहारे है । कमल कुरंग मीन खंजन भँवर वृषभानु की कुँवरि तेरे नैननपै वारे है ॥ १९८ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० चमचमात चंचल नयन, बिच घूंघट पट झीन ।

मानहुँ सुरसरिता बिमल, जल उछलत युगमीन १९९

यह नायिका के नेत्रन की शोभा सखी नायकसों कहै नायकहू नायिकासों कहै सखी सखीसों कहै छन्दउपजाति ॥ कवित्त ॥ रूपकी रसाल आज देखी ब्रजबाल एक केती शोभासनी वाके सोनेसे शरीर मे । टारयो न टरत वह भाव मो हियेमे क्योंहूं बैठी मुख ढांकि गुरुलोगनकी भीर में ॥ कहै कबिकृष्ण अति चहल बिशाल बांके लोचन युगल झलकत झीने चीर मे । क्यो न मन होय छबि निरखि अधीर बिम्ब मीन उछलत मानो सुरसरि नीर में ॥ १९९ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० करे चाह सों चुटकि कै, खरे उड़ोहैं मैन ।
लाज नवाये तरफरत, करत खुदी से नैन २००

यह नायिका के नेत्र लाज अरु चाह दोउनके बश खुदीसी करत हैं सो सखी सखीसो कहतिहै नायिकाहूसो कहै ॥ कवित्त ॥ नैन नवनागरिके कोतल तुरंग अंग छबि की तरंग रंग रंगन धरै धरैं । मदन प्रबीन तिन्है फेरित्रो सधावत हैं घूंघटकी ओट ऐसे कौतुक करै करै ॥ कीने चाह आवगीसों चूकि कै चपल होत खरोई उड़ोहै ते उमग सों भरै भरै । लाज बागबस है तरफरात ताइभरे करत खुदीसी पग धरत हरै हरैं ॥ २०० ॥

मच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो०शायक सम घायक नयन, रँगे त्रिबिध रँग गात ।
झखौ बिलखि दुरिजातजल, लखि जलजात लजात २०१

यह नायिका के नेत्रनकी शोभा सखी नायकसो कहै ॥ कबित्त ॥ शायक से घायक है तीखन तरल दृग श्वेत श्याम अरुण त्रिविध रँगे गात है । कहै कबिकृष्ण जाके उरमे भिदत ताहि सुधि न रहत गात

घूमि घननात हैं ॥ येते पर भौहैं ये विषम बिष अंजन सों याहीते विशेष विथा उर सरसात है । सफरी विलोकि जल विलेखि, दुरित मृग भटकत विपिन लजात जलजात है ॥ २०१ ॥

मद्रूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० बर जीते शर मैन के, ऐसे देखे मै न ।

हरिनी के नैनान ते, हरि नीके ये नैन २०२

कवित्त ॥ चेरे कीने खंजन कसेरे कीने कंजपुंज उपमाको नेरे अलि-रंचक लगे न है । सोहत विशाल ये रसाल साल सौतिन के देखे मनुहरत करत चित चैन हैं ॥ चपल कटाक्षबर जीतत मदन शर सुख के निकर और देखे ऐसे नैन है काम दुखदन्दनीके वृषभानुनन्दनीके हरिनीके नैननते हरि नीके नैन है ॥ २०२ ॥

पयोधर अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३ ॥

दो० रस शृँगार मज्जन किये, कंजन भंजन दैन ।

अंजन रंजन हूं बिना, खंजन गंजन नैन २०३

यह नायिकाके नेत्रनकी शोभा सखीसों नायक कहै नायिकाहूसों कहै नायिका नायक सो कहै सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ कंजकुरंग गुमा-नन गंजन पीमन अंजन है अनियारे । खंजन मीननके मदभंजन अंजन हूं विन ये कजरारे ॥ लाज समाज सुशील हँसी रसरंगभरे विधि मैन सुधारे । कृष्ण कहा उपमा कहिये तिय या जगमे दृग तेरे उजारे ॥ २०३ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० योग जुगत सिखये सबै, मनो महामुनि मैन ।

चाहत पिय अद्वैतता, सेवत कानन नैन २०४

यह नायिका के नेत्रनकी शोभा अरु तरुणाईको विलोकि पियकी चाह सखी नायकसों कहति है सखी सखीसों कहै ॥ कवित्त ॥ लीनो

उपदेश महामुनि मीनकेतको धौ योग कला कुशल बिमल त्रिलसंत है। तन मन मोहनसो एक भयो चाहत है कानन को सेवत जगत ज्योतिवंत है॥ कृष्णप्राणप्यारे की दुहाई जिन्है देखतही बिरह कलेश दुख सकल निहंत है। सरल सुभाई उरमांझ धरे श्याम छबि प्यारी तेरे नैन मनहरन महंत है॥ २०४॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० सब अँग कर राखी सुघर, नायक नेह सिखाय।
रस युत लेत अनन्तगत, पुतरी पातुरराय २०५

यह नायिका की पुतरीन की शोभा अरु नेह की अधिकाई सखी नायक सों कहति है॥ सवैया॥ चारुप्रभा पलकै झलकैं मृदु पीतण्टी पहरे सुथरी है। नायक नेह सिखाय सबै रसभेद सुधाय प्रवीन करी हैं॥ कृष्ण कहैं अतिचाइन सो गतलेत मनो बहुभाय भरी है। लेत रिझाय मनैं अतिचातुर पातुरराय किधौ पुतरी है॥ २०५॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० लागत कुटिल कटाक्ष शर, क्यों न होहि बेहाल।
कढ़त जु हिये दुशाल कर, तऊरहत नटशाल २०६

यह नायिकाके नेत्र नायक के हृदय मे खुभे है सो सखी नायिका सो कहति है नायक सखी सो कहत है नायिका सखी सों कहै॥ कवित्त॥ भिदे सूधे तीर तेतौ तनको बढ़ावैं पीर जानि यह बात जिय सकल डरात है। लागे ब्रजनागरि के कुटिलकटाक्ष शर क्यो न होहिं बिकल बिहाल सबगात है॥ विक्रमनिधान अति पारथ के बानहूते मेरे जान इनके अनोखे उतपात है। देखिये न धाय उरकटक दुशालकर येतेपर देखो नटशाल रहिजात है॥ २०६॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥ नासावेधवर्णन॥

दो० बेधत अनियारे नयन, बेधत करन निषेध।

बरबट बेधत मोंहियो, तो नासा को बेध २०७

नायिका की शोभा नायक नायिकासो कहत है ॥ कबित्त ॥ तेरे अनियारे नैन बेधत बिराने मन कौन अचरज पैन सहज सुभायकै । तोहिं निरखत वृषभानु की कुँवरि अद्भुतकी तरंगरही मेरे उर छायकै ॥ सोहैं किधौं नेहकी निकाई को निकेत किधौं सुख मधुकरने सुरुचि कीनी आयकै । बरबट मेरो हियो बेधत है प्यारी तेरी नासिकाको बेध मन रहै क्यों थिरायकै ॥ २०७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बेसर मोती द्युति झलक, परी अधर पर आय ।
चूनो होय न चतुर तिय, क्यों पटु पोंछ्यो जाय २०८

यह नायिकाके ओंठ ऐसे उज्ज्वल है जो मोती की झलक ललाई के मध्य श्वेत झलकति है सो यह चूनो जानि पोंछत है सखी याकी भ्रांति दूर करति है अथवा नायिका झलक देखि निश्चय करति है सो सखी कहति है जो नायिका सखी सों कहै तो रूपगर्बिताहू होय ॥ सवैया ॥ आज शृंगार बन्यो तिय तेरो जगामग ज्योति समूह भरै । देखत आरसी बारहीबार हिये हरिको कहि क्यों न हरै ॥ वेसरके मुकता की प्रभा अति उज्ज्वल आनि परी अधरै । होय न चूनो लग्यो मृगलोचनि क्यों पटसों अब पोंछपरै ॥ २०८ ॥

त्रिकल अक्षर २९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० इह द्वैही मोती सुगथ, तू नथ गरब निशाँक ।
जेहि पहिरे जग दृग ग्रसति, लसत हँसत सी नाँक २०९

यह नायिकाके नथकी शोभा सखी कहति है अन्योक्ति कबित्तहू में बनै ॥ कवित्त ॥ सुरनसमेत शुभ नाकहीते कहाति मुकतनि युत मुकति पुरीसी दीसति है । कहैं कविकृष्ण मनमोहन के मोहिवे को मोहनीकी

सिधिमान शोभा सरसतिहै ॥ तोहिं पहरेते जग नयन ग्रसति अति छबि बरसत मानों नासिका हँसति है । अहेनथ उर में निशाँक तू गरबकरि द्वैही मुकता के मोल हँसति लसति है ॥ २०९ ॥

बारन अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० जटित नीलमणि जगमगति, सींक सुहाई नाँक ।
मनो अली चम्पक कली, बसि रस लेत निशाँक २१०

यह नायिका की सींक पहिरेते सुशोभा भई सो उपमा सखी सखी प्रति कहत है सखी नायक सो कहति है नायिकाहू सों कहै ॥ कबित्त ॥ पूरण मयंक कैकि अंक मे लसत कीरु नैक निरखतही हरत चितचेत है । प्रफुलित पंकज पै सोहै करहाट किधौं तिलको सुमनु सुख सौरभ समेत है ॥ नीलमणि जटित छबीली तेरी नाकपर सींक यों लसति महा शोभा को निकेत है । मेरे जान मुकुलित चम्पककी कलिकापै बैठ्यों अलि सांकु सो निशाँक रस लेत है ॥ २१० ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यदपि लौंग ललितो तऊ, तू न पहर इक आँक ।
सदा शङ्क बाढ़ी रहै, रहै चढ़ी सी नाँक २११

यह नायिकाकी नाक में लौंगहै ताकर नाक चढ़ीसी दीखत है सो सखी नायिकासों कहति है ॥ कबित्त ॥ किधौ है बदनछबि दीपको सुमेरु जाकी जगर मगर ज्योति पूरण प्रकासिका । किधौं कबिकृष्ण चारु चम्पक की कलिका है सहज सुगन्ध निकसत जाते श्वासिका ॥ तदपि लवंग अतिललित लसत तऊ तू मतपहरि डरपति उर दासिका। मानके भरम भूलि मोहन बिलोकि रहे मृगनैनी निरख चढीसी तेरी नासिका ॥ २११ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सालत है नटशाल सी, क्योंहूं निकसत नाहिं ।

मनमथ नेजा नोकसी, खुभी खुभी जिय माहिं २१२

यह नायिकाकी खूबीकी शोभा नायक सखीसों कहत है ॥ सवैया ॥ राधिका प्यारी के आननपै छबि तीनहूं लोककी आनि गुभी है । मैं निरखी जबते तबते मन मेरो लुभाइ तहांही चुभी है ॥ रूपके बोहथ कान मे वाके बिराजत ओप अनूप सुभी है । सालत है जु मनोज के नेजेकी नोक मनो उरमांझ खुभी है ॥ २१२ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लसत सेत सारी ढप्यो, तरल तरयोना कान ।
पस्यो मनो सुरसरि सलिल, रबि प्रतिबिम्ब बिहान २१३

यह तरयोना बर्णन सखी को बचन नायकहू को बचन कबिहूकी उक्ति होय ॥ कबित्त ॥ सुन्दरसुकुमार बाल चलति मराल चाल अंग अंग भूषन समूह बरसत है । कँदरप दरपन लसत कपोल फल बलदेव सुखमा समूह बरसत है ॥ नगमणि जटित जरायको तरौना तामे ताकी झलकनि ऐसी भाउ परसत हैं । सुरकांति मणि की मयूषन सों मिल्यो एक प्रभाकर मानों प्रतिबिम्ब दरसत है ॥ २१३ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० तरवनि कनककपोल द्युति, बिच बीचही बिकान ।
लाललाल चमकत चुनी, चौका चिह्न समान २१४

यह तरवनिकी शोभा सखी नायकसो कहै तो सुरतगोपना होय ॥ कबित्त ॥ आजकी बनक बरणत न बनत तेरी छबिकी छटान की घटासी उमँगति है । दमकत सरस शृँगारकी अपार ओप यौबनकी कांति जगाज्योतिसी जगति है ॥ कनक तरयोननुकी ललित कपोलन की द्युति मे समायगई अदभुत गति है । कृष्णप्राणप्यारे कीसी चारु चमकति ये तो लाललाल चुनी चौका चिह्न सी लगति है ॥ २१४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० लसै मुरासा तिय श्रवण, यों मुकतन द्युतिपाय ।
मानो परस कपोल के, रहे स्वेद कन छाय २१५

यह मोतिन को मुरासा को बर्णन करिकहै तो लक्षिता जानिये ॥ कबित्त ॥ आज नवनागरीकी आगरी बिलोकी छबि देखबेको नैन ललचाय ललकत है । कहैं कबिकृष्ण वही बानिक बिलोकि ठगे रीझि-पगे तबते लगत पुलकत हैं ॥ आननकी छबि लखि चन्दद्युति मन्द होत ताइपै अनोखे चिह्न अति सरसत हैं । मेरे जान परस कपोल इनहूं के उर लह्यो है प्रस्वेद तेई बूंद झलकत हैं ॥ २१५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नखशिख रूप भरे खरे, तो माँगत मुसकानि ।
तजत न लोचन लालची, ये ललचौहीं बानि २१६

यह नायिका अथवा नायक मुसकान देख्यो चाहत है सो अपने नेत्रकी आसक्ति कहत है ॥ सवैया ॥ देखतही अनिमेषरहे उमड़े से परे न बिचारतगोहूं । रावरे रूप अनूपसो पूरि रहेहैं जऊ नखते शिख-लोहूं ॥ मांगत है इतने परतो मधुरी मुसकानि अघात न त्योंहूं । नैन भये अति लालची ये ललचानकी बान न छांड़त क्योंहूं ॥ २१६ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेक हँसौहीं बानि तजि, लख्यो परत मुख नीठि ।
चौकाचमकनि चौंध में, परत चौंध सी दीठि २१७

यह अकारण हँसी जानि गुरु सखी नायिकासों शिक्षाके प्रसंग में चौका की चमक की बड़ाई करै अथवा नायकहू नायिका सों कहै तो सम्भव है ॥ कबित्त ॥ तैसीये जगति ज्योति शीश शीशफूलन की चिलु-कत तिलक तरुनि तेरे भाल को । तैसीये दशनद्युति दमकत केशोराय

तैसोई लसत लाल कण्ठ कण्ठमालको ॥ तैसीये चमकचारु चिबुक कपोलन की झलकत तैसो नकमोती चलचाल को । हरे हरे हँसि नेक चतुर चपल नैन चितु चकचौंधे मेरे मदनगुपाल को ॥ २१७ ॥

मर्कट अक्षर ३२ गुरु १७ लघु १५ । ठोढ़ीगाड़बर्णन ॥

दो० डारैं ठोढ़ी गाड़ गहि, नैन बटोही मारि ।
चिलक चौंधमें रूप ठग, हांसी फांसी डारि २१८

यह ठोढ़ीकी गाड़को वर्णन नायक नायिकासों कहै ॥ सवैया ॥ केशन के बन के उपकूल तहीं भृकुटी गिरिओट बिचारै । चारु लिलार शिगार की चौध में देत प्रचण्ड दगा नहिं हारै ॥ फांसी गरे मुसकानकी पारिकै ठोढ़ी की गाड़ कुवां गहिडारै । प्यारी महाठग तेरो स्वरूप दया तजि नैन बटोहिन मारै ॥ २१८ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ललित श्याम लीला ललन, बढ़ी चिबुक छबि दून ।
मधु छाक्यो मधुकर पर्‌यो, मनो गुलाबप्रसून २१९

यह नायिका की ठोढ़ी पै लीला की शोभा सखी नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ कुंकुम गारि कियो मनुतेह महासुकुमार सुगन्धको भौना । रूप सुधाभर्‌यो चन्दसो आनन लाललसै मनको ललचौना ॥ ठोढ़ी की गाड़ में श्यामलबिन्दु निहारत वाहि थके मनु गौना । कै मधुपान गुलाब के फूलमे मत्तपर्‌यो मनो भौर को छौना ॥ २१९ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० खरी लसत गोरे गरे, धसत पान की पीक ।
मनो गुलीबँद लालकी, लाल लाल द्युतिलीक २२०

यह कण्ठ वर्णन है सुकुमारता सखी नायक सों कहै ॥ सवैया ॥

प्यारे मैं पियारी तिहारी लखी नखते सिखलौं सु निकाई भरी है। केशरिकी सुकुमारि मनो छबिपुञ्जसो ओप बिरांचि करी है॥ गोरीके गोरे गरे मनु मोहति सोहति पीक की लीक खरी है। चीर गुलीबँद लालको लाल मनो द्युतिकी प्रतिलीक परी है॥ २२०॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० कुच गिरि चढ़ि अति थकित ह्वै, चली डीठ मुख चाड़।
फिर न टरी परिये रही, परी चिबुक की गाड़ २२१

यह अंग देखत देखत दृष्टि ठोढ़ी की गाड़में जायपरी सो टरति नाही सो नायक अपनी अवस्था नायिका सो कहै अथवा सखी सो कहै॥ सवैया॥ दीठि नदी त्रिबली तिरनीठि रुमावलि काननते निकरी है। पीन उरोज पहार चढ़ी अति थाकि तऊ न वहां ठहरी है॥ चाहि चली मुखमण्डलकी छबि बीचहीले बिधि ऐसी करी है। ठोढ़ी की गाड़ गढ़ेमें परी सुपरी ये परी न तहां ते टरी है॥ २२१॥

त्रिकल अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० चलन न पावत निगम मग, जग उपज्यो अतित्रास।
कुच उतंग गिरिवर गह्यो, नैना मैन मवास २२२

नायक नायिकासों कहै सखी कहै तौऊ बनै॥ सवैया॥ लूटत माल मुनिन्दनके मन ज्ञान बिसांतलेको निबह्यो है। वेदको पन्थ चलै कहि कैसे सबै जगमें अतित्रास चह्यो है॥ कृष्ण कहै त्रिबली सरिताए मिली बनपास गढ़ा सुलह्यो है। ऊंचे उरोजपहार के छोर मनोजमहीप मवास गह्यो है॥ २२२॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० दुरत न कुच बिच कंचुकी, चुपरी सारी सेत।
कबि आंकन के अरथलों, प्रगट दिखाई देत २२३

यह कंचुकीके बीच कुच शोभायमान है तिनकी प्रभा देखि नायक नायिकासों कहै सखी नायिका सों कहै नायकसो कहै ॥ कबित्त ॥ कंचनवरन मनहरन अडोल गरु वैसे गोल गोरे शीश श्यामता धरतु है । उन्नत करेरे खरे चिकने सुनाई भरे मदन बशीकरसे मनको हरतु हैं ॥ ऐसे कुच झीनी सित कंचुकी तलांछीमांझ प्यारी ये दुराये न दुरत उघरतु हैं । कहै कवि कृष्ण जैसे सुकबि के आंकन में अरथ उमंग डीठि प्रकट परतु हैं ॥ २२३ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० उर मानिककी उरबशी, निरखि घटत दृग दाग ।
छलकत बाहिर भर मनों, तिय हिय को अनुराग२२४

यह उरबशीकी शोभा सखी नायिकासों कहै याके अनुरागकी पूर्णता प्रकट करति है जो सखी नायिकासों कहै तो तियपदतें संबोधन होय नायिका लक्षिता ॥ कबित्त ॥ हिये आलबालते प्रकट कोकनद फूल्यो किधौं अनुराग आभा उमगी है सरवर । ईश्वर सुमति किधौं भोरही उदित भानु बैठी चक्रवाकन के प्रेमको प्रकट कर ॥ मोतिन की माल सोहै गंगाजूकी धारा ताभे ध्यान लाय तीसरो नयन खोलि दीनो हर । मानक नियम कुचअग्र उरबशी मोहै मंगल मुदित मानों मेरुके शिखर पर ॥२२४॥

नर अक्षर ३९ गुरु १५ लघु २४ ॥

दो० बड़े कहावत आप सों, गरवे गोपीनाथ ।
तो बदिहों जो राखिहो, हाथनु लखि मनु हाथ २२५

यह नायिकाके हाथकी शोभा सखी नायकसों कहति है ॥ कबित्त ॥ सिन्धु मथि शशि शशि मथि नख वाके नेही कीने है सुरति कहै कबि पतियाइहै । चीर के कलपतरु कांये आंगुरीन करी मन होत वहि मनचिंते फल पाइहै ॥ कमला हियेके कंजदलकी हथेरी कीनी तापर भँवर भये

भांवरेही खाइहै। हों तो त्रिभुवननाथ जानि होपै ऐसे तिय हाथन निरखि जब हाथनि बिकाइहै ॥ २२५ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० नख रुचि चूरन डारिकै, ठगु लगाय निज साथ।
रह्यो राखि हठ लै गयो, हथा हथी मनु हाथ २२६

हाथकी शोभा देखि नायकको मनु याके हाथ नाहीं रह्यो सो नायक अपने मन की गति सखीसों कहत है नायिकाहू सों कहै ॥ सवैया ॥ बूंद लसै मेहँदीके सुरंग उही अरु नायक रग रचेकै। रेख वशीकरमन्त्र दिखायके साथ लगायलियो अपनेके ॥ चारु नखद्युति चूरन डारि अधीन कियो बहु भांति भुरेके। राखेहूं पै न रह्यो मम हाथ हथाहथी हाथ गयो मनु लेके ॥ २२६ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० गोरी छिगुनी अरुन नख, छलाश्याम छबि देय।
लहति मुकाति रति पलकु यह, नैन त्रिबेनी सेय २२७

यह नायिकाकी अँगुरीकी शोभा नायक कहत है ॥ सवैया ॥ कोबरी गोरी लसै छिगुनी अरु लालप्रभा नखकी सुखदैनी। तापर श्यामछलाकी फबी छबि नैननकी लखि लागत ऐनी ॥ लोचन संत लहै रतिमुक्तनि सेवक देखतही मृगनैनी। तो कर माहिं बिराजत है यह तीरथराजकी रीति त्रिबैनी ॥ २२७ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० बढ़त निकसि कुच कोर रुचि, कढ़त गोर भुज मूल।
मनु लुटिगो लौटनु चढ़त, चौंटत ऊंचे फूल २२८

यह नायिका जा छबिसो देखी है सो नायक सखीसो कहत है ॥ सवैया ॥ बन आजु लखी वृषभानुसुता जग ज्योति रही चहुँकूलन की। चिंहुटी

चित में उकसाये भुजा वह चौटनि ऊबित फूलन की ॥ वढ़ती कढ़बे कुच-कोरनकी रुचि चारुप्रभा भुजमूलन की। लटिगो मनु लौट बिलोकतही छवि मोहिं न कैसेहुँ भूलन की ॥ २२८ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० करउठाय घूंघट करत, उसरत पट गुझरोट ।
सुख मोटै लूटी ललन, लखि ललना की लोट २२९

यह नायिकाकी लौटकी शोभा नायकने देखी है सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ जातिही बाल गली में अलीसँग आवत मोहन देख्यो अगोटै । ज्यो छिये घूंघट हाथ उठायकै त्यो उसरी पटकी गुझ-रोटै ॥ सो छवि मोपै कही न परै कछू कौरिन कोर लुटी सुखमोटै । लाल लह्यो अतिमोद हिये नवनागरिकी निरखी जब लोटै ॥ २२९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ । कटि वर्णन ॥

दो० लगी अनलगी सी जु बिधि, करी खरी कटि खीन ।
किये मनौ वेही कसरि, कुच नितम्ब अति पीन २३०

यह नायिकाकी कटि योवनके आयेते घट वढ़ ह्वैगई है सो सखी नायकसों कहति है कविहूकी उक्ति होय ॥ कबित्त ॥ रूपसांचे ढारे रचिपचिकै सुधारे विधि अंगअंग सकल सुदेश रसभीने है । तापै तरुणाई ने वनाई कछु औरै विधि खीन करे पीन अरु पीन करे खीने हैं ॥ छोलि छोलि ठाकु अति सूक्षमकै राखे ताहि लचकत जानिकै यतन ऐसे कीने हैं । करिहां की कृशता की साधिकै कसर मानो उरज नितम्ब अतिपीन करि दीने हैं ॥ २३० ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लहलहात तन तरुनई, लचि लगि लौं लफि जाय ।
लगैं लांक लोइन भरी, लोइन लेत लगाय २३१

यह नायिकाकी जो शोभा देखी है सो नायक सखीसों कहत है अथवा सखी नायिकासों कहै तो संभव है ॥ कवित्त ॥ लकलके तनमें लहलहाति तरुनई ताकी नई अरुनई रही छबि छायकै । कुचनके भार चप लगलौं लफति जब चलति गयन्दगति सहज सुभायकै ॥ कहैं कबिकृष्ण नख शिख लौं लुनाई भरी मानौं महामोहनींने देह धरी आयकै । सूक्ष्म लसत अति चारि को सो आंकु ऐसे लगै लांकबारी लेत लोइन लगायकै ॥ २३१ ॥

वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बुधि अनुमान प्रमान श्रुति, किये नीठ ठहराय।
सूक्षम कटि परब्रह्म की, अलख लखी नहिं जाय २३२

यह कटिबर्णन सखी सखीसों कहै नायकसों कहै नायिका सखीसों कहै नायक सों कहै कबिहूकी उक्ति होय ॥ कवित ॥ सुमन मे बास जैसे सुमन में आवे कैसे नाहीं नाहीं कही जाति हां कहां चलत है । सुरसरि सूरतनया में सुरसती जैसे वेदके बचन बांचे सांचे निब्रहत है ॥ बुधि अनुमानते प्रमान पारब्रह्म ऐसे कामिनीकी कटि कवि मीरन कहत है । परिवाके शशिकी कला ज्यों रहै अम्बर में परिवा को अच्छ पर-तच्छ न लहत है ॥ २३२ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जंघ युगल लोइन निरे, करे मनो बिधि मैन।
केलि तरुन दुख दैन ये, केलि कला सुख दैन २३३

जंघकी शोभा नायक सखी सो कहै सखी नायकसो कहै॥ सवैया॥ कारे करेरे कुरूपकरा कर क्यो समहोत प्रभा इनकी के । सोहत सुन्दर पीन सचिक्कन मोहनहै मनमोहन पीके ॥ केलि कलोल कलाके निधान महादुखदायक हैं कदलीके । तो युगजंघ बिरंचि मनोज वनाय करे निरेलोयनहीके ॥ २३३ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० रह्यो ढीठ ढाढस गहै, ससिहर गयो न सूर।
मुर्‌यो न मन मुरवानि चुभि, भौ चूरन चपि चूर २३४

यह मुरवानिकी शोभा में नायक को मन चुभ्योहै सो सखीसों कहत है नायिकाहू सो ॥ सवैया ॥ प्रानपियारी के पांयन ऊपरि पुंज-प्रभाको परै उमग्योई । देखतही अति रीझके चायसों जाय तहां मन मेरो लग्योई ॥ सूर रह्यो अति साहस के कविकृष्ण कहै न डराय भग्योई । चूर भयो चपि चूरनसो पै तऊ न मुर्‌यो मुरवान पग्योई ॥ २३४ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० पायँ महावर दैन को, नायन बैठी आय।
फिरि फिरि जानि महावरी, एँड़ी मीड़त जाय २३५

यह नायनिकी सहस अरुणाई को अधिक सखी सखीसों कहति है नायकहू सों कहै तो संभव है ॥ कबित्त ॥ मन्दहूखपैते चन्दबधू के बरण होत प्यारीके चरण नवनीतहूते नरमें । सहज ललाई काशीराम बरणी न जाय जिनके निहारे कविहूकी मति भरमें ॥ एँड़ी ठकुराइनिकी नाइनि गहति तब ईंगुर सो रंग दौरिजात दरबरमें । दीनी है कि दैवी है निहारे सोचे बारबार बावरी सी ह्वैरही महावरले करमें ॥ २३५ ॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० कोहर सी एँड़ीन की, लाली देखि सुभाय।
पाय महावर देन को, आय भई बे पाय २३६

यह नायिकाकी एँड़िनकी शोभा सखी नायकसों कहै ॥ कबित्त ॥ कोहरु कहाहै बन्धुजीव को बिलोक्यो चाहै लाजनते कमल मुदित फूलि फूलिकै । मानिक पँवारी बिम्ब कैसे पटतर होत ऐसी द्युति सहज उठति ऊलिऊलिकै ॥ चाइन सों पाइन महावर लगायबेको आई

ठकुराइन निकट अनुकूलिकै । कहै कबिकृष्ण चारु बदन बिलोकतही नाइन बिचारी गई सब सुधि भूलिकै ॥ २३६ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु २७ लघु १४ ॥

दो० अरुण बरण तरुणी चरण, अँगुरी अति सुकुमार।
चुवत सुरँग रँग सी मनो, चप बिछियन के भार २३७

यह चरणांगुलीनकी शोभा नायक सखीसो कहतहै नायिकाहूसो कहै सखी सखीसो कहै कबिकी उक्ति होय ॥ कबित्त ॥ मन्दगति हरै कलहंस न लहत कल समद गयंदनको गरब गरत है। कृष्ण प्राणप्यारे चारु चरण निहारे वाके जलज समूह जिय लाजहि धरत है ॥ अतिसुकुमार तरुणी की पग अँगुरीन ऐसी अरुणाई को उजास उघरत है । मेरे जान परयो बिछियान को अपार भार ताहीसो उमंगरग निचुखो परत है ॥ २३७ ।

मराल अक्षर ४२ गुरु ८ लघु ३४ ॥

दो० पगपग मग अगमन परत, चरण अरुणदुति ऊलि।
ठौरठौर लखियत उठे, दुपहरिया से फूलि २३८

यह नायिकाके चरणन में अरुणता की अधिकताई सखी नायक सों कहै नायक नायिकासों कहै सखी सखी सो नायक सखीसों कहै॥ कबित्त ॥ प्यारी के पगन पाय ऐसी अरुणाई ताते सुगधिबधून दिन मांझकर भाष्यो है । बाग है कढ़त वाके शिशिर लुनानहू में किसलय अली तोरिबेको अभिलाष्यो है ॥ चिन्तामणि चांदनी बिछौना पर आवै लाल मखमल को बिछौना मनु नाहि नाख्यो है । चरण धरत वाके आंगन पटिकबन्ध मानौ लालबिद्रुम दलनि बांधि राख्यो है॥ १३८ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सोहत अँगुठा पाँय के, अनवट जख्यो जराय।
जीत्यो तरवनि दुति सुढर, पख्यो तरनि मनु पाय २३९

यह नायिका के शृंगार का आरम्भ है सो एकही अनवट पहरयो है

ताकी उपमा सखी नायिकासों कहति है ॥ सवैया ॥ प्यारी शृँगार सँवारन बैठी अचानक आयो तहां दधिदानी । ज्योंहुती त्योंहीं रही नवनागरि नन्दकिशोरके रूप लुभानी ॥ नीको जराव अनोटनसे पगके अँगुठा उपमा सो वखानी । पायँ पख्यो है मनो रबि आयकै तेजकी हारि तखोनासों मानी ॥ २३९ ॥

बाधक अक्षर ४४ गुरु ४ लघु ४० ॥

दो० सरसकुसुममड़रात अलि, नझुकिझपटिलपटात।
दरसत अतिसुकुमारता, परसत मनु न पत्यात २४०

यह सुकुमारता बिशेष है अरु कोऊक सखी नायिकासो अनभिज्ञ जानत है सो नायक की सखी भ्रमरके प्रसंग करि अन्योक्ति में वाको भ्रम निवारण करति है ॥ कवित्त ॥ सुखको अगार उपबनको शृंगार चारु सौरभ विविध उमगत जाको गात है । सरसको सुमनु सरस अति शोभासन्यो निरखि लुभानो अलि देखे न अघात है ॥ कहैं कविकृष्ण अतिरीझ पग्यो आस पास रहै मड़रानो न झपटि लपटात है । दरसत ताको तन अति सुकुमार ताते परसत वाको मन क्योंहू न पत्यात है ॥ २४० ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० भूषणभार सम्हारि है, क्यों यह तन सुकुमार ।
सूधे पायँ न परत धर, शोभा ही के भार २४१

यह सुकुमारता है सखी नायक सों कहति है कि भूषण पहिरत विकल होय याते वेगि चलै ॥ कवित्त ॥ बोलनि चलनि चतुराई चितवनि तिन चाहि नाहिं चित और तौर ठहरातु है । वाको अंग उबटि जु ओपी तिय मेल छवि तेऊ उपमा दै और सुकवि सिहातु है ॥ कूरता निहारि सुकुमारजी विचारि यह कीने बिन भूषणहि भूषणसो गातु है । सकिहै सम्हार कैसे आभरणभार पाई आभाहू को भार न सम्हाखो तन जातु है ॥ २४१ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मैं बरजी कै बार तू, इत कित लेत करौंट ।
पँखुरी लगै गुलाब की, परिहै गात खरौंट २४२

यह नायिका बिश्रब्ध नवोढ़ा है सपने मे थिरता नाहीं याते सखी डर दिखाय शयन करावति है ॥ सवैया ॥ मैं बरजी बहु बार अहे नहिं मानत तू सो कहाधौ करैगी । लेत करौट इतै मुरि क्यों अरबी उरकोलौं इतैक धरैगी. ॥ कोमल आपने अंग निहारि तबै सुकुमार सुक्यों सम्हरैगी । पांखुरी गात गुलाब की जो गड़िजैहै कहूं तौ खरौट परैगी ॥ २४२ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० । यह नायक के हृदय में नायिका बसे ॥

दो०जनकु धरन्न हरि हिय धरे, नाजुक कमला बाल ।
भजत भार भयभीत ह्वै, घन चन्दन बनमाल २४३

यह नायक के हृदय में जो नायिका बसति है ता बिपरीतको अधिक सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ निजभक्तन के हितको कमलापति संतत चित्त बिचार करै । अतिचन्दन अंग लगावै नहीं बहुफूलनकी नहिं माल धरैं ॥ अरु जो कबहूंक शृंगार सजैं कबिकृष्ण तऊ कल कैसे परैं । यह शोच हिये निशि द्योस डरै अति नाजुक श्रीमति भार भरैं ॥ २४३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो०छाले परिबे के डरनि, सकत न हाथ छुवाय ।
झिझकत हिये गुलाबके, झमा झमावत पाय २४४

यह नायिकाके चरणनकी सुकुमारता सखी नायिका सों कहति है सखीहू सों कहै ॥ सवैया ॥ पौन लगै अलि पंखेको होति चलाचल कैसे बयार करै । कृष्ण कहैं कहूं केशरि अंग लगाये तौ सौति उछाह भरैं ॥ प्यारी के नाजुक पायँ निहारिकै हाथ लगावत दासी डरै । धोवत फूल गुलाब के लै पै तऊ झझकै मति छाले परैं ॥ २४४ ॥

मराल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ । शिक्षा ॥

दो० लग्यो सुमन ह्वै है सफल, आतप रोस निवारि ।
बारी बारी आपनी, सींच सुहृदता बारि २४५

सखीको बचन नायिकासों है शिक्षारूप ॥ कवित्त ॥ बारी है न बांवर तू देत लड़बावरयो क्यों मान करिबेको उरमें सर बिचारिये । अबही तो नेहबेलि नवल लगाई ताहि जतन जतन दृढ़करि पोषि पारिये ॥ लाग्यो है सुमन सुतो होहिगो सफल अब कहैं कविकृष्ण रिसआतप निवारिये । सीख मानि मेरी मति सौतिनुके बौतेकरे प्यारी प्रीति रसहीसो सींचि हित वारिये ॥ २४५ ॥

बानर अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तू रहि हों ही सखि लखो, चढ़ न अटा बलि बाल ।
सबहिनुबिनहीं शशिउदे, दीजतुअरघअकाल २४६

यह नायिका के मुखकी शोभा अधिकाय है सो सखी नायिकासों कहति है ॥ सवैया ॥ हौंही अटा चढ़िहौ शशि देखन तू सजनी रहि आंगनही तिन । और कितेकब्रती वनिता सब देखत चन्द्र उदो छिनुही छिन ॥ तो मुख देख उछाह भरी सब देहिंगी अर्घ मयंक उदै बिन । औरनको ब्रत भंग करै मनि होहिगो पातक मान कह्यो किन ॥२४६॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० दियो अरघ नीचे चलो, संकट भानो जाय ।
सुचती ह्वै औरौ सबै, शशी बिलोकैं आय २४७

नायिकाके मुखकी शोभा सखी कहति है ॥ सवैया ॥ पूजि निशाकर अर्घ दियो अब नीचे चलौ वलि संकटभाने । औरनकी दुचिताई मिटै जिन साध उपास मनोरथ ठाने ॥ चन्द उतै इत तौ मुखचन्द कितै बिनवैं चित शोच समाने । वै अपने ब्रत पूरे करैं जु रहीचकि आजु रजैबर आने ॥ २४७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कहा लड़ैते दृग करे, परे लाल बेहाल।
कहूं मुरलिका पीतपट, कहूं मुकुट बनमाल २४८

यह नायिकाके नेत्र देखि नायककी जो दशा भई सो सखी नायिका सों कहति है प्रयोजन कि तेरी चाह है तू चल ॥ कवित्त ॥ कहूं बनमाल कहूं गुंजनकी माल कहूं संग सखा ग्वाल ऐसे हाल भूल गये है। कहूं मोरचन्द्रिका लकुट कहूं पीतपट मुरली मुकुट कहूं न्यारे डारिदये है ॥ कुण्डल अडोल कहि सुन्दर न बोलैं बोल लोचन हैं लोल मानों काहू हरिलये है । घूंघट की ओट ह्वै कै चितई की चोट करि लालन तो वा घरीतें लोट पोट भये हैं ॥ २४८ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पिय मन रुचि ह्वैबो कठिन, न रुचि होत शृंगार।
लाख करो आंखि न बढ़ै, बढ़ै बढ़ाये बार २४९

यह नायिका शृंगार करिकै बिलम्ब करति है सो सखी नायक सों कहति है अथवा तियको शृंगार देखि याके ईर्षा भई सो सखी सों कहति है यातें प्रेमगर्बिता होय ॥ कबित्त ॥ बैठयो कुंजसदन बिलोकत है तुव मग तेरो नाम मोहन रटत बारबारही । उठचलि हिलमिल मानि रंगरली अली मेरो कह्यो मान अनगवति कहा रही ॥ पियमन बसि करिबो यह कठिन अरु तन द्युति सरसाति साजैहू शृंगारही । कहै कबिकृष्ण कीजै लाखकयतन तऊ लोचन न बढ़त बढ़ाये बढ़ै बारही ॥ २४९ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० गहली गरब न कीजिये, समै सुहागहि पाय।
जियकी जीवन जेठ सों, माह न छांह सुहाय २५०

यह सखीको शिक्षा है अरु ज्येष्ठा के भेद में यासों नायक को हेतु अधिक जानिकै तिहूँको कहबो सम्भव है ॥ सवैया ॥ अलिहौं समझावत

तोहिं यहै तजि मान हहा सुख देह हमें । फल क्यों न लहै बलि यौवन को मनमोहन सों मिलि क्यो न रमे ॥ लड़बावरी पाय सुहाग समौ जिन येतौ गुमान धरै जिय मे । सबको वह जेठ में जीवनि मूरि सुछाँह सुहाय न माहसमे ॥ २५० ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सघन कुंज घन घन तिमिर, अधिक अँधेरीराति ।
तऊ न दुरि है श्याम यह, दीपशिखासी जाति २५१

यह नायिका नायक सघन कुंजन में निश्शंक बैठे है सो गुरु सखी नायक से नायिकाकी दीप्तिको बर्णनकरि शिक्षा करति है अरु नायक सखी सो कहै है वा नायक को लेआव अथवा कुंज मे लैचलि तहां सखी को कहबो सम्भव है ॥ सवैया ॥ वाके समीप न हौहूं दुरौ लखि लेत वे दूरहिं ते उपहासी । कीजै कहा बसु है कछु जो बिधि या बिधि दीपति है परकासी ॥ काहूकी आँखिन मूदि न जानत हूं बलिजाऊं न हूजे उदासी । लाऊं सकैसे अँधेरहूं मांझ उजेरी जू नागरि दीपशिखासी ॥ २५१ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० फूली फाली फूल सी, फिरत जु बिमल बिकास ।
भोर तरैया होहु ती, चलत तोहिं पिय पास २५२

यह मनायवो सखी नायक सो कहति है ॥ कवित्त ॥ निरखि निकाई नेरी हौं तो हों निकाई वलि तुहू अलबेली कछू मेरो कह्यो करैगी । तेरी तन द्युति आगैं रति न रतीक लागै सांची काहि कौलौं ऐसो हठ उर धरैगी ॥ फूली फाली फिरत श्रृंगार सजै सौति तेरी तिनके कुमान काहि तू धौं कब हरैगी । भोरक तरैया सम देखियेगी प्यारी सब हितू करि जब तू पियाकी ओर ढरैगी ॥ २५२ ॥

पयोधर अच्छर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तन भूषण अंजन दृगन, पगन महावर रंग।
नहिं शोभाको साजियतु, कहिबेही को अंग २५३

यह नायिकाके अंगकी स्वाभाविक शोभा सखी नायिकासो कहति है ॥ कबित्त ॥ सहज अरुण गुलफनते उठत छुटा तिनके निकट कहा जावक को रंगु है। गातकी गुराई आगे कंचन के आभूषण फीके से लगत रंच शोभा को न संगु है ॥ अंजनहूं आंजे बिन नैन कजरारे दीखैं खंजन अनेकन को होत मान भंगु है। तो तन शृँगार कछू शोभा को न साजियतु अबही अजान अहवातहीको अंगु है ॥ २५३ ॥

नर अच्छर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बेंदी भाल तमोर मुँह, सीस सिलसिले बार।
दृग आंजे राजै खरी, एही सहज शृँगार २५४

यह नायिका की सहजकी शोभा सखी नायक सों कहति है ॥ कबित्त ॥ केसरि की बेंदी भाल भौंह मधि राजत है सुरंग कपोलतिल सोहत अपार है। पान भरे आनन कटाच्छ दृग कानन लौं सोहैं कच श्याम मखतूल केसे तार है ॥ बेसरिको मोती छबि नेह उझकावनको भरमी सुकबि अंग अंग सुकुमार है। लाखहीकी चूरी यह लाखनु लहति अरु सादगी की सादगी सिंगार को सिंगार है॥ २५४ ॥

करभ अच्छर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० खरी पातरी कान की, कौन बहाऊ बान।
आक कली न रली करै, अली अली जिय जान २५५

यह नायिका को अन्यासक्त जानि नायकके मन में भ्रम भयो है सखी निवारण करति है ॥ सवैया ॥ बोलसिरोरुख बन्धन नाहिनै गन्ध सुहात न गन्धफली को। आरति मालतिकी न रती लवलेश न भावत है लवलीको ॥ बारही दूषण दैनबक बासि को न कहाऊं

कनैर कलीको । माधुरीकी मधुराई बँध्यो न चलै चित आंककी ओर अली को ॥ २५५ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० तो रस राच्यो आन बस, कहैं कुटिल मति कूर ।
जीभ निबौरी क्यों लगै, बौरी चाखि अँगूर २५६

नायिकाको अन्यासक्त निश्चय जानि नायक सखी सों कहै तो सखी भ्रम निवारण करतिहै ॥ सवैया ॥ तेरोही ध्यान धरैं नँदनन्दन काननहूं सुने तेरी कथाहै । तो रसरंग में पागि रह्यो निशि बासर तेरोई रूप सराहै ॥ ताहि तू और सो राच्यो कहै कहि मोसों हहा मन आय कहाहै । बावरी देखु बिचारि हिये कोउ दाखहि खाय निबौरि चहा है ॥ २५६ ॥

मण्डूकअक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ । नायिका की चेष्टा ॥

दो० डोरी लागी सुननकी, कहि गोरी मुसकात ।
थोरी थोरी सकुच सों, भोरी भोरी बात २५७

नायिका प्रौढ़ाने नायककी चेष्टा देखी है सो सखी सखीसो कहति है ॥ सवैया ॥ जा दिनते वह साँवरो नैनसों नैन मिलै मुसकाय गयो है । ता दिन ते कविकृष्ण कहै मन वाही के हाथ बिकाय गयो है ॥ थोरी सी लाज गहे हित चीकनी भोरी सी बात बनाय गयो है । कानन को अब वे बतियां सुनिबे हीकी डोरी लगाय गयो है ॥ २५७ ॥

वारन अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० जौलौं लखौं न कुल कथा, बुधि तौलौं ठहराय ।
देखै आवत देखही, क्यों हू रह्यो न जाय २५८

यह नायिका प्रौढ़ा अपनी दृढ़ता सखी सों कहति है अरु नायिका को स्वरूप ऐसो सुन्दर है जो देखेते क्योहूं नाहीं रह्यो जातु नायिका को बचन सखी सों सखी को बचन नायिका सों सम्भव है कि ताहि देखत नाहीं तौलौं कुलकथा दृढ देखेते क्योंहूं रह्यो न जायगो ॥

सवैया ॥ जौलौं न डीठि परै मनमोहन हौ न बदौ सखि तौलौ सयानहिं । ठीक जु ठानि पतिव्रत को करिले कुलकान कथा के बखानहिं ॥ लोचन क्योहूं न रोके रहै जब देखति वा मृदु मूरति कानहिं । देखे बिना न रह्यो परै कैसेहू मेरो कह्यो किन सांचकै मानहिं ॥ २५८ ॥

पयोधर अच्छर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रह न सक्यो कस कर रह्यो, बसि कर लीनो मार ।
भेद दुसार कियो हियो, तनद्युति भेदी सार २५९

यह नायिकाकी तनद्युति सखी नायकसो कहतिहै ॥ सवैया ॥ राधिका रंगभरी को मनो बिधि तीनहू लोक को रूप दियोई । ताहि अली अवलोकतही बिबि नैनन प्रेम पियूष पियोई ॥ यद्यपि केतो रह्यो कसकै धरिकै अति धीरज मेरो हियोई । तद्यपि वा तनकी द्युति भेदक सार ने भेद दुसार कियोई ॥ २५९ ॥

चल अच्छर ३७ गुरु ११ लघु २६ । नायक को बचन नायिका सों ॥

सो० तो तन अवधि अनूप, रूप लग्यो सब जगतको ।
मो दृग लागे रूप, दृगनि लगी अति चटपटी २६०

यह नायिका के रूपसों नायक के नेत्र लगे है सो अपने नेत्रनकी तलफनि कहत है नायक को बचन नायिका सों ॥ सवैया । सुन्दरता की तुही परमावधि तै रति की द्युति पायतुपेली । को रमणी रमणी-पतिहूपुर राधिके तो सम होय जुहेली ॥ तो तन सोहै लुनाई की खानि लग्यो तिहूं लोक को रूप नवेली । त्यो तिह रूप लगे मम नैन लगी मम नैनानि त्यों तलबेली ॥ २६० ॥

नर अच्छर ३३ गुरु १५ लघु १८ । आलंबन भाव ॥

दो० गली अँधेरी सांकरी, भो भटभेरा आन ।
परे पिछाने परसपर, दोऊ परस पिछान २६१

यह अँधेरी गली मे जाभांति भेंट भई सो सखी सखीसों कहति है सो परस्परका पहिचानिबो दोउनको आगम मिलाप है यह ब्यंग नायिका परकीया ॥ सवैया ॥ रैन अँधेरी घने घुमड़े घन भूमि महातम पुंज छये है। तैसी ये सांकरी लांबी गली भटभेर अचानक दोऊ भये हैं॥ गातसों गातही लागत ही जिय जानिगये लपटाय गये है। राधिका माधोजू माधोजू राधिका आपहीते पहिचान लये हैं॥ २६१॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० उयो शरद राका शशी, करत क्यों न चित चेत।
मनो मदन क्षितिपालको, छांहगीर छबि देत २६२

यह मानवती सों सखी को बचन नायिका सों मान छुड़ायबे को प्रयोजन ॥ सवैया ॥ बलि आजु सुहानी हो राका की रैन बिहार समै सुख साजत है। वह देखरी इन्दु उदोत भयो अरुणाई गहे छबि छाजत है॥ अवलोकत नाहिं रिसैल तियान को मान कहूं डर भाजत है। यह मानो है मंजु महाक्षितिपाल को मानिक छत्र बिराजत है॥ २६२॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० डिगत पान डिगलात गिरि, लखि सबब्रज बेहाल।
कम्प किशोरी दरश के, खरे लजाये लाल २६३

यह सात्त्विक भाव सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ लोप सुन्यो बलिकै मघवा तब कोपिकै मेघ सबै मुकलाये। गोधन कान्ह धरयो तबहीं सबके उर के भय भूरि भगाये॥ पान डरे डिगलात लख्यो गिरि लोग सबै ब्रजके अकुलाये। गोरी किशोरी निहारिकै कम्पति गात खरे नँदलाल लजाये॥ २६३॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० सुरति न ताल न तानकी, उठ्यो न सुर ठहराय।
येरी राग बिगारिगो, बैरी बोल सुनाय २६४

यह सात्त्विकभाव नायिका को बचन सखी सो अरु सखी को बचन नायिका सों होय तो लज्जिता सखी सखीहूसों कहै तो सम्भव है परकीया ॥ सवैया ॥ लैकर बीन प्रबीन तिया सुर साधिकै गान को ठाट ठयो है । द्वार पै आयकै ताही समै मनमोहन काहू की नाच लयो है ॥ तान कहूं अरु ताल कहूं सुरतो कछू औरते और भयो है । बैरी अचानक बोल सुनाय कै नन्द को राग बिगारि गयो है ॥ २६४ ॥

शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० ध्यान आन ढिग प्राणपति, मुदित रहति दिन राति।
मुलकिकँपतिपुलकतिपलकु, पलकुपसीजतजात २६५

यह नायिका बिरहिनी ध्यान कर मिलेसे तबहीं सात्त्विक भाव होतहै सो सखी सखी सो कहति है सखी नायिका सों कहै तौहूं संभव है ॥ सवैया ॥ वा हरिके बिछुरे गति ऐसी भई सुबखान कहांलग कीजै। ध्यानही ध्यान में चन्दमुखी मिलि प्राणप्रिये रसरंग मे भीजै ॥ रैन दिना रहै मोद भरी वहै कोहै बियोगिनि क्यों तन छीजै । कम्पित है कबहूं ललकै कबहूं पुलकै कबहूंक पसीजै ॥ २६५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० स्वेदसलिल रोमांच कुश, गहि दुलही अरुनाथ ।
हियो दियो संकल्पिके, हथलेवा ही हाथ २६६

यह बिवाहसमय दोउन के अतिसनेह के आधिक्यते सात्त्विक भाव भयो सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ मण्डपमण्डल तीरथ साधिकै बेदबिधान सो दान दियो है । स्वेद भयो सोइ नीर नयो उलहै फलकै कुशपुंज लियो है ॥ मैन मुनिन्द प्रयोग पढ्यो रति केलि हिये अभिलाष कियो है । दोउनलौ अपनो अपनो यों हियो हथलेवई हाथ दियो है ॥ २६६ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तच्यो आंच अति बिरहकी, रहे प्रेम रस भीज ।
नैनन के मग जल बहै, हियो पसीज पसीज २६७

यह नायिका अथवा नायक बियोगते अँसुवा बहत हैं तिनको उत्प्रेक्षा करतहै सखी सखीसो कहति है ॥ सवैया ॥ जादिनते ब्रजनागरिको मन नन्दकिशोर के नेह नह्यो है । आंच तच्यो बिरहानल की हितके रसमें अति भीजि रह्यो है ॥ तामें तरंग उमंग उठयो तेहिं ऊपर प्रेमाऽनुराग रह्यो है। ताते पसीज पसीज हियो विधि नैनन के मग नीर बह्यो है॥ २६७॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मैं यह तोही मैं लखी, भगति अपूरब बाल ।
लहि प्रसाद माला जुभौ, तनु कदम्बकी माल २६८

यह सात्विकभाव सखीको बचन नायकसो परकीया लक्षिता होय ॥ सवैया ॥ को रिझवारि न प्रेमपगी रँग लालन के रँग लाल भई है । को न छकी छबि देखि गुपाल की को बनिता न बिहाल भई है ॥ मै निरखी यह तो तन आज अपूरब भक्ति रसाल भई है । माल प्रसाद की पावतहीं सब देह कदंब की माल भई है ॥ २६८ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेक उतै उठि बैठिये, कहा रहे गहि गेहु ।
छुटी जात नहदी छिनुक, महदी सूकन देहु २६९

यह नायक को देखि नायिकाको सात्त्विक भाव भयो है सो सखी नायक सो निवेदन करति है नायिकाहू सनेह के आधिक्यते नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ आजलौं कैसेहूं जानिपरी न चली जबते रसरीति चली । देखि तुम्हें उमँग्यो अबहीं करपल्लव छोरन स्वेदजली ॥ बैठहु नेक इतै उठिकै उवरी यह आवति प्रेमकली । जात छुटी अबहीं नहदी महदी छिनु सूकन देहु लली ॥ २६९ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पहरत ही गोरिहि गरे, यों दौरी दुति लाल।
मनो परसि पुलकित भई, मौलसिरी की माल २७०

यह नायक की माला स्पर्शते नायिकाके सात्त्विक भाव भयोहै सो सखी नायक सों कहति है ॥ कबित्त ॥ सौरभ सहित चुनि चुनिकै कुसुम चारु अपने करन मनमोहन गुही बनाइ। मै तो जाय दीन्ही उन लीन्ही अति आदर सो पहिरी हियेमे प्राणप्यारी हित सरसाइ ॥ कृष्ण प्राणप्यारे जूके गोरे गरे ताहि छिन उपजी नवल द्युति रही ऐसी छबि छाइ। मेरे जानि लाल मौलसिरीकी ललित माल पुलकित भई वाके तनको परस पाइ ॥ २७० ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हित कर तुम पठयो लगे, या बिजना की बाय।
टली तपति तन की तऊ, चली पसीनो न्हाय २७१

यह नायक के बीजनाकी बयार लगे नायिका के सात्त्विक भाव भयो सो सखी नायक सो कहति है ॥ सवैया ॥ मोरपखो उनको रुचिकै हित कै पठयो तुम प्यारे बिहारी। ताहि बिलोकतही तियकी तनताप टरी उमँग्यो मद भारी ॥ हौ तो बिलोकि अचंभै रही अबलौ न कहूं गति ऐसी निहारी। या बिजना की बयार लगे वह न्हाय पसीना के नीरमें नारी ॥ २७१ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० सहित सनेह सँकोच सुख, स्वेद कम्प मुसकानि।
प्रान पानि करि आपने, पान धरे मो पानि २७२

यह नायक को पान देत नायिका के सात्त्विक भाव भयो अरु नायकके प्राण वा बिहँसनि को देखि वाके वश भये सो सखी सो नायक

कहत हैं ॥ सवैया ॥ या मृगलोचनि के सब अंग अनंग विलास बसीकर हेरे । स्वेद सकोच सुने कविकृष्ण सनेहभरे सुखपुंज घनेरे ॥ कम्पत गात कछू मुसकात चढ़ायके भौंह विलोचन फेरे । मो कर पान दयो हितसों उन प्रान लये अपने कर मेरे ॥ २७२ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यह बसन्त न खरी अरी, गरम न शीतल बात ।
कहि क्यों झलके देखियत, पलक पसीजे गात २७३

यह सात्त्विक भाव देखि सखी नायकसों कहति है परकीया लक्षिता जानिये ॥ कवित्त ॥ सोहत समान माहिं यह तो बसन्तऋतु नाहिंनै गरम अरु शीरकनि अति है । कहै कविकृष्ण बलि हमसो तो सांची कहि काहेते छबीली भई तेरी ऐसी गति है ॥ कबहूं तपत गात कबहूं पुलक होत कबहूं पसीज आवै कबहूं कँपति है । जानिहैरी ज्ञानी हितसानी अरगानी रहि देखि दधिदानी प्रेमरस मे पगति है ॥ २७३ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० ऊंचे चितै सराहियतु, गिरह कबूतर लेत ।
झलकत दृग मुलकत बदन, पुलकत है किहि हेत २७४

यह नायकको कबूतर देखि नायिकाको सात्त्विक भाव भयो सो सखी नायिका सों कहति है परकीया लक्षिता ॥ कवित्त ॥ अम्बर मे शोभा साजि उड़त कपोत ये तो बाजी करै रंगमें गिरह आछी लेत है। तिन्हैं सबै कोऊ नैन ऊंचे कर चाहत है रीझ रीझ सुघर सराहत सहेत है ॥ चाहिबो सराहिबो बिसरिगयो तोहिं प्यारी देखतही देखिरही तेरे चित चेत है । झलकत नैन मुलकत हैं अधर तेरे साँची अंग पुलकत सो तो किह हेत है ॥ २७४ ॥

मण्डूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० रहौ गुही बेनी लखैं, गुहिबे के त्यौंनार।
लागे नीर चुचान जे, नीठ सुखाये बार २७५

यह नायक सखीबेष ह्वैकै नायिकाको शृंगार करनलाग्यो बेनी गुहति सात्विकभाव उपज्यो तब नायिकाने जान्यो सो नायकसो कहति है ॥ सवैया ॥ गोपी को बेष बनाय गुपालजू श्रीबृषभानुसुता ढिग आये । हौ सजि जानत नीके शृँगार कहौ सु करौ काहे बैन सुनाये ॥ बेनी गुहावत प्यारी कह्यो सुघराय इतै कितने तुम पाये । नीर चुचानलगे अबहीं सटकारे से बार जे नीठ सुखाये ॥ २७५ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० राधा हरि हरि राधिका, बनि आये संकेत ।
दम्पति रति बिपरीत सुख, सहज सुरत हू लेत २७६

यह लीलाहावभाव रति ब्रिपरीत समय सखीसों कहै ॥ कबित्त ॥ देखिबे को देह द्वै पै एक मन एक प्राण रूप शील बैस गुण चातुरी समेत है । जैसे दोऊ साँचे राँचे प्रकटी तरंग मन आजलौ न देखे कहौं ऐसे हियहेत है ॥ राधा माधो माधो राधा अदल बदल बेष बनि बनि आये केलि केलि के निकेत हैं । कहै कबिकृष्ण दोऊ सहज सुरति करि रतिबिपरीत के बिबिध सुख लेत है ॥ २७६ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० तजी शंक सकुचानि रहति, बोलति अतिबकुबाकु* ।
दिन छनदा छाकी रहति, छुटत न छबि की छाकु २७७

यहि नायिकाके छबिको गर्ब है सो सखी सखी सों कहति है मदहाव जो नायक की छबि को छाकु सखी कहै तो लक्षिता होय ॥ सवैया ॥ कछु बूझत बातही ऊतर देत न लाइ टकी अनिमेष तकै ।

---

* पाठान्तर—बाकुकुबाकु ।

अरु कानि करै न अलीनहूं की तजि लाज झरोखनि ह्वै उझकै ॥ सब शंक तजी सकुचै न हिये मुँह आवै सुबाकु कुबाकु बकै । रहै रैन दिना वृषभानुसुता छवि छाक छकी न छिनौ उछकै ॥ २७७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रही दहेंड़ी ढिग धरी, भरी मथनियां बारि ।
फेरत कर उलटी रई, नई बिलोवनहारि २७८

यह नायिका को बिभ्रम देखि सखी नायकसों कहति है सखी सखीहू सो कहै तौहू संभव है ॥ सवैया ॥ पास दहेंड़ी धरी ये रही जलसों भरिकै जु मथानी लई है । थभसों नेतों लपेटिदई उलटी कर फेरत तामे रई है ॥ मोहिं तौ लागत नीको महा उर पूरण प्रेमकी रीति ठई है । सांवरी मूरतिकी रिझवारि नई तू बिलोवनहारि भई है ॥२७८॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ । कुट्टमित ॥

दो० लहि सूने घर कर गहत, दिखादिखी की ईठि ।
गड़ी सुचित नाहीं करत,कर ललचौहीं डीठि२७९

यह सुरतांत रससमय नायिका की जो चेष्टा देखी सो नायक सखी सों कहत है परकीया कुट्टमितहाव ॥ सवैया ॥ देखाही देखीकी ईठि अचानक डीठि परी अकिली गृहमाहीं । साहसकै अपने उरमें अति मोढिग जाय लई गहिबाहीं ॥ लै सिसकी झहराई करै उन तीक्षण नैन किये चहुँधाहीं । कै ललचावनि डीठि करी वह नाहिं कियेते टरै अब नाहीं ॥ २७९ ॥

बारन अक्षर ३७ गुरु १० लघु २७ ॥

दो० हरषि न बोलीलखिललन,निरखि अमिल सँगसाथ ।
आंखिनहीं में हँसि धस्यो,शीश हिये धरि हाथ२८०

यह बोधकहाव नायिका प्रौढ़ा परकीया नायक को देख चेष्टा बनी सो सखी सों सखी कहति है ॥ सवैया ॥ ऊखल साथमें देखि गुपालहिं गोपकुमारि करी चतुराई । बैन कछू न कहे मुखते लखि फूली, मनो निधि नवनिधि पाई ॥ हाथ परयो हियपै पहिले पुनि शीश छुयो रसरीति बढ़ाई । आंखिनहीं में कछू बिहँसी पियको जियकी सब बात बताई ॥ २८० ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लखि गुरुजन बिच कमल सों, शीश छुवायो श्याम।
हरि सम्मुख करि आरसी, हिये लगाई बाम २८१

यह नायिका परकीया प्रौढ़ा दुहुँन जो चेष्टा कीन्ही सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ आज दुहूं मिलिकै सजनी कछु सैननही समझयो समझायो । गोरी लखी गुरु लोगनमें सरसीरुह सो शिर श्याम छुवायो ॥ सो लखिकै बृषभानुसुता दियो ऊतर भेद न काहु न पायो । कृष्ण कहै हरिके समुहे कर दर्पण बाम हिये सो लगायो ॥ २८१ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० । किलकिंचित् ॥

दो० सुनि पग धुनि चितई इतै, न्हात दिये ही पीठि ।
चकी झुकी सकुची डरी, हँसी लजीली डीठि २८२

यह नायिका जासमय नायक ने देखी तासमयकी जो चेष्टा उनकी सो नायक सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ कामकी वामहूंते अभिराम लसै द्युति यौवन की रससानी । न्हातही पीठि दिये अकिली सकिली धुनि मो पगकी पहिचानी ॥ जा छबिसों चितई यहि ओर सुकेसेहूं मोपै न जात बखानी । चौंकी चकी सकुची डरपी करि डीठि लजोहीं झुकी मुसकानी ॥ २८२ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बालम बारे सौतिके, सुनि परनार बिहार ।

भौरसु अनरस रिसरली, रीझ खीझ इकबार २८३

यह नायककी वहु नायकता सुनिकै नायिका के दुःखभयो सों सखी सखी सो कहति है ॥ सवैया ॥ बैठी सखी जु समाज मे प्यारी शृँगार के साजन सो सरसानी । काहू कही तुव सौनि के ओसरे आन वधूके गयो दधिदानी ॥ सो सुनिकै कवि कृष्ण कहैं रहसी बिलखी हुलसी उकलानी । एकहीबेर लखी मृगलोचनि रीझि खिझी मुसकानी रिसानी ॥ २८३ ॥

मराल अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० पति रति की बतियां कही, सखी लखी मुसकाय ।
करिकै सबै टलाटली, अली चलीं सुखपाय २८४

यह नायिका नायकसो सुरतारम्भसमय जानि सखी कछू मिस करि उठि चली सखीको वचन सखी सो ॥ सवैया ॥ चौपरि खेल खची वनिता ब्रजराज विलोकतही ललचानी । सेननमे कछु केलिकलोलकी बात कही मन मैन भुलानी ॥ प्यारी अलीनकी ओर लखी हँसि यो रसभाव हिये सरसानी । देखि सबै सुख पाय चली अपने अपने गृह उठि सुठानी ॥ २८४ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० लखि दौरत पिय कर कटक, बास छुड़ावन काज ।
बरुनी बन गाढ़े दृगन, रही गुढ़ो करि लाज २८५

सवैया ॥ रतिमन्दिर मे नवनागरि कान्ह मिले रसरङ्ग हिये ढरिकै । दलु दौरत देख्यो तहां पियको करु वास छुड़ावन को अरिकै । कवि कृष्ण कहै ठहरात तहां न सकी रहि धीरज को धरिकै । गहि ओट घने बरुनी बनको रही नैनन लाज गुढ़ो करिकै ॥ २८५ ॥

शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० सकुचि सुरति आरम्भ हीं, बिछुरी लाज लजाय ।

ढरकि ढार ढुरिढुरि गई, ढीठ भई ढिग आय २८६

यह प्रौढ़ा नायिकाकी सुरति सखी सखी सो कहति है ॥ कवित्त ॥ अति अभिराम श्याम सङ्ग रतिमन्दिर में विहरति उमँग अनँग रंग भरिकै । नखदान रददान चुम्बन अधरपान आलिंगन करत अनेक भाय भरिकै ॥ सुरत के आरम्भही लाजवती सखीभई निपट लजाय जिय गई कहूं ढरिकै ॥ ढाढ़सु हिये में गहि निधरक ह्वै लाज आय ठाढ़ीभई निपट ढिठाई ढीठ ह्वरिकै ॥ २८६ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भौंहन त्रासति मुँह नटति, आंखिनसों लपटाति।
ऐंचि छुटावत कर इँची, आगे आवति जाति २८७

यह सुरतारम्भके समय प्रौढ़ा नायिकाकी जो चेष्टा है सो सखी सों कहति है नायक सखी सों कहै तौहूं संभव है ॥ कवित्त ॥ प्यारे पानि गह्यो आनि भौनमें अकेली जानि नैनन चढ़ायकै सलोनी सासेरात है । नैननहँसोंहीं डीठि राखत है सौंहैं मुसकायकै लजोहीं अंग अंग ठहरात है ॥ भयो मन भायो ज्यों सुरत सुखपायो हिये आनँद वढ़ायो नेक नेकनि डरात है । झटकि छुटावै बांह मिल्यो चाहै मनमांह करै नाहीं नाहीं याही मिस नियरात है ॥ २८७ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० दीप उजेरे हूं पतिहिं, हरति बसन रति काज।
रही लपट छबिकी छुटन, नेको छुटी न लाज २८८

यह सुरतवर्णन नायक के तनकी छबिको अधिक सखीको वचनसखी सों ॥ कवित्त ॥ तैसोही प्रकाश रतिमन्दिर के दीपनको तैसोही समूह जगमगत रतनको । तैसीये सुधानिधि से मुखकी निरखि ज्योति मोहन के मनभाव उमँगयो अतनको ॥ प्रीतम बिहारीलाल, लेवक सुरत

मुनि निजकर बसन झटकि हरयो तनको । छबिकी छटानही सों रही लपटाय राधे मानो उनहूंनकी छुटी न लाज तनको ॥ २८८ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यद्यपि नाहिं नहीं नहीं, बदन लगी जक जाति । तदपि भौंह हांसी भरिन, हांसी हिय ठहराति २८९

यह सुरतारम्भ नायिका प्रौढ़ा सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ वैठी शृंगार सजे व्रजनारि अचानक मोहन आयो तहांहीं । पाणि गह्यो अवलोकि अकेली अलौकिक केलि कला चितचाहीं ॥ यद्यपि वा नव नागरि के मुख लागी यहै जक ना नन नाही । तद्यपि हांसी भरी भृकुटीन में वींसांबिसे ठहरात है नाहीं ॥ २८९ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० चमक तमक हांसी ससक, मसक झपट लपटानि । जिए हरति सी रति मुकति, और मुकति अति हानि २९०

यह सुरत वर्णन नायक को वचन अथवा कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ किलकानि मुलकानि हेरानि हरनिचितु चमकनि झमकानि धनि मुसकानि है । लसनिमिलनि औरसभरी कसकनि ससक मसक झपटनि सुख-दानि है ॥ लटकनि मटकनि दुरनि मुरनि कलि कुंजनि ललनि लल-कनि लपटानि है । ऐसी रीति रनिसोई मुकति कहावति है मुकति कहावै और सोतो अतिहानि है ॥ २९० ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० । सुरतान्त वर्णन ॥

दो० सकुचि सरकि प्रियनिकटतैं, मुलकि कछुक तन तोरि। कर आंचर की ओट ह्वै, जमुहानी मुँह मोरि २९१

यह सुरतान्त नायिका प्रौढ़ा सखीको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ केलिकला कुशल कुरंगनैनी पिकवैनी जाकीछवि पर सौति वारि एक

कोरिकै। शयनसोपागी अनुरागी पतिसंग जागी मैन के बिलासन सो लेत चित चोरिकै॥ सरकी सकुचि मनमोहन निकट नेकु कछुक मुलाकि अंगरानी तनतोरिकै। शोभा वह मोपै क्यों हूं जात न बखानी कर अंचर की ओट जमुहानी मुँह मोरिकै॥ २९१॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० लखि लखि अँखियां अधखुलन, अंग मोर अँगराइ।
आधिक उठि लेटति लटकि, आलस भरी जँभाइ २९२

यह सुरतान्त नायिका प्रौढ़ा सखी को बचन सखी सों॥ कवित्त॥ शैन सुखपागी अनुरागी हरिसंग जागी शोभा सरसानी अरसानी जमुहात है। बिथुरी अलक झुकी आवत पलक मनमथ की झलक अति रस बरसात है॥ ललित कपोल पै लसत नीकी पीकलीक दोऊ भुज जोर मुँहमोर जमुहात है। अधखुली आंखिन सो आली तन अवलोकि आधी उठि सेजही लटकि लटि जात है॥ २९२॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० नीठि नीठि उठि बैठि हूं, प्यो प्यारी परभात।
दोऊ नींद भरे खरे, गरे लागि गिरजात २९३

यह सुरतान्त नायिका सखी को बचन सखी सों॥ सवैया॥ बृषभानुलली ब्रजराजलला रतिसगरमे निशि संग जगे। कविकृष्ण कहैं कुल कामकला बहु भाय बिलास हिये उमँगे॥ उठि बैठनि सेज पै नीठि तऊ उठि पै न सकै अति प्रेम पगे। अति नींद भरे सरसातखरे बहुरयों गिरजात गरेही लगे॥ २९३॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० रँगीसुरत रँग पिय हिये, लगी जगी सब राति।
पैंड़ पैंड़ पर ठठकि कै, ऐंड़ भरी पैंड़ाति २९४

यह सुरतान्त सखी को बचन सखी सो जो सखी नायक सों कहै तो लक्षिता होय ॥ सवैया ॥ सब रैन जगी हरिकण्ठलगी रतिरंगरँगी अलसात खरी है । डग एक चलै फिरिकै चितवै मुरिकै अँगरात मरोर भरी है ॥ बिथुरी अलकै झलकै श्रमवारि झुकी पलकै मुखढार ढरी है । लगि पीककी लीक कपोलन नीक लसै अतिसारी सलोट परी है ॥ २९४ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यों दलमलियत निरदई, दई कुसुम सों गात।
करधर देखो धरधरा, उर को अज्यों न जात २९५

यह नायिका सुरतसमय मर्दित अति बिकल भई है सो सखी नायक सों कहति है ॥ कबित्त ॥ सुख है सखीन बिच दैकै मोह धायकै खवाय कछु चाय वर कीनी बसुवसु है । कोमल मृणालिकासी मल्लिकाकी मालिकासी बालिका जुड़ाहीं मीड़ि मानस कि पसु है ॥ जानेन बिभाति भयो कैसे वसुनेको वात देखो आय गात जात भयो किधौं असु है । चित्रसी जुराखी यह चित्रिनी विचित्र गति कहौ नयेरसिकधौं यामें कौन रसु है ॥ २९५ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लहि रतिसुख लगिये हिये, लखी लजौंहीं नीठि।
खुलत न मोमन बँधि रही, वहै अधखुली डीठि २९६

यह सुरतान्त नायिका को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ केलिकला सुखकेलि प्रभात लसी पर्य्यंक पै राधिका प्यारी । अंक लगी तऊ लाज पगी रही नारि निवाय महाछवि धारी ॥ सोहै चितैवे को मोहु हठ्यो तब नैसक भौंह उँचाय निहारी । सोवनिंदी अँखियां अधखोली चितौन हिये-ते टरै नहीं टारी ॥ २९६ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बिनती रति बिपरीत की, करी परस पिय पाँय ।
हँसि अनबोले ही दियो, ऊतर दियो बताय २९७

यह रतिबिपरीत है सो सखी को बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ केलि-कला कुशल कुरंगनयनीके अंग अंगकी निकाई द्युतिरतिकी रती करी । बहिरतअन्तर बिहार बिहरे बिबिध मदन महीपकी बिभूति बढ़ती करी ॥ तैंहीं रातिमन्दिर मे राधे के परसि पग राति बिपरीत की पियारे बिनती करी । प्यारी मुसकाई अन बोलेही बतायो दियो प्रीतमके जीकी चाह याही में सही करी ॥ २९७ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पर्यो जोर बिपरीत रति, रुप्यो सुरत रणधीर ।
करत कुलाहल किंकिणी, गह्यो मौन मंजीर २९८

यह बिपरीत बर्णन नायिका प्रौढा सखी को बचन सखी सो ॥ सवैया ॥ श्रीबृषभानुसुता तन यौबन ज्योति जगे रति लाज न लागी । भौंहैं बिलासनि हासनिके हरिसाजन को सुख साजन लागी ॥ धीर महा रति-संगर मे बिपरीत रची रति राजन लागी । मौन गह्यो बिछियान तही रसना रसही रस बाजन लागी ॥ २९८ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मेरी बूझत बात तू, कत बहरावत बाल ।
जग जानी बिपरीत रति, लखि बिंदुली पिय भाल २९९

यह नायिका प्रौढ़ा रतिबिपरीत कीनी सखीसो दुरावति है सो प्रवीण सखी जानिलई सो नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ हों हितूकै बल-बूझत हूं तू बहरावत बातहीं मेरी । पून्यौको चन्द्र उदोत करे तब कैसे दबै किये ओट अँधेरी ॥ तै हरिसों विपरीत करी रति क्यो दुरि है अबतो हम हेरी । नीको है जानिपरी सबको पिय भाल लखी बिंदुली तिय तेरी ॥ २९९ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० रमनि कह्यो हठि रमन सों, रति बिपरीत बिलास।
चितई कर लोचन सतर, सगरब सलज सहास ३००

यह नायक ने रतिबिपरीत की बात सुनाई चितवन में चेष्टा कीनी सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ बृषभानुसुता नँदनन्दलला रसकेलि कलान प्रबीण खरे। रतिमन्दिर मे अतिप्रेमपगे रतिकन्तबिलास के रंगढरे ॥ रति की बिपरीत करैं रमनी हँसि यों जब प्यारे निहोरे करे। तब प्यारी किये लखि नैन तिरीछे गुमान भरी अरु लाज भरे ॥ ३०० ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ११ लघु ३०। सखीन को लखिबो ॥

दो० पटकी ढिग कत ढांपियत, सोहत सुभग सुभेख।
हद रद छद छबि देतई, हँसै दरद की रेख ३०१ *

यह सुरति को चिह्न नायिका दुरावति है सो सखी नायिका सो कहति है ॥ सवैया ॥ आज भटू रतिरंग के मन्दिर तू मनमोहन के सँग जागी। केलि बिलासनि कै बड़िभागिनि तै रिझयो फल ले अनुरागी ॥ ढांकत क्यों पटकी ढिग सों अतिसोहति चारुप्रभान सों पागी। देत महाछबि की हद यों यह रेख रदच्छद की सद लागी ॥ ३०१ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० आज कछू औरै भये, ठये नये ठिक ठैन।
चितके हितके चुगल ये, नितके होहिं न नैन ३०२

यह नायिका के नेत्र सुरत चमकत देखि सखी नायक सों कहै तो लक्षिता होय नायिका सों कहै तो खण्डिता ॥ सवैया ॥ आलस के रस मे बिथके रँग लाल के रंग सुरंग भये है। देत कहे चित के हित की

---

* पाठान्तर— हद रद छद छबि देखियत सद रद छदि की रेख।

चुगली ठिकठैन नयेई ठये हैं ॥ निन्दत हैं अरबिन्दप्रभा अनुराग पराग में पागिगये हैं । होहिं न ये नितके सजनी दृग आज अपूरब ओप छ्ये है ॥ ३०२ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सुरत दुराई दुरति नाहिं, प्रकट करत रति रूप।
छुटे पीक औरै उठे, लाली ओठ अनूप ३०३

यह सुरत के चिह्न देखि सखी नायक सों कहति है परकीया जो नायिका सखी सों कहै तो अन्यसंभोग दुःखिता होय ॥ सवैया ॥ भूषण चारु बनाय सजे कच फूल गुहे रुचि आइ, बनाई । होत कहा पलटे पट राधिके लीक कपोलन पोंछिकै आई ॥ देत कहे रतिरंग की भांति अनूपम कांति दुरै न दुराई । पान की पीक छुटे अधरानपै और कछू प्रगटी अरुणाई ॥ ३०३ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मोसों मिलवति चातुरी, तू नहिं भानत भेउ।
कहे देत यह प्रगट हीं, प्रगट्यो पूस पसेउ ३०४

यह नायिका स्वेद लखि सखी सुरत भयो जानि कहति हैं लक्षिता जानिये ॥ सवैया ॥ आज पगी सुखपुंज मे प्यारी निकुंज में केलि करी मनभाई । पीक गई छुटि ओठन पै प्रगटी मुखमण्डल पै अरुणाई ॥ भेद की बात कहै किन भामिनि मोसो चलावत क्यों चतुराई । तो तन देत कहे प्रगटै यह पूस के मास पसेउ मे न्हाई ॥ ३०४ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नटि न शीश सविता भई, लुटी सुखन की मोट।
चुप करिये चारी करै, सारी परी सरोट ३०५

यह नायिका लक्षिता मरगजी सारी देखि सखी नायिका सों कहति

है ।। कवित्त ।। रसकी उमगभरी रंगभरी सोहति है अंगकी शिथिल द्युति आमिजल छाई है । झूमति झुकति अँगराति जमुहाति मुसुकाति अरसाति सरसाति सुनिकाई है ।। मोटेलूटी सुखकी प्रगट भई तेरे शीश क्यो तू मुकरति मनमथ की दुहाई है । चुप क्यों न करै बालि येई तो करत चोरी जे तू आज सांरि में सरोट पारिआई है ।। २०५ ।।

मराल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।।

दो० मोहिं करत कत बावरी, किये दुराव दुरै न ।
कहे देत रँग रातके, रँग निचुरत से नैन ३०६

यह नायिका के नेत्र देखि सखी कहै तो लक्षित होय जो नायक के विद्यमान नायकको सखी सो नायिका कहै तो खण्डिता होय ।। काबित्त ।। सुरति के चिह्न चतुराई सो लुकाय तन भूषण बनाय सजे बसन तुरत है । कृष्ण प्राणप्यारे के सनेह सरसानी ताते गात अरसाने रस उमँगि दुरत है ।। काहेको सयानी मोहिं बावरी करत अब कियो तैं दुराव काहि कैसेकै दुरत है । प्रगट पुकारे रंग रातके कहत ये तो लोचन युगल मानो रंग निचुरत है ।। ३०६ ।।

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।।

दो० लाज गरब आलस उमँग, भरे नैन मुसकात ।
रात रमी रति देत कहि, औरै प्रभा प्रभात ३०७

यह नेत्रन को भाव देखि सखी नायकसों कहै तो लक्षिता होय जो नायिका नायक सो कहै तो खण्डिता होय ।। काबित्त ।। सारस तैं सरस लसत भरे आरस महारस मगनहेरि हिये हरिलेत है । लालडोरे राजत हैं और उपसाजत हैं फूले मुसकात हैं निकाई के निकेत है ।। मैनकी उमंग भरे यौवन के रंगभरे लाज की तरंग भरे गरब समेत हैं । शैन सुखपागे निसजागे दृग तेरे बाम रात रमि रतिकी प्रभात कहे देत हैं ।। ३०७ ।।

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कोटि यतन कीजै तऊ, नागरि नेह दुरै न।
कहे देत चित चीकनो, नई रुखाई नैन २०८

यह नेत्र देखि सखी नायिका सो कहै लक्षिता होय ॥ सवैया ॥ तो मनमोहन सो मिलयो मनमें तबहीं छबिही लखिपाई । बूझत तोहिं हिये हितु मानिकै मोसों चलावत तू चतुराई ॥ कोटि उपाय करै किन नागरि नेहकी डीठि दुरै न दुराई । नैनन मांझ रुखाई नई यह देत कहे चितकी चिकनाई ॥ २०८ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० सही रँगीले रति जगे, जगी पगी सुखचैन।
अलसौंहैं सौंहैं किये, कहैं हँसौंहैं नैन २०९

यह नायिकाके नेत्रन को भाव देखि सखी कहै लक्षिता ॥ सवैया ॥ मोसो छबीली छिपाव कहा परतच्छही छाती सो छैल लगाई हौ । देवकहै अलसौंहीं हँसौंहींसी आई रिसौंही हिये उमँगाई हौ ॥ प्यारे पिया पर्य्यंकपै पारिकै प्रेम पियूष गिवाय पगाई हौ । कामकलोलनि कामिनि आजुकी यामिनि चारहू याम जगाई हौ ॥ २०९ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ । युगल दर्शन ॥

दो० नितप्रति एकत ही रहत, बैस बरन मन एक।
चहियत युगलकिशोर लखि, लोचन युगल अनेक ३१०

यह युगल की शोभा अरु दोउन के हित की आधिक्य सखी को बचन सखी सो कहति है ॥ सवैया ॥ नित श्रीबृषभानुसुता नँदलाल बिराजत है छबि पुंज छये । कबि कृष्ण कहै मनशील वाहिक्रम बातरताइक रँगरये ॥ सुख देखि सिहात सबै सजनी बिधिसो बिनवै अभिलाष नये । यह रूप बिलोकिबेको तनमे प्रतिरोमनि लोचन क्यो न भये ॥ ३१० ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० मिलि परछाहीं जोन्ह सों, रहै दुहुन के गात।
हरिराधाइकसंग ही, चले गलिन में जात ३११

यह दोउनको मिलबो गली मे जात एकही जानि परत है॥ कबित्त॥ दोऊ रसभीने रूपरीझे तरुणाई भरे दुहुनके नेह उमँगत गात गात है। दम्पति करति चतुराई के चरित्र चारु और कौन जाने ये प्रबीनन की बात है॥ जहां परछाहीं तहां प्यारी यों बिलोकियति जोन्हको प्रकाश तहां कान्हहीं लखात है। कहैं कविकृष्ण कुंजकेलिको निशंकभये दोऊ एक साथही गली में चले जात है॥ ३११॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० तजि तीरथ हरि राधिका, तनद्युति करि अनुराग।
जेहि ब्रज केलि निकुंज मग, पग पग होत प्रयाग ३१२

यह युगल वर्णन॥ कबित्त॥ तीरथनि सटकत काहेको तू भटकत क्यों न अटकत ब्रज शोभाकी हिलंगमें। राधाबनमाली की सरस गोर श्याम द्युति सकल निकाई को लसत सारसंग में॥ तासों करि प्रीति यह निगम प्रसिद्ध विधि सिद्धि बिधि शंकरसे तिनहू ते अंगमें। डगडग प्रति होत प्रगट प्रयाग पग जिनके परति केलिकुंजनके मगमें॥ ३१२॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० उनको हित उनहीं बनै, कोऊ करो अनेक।
फिरत काक गोलक भयो, देह दुहूं जिव एक ३१३

यह दोउन के हितकी अधिकाई सखी सखी सो कहति है॥ कबित्त॥ आधे आधे कहिबेको राधे माधो लहिबेको आधों छिन राधातें न माधो बिछुरत है। ऐसो कछू नेम गह्यो मनमें न भेद रह्यो दुहुँन के प्रेम बढ्यो फह्यो न परत है॥ पलक मे आय इत पलक मे जाय उत पलक

नचाय नट बिद्यासी धरत है । राजाराम मेरे जान दुहूँ तन एक प्रान फागदृगपूतरीन फिरिबो करत है ॥ २१३ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिच सौतिन देखतदई, अपने हिय सों लाल ।
फिरत सबन में डहडही, उहीं मरगजीमाल २१४

यह नायिका नायक की माला पाय बहुत प्रसन्न भई है सो सखी नायक सों कहति है प्रेमगर्बिता होय ॥ कबित्त ॥ सौति के लखत मनभावन मया कै दीनी उरते उतारि परगट कीनी रति है । तबहींते रहसति बिहँसति हुलसति बिलसति लसत गुमान भरी अति है ॥ मनमें मुदित फूली तनमें समात नाहिं चल चित ब्रत अनुराग उफलति है । मरगजीमाला उहीं उर धरै बाला वह डहडही आलिन के झुण्ड में फिरति है ॥ २१४ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अपने कर गहि आपही, हिय पहिराई लाल ।
नीलसिरी औरो चढ़ी, बोलसिरी की माल २१५

यह नायक ने अपने हाथ बनाय बोलसिरीकी माला पहिराई ताहिं पाइ याकी शोभा अधिक भई सो सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ आपने हाथन बीनिके फूल बनाई गुही मनलाय कन्हाई । माल सुबोलसिरी की रसाल सुगन्ध भरी अतिही छबिछाई ॥ आलिन के गनमें लसिकै हँसिकै हठि प्यारी हिये पहिराई । ओप अनूप लही तरुनी बरनी न परै अनुराग निकाई ॥ २१५ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० तीज परब सौतिन सजै, भूषन बसन शरीर ।
सबै मरगजैं मुहुकरी, उही मरगजे चीर २१६

यह नायिका प्रेमगार्विता मरगजे चीर ताको गर्ब भयो,ताते श्रृंगार न कियो सो सखी को वचन सखीसो कहति है ॥ कबित्त ॥ सौतिन हुलासि गनगौरि की परब साधि भूषण बसन बहु भांतिन सुधारे है । तिलक तमोर वेदी वेसर तरयोना साजि अंजनसो आंजे चारु लोचन अन्यारे हैं ॥ कृष्ण प्राणप्यारे के रिझायबेको होड़ी होड़ा चपल कटाक्ष हाइभाइनसो ढारे हैं । उहीं एक राति मरगजे चीरहीसों सबही के नीके मुख अति फीके करिडारे हैं ॥ २१६ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० औरै गति औरै बचन, भयो बदन रँग और ।
द्योसक तैं पिय चित चढ़ी, कहै चढ़्यो है त्योर २१७

यह नायिका नायकके प्रेमगर्वते काहूको मन आनत नाही सो सखी सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ औरही चाल विलोकन औरही देखो यो आननहू रँग औरही । बोलत आनही भांति गुमान सों ज्यो निधनी निधि पाइकै बौरही ॥ बूझेहू बातके ऊतर देत न डीठि कहूं ठहरात न ठौरही । द्वैक दिनाते चढी हरि के चित प्यारी चढायेही राखत त्यौरही ॥ ३१७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कियो जु चिबुक उठायकै, कम्पित *बर भरतार ।
टेढ़ीये टेढ़ी फिरत, टेढ़ै तिलक लिलार ३१८

सवैया ॥ ठोढ़ी उठाय करयो चितचाय सों नन्दलला अतिहीं अनुरागे । भाल लगावतही अँगुरी कर कम्पभयो अतिहेत सो पागे । आने न आने मनै तवतैं न गनै कछु आपने पेम के आगे । टेढ़ीये टेढ़ी फिरै मृगलोचनि टेढ़ोई टीको लिलार पै लागे ॥ ३१८ ॥

---

* पाठान्तर— कर'

शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० सुघर सौतिबसपिय सुनत, दुलहिनि दुगुन हुलास।
लखी सखिन सों डीठ करि, सगरब सलज सहास ३१६

यह नायिका गुनगर्बिता आपने गुनके गुमानते सौतिन के आगमको दुख नाहीं मानति प्रसन्नभई सो सखी तन चितवति है सो सखी सखी सों कहति है॥ सवैया॥ रूपकी राशि सखीन समाज मे सोहै शृँगार सजे ब्रजनारी। काहू कही सुघरायन कै तुव सौतिनै लीनो रिझाय बिहारी॥ यों सुनिकै अतिही हुलसी गुन चातुरी की परमावधिध्यारी। लाज गुमानभरी मुसकायकै रंचक डीठि अली तन डारी॥ ३१६॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० दुसह सौति साली सुहिय, गनत न नाहिं बिहाय।
धरे रूप गुन को गरब, फिरत अछेह उछाय ३२०

यह नायिका आप रूप के गुनके गर्बतें और को चितमे आनत नाहीं सो सखी सखीसो कहति है॥ सवैया॥ नाह के व्याह में प्यारी अछेह उछाह भरी पटभूषण ठानत। जानत है निहचै अपने जियको बनिता करिहै नइहानत॥ रूपके यौबन के गुनके अभिमानतें आनही नाम न आनत। यद्यपि सौतियासाल तऊ उरमै वह ती न रती दुख मानत॥ ३२०॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० खल बढ़ई बल करि थके, कटै न कुबति कुठार।
आलबाल उर झालरी, खरी प्रेम तरु डार ३२१

यह प्रेमकी दृढ़ता सखी सो नायिका कहै अथवा नायक कहै॥ कबित्त॥ देखत ही मूरति मधुर मनमोहन की नैननके मिसै मिल्यो मन अवदात है। आलबाल उरते प्रगटभयो प्रेमतरु दिनदिन झालरतु अतिसरसात है॥ ताहि दूरि करबेको कितने खलन खगि कुबति कुठार

गहि कीनो उतपात है । कहे कविकृष्ण सबै थाके अति बलकरि नेक न-घटत त्यों त्यों दृढ़ होत जात है ॥ २२१ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० करत जात जेतिक घटनि, बढ़ि रस सरिता सोतु ।
आलबाल उर प्रेम तरु, तितो तितो दृढ़ होतु ३२२

यह सनेह के अंगमें दृढ़ता नायिकाकी अथवा नायकको बचन सखीसों सखी नायिकाहू सों कहै तो संभव है ॥ कबित्त ॥ आलबाल उरमें मनोज बयो नेहबीज ताते भयो आली प्रेम अंकुर उदोत है । सुरति सलिल सींच्यो याहीते उमंग उठयो दुहुनके प्रेम बढ़यो कह्यो न परत है ॥ पलक में आय इत पलक में जाय उत पलक नचाय नटविद्या सी धरत है । राजाराम मेरेजान दुहूंतन एक प्रान क़ागदृग पूतरीन फिरबो करत है ॥ ३२२ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मोह दयो मेरो भयो, रहत जु जिय मिल साथ ।
सो मन बांधन सौंपिये, पिय सौतिन के हाथ ३२३

यह नायिका प्रौढ़ा उराहनो नायिका बचन ॥ सवैया ॥ जो मन मोहिं मयाकै दियो तुम तो जियसो मिलिकै रसलीजै । भेदरह्यो न स्वरूप सुभायमें प्रेमपियूष सदा मिलि पीजै ॥ मै अपनो कर जान्यो यही अब अन्तरहोत छिनै छिन छीजै । सो मन जोराबरी करिमोहन सौतिन के कर बांधनदीजै ॥ ३२३ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० भये बटाऊ नेह तजि, बाद बकत बेकाज ।
अब अलि देत उराहनो, उर उपजत अति लाज ३२४

यह नायिका परकीया प्रौढ़ा उराहनो नायक के विद्यमान नायिका

सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नैननसों तनसों मनसा रहनेई मिले त्यहिते सुखसाजनि । भूलिगईं सब वे बतियां हितपुंजन की बहुभांति बिराजनि ॥ ये ताजि नेह बटाऊ भये अब बाद बकै सजनी बिनकाजनि । देत उराहनो ऐसेन को अपने उरही चपिये अतिलाजनि ॥ ३२४ ॥

मदकल अक्षर ३० गुरु ८ लघु २२ ॥

दो० तोही निरमोही लग्यो, मोहीं यहै सुभाउ ।
अन आये आवै नहीं, आये आवत आउ ३२५

यह नायिका परकीया प्रौढ़ा है नायक की निठुरताई अपने हृदय की आसक्ति उराहनो देकर प्रकट करतहै नायिकाको बचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ नेह भरे नैननकी जबते नजर मिली तबहीं ते चितको लगायो अति चाव है । मिलत मिलत मन हिलमिल एक भयो परयो प्रेमफन्दको अनोखो उरझाव है ॥ कह न सकत तेरो हियो निरमोही अति मेरो हियो गह्यो कछू ऐसोई सुभाव है । तेरे अनआये अनआवै है रहत यह तेरे आये आयजात प्यारो तन आव है ॥ ३२५ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० ललन सलोने अरु रहैं, अति सनेह सों पागि ।
तनक कचाई देत दुख, सूरन लों मुँह लागि ३२६

यह नायिका प्रौढ़ा है नायक अन्तःकरणमें कछू कपट जानि उरहने में प्रकटकरतहै नायिकाको बचन नायकसो ॥ सवैया ॥ नेकचितै चित चोरतहौ उर जोरतहौ अनुराग सवाई । रावरे प्रेम प्रबन्धनकी जितहीं तितही सुनिये चरचाई ॥ रूप सलोनेसो नेहपग्यो हरिप्रीति के रंगमें बुद्धि रचाई । सूरनलौ मुँहलागि तऊ दुख देत लला यह नेक कचाई ॥ ३२६ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० आप दयो मन फेर लै, पलटैं दीनी पीठि ।
कौन चाल यह रावरी, लाल लुकावत डीठि ३२७

यह नायिका प्रौढ़ा उरहनो देत है नायिका को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ नन्दलला उरझाय हियो अब देखबे को तरसावत हौ । अब तो हमको यह जानिपरी यह लाज इतै नहिं आवत हौ ॥ तुम मोहिं दयो अपनो मन आपही फेरलै क्यों शिरनावत हौ । अब तौ पलटे इत पीठि दई हरि काहे को दीठि लुकावत हौ ॥ ३२७ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० बिरह बिथा जलपरसिबिनु, बसियत मो हिय ताल ।
कछु जानत जलथंभबिधि, दुरयोधनलौं लाल ३२८

यह नायिका प्रौढ़ा उराहनो नायिका को बचन नायकसो ॥ सवैया ॥ हरि मोहिय प्रेम सरोवर मे बसिबो निशि बासर ठानत हौ । कवि कृष्ण कहै अपने उरको हमसों पिय भेद न भानत हौ ॥ बिरहारु बिथा नहिं नेकु तुम्हैं पै हमैं अतिही दुख दानत हौ । कछु जानिपरी दुरयोधनलौं जलथंभन की विधि जानत हौ ॥ ३२८ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दक्षिण पिय ह्वै वाम बसि, बिसराई तिय आन ।
एकै बासर कै बिरह, लागे बरस बिहान ३२९

यह नायिका प्रौढ़ा सुनायक को उराहनो देतहै दक्षिण पिय या पदतें चतुर पिय सम्बोधन जानिये जो दक्षिण नायक न बनै ॥ कबित्त ॥ रसरीति नागरहौ चातुरी के सागरहौ कोटिकाम कलानिधि उपमा न परसै । सब सुख देतहौ निकाईके निकेतहौ तुम्हैं देखतहा प्रीति सबही के उर सरसै ॥ दक्षिण सनेह हरि ऐसे भये वाम वसि विसराई और तिय

देखिबेको तरसै । कहै कबि कृष्ण एक भौन बसि रहे हम ध्यान लागी बिरह बिहानलागी बरसै ॥ ३२९ ॥

सुरन अक्षर ४६ गुरु २ लघु ४४ ॥

दो० फिरतजुअटकतकटनबिन, रसिकसरस न खियाल।
अनतअनतनितनिताहितनु, चितसकुचतनहिंलाल ३३०

यह नायिका प्रौढ़ा उराहनो नायिकाको बचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारे जग जानत तिहारे गुन गूढ़न उधारे ऐसी ढरनिढरतहौ। सबही को भावतहौ रसिक कहावतपै रस न रसीलेलाल ख्यालसे करतहौ ॥ अटकत फिरत लगन बिन ठौर ठौर प्रेमपन सांचो कबहुँ न उघरतहौ । अनत अनत नित कीजत नवलनेह रंचकहू जियमें न सकुच धरतहौ ॥ ३३० ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सुभर भर्‌यो तुव अगुन कन, पाक्यो कुवत कुचाल।
क्यों धौं दार्‌यो ज्यों हियो, दरकत नाहिंन लाल ३३१

सवैया ॥ मो उरमें अनुराग के फूलतें प्रीति प्रतीति कली प्रकटी ज्यों। रावरे औगुन के कनका छलके बकुला सँग भूरि भरे त्यों ॥ बंचकताई कि बातनसों कबि कृष्ण कहैं परिपक्क भये यो । आवत मोहिं परेखो यहै अब दाड़िम ज्यो दरकै न हियो क्यों ॥ ३३१ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० सदन सदन के फिरन कीं, सद न छुटै हरिराय।
रुचै तितै बिहरत फिरौ, कित बिहरत उर आय ३३२

यह नायिका प्रौढ़ा उराहनो नायिका को वचन नायकसों ॥ सवैया ॥ डोलत लाल घनेघर झांकत प्रेमको आंक कहूं न उघारौ । जानिपरे अबतौ बकसौ उरही करिहै हम ध्यान तिहारौ ॥ बानपरी सु न क्योंहूं

छुटै मनु मानै तहीं रुचि मान पधारौ। भाव न सेज बिहार बिहारी यों तो कितयों इत आय बिहारौ ॥ ३३२ ॥

त्रारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८। स्वाधीनपतिका ॥

दो० छिनकु चलत ठटकत छिनकु, भुज पीतम गल डारि।
चढ़ी अटा देखत घटा, बीजु छटा सी नारि ३३३

यह संयोग श्रृंगार नायिका स्वाधीनपतिका सखी को बचन सखीसों कहति है ॥ कबित्त ॥ सावनके मास मनभावन के संग प्यारी अटापर ठाढ़ी भई घटा अँधियारी मै। दामिनी के धोखे चकचौंधे दृग कबिनाथ छबिनसों मुरि दुरै पिय अंकवारी मै ॥ कोटिरति वारौ ऐसी राधाजूके रूपपर रंभा रंक कहा शंक शचीके निहारी मैं। पागिरही रस जागिरही जोति लाजनि में नेह भीजो देह मेहभीजी सेतसारी मै ॥ ३३३ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० टुनिहाइ सब टोल में, कही जु सौति कहाय।
सुते ऐंचिप्यौ आपत्यों, करी अदोखिल आय ३३४

यह नायिका स्वाधीनपतिका सखी को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ रात दिना छकि याही के धाम पग्यो रसमें रहतो सुखदाई। पास परोस बके कहतीं यह बीस बिसे तिय है टुनिहाई ॥ तू जबते गुनरूपकी राशि सुशील सुहागिल गौनेही आई। प्राणपती अपने वशकै तैं भली करी सौतिकी छूति बहाइ ॥ ३३४ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० तो पर वारौं उरबसी, सुन राधिके सुजान।
तू मोहन के उर बसी, ह्वै उरबसी समान ३३५

यह नायिका स्वाधीनपतिका सखी को वचन नायिकासों ॥ कबित्त ॥ रूप की उजारी वृषभानुकी दुलारी राधे तेरीये निकाई हेरि सौति सब

हारी है। तेरे गुण गायवेको तेरेई रिझायबे को तेरी प्रीतिही को पनु गह्यो गिरिधारी है॥ तेरो नाम तेरो ध्यान तेरोही हिये में धरे तेरो रस-बस उन गायहू बिसारी है। तूही उरबसी ह्वैकै उरबसी मोहनके तेरी छबि ऊपर को उरबसी वारी है॥ ३३५॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० तू मोहन मन गड़ि रही, गाढ़ी गड़नि गुवालि।
उठत सदा नटसालसों, सौतिन के उर सालि ३३६

यह नायिका स्वाधीनपतिका सखीको बचन नायिका सों॥ सवैया॥ खीन करी कटि पीनसे पेट कठोर उठे कुच कोकिल बैनी। कम्बुसो कण्ठ कलाधर सो मुख कोटि कटाक्षन की अतिपैनी॥ तू मनमोहन के मन ग्वालिरही गाढ़ि केलिकला सुखदैनी। सौतिन के उरमांझ सदा नटसाल ज्यों सालत है मृगनैनी॥ ३३६॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० नभ लाली चाली निशा, चटकाली धुनि कीन।
रति पाली आली अनत, आये बनमाली न ३३७

यह नायिका उत्कण्ठिता परकीया नायिकाको बचन सखीसों॥ कवित्त॥ आज मनमोहन को मग निरखत मेरे पलक न लागे प्रीति उरतैं न हाली है। भई नभ लाली देखि फीकी परी नखताली सुनि पातधुनि चिटकाली निशा चाली है॥ काहू खनी की लखि मदगज चाली तासों जानियाति रीझि बनमाली रतिपाली है। कहा कहौं आली इत मदन बिपातिघाली खाली सेज भई जैसी आली बिकराली है॥ ३३७॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२। बासकशय्या॥

दो० झुकिझुकि झुपको हैं पलन, फिरफिर मुरि जमुहाय।
बींद पियागम नींद मिसि, दीं सब आलिन उठाय ३३८

यह नायिका परकीया वासकशय्या सखीको बचन सखीसों क्रियाबि-दग्धा हू संभव है ॥ सवैया ॥ जानि समै पिय आगम को चतुराई करी चित चाह के चाहकै । सैकरि आधिक मूंदिकै आंख झुकीसी करी पलकैं चपलाय कै ॥ जोरि भुजा तनतोरि तिया अंगरानि खरी अरसाय जँभाय कै । बैठीहुती ढिग आई अली सुदई सब ऊठमहाँसो उठायकै ॥ ३३८ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० निशि अँधियारी नीलपट, पहिरि चली पिय गेह ।
कहौ दुराई क्यों दुरै, दीपशिखा सी देह ३३९

यह नायिका कृष्णाभिसारिका सखी की शिक्षा अंगदीप्ति आधिक्य अरु जो प्रत्युत्तर होय तो नायिका के बचनतै रूपगर्बिता होय ॥ कबित्त ॥ हेरि हेरि अंगन लगावत अगर तुम फेरि फेरि येतो फेर काहे तू करति है । लालके सँदेशरचि जात हिये भीजि भीजि आवत पसीजि सुघराई उघरति है ॥ मण्डन छबीली यह छबि तेरी छाजति है मेरी या अँधेरी में तू दिया सी बराति है । आपही तै कर चतुराई चल्यो चाहत सुगात की गुराई यों दुराई क्यों दुरति है ॥ ३३९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० अरी खरी सटपट परी, बिधु आधे मग हेर ।
संग लगे मधुपन लई, भागुन गली अँधेर ३४०

यह नायिका कृष्णाभिसारिका अपनी रातकी बात सखी सखी सो कहति है राह मे चन्द्रोदय भई छायलीनी या पद तै रूपगर्बिताहू भई ॥ सवैया ॥ श्यामनिशा सखि तैसोई साज शृंगार के हौं पति पास चलीरी । त्यों अधगैल उदोत भयो शशि देखत मो मति शोच लगीरी ॥ पंकज छांड़ि सुगन्ध के लोभ लगी सँग भौंरन की अवलीरी । ताही समय ममभागनि आय कै छाय लई उन कुंजगलीरी ॥ ३४० ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० छिप्यो क्षपाकर क्षिति छयो, तमुससिहरनसम्हारि ।
हँसति हँसतिचलि शशिमुखी, मखतेँ घूँघट डारि ३४१

यह नायिका शुक्लाभिसारिका राह में चन्द्र अस्तभयो देखि संकुचित भई तब सखी सावधान करतिहै ॥ सवैया ॥ तेरे कहे साजि शुभ्रशिंगार चली बालि हैं गहिकै गतिमन्दहि । अथयो सोम अली अधबीचही देखि छये छिति पै तम बृन्दहि ॥ घूँघुटको पटटारिकै प्यारी उघारिदै तू अपने मुखचन्दहि । वारसनै मति जोन्ह हँसी करे यो चलिकै मिलरी नँदनन्दहि ॥ ३४१ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० उठि ठकु ठकु येतो कहा, पावस कैं अभिसार ।
जानि परैगी देखियो, दामिनि घन अँधियार ३४२

यह सखी नायिका सो कहति है कि अभिसार को सहजही समय है नायिका परकीया ॥ सवैया ॥ क्यों तन नील निचल सजै सखि क्यो मृगमन्द को लेप करैगी । पावसकै अभिसार को येतो बिचार कहा चितमाहिं धरैगी ॥ कुंजके भौन निशंकह्वै क्यो न चलै हरि कन्तहि अंक भरैगी । श्यामघटा की अँधेरी मे तेरी छटासी तनद्युति जानि परैगी ॥ ३४२ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ । शुक्लाभिसारिका ॥

दो० युवति जोन्ह में मिल गई, नैन न होत लखाइ ।
सौंधे के डोरन लगी, अली चली सँग जाइ ३४३

यह नायिका शुक्लाभिसारिका सखी को बचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ तनकी गुराई तरुनाई की निकाई छाई जाकी उजराई ते उजारी उपमाति है । शरद निशा मे प्यारी बिशद शृंगार सजै गजगमनी की शोभा

अतिसरसाति है ॥ चली अनुरागी मिलि मोहन के मिलिबे को चांदनी मे मिलगई क्योंहूँ न लखाति है । सौंधे के डोरन सुलगी अली संग चली मानों पूनोचन्द सह तारन लखाति है ॥ ३४३ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो०गोप अथाइन ते उठे, गौरज छाई गैल ।
चलिचलि अलिअभिसारकी, भली सँझोखेसैल ३४४

यह नायिका सन्ध्याभिसारिका सखी को बचन नायिका सों कि ऐसे समय अभिसारिका ॥ सवैया ॥ छोड़ि अथाइन गौलयक्ले को उठी सब गोपन की अवली है । छीन भई सुखही रबि की छबि गौरज पूरत गैल गली है ॥ चन्दकला प्रकटी न अजौं चलि क्यों न करै अलि रंगरली हैं । मानि सुहागिनि मेरो कह्यो अभिसार की सैल सँझोखे भली है ॥ ३४४ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो०पल सोहैं पगि पीक रँग, छल सोहैं सब बैन ।
बल सोहैं कत कीजियत, ये अलसोहैं नैन ३४५

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों ॥ कवित्त ॥ सोहत शिथिल गात या रस में पागे निशि जागे ताते आरस के ढार ढरियतु है । बैन तुतरात अंगरात मुर बेरि बेरि फेरिं फेरि हेरि हेरि हिय हेरियतु है ॥ बैनसनै छलसोहै पीक पगे पलसोहै देखि छबि दृगनि अनन्द भरियतु हैं । कृष्ण प्राणप्यारे श्रम काहे को करत एतो अलसोहैं नैन बलसोहै करियतु है ॥ ३४५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कत लपटैयत मो गरे, सोनजुही निशि शैन ।
जिहि चम्पक बरनी किये, गुललाला से नैन ३४६

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता फूलन के नाम शब्द को चमत्कार है ॥ सवैया ॥ मोगरे भूलि न लागिकै लालन सोनजुहीं निशि शैन में प्यारी । जाको लसै तन चम्पक सो दशनावलि कुन्द-कली छबिधारी ॥ लोचन लाल गुलाल के रंग करे निज रैनि जगाय बिहारी । निन्दत है अरबिन्दन की छबि पीतपराग भरे भर भारी ॥ ३४६ ॥

मराल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कत कहियत दुख दैन को, रचि रचि बचन अलीक ।
सबै कहाब रह्यो लखै, लाल महाउर लीक ३४७

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ आज मयाकर मेरे पधारे लसी छबि रैनबिहार बिहारे । क्यों कहिये दुखदैन को बैन बनाय बनाय सनेहहि हारे ॥ घूमत लोचन नींदभरे उघरे उरमें नख चिह्न तिहारे । और कहाब रह्यो सब लाल लिलार महाउर लीक निहारे ॥ ३४७ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पट सों पोंछि परी करौ, खरी भयानक बेख ।
नागिन ह्वै लागी दृगन, नागबेल रस रेख ३४८

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सो ॥ सवैया ॥ आज मयाकर मेरे पधारे खुली बड़भागिनि की सुघरी है । प्रीतम ये पट सों रसपोंछि परी करो मोमति हेर हरी है ॥ लागत है मम नैन को आहि सुभामिनिसी मै भूरि भरी है । केलिसमै अहि-बेलि के रंग की रेख निमेषनिपै उघरी है ॥ ३४८ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जिहि भामिनि भूषण रच्यो, चरणमहाउर भाल ।
उहीं मनौं अँखियां रँगीं, ओठनके रँग लाल ३४९

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ वाही के नैन को काजर ओठपै नीको लग्यो जनि पोंछिकै खोऊ । वाही के पायँ को जावक रंग लिलार महाछबि देत है सोऊ ॥ ऐसो वनाय शृंगार करयो जिहिहै वह बाल बिचच्छन कोऊ । जानहुँ लाल रँगी उनहीं आँखियाँ अधरान के रंग में दोऊ ॥ ३४९ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पलन पीक अंजन अधर, धरे महाउर भाल ।
आज मिले सुभली करी, भले बने हौ हाल ३५०

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिकाको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ आज बनेहौ भले नँदलाल भये सब बानिक सोहतभारी । मण्डनु आंखिन पीक लगी अरु लीक लगी कछु ओठनकारी ॥ बाईं तो बांह तिलोछ रही यह दाहनी बांह सिहात तिहारी । बैठी खगेखगि लाग उठी यह कैसी बिराजत बीरन सारी ॥ ३५० ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० वाही की चित चटपटी, धरत अटपटे पाय ।
लपट बुझावत बिरह की, कपटभरेऊ आय ३५१

प्रौढ़ा धीरा नायिकाको वचन नायक सों ॥ कवित्त ॥ अनत बसे को हौंतौ विलगु न मानत हौं सब रसवस कीयो चाहै बहुनायकै । ताके भागे जागे जाके संग निशिजागे मेरे भोर भये आये हितू हियकौ जैनायकै ॥ जानियतु वाहिकी लागीहै चितचटपटी अटपटे चरण परत डगलायकै । लपट बुझावतहो विरह हुताशनकी कपट भरेऊ प्राणप्यारे तुम आयकै ॥ ३५१ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गहकि गांस औरै गहै, रहै अधकहै बैन ।

देखि खिसोहैं पिय नयन, किये रिसोहैं नैन ३५२

यह नायिका खण्डिता नायक सुरतके चिह्न दुरायकै याके आये यह बात करन लावत रातमें नायक के नेत्र देखि तेइ न जानी सो बात छोड़ि कोपके गांस गहै सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ आवत प्राणपतीहि बिलोकि सुधासम नेह की डीठसों हेरे । धायकै आगे है आयलये हियमें उमँगे सुखपुंज घनेरे ॥ आधेसे बैन कहै ई रहै सुखगांस भरे उरकोप करेरे । कान्हके नैन खिसात बिलोकि रिसाइकै प्यारी तिही दृग फेरे ॥ ३५२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पावक सो नैनन लग्यो, जावक लग्यो जु भाल ।
मुकर जाहुगे पलक में, मुकर बिलोको लाल ३५३

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों ॥ कबित्त ॥ मैन छबि रैनके उनींदे नैन मूंदेआवै नींदके अरस इन्दीबरन दरत हौ । पियरो बदन भयो हियरो छुवत मोहिं सियरो करत ज्यों ज्यो नियरो करत हौ ॥ आलम सुप्यारी जिय ऐसेकै पठाये पिय ताके उठि दिनप्रति पायन परत हौ । कच मुकराये मधुकरकीसी माल लाल मुकरबिलोको कत मुकरे करत हौ ॥ ३५३ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तेह तरेरे त्योर करि, कत करि यह दृग लोल ।
लीक नहीं यह पीक की, श्रुति मन झलक कपोल ३५४

यह नायक सापराध जानि नायिका नेत्र चंचल करतहै सो नायिका सखी नायिका के चित्तको भ्रम निवारण करतहै सखीको वचननायि-कासों नायिका सखीसों कहै तो भूतसुरतगुप्ता परकीया होय ॥ कबित्त ॥ आज लखि पति कछू औरै भांति तेरी गति आननपै उमँग लला।

ललकति है । भृकुटी कुटिल अति तेहसों तनोनी भई नैनन में रिसकी तरंग छलकति है ॥ कहै कवि कृष्ण यह धोखोहि इहांतो करि पीकलीक जानतूजवोल वलकति है । ललित कपोल पर नीकेकै बिलोकि श्रुति भूषणकी मनकी झलक झलकति है ॥ ३५४ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० आये आप भली करी, मेटन मान मरोर ।
दूर करो यह देखि है, छला छिगूनी छोर ३५५

यह खण्डिता नायिका की सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ आप कृपा कर आये भली करी आजको बानिक मो मन मोहै । देखत रावरी मोहनी मूरति मानमरोर धरै उर कोहै ॥ काहू छबीलीको छोटो-छला यह छोर छिगूनीके छाजत छोहै । देखि रिसायगी दूर करो कछु जानत हो अनआय लसो है ॥ ३५५ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० लालन लहि पाये दुरै, चोरी सौंह करै न ।
शीश चढ़े पनिहां*प्रकट, कहैं पुकारे नैन ३५६

यह नायिका प्रौढ़ा धीरा खण्डिता नायिकाको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ आये उनींदे जँभात तऊ कछु भेद न जान्यों हियेकी मैं भोरी । वाकुचकुंकुमके लगे चिह्न मिलाय हिये मसकै जिहि गोरी ॥ लाल लही अवतो सब बात दुरै नहीं सौंह करौ किन होरी । शीश चढ़े पनिहां दोऊ नैन पुकार कहैं रतिरंग की चोरी ॥ ३५६ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १४ लघु २१ ॥

दो० तुरत सुरत कैसे दुरत, मुरत नैन जुरि नीठि ।
डौंड़ी दै गुन रावरे, कहै कनौड़ी दीठि ३५७

---

* पाठान्तर—"पनिहां" ।

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता सखी को बचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ चिह्न अंग अंग के दुराये चतुराईकै पै आरस गमन गात दुरढहनात है। प्रेम सुधा पान के हुलासतें मुदित मन मैन मुखसने ऐन बैन तुतरात है ॥ तुरत सुरत कही कैसेकै दुरतलाल नीठिजुरि मुरत नयन जलजात है। कृष्णप्राणप्यारे यह डौड़ी दै कनौड़ी दीठि प्रकट करत रात रतिवारी बात है ॥ ३५७ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मरकत भाजन सलिलगत, इन्दु कला के बेख।
झीन झँगा में झलमलै, श्याम गात नख रेख ३५८

यह नायिका खण्डिता नायिकाको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ नाह की छाती में देख नखच्छद नारि नवोढ़ा कह्यो पुन ऐसें। सुन्दर बागे की चोली में मेलिकै ल्यायेहो चन्दकला धरि कैसें ॥ खेलिबेको हमहैं यह देहजू यों कहिकै हरि दौर हरेसें। लाय लई उर सों हँसिकै गसि दोऊ रहे कसि राखिये जैसें ॥ ३५८ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नख रेखा सोहत नई, अलसोहैं सब गात।
सोहैं होत न नैन ये, तुम सौंहैं कत खात ३५९

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिकाको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ हरि जानिपरी हमहूँ पै मया पगधारे इतै रतिकेलि किये। तुम तौ सबके सुखदायक हौ सबही को बनै सुखपुंज दिये ॥ मुकरौ जिन वे प्रकटैं लखिये जु लगी टटकी नखरेख हिये। दृगसोंह न होत सकोचनु ते अब काहे को सोंह इती करिये ॥ ३५९ ॥

बारन अक्षर ३६ गुरु १० लघु २६ ॥

दो० तरुन कोकनद बरुन बर, भये अरुन निशि जागि।

वाही के अनुराग दृग, रहे मनो अनुरागि ३६०

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारे प्रात प्रीति कैं पधारे मेरे देखे मैन मूरति विरह गयो भागिकै। मरगजे बागे रस पागे लटपटी पागै आसर मगन अंग रहै अंकलागिकै ॥ रावरे लसत अतिलोचन ललित भए कोकनद अरुन बरुन निशि जागिकै। मेरे जान प्राणपति वाही प्राणप्यारी के परम अनुराग में रहे हैं अनुरागिकै ॥ ३६० ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सोहत संग समान सों, यहै कहैं सब लोग।
पान पीक ओठन बनै, काजर नैनन योग ३६१

यह नायिका प्रौढ़ा खण्डिता नायिकाको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ ग्रन्थन तै यह वात प्रमाण है यों चलिआयो मतौ सबहीको। जैसको तैसोई योग जुरै तव होत महासुखदायक जीको ॥ जो बिपरीत बिलोकिये संग कुढंगत ही रँग लागत फीको। पानकी पीक बनै पिय ओठन आंखिनही लगै काजर नीको ॥ ३६१ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० प्राणपिया हिय में बसी, नख रेखा शशि भाल।
भलौ दिखायो आन यह, हरिहर रूप रसाल ३६२

यह प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ पूरण प्रेम सों प्राणपियारि बसाय हिये हियरो हुलसायो। भाल नई नखरेख बिराजत सोय मयंक लसे छबिछायो ॥ लोचन रागु रजोगुण राजत घूमत नैन तमोगुण पायो। पीतम प्रातही आनि यहै शु भलो हरि को धर रूप दिखायो ॥ ३६२ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यहाँ न चलि बलि रावरी, चतुराई की चाल।
सनख हिये खिन खिन नटत, अनख बढ़ावत लाल ३६३

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ यहां न चलै कछू रावरी लाल चलावत जे चतुराई की चाल । छाती नखच्छद पीक सुगाल धरे अतिरंग महाउर भाल ॥ खात इते पर सोंह गुपाल हिये उमँगावत क्यों रसजाल । भाग बड़े उहि भामिनी भाल हिये उमँगी जिह भेटत माल ॥ ३६३ ॥

नर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० वैसीये जानी परति, झँगा ऊजरे मांह ।
मृगनैनी लपटत जु यह, बैनी उपटी बांह ३६४

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायकके बिद्यमान सखीहू सों कहै ॥ कबित्त ॥ काहेको करत चतुराई कै चरित्र लाल शोचभरी सूरत प्रकट पेखियतु है। सौंहै जिन करौ नैन नेक सोहनी सी शोभा अतिही बिराजै अंग अंग लेखियतु है ॥ कृष्ण प्राणप्यारे कुच कुंकुम की छायरही छाती पै उघरि यह अवरेखियतु है । मृगनैनी लपटति ऊपटीखये पै बैनी ऊजरे झँगा मे अरटेपी पैजयतु है ॥ ३६४ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० न करु न डरु सब जग कहत, कत बेकाज लजात।
सोहैं कीजै नैन जो, सांची सोहैं खात ३६५

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ मोहिंतो लागत नीके महा तुम आये प्रभात प्रभातर सोहै । जो करिये तो हिये डरिये बिन कांये किते डरिये डरसोहैं ॥ क्यो बिन

आज सँकोच भरौ उर काहे को कीजत नैन लजोहैं । जो तुम सांची ये सौंह करौ हरि तौ इत क्यों न करौ मुखसोहैं ॥ ३६५ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रहो चकित चहुँधा चितै, चित मेरो मति भूलि ।
सूर उदय आये दृगन, रही सांझ सी फूलि ३६६

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिकाको बचन सखी से होय नायक सों होय ॥ सवैया ॥ देखत रावरी मोहन मूरति मोहिं सबै सुधि भूलि रही है । आज महाछबि छाजत भोर निकाई सबै अनुकूलि रही है ॥ चाहिरह्यो चहुँधा चकिसो चित आचरजै मति डूलि रही है। आये हौ सूरउदोत भये बिबिनैनन सांझसी फूलि रहीहै ॥ ३६६ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कत बेकाज चलाइयत, चतुराई की चाल ।
कहे देत ये रावरे, सब गुन बिन गुन माल ३६७

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ सौतिके धाम बिराम कै आपु प्रभात इतै पगधारत हौ जब । मैन छकी छबि ऐन दिखाय अनन्द हिये उपजावत हौ तब ॥ क्यों बिनकाज चलावत हौ चतुराई की चाल लला हमसों अब । माल बिना गुनकी उरपै उपटी गुन रावरे देत कहे सब ॥ ३६७ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० दुरै न धरि धांधौ* दिये, ये रावरी कुचाल ।
बिषसी लागत है बुरी, हँसी खिसी सी लाल ३६८

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को वचन नायक सो ॥ सवैया ॥ जानतहो हियके हितसों उनहीं के बसे सुखसों निशिनासी ।

---

* पाठान्तर—"दुरै निधरको धौं" ।

भोर किंहू भ्रमभूलि कै लाल पधारे इतै कछु कीनी कृपासी । ढीठ्यो दियो कहो कैसे दुरै इहओरहीते जु कुचाल प्रकासी । लागत बीसबिसे बिषसी सुखिसापन के मुख आवत हाँसी ॥ ३६८ ॥

मराल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० गड़े बड़े छबि छाकु छकि, छिगुनी छोर छुटै न ।
रहे सुरँग रँग रँगि उहीं, नुहदी महदी नैन ३६९

यह महदी को वर्णन है अरु जो नायिका को बचन नायकसों होय तो खण्डिता होय जो नायिका को बचन सखी सों होय तो गुणकथन ॥ सवैया ॥ वाकी छबीली छिगूनी के छोरपै ये रुचपुंज नयेई नये हैं । तापर चारुलसै नुहदी महदी दल बिद्रुम जीत लये हैं ॥ ताकी महाछबि के मदछाकि छुटै न अजौं गड़ ऐसे गये है । ये बिबि लोचन वाई के रंगमें राचिकै मानो सुरंग भये है ॥ ३६९ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कत सकुचत निधरक फिरौ, रतिमौ खोरि तुम्है न ।
कहा करौ जो जानिये, लगे लगोहैं नैन ३७०

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिकाको बचन नायक सों ॥ कबित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारे आज प्रीतिके पधारे होते तन मन वारौ वहु हुलासि बधाइये । नेक निरखन लगे जाहि जो लगेहै नैन ताको तुम कहाकरौ ग्रीव न नवाइये ॥ कैसे राख्यो जात मोरि मनु बँध्यो प्रेमडोरि तुम तन छोरि कहो रंच को न पाइये। काहे को सकुच कीजै रुचै तितै सुखदीजै अलिहै निशंक रस लीजे जहां पाइये ॥ ३७० ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० अनत बसे निशि की रिसनु, उर बर रही विशेखि ।
तऊ लाज आई झुकत, खरे लजोहैं देखि ३७१

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ राति कहाँ अनते बितई मनमोहन केलि कला सुख सौहैं । ताते हिये अतिही रिस छाय रही अनखाय चढ़ायकै भौंहैं ॥ भोरही आवत देखि जऊ कहिबे कै भई भुकबैठ रुखौहैं । आई तऊ अतिलाज हिये निरखे जब लाल खरेई लजौहैं ॥ ३७१ ॥

नर अच्चर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बिलखी लखै खरी खरी, भरी अनख बैराग ।
मृगनैनी सैनन भजै, लखि बैनी के दाग ३७२

नायिका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ साजि शृँगार हुलासकै आई बिलोकि रही चकि दूरते भङ्कहि । सौतिकी चींकनी चोटीको दाग लग्यो टटकौ पतिकै परयङ्कहि ॥ ठाढ़ी जकीसी कपोल धर कर रोषभरी भृकुटी करि बङ्कहि । शोचसनी बिलखै मृग॰ लोचनि लेत उसास न आवत अङ्कहि ॥ ३७२ ॥

चल अच्चर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नई बिरह बढ़ती व्यथा, खरी बिकल जिय बाल ।
बिलखी देखि परयोसिन्यौ, हरषि हँसी तिहि काल ३७३

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता एकतो नायक यासों हित नाहीं करत ताते बिकल है दूसरी परोसिन देखी ताही समय तब खरी बिलखी अरु नायक याके परोससों रहत है सो वह यह बिलखी देखि अतिप्रसन्न भई ॥ सवैया ॥ बालम को हित आन बधूसों रहै न कहूं घर एक घरी है । ता दुख बाल महा जिय व्याकुल कामखरी कुलकान परी है ॥ बाढ़ी व्यथा अति डाढ़ीसी डोलति गाढ़ी बियोगकी गाढ़ परी है । त्यों मृगनैनी परोसको देखि खरी बिलखी लखि मोद भरी है ॥ ३७३॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० रही पकरि पाटी सुरिसि, भरे भौंह चित नैन ।
लखि सपने तिय आन रति, जगतहुँ लगत हिये न ३७४

यह नायिकाने स्वप्न मे नायक अन्यासक्त देख्यो तब जागतहू मान नाहीं छोड़त अन्यसंभोगदुःखिता सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ दंपति केलि कलोलपगे उर लागे रमोय गये पलिकाहीं । ऐसे में प्यारी लख्यो सपनो हरि आन बधूसों किये गलबाहीं ॥ पाटीसों लागिरही मृगनैनी भरी रिस नैनन भौहन माहीं । चौंकि यहै चित पागी महा तिय जागी निशा हिय लागत नाहीं ॥ ३७४ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० छला परोसिन हाथ ते, छल करि लियो पिछान ।
पियहि दिखायो लखिबिलखि, रिससकुचीमुसकान ३७५

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पेखि परोसिनके कर प्यारी करी चतुराईके चारु कला है । मांगिलियो कछु ऊठमसो बहुकै मनुहारि हलाऊमला है ॥ प्रीतमसों मुसकाय कही कबिकृष्ण कहैं रुख रोप रला है । नेक इतै लखिये मनमोहन आज भलो हम पायो छला है ॥ ३७५ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० गह्यो अबोलो बोल प्यो, आपे पठै बसीठि ।
दीठि चुराई दुहुन की, लखि सकुचौंहीं डीठि ३७६

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखीसो ॥ सवैया ॥ आपनी प्यारी अलीको पठै पिय प्यारे को आपही बोलि पठायो । आगे ह्वै आय लियो हितसों हियरो हुलस्यो नियरो जब आयो ॥ येते मे कृष्ण दुहून की दीठि लजौहीं लखी उरते हतचायो । बोलैकी

भारी मलोलो भरयो जिय कासों कहै अपनो डहकायो ॥ ३७६ ॥

वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सुरँग महावर सौति पग, निरखि रही अनखाय ।
पिय अँगुरिन लाली लखै, उठी खरी लगिलाय ३७७

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पेखि सुरंग महावर सौतिके पांयन बाल रही अनखानी । याही बिलोकि विकायगो मोहन बात यहै अपने उर आनी ॥ येते में प्रीतमकी अँगुरीन ललाई विलोकि खरी बिलखानी । पावक बाल जगी उरमें मुरझात महारिस में अकुलानी ॥ ३७७ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बिथरयो जावक सौति पग, निरख हँसी गहिगांसु ।
सलज हँसौहीं लखि लियो, आधी हँसी उसांसु ३७८

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ बाल हँसी कछु गांस गहे लखि फैल्यो महावर सौतिके पायनि । जानि यहै अपने जियमें यह जानति नाहीं शृँगारके भायनि ॥ येते में मोदभरी मुसकात लजौहीं विलोकनि देखि सुभायनि । आधी ये हांसी उसासभरी अकुलात खरी विसरी चितचायनि ॥ ३७८ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० हठ हित कर प्रीतम लियो, कियो जु सौत शृँगार ।
अपने कर मोतिन गह्यो, भयो हरा हर हार ३७९

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता याको हार नायकने लैके सौतको पहरायो सो नायिका सखी सो कहै ॥ सवैया ॥ मांगि लियो हितके हठि प्यारे ने हारु सुचारु प्रभानसों पाग्यो । ताहि लै लालची लाल गयो काहू सौतिके धाम तिहीं अनुराग्यो ॥ वाहीकी रीझ शृँगार कियो

लखि याके हिये अनुखाहट जाग्यो । आपने हाथ बनाय गह्यो मुक्ता को हरा हरहार सो लाग्यो ॥ ३७९ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० प्यारो शोर सुहाग को, इन बिनहीं पियनेह ।
उनदेही अँखियाँ ककै, कै अलसौंहीं देह ३८०

यह नायिका सौति को आलस बल देखि अरु रसमसी आंखि देखि सखी सों काकध्वनि करि कहतु है अन्यसंभोगदुःखिता होय जोई सखी नायकसों कहै तौ याकी रिस को निवारण होय ॥ सवैया ॥ सैकरि आंखि उनींदी करी अधऊतर सों मुख बोल उचाख्यो । बारहीबार जँभायकै योंहीं खरो तन आरसकै ढर ढारयो ॥ झूठी जतावत है सुखसेन जगी यह यामिनि याम निवारयो । देखि तौ प्रीतमकी बिन प्रीति सुहाग को शोर कितो यह पारयो ॥ ३८० ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सखि सोहत गोपाल के, उर गुञ्जन की माल ।
बाहिर लसत मनो पिये, दावानल की ज्वाल ३८१

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ भाग बड़ी निरख्यो यह बानकु आजुकी हौ बलिजाऊं घरी की । ऐनप्रभा लखि लागत है कछु मोहिं तो मैनकी मूरति फीकी ॥ देखरी मोहन के उर भावती माल बिराजत गुंजकी नीकी । पीवहुती प्रकटी सुतौ बाहिर ज्वाल मनौं बड़वानलही की ॥ ३८१ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मुँह मिठास दृग चिकनई, भौंहैं सरल सुभाय ।
तऊ खरे आदर खरो, खिन खिन हियो सकाय ३८२

यह नायिका सादरा धीरा प्रौढ़ा नायिकाको बचन नायिका सो ॥

कवित्त ॥ बदन कमलते अधिक हितसाने बैन मधुरे कढ़त अमी जिनमें चुचातु है । भृकुटी लुभायही सरल लखियत कहूं रोष की न रंच लवलेश दरशातु है ॥ नेहकी निशानी रससानी चितवनि त्यों हीं कैसेहूं न मोपै यह भेद लह्यो जातु है । ज्यो ज्यों अतिखरो आपु आदर करत प्यारी त्यों त्यों मेरो हियो खरो खरोई सकातु है ॥ ३८२ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० खरे अदब इठलाहठी, उर उपजावति त्रासु ।
दुसह शंक बिष की करे, जैसे सोंठ मिठासु ३८३

यह नायिका सादरातिधीरा प्रौढ़ा नायिका को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ गांस गह्यो उर में जितनो कछु मैं तो न चूक इतीक करी है । वानसजी इठलाहठकी अब काहेसौं धौं नहिं जानिपरी है ॥ त्रास हिये उपजावे खरो अति आदर सों अभिमानभरी है । सोंठ चबात ज्यो मीठी लगै सब कोऊ कहै बिषही की डरी है ॥ ३८३ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नहिं नचाय चितवत दृगन, नहिं बोलत मुसकाय ।
ज्यों ज्यों रुख रूखो करै, त्यों त्यों चित चिकनाय ३८४

यह नायिका प्रौढ़ा धीरा अकृतगुप्ता नायिकाको बचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ जोरत न लोचन नचाई नेहचाई भेरे मुरि मुसकान कौन भाव दरशात हैं । बोलत न कहूं मनमोहन मधुर वैन मोर जिन भृकुटी मरोरत न गात है ॥ कहै कविकृष्ण वाकी गरवीली वानि कछू सहज बशीकरको मन्त्र जान्यो जात है । ज्योंहीं ज्यों रहत प्यारी राधा रूखे रुख करि त्योंहीं त्यों खरोई खरो चित चिकनातु है ॥ ३८४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जो तिय तुम जिय भावती, राखी हिये बसाय ।

मोहिं झुकावत दृगन है, वहई उझकति आय ३८५

यह मान भ्रम नायककी आंखिन में अपनो प्रतिबिम्ब देखि अरु स्त्री जानि नायिका कहति है ॥ सवैया ॥ नेक मनेकरो पाँय परौं हरि काहे सों मोसों रिसावति है । राज करो नित याहि लिये रहौ यामें कहा कहनावति है ॥ जो तुम राखी बसाय हिये पियप्यारी तिहारी कहावति है । झांकत रावरी आंखिन आन वहै तिय मोहिं झुकावति है ॥३८५॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँभीर ।
को घटि है बृषभानुजा, वे हलधर के बीर ३८६

यह परस्पर मान सखीको बचन सखीसो ॥ कबित्त ॥ अनगने औठ पाय रावरे गने न जाहि वेऊ आहि तमकि करैया अतिमानकी । तुम जोई सोई कहो वेऊ जाय सोई सुनें तुम जीभपातरे वे पातरी है कानकी ॥ कैसो कैसो राय काहि बरजों मनाऊं काहि आपने सयान कोधौं सुनत सयानकी । वेऊ बड़वानलकी है है सोई अहै बीच तुम बासुदेव वे हैं बेटी बृषभानकी ॥ ३८६ ॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु ७ लघु २४ ॥

दो० दोऊ अधिकाई भरे, एकै गौं गहराय ।
कौन मनावे को मनै, मानै मत ठहराय ३८७

यह परस्पर मान है दोऊ अधिकाई भरे सो नायिका मानवती नायक रूप मानी अथवा नायिका को मान देखिबे की गौ है सखीको बचन सखीसो अरु दोऊ अन्यासक्त होहिं यह कहिबो संभव है ॥ सवैया ॥ आज चली रसही रसमें कछु बात दुहूंनसो क्यो कहि आवै । लै अपनो अपनी रिसमे अरुझायो हियो अब को सुरझावै ॥ दोऊ खरे

अधिकाई भरे गहे एकही गौ कोउ भेद न पावै । कौन मनावै मनै कहिको मनमानो दुहूनको मानहीं भावै ॥ ३८७ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मान करत बरजत नहीं, उलटि दिवावति सौंह ।
करी रिसौंहीं जाहिगी, सहज हँसौंहीं भौंह ३८८

यह मान दृढ़ावत है सो मान छुड़ायबो प्रयोजन हैं सखीको बचन नायिका सों ॥ सवैया ॥ रूखो करयो रुख नैन चढ़ाय कै बैन कहैं मुखते अनखौहैं । मान करयो सुभली करी हौं न मनैकरौं और दिवावति सौहै ॥ मोहूंसों बूझै न ऊतर देत सु देखोगी मोहनको मुख जौहै । होयगी सौहै रिसौंहै रि लाल सुसहजही तेरी हँसौंही ये भौहै ॥३८८॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रस केसे रुख शशिमुखी, हँसिहँसि बोलत बैन ।
गूढ़ मान मन क्यों दुरै, भये बूढ़ रँग नैन ३८९

यह नायिका अधीरा को मानहै सो सखी नायककी नायिका सों कहत है ॥ सवैया ॥ ऊपरको रस कोसों करयो रुखभाव किये हितके सरसाते । सूधे चितै हँस बोलत बैन कढ़ै मुख मीठे सुभाव सुधातें ॥ नेहके चिह्न जनाय सबै विधि स्वास दवायकै तेहके तातें । मान हियेको दुरै केहि क्यों जु मँजीठ के रंगभये दृग रातें ॥ ३८९ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चितवन रूखे दृगन की, हाँसी बिन मुसकानि ।
मान जनायो मानिनी, जानि लियो पिय जानि३९०

यह नायिका मानवती पैं मानके लक्षण कुछ प्रकट करै नही पै प्रवीण नायक ने जानी सखी को वचन सखीसों नायिकाहूसो होय ॥ कवित्त ॥ वैसेही चितौन जैसे आगे चितयतही पै नेह चिकनाई को न

दृगन निशानी है । मधुरबचन त्योहीं बोलत बिहँसि पै सरस मुस-कानकी न बान पहिँचानी है ॥ ऐसी भाँति भामिनी जनाई भूठमान रीति जानि मन प्यारे बेष देखतही जानी है । साध कै रुखाई रिस ठानी तैं सयानी सो प्रबीनन की डीठ तें रहत कैसे छानी है ॥ ३९० ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कपट सतर भौंहैं करी, मुख अनखौंहैं बैन ।
सहज हँसौंहैं जानि कै, सौंहैं करति न नैन ३९१

यह मान परिहास है नायिका प्रौढ़ा सखी को बचन सखी सो ॥ कबित्त ॥ प्रीतम की प्रीति की प्रतीति लखिबेको प्राणप्यारी कछु कीनो परिहास भूठो मान ठानि । कहै कबिकृष्ण उर ऊपर रुखाई भरि बदन बिदोरि बैठि धरिकैं कपोल पानि ॥ आपनी अलीनहू सो जोरत न रुख मुख बैन अनखाय कहिबे की ज्यो ज्यो गही बानि । भृकुटी सतर कीनी कपटसो तानि ऐपै सौंहे न करत दृग सहज हँसौंही जानि ॥३९१॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मनु न मनावन को करै, देत रुठाय रुठाय ।
कौतुक लाग्यो यों पिया, खिजहू रिझवत जाय ३९२

यह नायिकाको मन देखिबो प्रयोजन है सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ रोपभरी अँखियानहूं की अवलोकनि मांझ भरयो रस-भारी । याही तें मानहुं को रुख देखिबे की नँदनन्द हिये रुचिधारी ॥ होत मनोहीं प्रजा सबही तबसे करि देत रुसाय बिहारी । कौतुक लाग्यो इहीं रस के खिजहू के रिझावत राधिका प्यारी ॥ ३९२ ॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० भले पधारे पाहुने, ह्वै गुड़हल को फूल ।
ताही दिन ते ना मिट्यो, मान कलह को मूल ३९३

यह नायिका परकीया उपपति को बिरह दुराइबे कों पतिसों मान कीनो सो सखी सखीसो कहति है जो सखी नायकसों कहै तो खण्डिता होय ॥ कवित्त ॥ जाही रजनी के घर बसे आनघर बसे जानै कौन कहा मन्त्र कैसे पढ़िनायो है । वाही रजनी ते अजौ मिटयो न अनैसो मान सखी पचिहारी काहू मरम न पायो है ॥ कहै कबिकृष्ण ऐसो रूठनो सुन्यो न देख्यो जैसो उहि लरिहार उर में दढ़ायो है । पाहुनै पधारै आछे फूल गुड़हरको ह्वै कलह को मूल वा बगर बगरायो है ॥३९३॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मोहूं सों बातन लगे, लगी जीभ जिह नाय ।
सोई लै उर लाइये, लाल लागियत पाय ३९४

यह मध्यमा नायिका सो बातें करत जानि नायिका सो आसक्त होय नायक ने ताही को नाम लीनों सो नायिका नायकसों कहति है ॥ कवित्त ॥ कैतो राखो गोय होय प्रकट हियेको भाव जासो रंगमगि मन रह्यो अनुरागिकै । उघरो रसिक रस रीति का प्रबीन वाकी भलै सुधि कीनी मोसों बातनहूं लागिकै ॥ कृष्ण प्राणप्यारे पूरी प्रीतिको धरम यहै पायो अब मरम भरम गयो भागिकै । पायँन परति हरि वाही उरलेपै जाही रमनी को नाम रह्यो रसनामैं पागिकै ॥ ३९४ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० विधि विधि कौन करै टरै, नहीं परेहू पानु ।
चितै कितै तै लै धस्यो, इतो इतै तनु मानु ३९५

यह मनायबो सखीको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ खोयपरैं मनमोहनहूं बहु भांति हिये रसभाय भरे तौ । प्रीतिकी चोप चढ़ाय अलीन कही समझाय त्रिने करि केतौ ॥ लोचन तेरे तऊ न चले अनखाय नचै अतिरोप रचे तौ । नेक चितै मृगनैन कितेते धरयो भरि मान इते तन एतो ॥ ३९५ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अहै कहै न कहा कह्यो, तोसों नन्दकिशोर।
बड़ बोली कित होत बलि, बड़े दृगन के जोर ३९६

यह मनायबो सखी को बचन सखी सो ॥ कबित्त ॥ सांची कहि मोसों अहे काहेते कहत नाहिं तोसो कहाकह्यो मनमोहन कन्हाई री। क्यों तू बड़ो बोल ऐसो बोलत गुमान भरयो एती रिसरास तैं कहां तें गहि पाई री। कृष्ण प्राणप्यारो अतिहितू कै मनावत है करि मनुहार बहुबात में बनाई री। मान कह्यो मेरो बलि उलट न करि जोपै तैंही पाई बड़ी बड़ी आंख छबि छाई री॥ ३९६॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० हँस हँसाय उर लाय उठि, कहि न रुखोहैं बैन।
जकित थकित ह्वै ताकि रहे, तकित बिलोछे* नैन ३९७

यह मानका परिहास नायक के विद्यमान सखी नायिका सों कहति है जो नायक को सुरतापराध दुरायबेको कहै तौहूं संभव है॥ कबित्त॥ मान कियो होहि तो मनावै प्यारो पांयगहि रासके यतनको विचार कहा कीजियें। रसिक रसाल तेरे लोचन बिलोछे चाहिं चक्रित ह्वै रह्यो ऐसे नाहक न पीजिये॥ हाहा तोहिं सौंहै अब सूधी करि भौंहै बैन कहि न रुखोहैं लाल छाती लाय लीजिये। हँसिये हँसाइयेरी सुख सरसाइयेरी रस बरसाय दुख सौतिन को दीजिये॥ ३९७॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० एरी यह तेरी दई, क्योंहूं प्रकृति न जाय।
नेह भरीई राखिये, तू रूखाय लखाय ३९८

यह मनायबो सखी को बचन सखी सों॥ कबित्त॥ कौन परी प्र-

---

* पाठान्तर—"तिलोंछे"।

छाति छुटायेहूं छुटै न क्योंहू ज्यों ज्यों कीजै ऊनी त्यों त्यों दून पेखियत है। कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई तेरी गति देखे मेरी मति शोचसों सनी विशेखियत है॥ यद्यपि सनेह भरे उर में बसाय प्यारे प्रीति सरसाय अनलेखे लेखियत है। तऊ तिय भौंहन मे बैनन में नैननमें तेरे अंग अंगमें रुखाई देखियत है॥ ३९८॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० क्योंहूं सह * बातन लगे, थाके भेद उपाय।
हठु दृढ़ गढ़ ठावैं सुचलि, लीजै सुरँग लगाय ३९९

यह गुरुमानहै सखी नायकसों कहतहै कि वाको मान छुटैगो चलि सखी को वचन सखी सों॥ सवैया॥ आज सज्यो हठको गढ़ प्यारी न देखत धीरज कौनको दीजै। क्योंनहूं भांति लगै सहबातन भेद उपाय थके मत छीजै॥ लोचन दूत न क्योंहू मिलैं हरि मानिये मंतु विलम्ब न कीजै। आपनहीं चलिये बल जानु सुरंग लगाय जो लीजै तौ लीजै॥ ३९९॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० अनरसहू रस पाइयतु, रसिक रसीली पास।
जैसे सांठे की कठिन, गांठ्यो भरी मिठास ४००

यह मानवती की शोभा सखी नायिकासों कहति है॥ कवित्त॥ मानिनी तिहारी मनमोहन निहारी कछू मोपै न कह्यो परतु शोभाको विलास है। नासिका सिकोरि मोरि भृकुटी अनाखि बैठी लोचननु मांझ अरुणाई को प्रकास है॥ रसिक रसाल वा रसीलीकी विलोकि छवि अनरसहू में ऐसे रसको निवास है। कहै कविकृष्ण जैसे सांठे की सरस रीति गांठिहै कठिन भरी तऊ पै मिठास है॥ ४००॥

* पाठान्तर—"इव"।

मरकट अक्षर ३४ गुरु १६ लघु १८ ॥

दो० हम हारी कै कै हहा, पाइँनु पारत प्योरु।
लेहु कहा अजहूं किये, तेह तरेरे त्योरु ४०१

यह नायिका मानवती सखीको बचन सखी सो ॥ कबित्त ॥ नेह नातो तोरि तिनुकालौं तू तनगि बैठी तिमईके हठ ऐसे देखे सुने है कहूं। केतिन न छाई ब्रजबालकलुगाई परि तोसीपै रिहाई न दुहाई देखी मै कहूं ॥ केती मनुहारि ठानी पाँयपरे दधिदानी सतभायमानी मुखबानी आनी है कहूं। लागी काके मतरानी सांझहीते सतरानी रैन्यों पतिरानी बतरानी तू न नैकहूं ॥ ४०१ ॥

भ्रमर अक्षर २७ गुरु २२ लघु ५ ॥

दो० सौंहैं हू हेर्‌यो न तैं, केतौ खाई सौंह।
एहो क्यों बैठी किये, ऐंठि उबैठी * भौंह ४०२

यह अति गुरुमान हैं सखी को बचन नायक सों ॥ कबित्त ॥ केती मनुहारि करि हारयो नन्दलाल ब्रजबनिता निहाल होत जाके नैन चाहे तै। हो तो तू सयानी पर कहा चितआनी एते रिसके समाज बिनु काज अवगाहे तै ॥ सौंह हेरबेको हम केती खाई सौंहै तऊ तेरो मन लाग्यो क्यों न रसके उमाहे तै। कियो कहा चाहति है सोही क्यो न कहै बलि ऐंठी ग्वैठी भौह करि बैठी अब काहे तै ॥ ४०२ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० निरदइ नेहु नयो निरखि, भयो जगत भैभीतु।
यह न कहूं अबलों सुनी, मरि मारिये जु मीतु ४०३

* पाठान्तर—"ऐंठी ग्वैंठी"।

यह मान बिरह सखी को बचन नायक सों नायक के पक्षकी सखी है जो परकीया नायिका कहिये तो कहिये ॥ सवैया ॥ ऐसो अधीन भयो मनमोहन तो बिन नेक न अंग समारहि । ताहि इतो तरसावत बावरी क्यों न करै मिल कुंजबिहारहि ॥ तेरो नयो निरदै हित हेरि दुखो जगु होहि भरी भय भारहि । आजलौं ऐसी सुनी न कहूं गति आप मरै अरु मीतको मारहि ॥ ४०३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० हठनु हठीली करि सकै, यह पावस ऋतु पाय ।
आनि गांठि ज्यों घुटत त्यों, मान गांठि छुटिजाय ४०४

कवित्त ॥ दामिनी चपल गति सोऊ श्यामघनही सो मिलि बिहरति अति शोभा सरसाति है । द्रुमनसो लहलही लतिका लिपटरही सबहीके उर प्रीति रीति अधिकाति है ॥ कैसी ये हठीली कोऊ रूठनी न ठानि सकै मदनमरूरिन सों छाती अकुलाति है । देखो रतिपावस के नेहकी निकाई माई आनिगांठि खूटै मानगांठि छूटि जाति है ॥ ४०४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सतर भौंह रूखे बचन, करत कठिन मन नीठि ।
कहा करौं ह्वै जात हरि, हेरि हँसौंहीं दीठि ४०५

नायिका प्रौढ़ा उत्तमा सखी सिखावति है कि तू मानकर याके नायकको देखतही मान रहत नाहीं नायिकाको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ तेरो कह्यो रुखरूसनो ठानति हूं रुखरूखो कै तानति भौंहैं । नीठिकठोर करै मनहूं मुखहूतें बखानति बैन रुखौंहैं ॥ ताको कहा बसु मेरी अली लखै लालची जो अपनी तकि गौंहैं । कैसी करौं मनमोहन को मुख देखत लोचन होत हँसौंहैं ॥ ४०५ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मिले दुहूं के दृग झमकि, रुकैं न झीने चीर ।
हलकी फौज हरौलज्यों, परत गोल पर भीर ४०६

मानमोचन सखी को बचन सखी सो ॥ सवैया ॥ बैठी अलीगन में नवनागरि अचानक आयो तहां गिरिधारी । लालकी डीठि बचायबे को मुख घूंघटओट किये न निहारी ॥ नैनसों नैन उमगि मिले न रहे पटओट कितौ पचिहारी । रोक सके न हरौलकी फौज ज्यों गोल पै आनिपरै झरुभारी ॥ ४०६ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मों ही को छटि मान गो, देखत ही ब्रजराज ।
रही घरिक लौं मान सी, मान किये की लाज ४०७

मानमोचन सखी को बचन सखी सो ॥ सवैया ॥ बोलेही बोलै हँसे ही हँसै अरु सैन कहै कछु बात हिये की । अंकहू मांझ निशंकनि होत सुशंक हिये पिय पाय छियेकी ॥ केशवरायसों डीठि छिपाये छिपैगी कहू नहिं ज्योति दियेकी । मोहन के मिले मान छुट्यो पै छुटी न खिसी मनुमान कियेकी ॥ ४०७ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चलौ चलैं छुट जायगो, हठि रावरे सकोच ।
खरे चढ़ाये हेतु अब, आये लोचन लोच ४०८

यह मान छुटायबे को सखी को प्रयोजन नायकको लैजायबे को है सखी को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ जानैका काल्हि तिहारी पियारी कहा जिय जानि महा रिसठानी । केती मैं बात बनाय मनाय करी मनुहार पै एक न मानी ॥ क्योंहू के आज ढरैं दृगभौह कछूक नई जु हुती

अतितानी । लाल चलौ अवलोकि तुम्है छुटिजायगो मान अबै हम जानी ॥ ४०८ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० तुहू कहत हौ आप हू, समुझत सबै सयान ।
लखि मोहन मन जो रहै, तौ मन राखौ मान ४०९

यह नायिक प्रौढ़ा सखी कहति है तू मानकरि सो नायिका सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ मान किये रमनी जिनके बश प्रीतम होत मतौ यह तेरो । हौंहु यहै अपने चित आनति जानतु हौ करि स्यानु घनेरो ॥ तो करों मानरी मोहनको लखि जो सखी हाथ रहै मनु मेरो । रूसिबो जीमे बिचारतिहौ पै कहा करो त्योर न होत तरेरो ॥ ४०९ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मोहिं लजाय निलाज ये, हुलस मिले सब गात ।
भान उदै की ओस लौं, मान न जाने जात ४१०

नायिका पौढ़ा मानमोचन नायिकाको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ तूतो सिखवति मनमोहनसो मानकरि मेरेहु हिये मे तू बिचार टहरातरी । कृष्ण प्राणप्यारे की छबीली छबि निरखत आपही ते हुलसि मिलत सब गातरी ॥ कहा करौ निलज ये मोहीं को लजावत है कहूं जोपै होय कछु कहिबे की बातरी । भानुके उदोत भये ओसकन की सी भांति मान मनमें तेंहूं न जानत बिलातरी ॥ ४१० ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नैना नेक न मानहीं, कितो कह्यो समुझाय ।
तनमन हारे हू हँसैं, तिन सों कहा बसाय ४११

नायिका प्रौढ़ा नेत्रोपालम्भ नायिकाको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ सहिये जगके उपहासन तें गहिये गुरुलोगन मांझ गसै । डर आनि

यहै अपनें उर हौ समझाय रही नहिं नेक त्रसैं ॥ अरु रंचक मेरो कह्यो न करै तनहू मन हारे कहू हुलसैं। यह नेम गह्यो सजनीं इन नैननु पैं हरि हेरि हँसैंई हँसैं ॥ ४११ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रहैं निगोड़े नैन डिग, गहैं न चेत अचेत।
हौं कसुकरि रिसको करौं, ये निसखे हँसदेत ४१२

यह नेत्रोपालम्भ है सखी नायिका को दृढ़ावति हैं कि तू मान करि नायिका अपने नेत्रनके स्नेहकी आधिक्य इहै सखी सो कहति हैं ॥ सवैया ॥ हेतु अहेतु कछू न बिचारत क्योंहू अचेतन चेत गहेरीं। देखत वा मनमोहन की छवि क्योंहू लगात न मेरे कहेरी ॥ हूं कितनौ कै सुकै रिसको करौ ये निसखे हँसिकै उन हेरी। कैसी करों इन नैनन को यह बानि परी डिगिहूके डहेरी ॥ ४१२ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० सकुच न रहिये श्याम सुनि, ये सतरौहें बैन।
देत रचौहें चित कहें, नेह नचौहें नैन ४१३

यह प्रथम समागम नायिका परकीया सखीको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ आगे ह्वै लींबों यहै इनको उत चाह इतै दृग खोलई है। मानिबे को यहई प्रतिऊतर मानिये बात जु मौनई है ॥ रोसकी बात वहै रसको रुख काहे को केशव छांड़दई है। नाहीं यहां तुम नाहीं सुनी यह नारि नईन की रीति नई है ॥ ४१३ ॥

मर्कट अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० कहा लेहुगे खेल में, तजौ अटपटी बात।
नेक हँसौंहीं है भई, भौंहें सौंहें खात ४१४

यह नायिका औरसों आसक्त जानि नायिकाने मान कियो नायक

मनावन आयो सो वाही नायकको नाम मुँहते निकस्यो सो सखी नायक सो वाके मान छुड़ायबेको परिहासको प्रसंग चलायो सखीको बचन नायक सो ॥ सवैया ॥ हाँसी तो कीजिये तासो लला जो हँसै सुख पाय न ए तिय ऐसी । बारहीवार लै और को नाम भुकावो इन्हे तजो बानि अनैसी ॥ या परिहासपै लेहो कहाकरि एतो इतेकहि को मुरवैसी । सौहै किये भई नीठि हँसोहीं ये भौह कमान मनोजकी ऐसी ॥ ४१४ ॥

पयोधर अच्छर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० खिंचे मान अपराधहूं, चलिगे बढ़े अचैन ।
जुरत डीठि तजि रिस खिसी, हँसे दुहुँनके नैन ४१५

यह मानमोचन नायिकाके नेत्र तौ मानसो खिंचे नायकके नेत्र अपराधसों खिंचेहैं पै अचैनते विना देखे रह्यो न जाय याते रस अरु खिसी आपहीते छोड़िकै दोउनके नेत्र हँसे सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ मानकै भामिनि ऐंचरही दृग रात कहूं हरि अन्त नसेई । याही ते मोहन नारि नवाइ रहे उर शोच सकोच गसेई ॥ कृष्ण कहै बिन देखे दुहूंनके मैन अचैन हिये सरसेई । डीठिजुरे तजि रीस खिसी विविनैन मिले सुख पाइ हँसेई ॥ ४१५ ॥

चल अच्छर २७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० अजहुँ न आये सहज रँग, बिरह दूबरे गात ।
अबहीं कहा चलाइयत, ललन चलन की बात ४१६

यह नायिका प्रवत्स्यत्पतिका सखी को बचन नायकसों नायिकाहू को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ खेलत में कहूं कान्ह कह्यो तुम काल्हिहो कहो चरावन गाई । सो सुनिकै उन दीरघश्वास भरी सब अंग परी पियराई ॥ ता दिनकी वा नवेलीके अंगनि आजहूं लौं न मिटी दुबराई । ताहि रही अनबोलै कहा अबहीं चरचा चलिवे की चलाई ॥४१६॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिलखी डबकौहैं चखन, तिय लखि गवन बराय ।
पिय गहिबरि आयो गरैं, राखी गरैं लगाय ४१७

यह नायिका प्रवत्स्यत्पतिका मध्या वाकी यह दशा देखि नायक ने गवन बरायकै गरेसो लगायो सखी को बचन सखीसो ॥ सवैया ॥ पति प्राणपिया बिछुरै न कहू सुखसों रहै प्रेम पियूष पिये । हितुमानि बिदेशको होन बिदा हरि आयो पयान को आजु किये ॥ निरखी डब-कौहैसे नैन किये बिलखी मृगलोचनि सास लिये । न कही चलिबेकी कछू बतिया छतिया भरिलीनी लगाय हिये ॥ ४१७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० ललन चलन सुनि चुप रही, बोली आपु न ईठि ।
राख्यो गहि गाढ़े गरो, मनो गली गलि डीठि ४१८

यह नायिका प्रवत्स्यत्पतिका सखीको बचन सखी सों मध्या प्रवत्स्य-त्पतिका ॥ कबित्त ॥ प्यारी के भवन अतिहितकरि प्राणपति आयो बिदाहोन परदेश को उमहिकै । ललनचलन सुनि रही अनबोली तिय आलीनहू बचन सुनायो कछू काहिकै ॥ चकितसीभई चकचौंहटु सो छायो हिय आवत सलिल दोऊ नैननते बहिकै । गलीगली डीठि करि हेरीहरि सनमुख मेरेजानि राख्यो येही गाढ़ागरो गहिकै ॥ ४१८ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ललन चलन सुनि पलन में, अँसुवा झलके आय ।
भई लखाइनु सखिन हू, झूठे ही जमुहाय ४१९

यह नायिका मध्या प्रवत्स्यत्पतिका सखी को बचन सखीसो क्रिया-बिदग्धा परकीयाहू होय ॥ सवैया ॥ खेलतही सजनीगनमे वृषभानुकु-मारि सरूपसो सानी । कान्हर काल्हि करैगो पयान सुनी यह काहूके

आननवानी ॥ आंखन में अँसुवा झलके यह भेदकी बात अलीहू न जानी। यों मुँहमोरि जँभायवेको करिकै मिस पोछति नैन सयानी ॥ ४१९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रहिहैं चंचल प्राण ये, कहो कौन कि अरोट *। ललन चलन की चित धरी, कल न पलन की ओट ४२०

यह नायिका प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका नायिकाको बचन सखीसो ॥ कबित्त ॥ मैनसुख संगन मे नेहकी तरंगन मे अंग अग पागिरहे रंगमे उमहिहैं । कृष्ण प्राणप्यारे ते न छिनौभर न्यारेभये औरही बसनभये ऐसी वानि गहिहैं ॥ पलन की ओट भये कल न गहत क्योहू जैसी गति होत सोधौं आवत न कहिहैं । ललन बिचारी चित चलन की बात अब कौनकी अरोट ये चपलप्राण रहिहैं ॥ ४२० ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० चाह भरी अति रस भरी, बिरह भरी सब गात । कौरि सँदेशे दुहुँन के, चले पौरि लौं जात ४२१

यह प्रदेशको गमन दोउन के हितकी अधिकाई सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ कौनहूं काजको कान्हर कीन्हो पयान मुहूरत साध भलेई । अन्तर होत दुहूंन को ज्यो अकुलात वियोग के शूलसलेई ॥ चाहभरी अरु प्रीतिभरी रसरीतिभरी बतियांन रलेई । पौरिलोंजात दुहूँन की ओरते आलीरी कौरिसँदेश चलेई ॥ ४२१ ॥

वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

मिलि चलिचल मिलिमिलि चलत, आंगन अथयो भानु । भयो मुहूरत भोर को, पौरी प्रथम मिलानु ४२२

यह प्रदेश पयानको समय सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥

---

* पाठान्तर—"अगोट" ।

सौंहैं किये ढरकौहै से नैन टरैं न कहूं हियको हिलिये । आगेहूं आये न सूझै कछू रु कह्यो न मुँहश्रुति सामलिये ॥ भोरते सांझ भई न अजौं घर भीतर बाहिर ओट लिये । रहे गेहकी देहरी ठाढ़े ठगे रटलागी दुहूँन चलौ चलिये ॥ ४२२ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बामा भामा कामिनी*, कहि बोलो आवेश ।
प्यारी कहत न लाजही, पावस चलत बिदेश ४२३

यह नायिका प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका नायिका को बचन नायक सो ॥ सवैया ॥ आयेहो मांगन मोपै बिदा इत पावस से घुमड़े घनकारे । कामिनी भामिनी बाम कै बोलहु प्यारी कहौ जिन नंददुलारे ॥ रंचकहू न लजात हिये हित कै अब ये दुख दीजतु भारे । ऐसे में छांड़ि बिदेश चले कहो मेरी कहागति प्राणपियारे ॥ ४२३ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पिय प्राणन की पाहरू, करत यतन अति आप ।
जाकी दुसह दशा पर्यो, सौतिन हूं संताप ४२४

यह नायिका प्रोषितपतिका सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ ताप तपी बिरहानलके बिलखी वह नागरि खीन निहारी । आंखिनही में रहे अब आनिकै प्राण सबै सुधि आनि बिसारी ॥ सौति सबै उपचार करै गनकै पिय प्राणनको रखवारी । दाहनु वाकी दशा निरखे उनहूके परयो जिय संकट भारी ॥ ४२४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पावक झर ते मेह झर, दाहक दुसह बिशेखि ।
दहै देह वाके परस, याहि दृगन हीं देखि ४२५

---

* पाठान्तर—"मानिनी" ।

यह नायिका प्रोषितपतिका विरहिनी नायिका को बचन सखी सों उद्वेग ते नायिकाहू सखीसो कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ धूमधरे धुरवा गहरे अरु अम्बर पूर मही अवगाहै । देखरी पावक की झरतै यह मेहकी ज्वाला कराल महाहै ॥ वाही भट्टूपर मैही दहै यह नैननहीं निरखे तन दाहै । वा गिरिधारी विना नचिवेको तुही कहि और उपाय कहाहै ॥४२५॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० कहै जु बचन बियोगिनी, बिरह बिकल अकुलाय।
किये कोन अँसुवा सहित, सोवत बोल सुनाय ४२६

यह नायिका प्रोषितपतिका सखी को बचन सखी सो ॥ सवैया ॥ प्राणपती विन वा तियको इकसाथ सबै दुख आनपरे है । वाकी दशा-लखि पासके वासी उसासभरे गहरे गहरे है ॥ जे कहै बैन बियोगिनिते अकुलाय वियोग विथान भरे हैं । वे बतियां अब बोल सुबास वही अँसुवान समेत करे है ॥ ४२६ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० दुसह बिरह दारुण दशा, रहै न और उपाय।
जात जात ज्यो राखियत, प्रिय को नाम सुनाय ४२७

यह नायिका प्रोषितपतिका विरहिनी सखी को बचन सखीसो दश अवस्थान के भेदमे व्याधि जानिये ॥ सवैया ॥ प्राणपिया परदेशकियो तिय अंग अनंगतरंगनि ताये । सीरी ह्वैजात जरै कवहूं उपचार विचार जिते सब छाये ॥ ईठनिवाय खवासिहितू मुरझायरही न भये मन-भाये । ऐसे कहूँ जो बचै तो बचै कहौ गावते भावते मोहन आये ॥४२७॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० रह्यो ऐंचि अन्त न लहै, अवधि दुशासन बीरु।
आली वाढ़त बिरह ज्यों, पञ्चाली को चीरु ४२८

यह नायिका प्रोषितपतिका प्रौढ़ा नायिकाको बचन सखीसो ॥ सवैया ॥ चैन परै नहिं मैन दहै दिन नैननमांझ रहै जल छायो। भावै न भोजन भौन सुहाय न हाय हिये परिताप तचायो ॥ ऐचति औध दुशासन चीर जऊ बल कै तऊ अन्त न पायो । वहके बिछुरे बिरहा सुबढ़यो अब द्रौपदीके पट ज्यो अधिकायो ॥ ४२८ ॥

त्रिकल अक्षर २९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० तिय हिय निय जु लगी चलत, पिय नख रेख खरोट ।
सूखन देति न सरसई, खोटि खोटि खत खोट ४२९

यह नायिका प्रोपितपतिका सखीको बचन सखी सो ॥ सवैया ॥ सैन भे रंगरॅगी रसरंग अनंग तरंग उमंग सुहाई । कान्हरके करकी नखरेख कहूं तियके उरमे लगिआई ॥ पी परदेशगयो जबते तबते ललनी धनको धन पाई । देखत खोट खरोट खरोटि न सूखन देत वहै सरसाई ॥ ४२९ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मरिबे को साहसु करे, बढ़े बिरह की पीर ।
दौरति ह्वै समुहें शशिहि, सरसिज सुरभि समीर ४३०

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन सखी सो ॥ सवैया ॥ श्रीमनमोहन सो जबते बिछुरी तबते न पलौ कल पावति । नीरविना सफरी ज्यो खरी पै परी तलफैरु भई दुबरी अति ॥ दौरत सामुहें सीर समीर सरोजनलै हियरासो लगावति । ऐसी भईरी दशा तनकी अब प्राणपयान की राह बतावति ॥ ४३० ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० बसि सकोच दश बदन बश, सांच दिखावति बाल ।
सिय ज्यों शोधत तिय तनहिं, लगन अगन की ज्वाल ४३१

यह नायक नायिका की लगनके लगेते सनेहकी अधिकाई है याते

अगिनिभई है सो याकी दशा सखी नायकसों निवेदन करति है ॥ कवित्त ॥ जादिन ते लग्यो नवनेह मनभावन सो तादिनते मैनकी मरोरानि मरति है । त्रास गुरु लोगनिके सांस न सकति भरि एक आस लागी निशि बासर भरति है ॥ बसत सकोच दशबदनके बश याते कछु न बसात ध्यान पतिको धरति है । लगनकी अगिनकी ज्वालनि में बाल निजदेहको सियालौं वह शोधन करति है ॥ ४२१ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० करी बिरह ऐसी तऊ, गैल न छांड़त नीचु ।
दीने हूं चसमा धरै, चाहै लहै न मीचु ४३२

यह नायिका प्रोषितपति का सखीको बचन नायकसों बिरह निवेदन करि सखी सखीहूसो कहै ॥ कवित्त ॥ अतिही कृशंगी खरी कृशहूंत त्रासकरि हरिके वियोग दुख देह दहियतुहै । नैननि निहारनिमें नेकहू न डीठि परे सेज तन वसन मे सोग लहियतुहै ॥ वरुनी बयारी लागै जिन उड़िजाय शेष सखी के समाज अनिमेष रहियतुहै । अतन सी भई सुतो त्रिपही के वेधवेको मैनहू के नैन उपनैन चहियतुहै ॥ ४३२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० औंधाई सीसी मलखि*, बिरह विकल बिललात ।
बिचही सूकि गुलावगो, छीटो छुई न गात ४३३

यह नायिका प्रोषितपतिका सखी को वचन नायक सों सखी ही सों कहै तो बनै ॥ सवैया ॥ बालवधू मनमोहन सों बिछुरे बिलसी दुख-द्वन्दद्वाई । नीर बिना सफरी ज्यो परी तलफै बहुभांति बियोग तचाई ॥ शीतल जानि सखी करुणा करि शीश ते सीसी गुलावनि नाई । बीचही नीर बिलाय गयो सब एकहू छीट न अंगलौं आई ॥ ४३३ ॥

---

* पाठान्तर—"बिलखि" ।

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जिहि निदाघ दुपहर भई, रहित माघ की राति ।
तिहि उशीर की रावटी, खरी आवटी जाति ४३४

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरहनिवेदन सखी को बचन नायक सो सखी को बचन सखीहूसों बनै ॥ सवैया ॥ लाल तिहारे वियोगते बाल बिहाल खरी तरफै सफरीसी । वा तन तापके त्रासनते सखि कोऊ न जायसकै नियरीसी ॥ ह्वैरहे जेठकी ज्वालनि में जहां जाड़ेकी राति तुषारभरीसी । ताही उशीरके धाममें बाम सुजाड़ेकी राति में जात बरीसी ॥ ४३४ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० सीरे यतननु शिशिर ऋतु, सहि बिरहनु तन ताप ।
बसिबे को ग्रीषम दिननु, पर्‌यो परोसिन पाप ४३५

यह नायिका प्रोषितपतिका सखी को बचन नायक सो बिरह निवेदन अरु सखीको बचन सखीहूसो संभव है ॥ कवित्त ॥ जानबूझि फेर-खात फेर न उतहिजात एकबेर भये जे बटोही वा डगरके । ह्वै रह्यो अबा अवास तेज तच्यो आसपास उसते उसासते ज्यों चाहत नगरके ॥ जब जब स्वास के समीर इत आवत है कान्हजू तिहारी बिरहनि के बगरके । पचत न डरपान पेड़ते परस जातु सोंधेभरि आलबाल उपटे नगर के ॥ ४३५ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० गनती गनबे ते रही, छतहू अछत समान ।
अब ये तिथि आमरणलौं*, परे रहौ तन प्रान ४३६

यह नायिका प्रौढ़ा प्रोषितपतिका सखीको बचन सखीसो ॥ सवैया ॥

---

* पाठान्तर—"ओम सोम लौं अब अली" ।

देखुरी कैसी करी मनभावन ऐसी धौ वाहि कहा बनिआई । औधिहू वीतिगई न लई सुधि एती धरी उरमे निठुराई ॥ तागिनती गिनबेते रहे न भये सभेय बिन वा सुखदाई । ये तिथि औमलौ द्योसके सोमलौं प्राण परे तनमे रहौ माई ॥ ४३६ ॥

बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सुनत पथिक मुँहमाह निशि, लुवैं चलत उहि गाम ।
बिन पूछे बिनही कहे, जियत बिचारी बाम ४३७

यह नायिका प्रोषितपतिका बिदेश में पथिकके मुखकी बात सुन नायकने अटकरते याकी दशा जानी सखी को बचन सखीसों ॥सवैया॥ शीतसमैहू की रात में लूवें चलैं उहिदेश हुताशन सानी । आपस में वतरात वटोही अचानक कानपरी यह बानी ॥ छांड़ि दिये सबकाज विदेशी की वुद्धितहीं घर को अकुलानी । प्राणपियारी की आयगई सुधि जीवत है जियमें यह जानी ॥ ४३७ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु१६ लघु १६ ॥

दो० आड़ दै आली बसन, जाड़े हू की राति ।
साहस ककै सनेह बश, सखी सबै ढिग जाति ४३८

यह विरहनिवेदन प्रोषितपतिका सखीको वचन नायकसों सखी सखी हूसों कहै ॥ कवित्त ॥ लाल वनमाली विछुरेते ब्रजवाल भई निपट विहाल विथा उर सरसाति है । अतनसताई वाके तनकी तताई देखे बूपके तरणिहूंकी किरणि सिराति है ॥ करत उपाय हाय कहि बारबार मीड़ि मीड़िफर करनि निपट अकुलाति है । आड़ेदै वसन अलि जाड़ेहूकी रातमांझ साहसकैं नेहनाते सखी ढिग जाति है ॥ ४३८ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मार सुमार करी डरी, मरी मरीहि न मारि ।

सींचि गुलाब घरी घरी, बरी बरीहि न बारि ४३९

यह नायिका प्रोषितपतिका उद्वेगदशा नायिकाको बचन सखी सों अन्तरङ्ग सखी सखीहूसों कहै तो बनै ॥ कबित्त ॥ बालम बियोगते बिकल अति प्राण कछु सूझत न आन बन्यो दुखही को दावरी । और उपचारकरि मारि न मरे को जो हितू है तो तू कृष्ण प्राणप्यारे को मिलावरी ॥ घरी घरी सींचत गुलाब के सलिलसों तू कियो कहा चाहति है मोहूधौं बावरी । भरत घरी पै मारी मार की डरी है बिरहागिनि बरी ये अब बारि जिन बावरी ॥ ४३९ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु १७ लघु २४ ॥

दो० पलनु प्रकट बरुनीन बढ़ि, नहिं कपोल ठहरात ।
अँसुवा पर छतिया छिनकु, छनछनाय छपि जात ४४०

यह नायिका प्रोषितपतिका मध्या सखी को बचन सखी सों ॥ कबित्त ॥ बाल नन्दलाल के बियोगते बिकल याते पलपल बिध कैसे बासर बिहात है । बिरह तताई की बढ़न बरणी न जाति एते मान तचे वाके कुसुमसे गात है ॥ पलनुते प्रकट बढ़त बरुनीनहूंते परत कपोलपै तुरत ढरिजात है । सलिलकी बूंद तातीं छतिया परत ऐसे छातीपर अँसुवा छनाकि छपिजात है ॥ ४४० ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० फिरि सुधि दै सुधिधायप्यो, इह निरदई निरास ।
नई नई बहुर्यो दई, दई उसास उसास ४४१

यह नायिका प्रोषितपतिका याकी अवस्था सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ आली बियोग भयो बनमाली को व्याकुल बाल खरी अकुलाई । पाहन की पुतरी है परी उपचार बिचार कछू न बसाई ॥ ऐसे मे वाहिदई सुधिदै सुध धाय पिया दुखराशि जगाई । वा निरदैसों कहा कहिये जिन प्रेम मरूरकी पीर न पाई ॥ ४४१ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिरहजरी लखि जीगननु, कह्यो न उहि कै बार।
अहे आव भजि भीतरी, बरसत आज अँगार ४४२

यह नायिका प्रोषितपतिका उद्वेगदशा सखी को बचन सखी सों नायक हू सो बिरहनिवेदन बनै ॥ कबित्त ॥ बैसकी किशोरी गोरी शोभा बरणी न जात गात की निकाई छबि नाहीं काहू जोन में । बासरु गँवायो खोलि जियमें बियोग बेलि सांझ समै बिथा बाढ़ी बैठि पियभोन में ॥ औधिक व्यतीत भये रंचकौ न कलपरी ब्याकुलसी भई जात सीरे मन्दपौन में । नीचेते उठाय नारि डीठि परे जीगना सुआगि आगि कैकै भाजगई प्यारी भोन में ॥ ४४२ ॥

मदकल अक्षर २५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० इत आवत चलिजात उत, चली छसातक हाथ।
चढ़ी हिंडोरे सैं रहे, लगी उसासन साथ ४४३

यह नायिका प्रोषितपतिका सखी को वचन विरहनिवेदन नायकसों और सखीको वचन सखीसों दुर्बलता अधिक है उसासनते मुकरता न संभवे है ॥ सवैया ॥ मोहनलाल चलो चलि देखिये आपही जाय वियोगनके ढँग । थोरही थोसनते लखिये सव देहभई जरदी हरदी रँग ॥ वैसहूके भरमें यह भांति परे वरहीन खरे दुवरे अँग । पैंड़ छसात हिंडोरेसे वैठि जु आवतजाति उसासन के सँग ४४३ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नेक न झुरसी बिरहझर, नेहलता कुम्हिलाति।
छिन छिन होत हरी हरी, खरी फैलती * जाति ४४४

यह नायिका प्रोषितपतिका नायिकाको वचन सखी सों अरु नायक

* पाठान्तर—"झालरति"

को वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ नन्दके दुलारे प्यारे न्यारे भये जबहीं ते तबहीं ते ताती ह्वै कै छाती अकुलाति है । सुधि आये घरी घरी शूलसे मलत उर प्राणपरे परबश कछु न बसाति है ॥ दारुण विरह झर यदपि सनेहलता झरसी तदपि नेकहू न कुम्हिलाति है । दिन दिन छिन छिन उमँगि अधिक होत हरीहरी खरीखरी झालरति जाति है ४४४॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० याके उर औरै कछू, लगी बिरह की लाय ।
प्रजरै नीर गुलाब को, पी की बात बुझाय ४४५

यह नायिका प्रोषितपतिका नायिकाकी अवस्था सखी सखी सो कहति है ॥ सवैया ॥ ऐसी दशा लखिहू अकुलाति किते उपचार विचारि तकीरी । आनन बोलै न खोलै विलोचनि दूबरी होत छिनै छिन पीरी ॥ याके हिये कछु और अनोखी वियोग हुताशन ज्वाल जगीरी । नीर गुलाब के दूनी बरै पिय प्यारेकी वातहीं होत है शीरी ॥ ४४५ ॥

बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० होमत सुख करि कामना, तुमहिं मिलन की लाल ।
ज्वालमुखीसीजरतलखि,लगनि अगनिकीज्वाल ४४६

यह नायिकाकी लगनिकी ज्वालकी अधिकाई सखी नायकसों कहति है ॥ कबित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारे लाल जबहींते भये न्यारे तबहीं ते प्यारी पल कल न धराति है । ससकि ससकि अति उरमें उसासें लेत तलफि तलफि सुधि बुधि विसराति है ॥ विरह हुताशनकी निरखि प्रचण्ड ज्वाल निहचै हियेमे ज्वालमुखी सी जराति है । मिलवेकी कामना हिये मे करि इन्दुमुखी अब सब सुखनि को होमसो कराति है ॥ ४४६ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० नित संसो हंसो बचतु, मनो सु यह उनमान ।

विरह अगनि लपटन सकै, झपट न मीचु सिचान ४४७

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन सखी सों कहै तो बिरह-निवेदन होय ॥ सवैया ॥ बिछुरे पिय ऊसनको बिषयो वह कौन कथा जु कहावति है । तुमसों सुकह्यो तिय योग जिये जिन जानहु बात बनावति है ॥ उहि नागर की तनताप जु है हित है करि सो दरशावति है । उरदाहनि वा बिरहानलके बलि वा यह मीच न आवति है ॥४४७॥

वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

सो० बिरह सुखाई देह, नेह कियो अति डहडहो ।
जैसे बरसै मेह, जरै जवासो जो जमै ४४८

यह नायिका प्रोषितपतिका विरहकी अरु सनेहकी अधिकाई सखीसों कहै अरु नायकहू सखीसो अपनी अवस्था कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ देखो बियोगन देह सुखाय करी दुबरी रह्यो मांस न मासो । नेहलता उलहाय हरी करी हेरि सखीनहूं के परयोमासो ॥ आवत है जिय में उपमा कवि कृष्ण कहै यह देखु तमासो । ज्यों वरसे घन पावसके सब और जमै जरै आक जवासो ॥ ४४८ ॥

वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बिरह बिथा दिन पै रही, तजै सुखन सब अंग ।
रहि अबलौं बहु दुखदियो, चलाचलौ जियसंग ४४९

यह नायिका प्रोषितपतिका नायिका को वचन सखीसो अरु सखी सखी सों कहै तौहू संभव है ॥ कवित्त ॥ जौलौ प्राणनाथ के समीप रही तौलौ अंग अंग सरसाने सुख उमँगि उमँगिकै । न्यारे होत प्यारेकें बियोग बिथा बाढनही नानो करि हातो वे अगाऊ गये भगिकै ॥ दुःखकी निकाई कछू बरणी न जात माई एतो दुख सह्यो तऊ रह्यो प्रेमपगिकै ।

पै न भयो हीनोरी यहांलौं साथ दीनो अब चलिबो बिचार्यौ संग प्राणन के लागिकै ॥ ४४९ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० छतौ* नेह कागर हिये, भयो लखाइ न टांकु ।
बिरह तचै उघरयो सु अब, सौंहडि को सो आंकु ४५०

यह नायिका प्रोपितपतिका सखीको बचन सखीहूसों नायकहूको वचन सखी सो संभव है ॥ सवैया ॥ जौलौं समीप रह्यो हरि तौ लग मै अपनो मन भायो करयोई । काहू लह्यो यह भेद न जीयको यद्यपि हौ सब भौन भरयोई ॥ नेह छतोई हुतो हिय कागर कौनहूं भाति न जानि परयोई । सौंहडिकोसो लिखावअली विरहागि तचै अबतो उघरयोई ॥ ४५० ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० प्रजरयो आगि बियोग की, बह्यो बिलोचन नीर ।
आठौं याम हिये रहै, उड़यो उसास समीर ४५१

यह अवस्था बिरहकी नायक अथवा नायिका अपनी अवस्था सखीसों कहत है ॥ कबित्त ॥ सबहीते कठिन सनेहकी हिलग यह किन सुख पायो मन प्रेमपन्थ ढारिकै । जाके तन लागे सोही जानत है भेद यह बेदन बिषम कौन सकत सम्हारिकै ॥ कहै कबिकृष्ण यह और अदभुतगति प्रजरयो बियोग आगि बह्यो दृग बारिकै । तऊ देखो आठो-याम उठयोई रहत दीयो दीरघ उसासनकी प्रबल बयारिकै ॥ ४५१ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

सो० मैं लखि नारी ज्ञान, कर राख्यो निरधार यह ।
वहई रोग निदान, वहै बैद औषध वहै ४५२

यह लगन सखीको बचन सखीसों । अन्तरंग सखीको काहेवो है अरु

* पाठान्तर—"छप्यो" ।

नायिकाहू अपनी अवस्था सखीसों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ काहे को घोर घनो घनसार वृथा उपचारनु कैतनुबारो । भो लखि नार-फरयो निरधार लहै यह भेद न बेद विचारो ॥ जाको स्वरूप खुभ्यो उर में किन ताहि दिखाय व्यथा यह टारो । औषध बेद वहै उपचार वहै पुनि रोग निदान निहारो ॥ ४५२ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तच्यो आंच अति बिरहकी, रह्यो प्रेमरस भीजि ।
नैनन के मग जल बहै, हियो पसीजि पसीजि ४५३

यह नायिकाकी अथवा नायक की बिरहकी अवस्था सखी सखी-सों कहति है ॥ सवैया ॥ जादिनते ब्रजनागरिको मन नन्दकिशोरके नेह नह्यो । ता दिनते दिनरैन ढरै अँसुवा तिनको यह भेद लह्यो ॥ आंच तच्यो बिरहानल की हितके रसमें अति भीजरह्यो । ताहीते अंग पसीज हियो बिबिनैनन के मग नीर बह्यो ॥ ४५३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पावक झर ते मेह झर, दाहक दुसह बिशेखि ।
दहै देह वाके परस, याहि दगन ही देखि ४५४

यह उद्वेग दशा नायिकाको अथवा नायकको बचन सखीसो ॥सवैया॥ धूम धुरे धुरवागहरे अरु अंबुप्रपूर मही अवगाहै । देखरी पावककी झ-रते यह मेहकी ज्वाल कराल महाहै ॥ वाहिमटू परसेही दहै यह नैनन हीं निरखे तन दाहै । या गिरिधारी बिना बचिबेको तुहीं कहु और उपाय कहाहैं ॥ ४५४ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० कौन सुनै कासों कहौं, सुरत बिसारी नाह ।
बदा बदी जिउ लेत है, ये बदरा बदराह ४५५

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरहकी दशा अथवा भेद मे चिन्ता नायिका को बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ कासो कहौ कौन यह जाने उरअन्तरकी सुरत बिसारी सुखकारी हरिनाहरी । येते पर बरज्यो न मानै क्योंहूं प्राण लेत बदाबदी बदरा निपट बदराहरी ॥ अग होत बिकल अनंग तन तावतहै कौन हरै बेदन रहत चित चाहरी । कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई न सुहाई कछु बरसत नैननते सलिल प्रबाहरी ॥ ४५५ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० श्याम सुरति करि राधिका, तकति तरणिजा तीर ।
अँसुवनि करति तरोस को, खिनक खरोहीं नीर ४५६

यह नायिका प्रोषितपतिका दश अवस्थाके भेद समस्त सखी को बचन सखी सो ॥ सवैया ॥ श्रीमनभावनके बिछुरे वृषभानुसुता अतिही अकुलानी । भोजन भौन सखी न सुहाय सु हाय रटै निशिवासर बानी ॥ सूरसुताहि निहारी रही उनहार कछू हरिकी पहिंचानी । आंसुन के परवाह कर्यो खिन एक खरोहो तरोसको पानी ॥ ४५६ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० सोवत जागत सुपन बश, रस रिस चैन कुचैन ।
सुरत श्याम घन की सुरत, बिसरैहू बिसरै न ४५७

यह अपने चित्तकी प्रीति सखीसो कहति है दश अवस्था के भेदमें स्मृति जानिये ॥ सवैया ॥ बाहर जाऊँ तौ बाहरही घर आऊँ तौ आवत संग लगेही । भौनके कोनमें बैठि रहौ हरि पैठि रहै हियमे पहलेही ॥ नींदहूमें नकबानी करै छिनहू छिन आवतहै सपनेही । सोवत जागत रैनादिना मनमोहन मोहन चैन न देही ॥ ४५७ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० भो यह ऐसोई समौ, जहां सुखद दुख देत ।

चैत चांद की चांदनी, डारत किये अचेत ४५८

यह नायिका प्रोषितपतिका दश अवस्थान मे उद्वेग नायकको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ ब्यालभई अब मालतीमाल समीरते पीर हिये सरसाई । पावक पुंज सो चम्पक चन्दन चन्द्र कुचन्द्र लख्यो न सुहाई ॥ चेतहरै चित चैतकी चांदनी बेधत बानन काम कसाई । आनि बन्यो अब ऐसो समौ दुखदेत सबै जु हुते सुखदाई ॥ ४५८ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० हौंहीं बौरी बिरह बश, कै बौरो सब गांव ।
कहा जानिये कहत है, शशिहि शीतकर नांव ४५६

यह नायिका प्रोषितपतिका नायिकाको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ कुम्भजहू अचयो सुपचयो न याहीते उपडाख्यो तमहू डरपि बिषकन्दसों । देखी अवलिनको कलकी लै चढ़ाये शीश ईश कहा जानि हित कीनों मतिमन्दसों ॥ कैधौ सबहीकी मति हीन भई मेरी आली कैधौंहौंहीं बौरीभई मैन दुख द्वन्दसों । जानि नहिं जात बात कैधौं ये कहत लोग शोग देनवारहैं जु शीतकर चन्दसों ॥ ४५९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० औरै भांति भई बये, चौसर चन्दन चन्द ।
पति बिन अति पारत बिपति, मारत मारुतमन्द ४६०

प्रोषितपतिका ॥ कबित्त ॥ जेई जेई सुखद दुखद अब तेई भये कबि दद्दुर बिछुरत यदुपातिय । शीतल मन्द सुगन्ध है जोई हुती सोई भई अनल अनिलहु ते अतिततिय ॥ तरुभये तीर अरु ब्याल भई बल्लिय जमुभई जमुन कुसुम भये कातिय । जिन वन हम बिहरति श्रीपतिसंग तिन बन अब बिहरन लगि छतिय ॥ ४६० ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० इत आवत चलिजात उत, चली छ सातक हाथ।
चढ़ी हिंडोरे से रहे, लगी उसासन साथ ४६१

यह नायिका प्रोषितपतिका कृशता को आधिक्य सखी को बचन नायक सों सखी सखीहूं सों कहै तो होय दश अवस्थान में व्याधि श्वास संचारी सुकुमारता न संभवै है ॥ सवैया ॥ मोहनलाल चलो चालि देखिये आपही जाय बियोगनके ढँग। थोरेई द्योसनते लखिये सब देह चढ़ी जरदी हरदी रँग ॥ वैसहूं के भरमें यहि भांति परे पर हीन खरे दुबरे अँग। पैंड़ छसात हिंडोरे से बैठी जु आवत जात उसासन के सँग ॥४६१॥

त्रिकल अक्षर ३१ गुरु १ लघु ३० ॥

दो० हरिहरि करि बरि बरि उठति, करि करिथकी उपाय।
वाको जुरबलि बैद जौ, तौ रस जाय तो जाय ४६२

यह नायिका प्रोषितपतिका व्याधि अवस्था बिरह निवेदन सखी को बचन नायक सों ॥ कबित्त ॥ हरि हरि रटत बढ़त व्यथा छिनु छिनु बरि बरि उठत सु नेरे जात जरिये। करि करि थकी है उपाय सब आली अब कछु न बसाय उर शोच भार भरिये ॥ ये हो बलि बैद अब रावरे सुरसही बचै तो बचै बाल बलि वाकी पीर हरिये। तीखी ताप टारिये धरम उर धारिये निवारिये गहरु करुणा के ढार ढरिये ॥ ४६२ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मरी डरी कि टरी ब्यथा, कहा खरी चलि चाहि।
रही कराहि कराहि अति, अब मुख आहि न आहि ४६३

यह नायिका प्रोषितपतिका दश अवस्था भेद में जड़ता सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ ऐसी को छांड़ि बिदेश गयो हरि जो कबहूं बिछुरी न घरी है। हाय यहै रट लायरही गति याकी लखे मति

मेरी हरी है ॥ बाल बियो बरजागि भरी बकराहनि क्यों अबहीं बि-
सरी है । पीर टरी कि परीहै मरी चालि देखि अरी कहा दूर खरी है॥४६३॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मरन भलो बर बिरह ते, यह बिचार चित जोय ।
मरन मिटै दुख एक को, बिरह दुहूँ दुख होय ४६४

यह नायिका प्रोषितपतिका नायिका को बचन सखी सों अरु नायक
हू को बचन सखी सों संभव है ॥ सवैया ॥ नेकही के बिछुरे सब
ही सुख साज भये दुखदायक भारे । नैनन नीर झरी बरसै तरसै
छतियां बिन प्राणपियारे ॥ आली बियोग व्यथा ढरिबेते भलो मरिबो
मन मान्यो हमारे । एक को दुःख मरे मिटिजात बियोग में होत है
दोऊ दुखारे ॥ ४६४ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ । बिरहनिवेदन ॥

दो० कर के मीड़े कुसुम लौं, गई बिरह कुँभिलाय ।
सदा समीपिनि सखिन हूं, नीठ पिछानी जाय ४६५

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन नायक सों अरु सखीको
बचन सखी सों होय ॥ कवित्त ॥ प्यारे नँदनंदन तिहारे बिछुरे ते मोपै
कहत बनै न जैसी भई वाकी गति है । आली जे रहत निशि वासर समीप
तिनहूं पै पहिचानी वह नीठही परति है ॥ त्रास देखि पास जैबो छोड़्यो
पासवान नेह एते मान मदन हुताशन वराति है । कोमल कुसुम मानो
मीड़्यो करवर करि ऐसे कुँभिलाय मुरझाय गई अति है ॥ ४६५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेक न जानी परत यों, पर्‌यो बिरह तन छाम ।
उठत दिये लौं नादि हरि, लिये तिहारो नाम ४६६

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरहनिवेदन सखी को वचन सखी सों ॥

सवैया ॥ लाल तिहारे बियोगते वाको बिहात घरी बिबि बासर कीसी। छाम भयो अतिही तनबाम को काम दहै सुधि बुद्धि हरीसी ॥ सेज में नेकहू जानी परै नहिं देखिये कंचन रेख लिखीसी । रावरो नाम सुनै इकबारही नादि उठै द्युतिदीप गहीसी ॥ ४६६ ॥

मराल अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जो वाके तन की दशा, देख्यो चाहत आप ।
तौबलिनेकबिलोकिये, चलिऔचकचुपचाप ४६७

यह नायिका प्रोषितपतिका व्याधि अवस्था सखी को बचन सखी सो नायक को लै चलिबो प्रयोजन है ॥ सवैया ॥ पाहन की पुतरी है परी बरसै अँसुवा सरसैं तनतापै । ज्यों ज्यों करैं उपचार बरै त्यों परयो हम लोगन को अति पापै ॥ वाकी दशा अब ऐसी भई हरि जिव अबलों कोई चाहत आपै । तो वह शोध लहै न बलाय ल्यो यों अचका चलिये चुपचापै ॥ ४६७ ॥

मंदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० तजत अठान*नहठपर्‌यो, शठमति आठौयाम ।
भयो बाम वा बाम को, रहतबाम बे काम ४६८

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरह निवेदन सखी को बचन नायक सों सखी सखीहू सों कहै तो संभव है ॥ कबित्त ॥ लालमनभावन तिहारे बिछुरेते बाल बिरह अगिनि में बरत नेहनाधे है। वेही काम काम बामदेव के भरम भूलि दत्योवाही बाम सों विषम बैरबांधे हैं ॥ शठमति हठभरि दयावर परिहरि आठों याम रहत सरोस रस सांधे हैं । कीजे धों कहा उपाय छोड़त न औटपाइ तकैं हानिबेको दाउलग्यो इह धांधे है॥४६८॥

---

* पाठान्तर—" हठाव "।

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बाल बेलि सूखी सुखद, यहि रूखे रुख घाम।
फेरडहडहीकीजिये, सुरससींचि घनश्याम४६९

यह अनुराग निवेदन सखीको बचन नायकसों पुरुष मानहूके प्रसंगहूमें संभव है ॥ कबित्त ॥ हितकर जाको हरिलीन्यों चित लाल यह कितहै उचित ताहि एतो दुख दीजिये। जानतहौ नीके प्रीतिरीति को प्रबीणपनु कीजै न गहरु सुख दैके सुख लीजियें ॥ रावरे दुसह येही रूखे रुखघामही सो बाल बेलि सूखी जाहि निरख सुछीजिये। प्यारे घनश्याम जगजरनि निवारतहौ सींचिकै सुरस फिरि डहडही कीजिये ॥४६९॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० लाल तिहारे बिरह की, अगिनि अनूप अपार।
सरसैं बरसैं नीर हू, झरहू मिटै न झार ४७०

यह नायिका प्रोषितपतिका सखी को बचन नायक सों बिरह निवेदन ॥ कबित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारेलाल बिछुरे तिहारे बाल अतिही बिकल मिलबेको तरसत है। सारी होत सीरे उपचार तातें ताती छिन छिन अकुलात छाती पीर परसत है। वाके तन रावरे बियोगकी अगिनि ऐसी अदभुत गतिसों अपार दरसत है। महाझरहूतें झार सीरी न परत परि प्रजरत नीर की झरनि बरसत है ॥ ४७० ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देखत दुरै कपूर लौं, उड़ै जाय जिन लाल।
छिनछिनजात परी खरी, छीन छबीलीबाल ४७१

यह नायिकाको अनुराग निवेदन सखी को बचन नायक सों बिरह निवेदनहू होय ॥ कबित्त ॥ बिछुरे तिहारे लाल बिलखी बिकल बाल परी बिललात क्यों हूं धीर न धरातहै। एते मान कृश भई परे परयङ्क पर

नीठि निठ निरख्यो परत वाको गातहै ॥ काल्ह ही सुआजु नाहिं आजु ही सु अब नाहिं याते परजननको जीव अकुलातहै। ऐसी छिन छीजनि बिलाय जिन जाय बाल ज्यों कपूरदानी ते कपूर उड़जात है ॥ ४७१ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० हँसि उतार हिय ते दई, तुम जु तिहीं दिन लाल।
राखत प्राण कपूर ज्यों, वहै चिरमिटी माल ४७२

यह अनुराग निवेदन है सखीको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ दूबरी ऐसी भई बिछुरे तिय सेजहू में न लखी परै सोतौ। आली बिलोकिकै मण्डित हाथ गयो इकसाथ सबै सुख जोतौ ॥ बीसबिसे उड़जाते कपूर लौ राखो तो प्यारी के प्राणन कोतौ। जो वह लाल तिहारो दयो घुंघचीको हरा उरमांझ न होतौ ॥ ४७२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कहा कहौं वाकी दशा, हरि प्राणन के ईश।
बिरहज्वालजरिबोलखै, मरिबोभयोअशीश ४७३

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन नायकसो ॥ कवित्त ॥ प्यारे मनमोहन तिहारे बिछुरेतें बृषभानु की कुमरिभई खरी कालिकानहै। जल बिन मीन ज्यों बिकल तलफत अति कहो कविकृष्ण ऐसी होत आनबानहै ॥ ज्यों ज्यों करियत उपचारनकी भीर त्यों त्यो बढ़त है दूनी पीर आंखिनहीं प्रान है। बिरहकी ज्वालनि सो जरिबेके लेखे वाको मरिबेको बचन अशीश के समान है ॥ ४७३ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० यह बिनसन नग राखि कै, जगत बड़ो यश लेहु।
जरी बिषम जुर ज्याइये, जाय सुदरशन देहु ४७४

यह नायिका प्रोषितपतिका व्याधि अवस्था सखीको बचन नायकसों ॥

कवित्त ॥ जरी है विषमजुर गिरी है अचेत वह घिरी है चहूंघा व्याधि वृन्दन में खरिये । कंचन से तनको अतन बृथा बारत है रतन उबारिये यतन हरि करिये ॥ ऐसी गति देखो हौंतो मरत परेखो अब कछु न बसात छिन छिन जात बरिये । लीजिये जगत यश कीजिये धरम यह दीजिये सुदरशन वाको ताप हरिये ॥ ४७४ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मैं लै दयो लयो सुकर, छुवत छिनक गो नीरु ।
लाल तुम्हारो अरगजा, उर ह्वै लग्यो अबीरु ४७५

यह नायिका प्रोषितपतिका सखी को बचन नायक सों ॥ कवित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारे लाल बिछुरे तिहारे अब हियो ब्रजबालको अनंग दुख-दाग्यो है । कोवरी निपट कुंभिलायगई फूल जिमि दुख अनुकूलभौ समूलसुख भाग्यो है ॥ तुमपै गयोसो मैन दीनो जाय वाही उन लीनो अति हितकरि चित अनुराग्यो है । करपरसत हीं छिनकगयो नीर अरु अरगजा उरमे अबीर ह्वैकै लाग्यो है ॥ ४७५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० थाकी यतन अनेक करि, नेक न छांड़त गैल ।
करी खरी दुबरी सु लखि, तेरी चाह चुरैल ४७६

यह नायिका की लगन सखी को वचन नायक सो ॥ सवैया ॥ रोमनि रोमनि भोयगई हियमें धँसि प्राणन मांझ खगी है । हौं करि थाकी उपाय सबै हरियन्त्रन मन्त्रनहू न जगी है ॥ देह सुखाय करी दुब्बरी तब बावरी ज्यों सुधि बुद्धि भगी है । एते पै वाकी न छांड़त गैल चुरैल है रावरी चाह लगी है ॥ ४७६ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० पिय के ध्यान गही गही, रही वही ह्वै नारि ।

आप आपही आरसी, लखिरीझति रिझवारि ४७७

यह नायिका की लगन तनमें ता सखी को बचन सखी सो॥ सवैया॥ नेह लग्यो मनभावन सों उहितो अँगई यह बान नई है। ध्यानहीं ध्यान मे आज कछू बृषभानुसुता भइ कान्हमई है॥ आरसी मे लखि आपनी मूरति आपही रीझि निहाल भई है। पूरन प्रेमकी ज्योति जगी उर आनसबै सुधि भूलिगई है॥ ४७७॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० औरै पैरै न करै हियो, खरे जरे पर जार।
लावत घोर गुलाब में, भले मिलै घनसार ४७८

यह नायिका प्रोषितपतिका नायक को बचन सखीसो॥ सवैयां॥ काहे को तू घनसार गुलाब में घोरि घनो घसि चन्दन लावै। काहे को शीतल नीर भिगोय उसीरपपान समीर डुलावै॥ तोही कहा जक ऐसी परी प्रजरी उर आगि खरी प्रजरावै। ये उपचार करै न परै फल जातेपरै किन ताहि मिलावै॥ ४७८॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४॥

दो० रँगराती रातै हिये, पाती लिखी बनाय।
पाती काती बिरहकी, छाती रही लगाय ४७९

यह पाती सखी को बचन सखी सो॥ कबित्त॥ जबते बियोग भयो लाल मनभावन सो तबहींते प्यारी तलफति मुरझायकै। नैनजल बरसति मिलिबेको तरसति सरसति मदनमरूर बहु भांयकै॥ अतिअनुराग में बनाये लिखि प्राणपति ऐसे मे अचानकही दीनी काहू आयकै। हित अकुलाती सोतो बिरहकी काती जानि राती पाती रही ताती छाती सों लगायकै॥ ४७९॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कहा भयो जो बीछुरे, मो मन तो मन साथ।
उड़ी जाहु कितही गुड़ी, तऊ उड़ायक हाथ ४८०

यह नायककी पत्री नायिका को ॥ सवैया ॥ जो करतार रची सु सही विधि और विचार अकारथही है। बेदपुरान पुरानै सुनी सब कोऊ कहै यह गाथही है॥ अन्तर बीच पखो तो कहाभयो मोमन तो तुव साथही है। जाहुगुड़ी कितहू उड़े डोर उड़ावनहार के हाथही है॥४८०॥

नारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० कर लै चूमि चढ़ाय शिर, उर लगाय भुज भेंटि।
लहिपातीपियकीलिखी, बांचतिधरतिसमेटि ४८१

यह नायक की पत्री आई ताहि देखि नायिका की जो दशा भई सो सखी सखी सों कहति है॥ कवित्त ॥ नैननीर बरसत देखिबे को तरसत लागे काम सरसत पीर उर अतिकी। पाये न संदेशे ताते अधिक अंदेशे बढ़े शोचै सुकुमार पै न कहै मन गतिकी॥ ताही समै काहू आनि औचकही चीठी दीनी देखतही सेनापति पाई प्रीति रतिकी। माथे लै चढ़ाई दोऊ दृगन लगाई चूम छाती लपटायराखी पाती प्राणपतिकी॥ ४८१ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लिखत न कागद पर बनत, कहत सँदेश लजात।
कहिहै सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात ४८२

यह पत्री नायक की अथवा नायिका की परकीया ॥ कवित्त ॥ पाती में लिखत कैसे बनत जितो है चाह सागर को सलिल चुरूमें कैसे कीजिये। कहत सँदेश उर आवत है लाज अति अधिक अँदेश यही छिन छिन छीजिये॥ मन ऐसो मानस मिलै न कोऊ मधिमातो

जासो समझाय जिय भेद कहि दीजिये। याते प्रीति रीति औदात मेरे हियकी बात आपने हियेते नीकी भांति जानि लीजिये ॥ ४८२ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तर झुरसी ऊपर गिरी, कज्जल जल छिरकाय।
पिय पाती बिनु ही लिखी, बांची बिरह बलाय ४८३

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरहकी अधिकाई पत्री लिखबेते जानी गई ॥ कवित्त ॥ प्यारे को सँदेश लिखिबे को बैठी साहसु कै लिखत बन्यो ना अति बिरह मलीनी है। तर ताते पानिके परस परजरी और ऊपरते गिरी अँसुवनि जलभीनी है ॥ ऐसीये लपेटि उन सौंपी सजनी के हाथ उन जाय त्योहीं प्राणनाथ हाथ दीनी है। खोलतही पाती पिय तातीकी सुरतिकरि छाती गहवरि आई आंख भरलीनी है ॥४८३॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० बिरह बिकल बिनही लिखी, पाती दई पठाय।
आंक बिहूनी यों सुचित, सूनै बांचत जाय ४८४

यह नायिका प्रोषितपतिका की पत्री आई याते दोउनके बिरहकी अधिकाई की शून्यता जानिपरी ॥ कवित्त ॥ बिरह मरूरते न तनकी तनक सुधि बाल अति व्याकुल अचेत ऐसी ह्वैगई । लिखिबेको लई पाती लिखत बन्यो न कछू वैसीये लपेटि प्राणपतिपै पठैदई ॥ वाकी बिकलाई की कहांलौं अधिकाई कहो एकसी दुहूँकी गति एकबेर ह्वै भई। चपरी प्रबीनी वह जऊ अंकहीनी तऊ बाचि सुनि हितके लगाय छातीसों लई ॥ ४८४ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चलत चलत लौं लै चले, सब सुख संग लगाय।
ग्रीषम बासर शिशिरनिशि, पियमोपास बसाय ४८५

यह पत्री नायिकाकी नायकसों ॥ सवैया ॥ रैनदिना रहतेई मिलि रसरंग उमंगन में मन ढारे । ऐसो सनेह बढ़ायकै देखरी कैसी करी उन कान्ह पियारे ॥ लैगयो संग लगाय सबै सुख दैगयो सोच टरै नहिं टारे । पूसकी यामिनी जेठ के द्यौस बसाय गयो अब पास हमारे ॥ ४८५ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० गोपिन के अँसुवन भरी, सदा असोस अपार ।
डगर डगरनै ह्वैरही, बगर बगर के बार ४८६

यह ब्रज को विरह निवेदन ऊधोको बचन श्रीकृष्णा सों सखीको बचन सखी सो ॥ कवित्त ॥ योग दैन गयो हौं बियोग बारि बारिधि में बूड़त बच्यो हौं नाथ नारी नैन यों बहै । गंगहू सहस्रधार अधिक सुधार जानि बरषा न होहि जो रहोगे गिरिहू गहै ॥ एतौ जल उनैहै न बारिधि समैहै कछू मुनिपै अच्यो न जैहै कानखोलिकै कहै । कवि प्रह्लाद जो मिलाप पारि बांधिहो न बटुकिबटाकेपातराबरे भलेरहै॥४८६॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कियो सयान सखीन सों, नहिं सयान वह भूल ।
दुरे दुराई फूल लों, क्यों पिय आगम फूल ४८७

आगमोत्सव नायिका सखीसों सखीको बचन ॥ कवित्त ॥ ललित कपोल आनु मन्दमुकुलन लागे आननपै भई कछू और अरुणाईरी । मैंतो पूछी सुखमानि तै कछू रुखाई ठानि घूंघुटमें ढांकि मुख डीठ क्यों चुराईरी ॥ नाहींने सयानपु है बीस बिसे भूल है सयानी सजनीनसों करी जो चतुराईरी । फूलकी सुवासलों विकास पहलीही होत फूल हरि आगमकी क्यों दुरे दुराईरी ॥ ४८७ ॥

त्रिकल अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० आयो मित्र बिदेश ते, काहू कही पुकार ।
सुन हुलसी बिकसी हँसी, दोऊ दुहुँन निहार ४८८

यह नायिका परकीया इक नायक उपतसों दोउनको सनेह है गयो आगम में दोउनके हर्ष भयों याहीते परस्पर जानिपरी सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ कान्हर के बिछुरे ब्रजबाल दुवौ मनही मनमें मुरझानी । कृष्ण कहैं बहरायबे को मनु बैठ दुहूँमिलि चौपड़ ठानी ॥ मोहन मीत बिदेशते आयो पुकारिकै काहू कही जब बानी । सो सुनि दोउ दुहूँन बिलोकि लसी बिलसी हुलसी मुसक्यानी ॥ ४८८ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मृगनैनी दृग की फरक, उर उछाह तन फूल ।
बिनही पिय आगम उमँगि, पलटन लगी दुकूल ४८९

यह आगम स्वप्न पतिका सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ बाल-खरी अकुलात हिये नँदलाल बियोग व्यथा उरजागी । ऐसेमे आन अचानकही हुलसी छतिया सुघरी अनुरागी ॥ बाम बिलोचन के फरके मृगलोचनि जीसे उछाहन पागी । फूलभरो बिनहीं पिय आगम चारु दुकूल चुरावनलागी ॥ ४८९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मलिन देह वेई बसन, मलिन बिरह के रूप ।
पिय आगम औरै उठी, आनन ओप अनूप ४९०

यह आगमिष्यत्पतिका सखी को बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ लाल मनभावन के बिछुरे मयंकमुखी अतिहि बिकल चित परयो चिन्ता कूप है । अधिक अनंग पीर तीरसी खगत हिय चाँदनी लगत जैसी ग्रीषमकी धूपहै । कीनो न शृँगारु चारु वैसीये मलिन देह बसन मलिन

उही बिरह के रूप है । कहै कबिकृष्ण पिय आगम सुनत बाढ़ी और ओप आननपै उमँगि अनूप है ॥ ४९० ॥

मराल अच्चर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रहे बरोठे में मिले, प्रिय प्राणन के ईश ।
आवत आवत की भई, बिधि की घरी घरीश ४९१

आगमोत्सव नायिका को वचन सखीसों संचारी के भेद मे औत्सुक्य जानिये ॥ सवैया ॥ आये बिदेशते प्राणपती यों तियाकी सुने छतिया सियराई । नैनन लागिरही दिखसाध मनोज उमंग हिये भरिआई ॥ कृष्ण कहै मिलबे कहै काहूसों पौरि में जौलौं रह्यो सुखदाई । आवत आवतकी सुघरी बिधि बासरहू ते खरी सरसाई ॥ ४९१ ॥

मराल अच्चर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कहि पठाय जिय भावती, पिय आवन की बात ।
फूली आंगनमें फिरै, आंगन अँग न समात४९२

आगमोत्सव सखीको बचन सखीसों संचार हर्ष ॥ सवैया ॥ बाल बियोग मलीन महा बिसरी सुधि हास बिलासहू भूले । एते पै औधि व्यतीतभई उर में कही साथ सबै दुख ऊलै ॥ आवन त्यो मनभावनकी सुनिकै उमहे सुख पुंज समूले । आंगन में हुलसी फिरै सुन्दरि आंगन अंग समात न फूलै ॥ ४९२ ॥

पयोधर अच्चर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नाच अचानक ही उठे, बिन पावस बन मोर ।
जानत ही नन्दित करी, यह दिश नन्दकिशोर ४९३

यह आगमोत्सव नायिकाको बचन सखी सों सखीहूको वचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ राधा यों बिशाखासों कहति जाको रूप मोहि चारु चित्रपट अवरेखते दिखायोरी । जानियत वह चितचोर नंदपूत धूत

आली यहि कानन कहूंते आज आयोरी ॥ लहलही होत बहुकालकेरी सूखी बेल फूलत सुमन ऐसो बन छबि छायोरी । बिन उनएहूं घन भये हरषित मन नाच नाच मोरन कुलाहल मचायोरी ॥ ४६३ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० बाम बाहु फरकत मिले, जो हरि जीवनमूरि ।
तो तोही सों भेंटिहौं, राखि दाहिनी दूरि ४६४

आगमोत्सव भुज फरकतही नायिकाको बचन बाम भुजा प्रति ॥

सवैया ॥ कान्ह बिसासी बिदेश रह्यो बसि मैन दही बहुभांति हिये हौं । बाम भुजा फरकी तू भले अब हौंहूं यहै निश्चय पन कीहौं ॥ कैसेउ वा मनभावन को अब जो भरिआँखिन देखनपैहौं । राखिहौं दूरि या दाहिनी बाहु को तोहीसों गाढ़ अलिंगन दैहौं ॥ ४६४ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बिछुरे जिय संकोच यह, बोलत बनै न बैन ।
दोऊ दौरि लगे हिये, किये निचोहे नैन ४६५

यह परदेशते इन दोउनके हितको आधिक्य सखीको बचन सखीसों ॥

सवैया ॥ दम्पति आपुस में कहते पलु ओटभये पलप्राण रहैना । आयो बिदेश बितै वह बासर नन्दलला अति चैनको ऐना ॥ एतो बिछोह भयेहू जिये यह लाजते बोलत बैन बनैना । दोऊलगे लपटाय हिये पै निचोहे किये सकुचोहे से नैना ॥ ४६५ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० यदपि तेज रोहाल बल, पलकौ लगी न बार ।
तउ ग्वैंड़ो घर को भयो, पैंड़ो कोस हजार ४६६

यह परदेशते आगम आगतपतिका नायिका औत्सुक्यसंचारी ॥

सवैया ॥ कौनहूं काजको प्राण पिया परदेश समो बहुते बितयो है ।

राधिका की सुधि कै कविकृष्ण तिहींछिन भौनको गौन ठयो है ॥ यद्यपि तेज जुरो नियरो घर तद्यपि कोस हजार भयो है । ग्वैड़ेको पैंड़ो न काढ्यो कटै अभिलापसमूह हिये उनयो है ॥ ४९६ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० छिरके नाह नवोढ़ दृग, कर पिचकी जल जोर ।
रोचन रँग लाली भई, बिय तिय लोचन कोर ४९७

यह ज्येष्ठा कनिष्ठा को भेद अन्यसंभोगदुःखिताहू होय सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ नन्दलला ललनागण मे जलकेलिरची रस-रीति रलाई । चूभक ले उछरे बहुभांति दुरे भरिअंक करी तरलाई ॥ भावती लोचनके छिरके करकी पिचकी जलधार चलाई । सौतिके लोचन कोरन मांझ तहौ भई रोचनरंग ललाई ॥ ४९७ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मिसही मिस आतप दुसह, दई और बहराय ।
चलत ललन मनभावतिह, तन की छांह छिपाय ४९८

यह ज्येष्ठा कनिष्ठाके भेदमे संभवहै सखीको वचन सखीसो ॥ सवैया ॥ कान्ह सुजानके मोपे कछू रसरीतिके भेद कहे नहिं जाहीं । आतप को मिस कै वहराय दई सँग और जिती वनिताहीं ॥ छैल गही वह गैल मदू यमुना तट केलि निकुञ्ज जहांहीं । राधिका प्यारी को लैचल्यो संग किये अपने तन की परछांहीं ॥ ४९८ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० लाज गहौ बेकाज कत, घेर रहे घर जाहिं ।
गोरस चाहत फिरत हो, गोरस चाहत नाहिं ४९९

यह नायिका प्रौढ़ा दानसमय ॥ कवित्त ॥ लाज क्यों न गहौ बिन काज मगरोंकि रहौ इनराय बोल तुम कहत अनैसेहौ । गोरस न चाहत

हौ गोरस को चाहतहौ भली भांति जानतहौं कान्ह तुम जैसेहौ ॥ कृष्ण प्राणप्यारे ब्रजबिदित तिहारे गुण माखन के चोरबेको घरघर पैसेहौ । अब यह बन ऐसे चलन चलावतहौ सौहें लखि हँसत लसत मन लेसेहौ ॥ ४९९ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० पहुला हार हिये लसे, सनकी बेंदी भाल ।
राखत खेत खरे खरे, खरे उरोजनबाल ५००

यह नायिका जातिबर्णन नायिकाको बचन ॥ सवैया ॥ पातरो लांक कठोरखरे कुच गोरी अंगेठ लुनाई भरी है। मेचक पीनहैं तेरे बड़ दृग ओठन मे अरुणाई धरी है ॥ हार हिये पहुलाको लसै बिंदुली सनकी पखुरी की करी है । राखत खेतखरी ब्रजनागरि यौवन जाति खरी निखरी है ॥ ५०० ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० टटकी धोई धोवती, चटकीली मुख जोति ।
लसत रसोई के बगर, जगरमगर द्युति होति ५०१

यह जातिबर्णन सखी नायकके रूप की निकाई नायकसों निवेदन करति है ॥ कबित्त ॥ बैठी अपरस ब्रजनागर सरवस बेष पेखि मन-मोहनकी सुध बुध डगरी । कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई बैस तैसीदई बिधि ने सकेल शोभा कीन्ही मानो सगरी ॥ दमके बदन ज्योति विशद बरन धौति पहिरे लसत सौति रूप गुण अगरी । ह्वै रह्यो प्रकाश अति जगर मगर तिहि वगर रसोई के अपार ओप बगरी ॥ ५०१ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यदपि नाहिं नाहीं नहीं, बदन लगी जग जाति ।
तदपि भौंह हांसी भरिनु, हांसी पै ठहराति ५०२

यह जातिवर्णन नायिका प्रौढ़ा सुरतारम्भ ॥ सवैया ॥ बैठी शृँगार सबै ब्रजनारि अचानक मोहन आयो तहांहीं । पाणि गह्यो अवलोकि अकेलि अलौकिक केलि कला चित चाहीं ॥ यद्यपि वा नवनागरि के मुँह लागी यहै जक ना नन नाहीं । तद्यपि हांसिभरी भृकुटीनमें बीस बिसे ठहरात है नाहीं ॥ ५०२ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० दृग थरकौहैं अधखुले, देह थकौहैं डार ।
सुरत सुखित सी देखियत, दुखित गरभ के भार ५०३

यह जातिबर्णन गर्भिणी की शोभा सखी नायकसों कहै सखी सखी सों कहै नायक सखी सो कहै ॥ सवैया ॥ बोलत बैन हरेई हरेरु भई छवि आननकी पियरी है । आधे खुले अलसोहैं से लोचन देह थकौहैं से ढारढरी है ॥ गर्भको भार धरे सुकुमार जक दुखितो नवनारि खरी है । नीकी तऊ अति लागत है मनो केलि कलोलके रंगभरी है ॥५०३॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० ज्यों कर त्यों चुटकी*चलति, ज्यों चुटकी त्यों नारि।
छबि सों गत सी लै चलति, चातुर कातनहारि ५०४

जाति वर्णन नायकको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ ज्यों कर त्योंहीं चलै चुटकी उघरे भुजमूल बढ़ी छवि भारी । चारु कताई की मोरन भौंवकी टोरन जीव टरै नहीं टारी ॥ भौंह उचै तिरछे करि लोचन लेत किधौं गति रूप उजारी । पातुर मानो मनोजपकी अति चातुर कातनहारि निहारी ॥ ५०४ ॥

चारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० मुख उघारि प्यो लखि रहत, रह्यो न गो मिस सैन।

* पाठान्तर—"उरति" ।

फरके ओठ उठै पुलक, गये उघरि जुर नैन ५०५

यह जातिबर्णन परिहास सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पौरिते बोल सुन्यो पियको उठि पौढ़िरही पटओढ़ि सयानी । झीने दुकूलमें लाललखी बड़री-अँखियां झलकै सरसानी ॥ शीशसों ऐंचिलियो अँचरा बहरायकै कान्हर त्यो तिरछानी । ओठ सों ओठ लगाय रही दृगदाबि कपोलन हीं मुसकानी ॥ ५०५ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० नहिंअन्हायनहिंजायघर, चितचहुव्योतकितीर ।
परसफुरहरी लैफिरत, बिहँसतिधसतननीर ५०६

यह जातिबर्णन नायिका परकीया क्रियाविदग्धा सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ न्हायबेको यमुनागई बाल तहां बनितानकी है अतिभीरो । त्योंहीं अचानक कृष्णकहैं कहुँ डीठपरयो नटनागर नीरो ॥ चाह चुभ्यो चित न्हाय सुकौन गयो नहिं जातु कँपातु शरीरो । अंजलि नीरभरै गहि डारत नाक सकोरि कहै यह सीरो ॥ ५०६ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मुँहपखारि मुड़हर भिजे, शीशसजलकर छाय ।
मोर उचै घूँटेनु नै, नारि सरोवर न्हाय ५०७

यह जातिबर्णन कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ बैठिकै तीर पखारिकै आनन हाथ भिजै जल केशन छ्वैकै । कृष्ण कहैं करसों उसराइ किधौं धरयो शीशको चीर भिजैकै ॥ दूकर पंकज दोऊ खये धरि मोरि उचै कटिछीन लचैकै । यों ब्रजबाल सरोवरन्हात महाछबिसो घुटुवान ते नैकै ॥ ५०७ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिहँसतिसकुचतिसी दिये, कुचआंचर बिचबांह ।

भीजे पट तट को चली, न्हाय सरोवर मांह ५०८

यह जातिवर्णन कविकी उक्ति सखी नायिकाकी शोभा नायकको दिखायवे को कहै तौहूं संभव है॥ सवैया॥ देव दिवाकरको करि बन्दन कृष्ण कहै मनही मे मनावति। बांहदिये कुचअंचल बीच लजाय हिये हँसि नैन नचावति। भीजे दुकूल रहे लपटाय महाछबि कंचनसे तन-छावति। यों ब्रजनागरि रूप उजागरि न्हाय सरोवर तीर से आवति॥ ५०८॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० मुँह धोवति एँड़ी घसति, हँसति अनगवततीर।
घसत न इन्दीवर नयन, कालिन्दी के नीर ५०९

यह जातिवर्णन नायिकाकी चेष्टा सखी सखीसों कहति है॥ कवित्त॥ न्हायबे को आई अति रीझि मँडरायहिये कृष्ण प्राणप्यारेको स्वरूप दरसतिहै। इन्दीवर नैनी अनगावति अनेक भांति पै वह कलिंदी के न सलिल घसति है॥ परसि त्रिसारे करु कोरि कोरि शोभानिधि नासिका सकोरि मुँहमोरि बिहँसति है। वदन पखारतिहै बांके दृग ढारतिहै गुलफ घसति अतिरंग बरसति हैं॥ ५०९॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० ओठ उचै हांसी भरी, दृग भौंहन की चाल।
मोमनकहीसुचालियो, पियततमाखूलाल ५१०

यह जातिवर्णन नायिकाको वचन सखी सो॥ सवैया॥ मैं निरख्यो जबते तब ते जियकी गति जानत कौन बियोरी। जो कछु रूप की रीझ खुभी चित जानत है इक मेरो हियोरी॥ हांसी भरी चख भौंहनकी छवि ओठ उचै इकभाव कियोरी। पीवत लाल तमाखूके घूंट कहौं उन मोमन पीन लियोरी॥ ५१०॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० अँगुरिनउचभरिभीति दै, उलमिचितै चखलोल।
रुचि सों दुहुँन दुहुँन के, चूमे चारु कपोल ५११

यह जातिबर्णन दोउन के हितकीसी रसाई सखा को बचन सखीसों परकीया ॥ सवैया ॥ आज भटू ब्रजनागर नागरि कीनो बिलास महा-रस मान्यो । चाहकी चोप सों चाहि चहूँघा बियो जब कोऊ इतात न जान्यो ॥ दै भरु अन्तर भीति दुत्रो उलमे अँगुरी उचि कौतुक ठान्यो । चारु कपोल दुहूँनके दोउन चुम्बन कै अतिही सुख मान्यो ॥ ५११ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हँसि ओठन बिचकर उचै, किये निचोहे नैन।
खरे अरे पिय के पिया, लगी बिरी मुँह दैन ५१२

यह जातिबर्णन नायक की शोभा सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ कान्ह कही अतिही हठकै तब राधिका के जियमे यह आई । ग्रीव नवाय दुराय कपोल किये नत नैन कछू मुसकाई ॥ बीरी बनाय लई करकंज खवैवेको मंजुभुजा उकसाई । यो हितकी सरसाई बिलोकि भई मनमोहनके मनभाई ॥ ५१२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नाक मोरि नाहीं ककै, नारि निहोरे लेय।
छुवतओठ बियआंगुरिन, बिरीबदनप्योदेय ५१३

यह जातिबर्णन सखीको बचन सखीसो ॥ सवैया ॥ आज दुहूँको बिलास अली मैं दुरै दरश्यो कहते नहि आवत । नन्दलला अतिही हठकै बृपभानुकुमारि को पान खवावत ॥ ओठनसो बिय अगुलि छ्वै मुसकाय कै नैनसों नैन मिलावत । नासिका मोरि मरोरिकै नाह करै तिय नाहिं त्यो त्यों सुख पावत ॥ ५१३ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २२ ॥

दो० बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहन हँसै, देन कहै नटि जाय ५१४

यह नायिका परकीया प्रौढ़ा जातिबर्णन सखीको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ आज लखो वृषभानुलली मनमोहनसों रसखेलटरी है। बातन के चसकै सुरली मुरलीहरिकै दबकाय धरी है ॥ ज्यों ज्यों हहाकरि मांगै लला वह त्यों त्यो कछू अठिलात खरी है। देन कहै मुकरै हँस भौंहन सौंह करै रसभाय भरी है ॥ ५१४

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गदरानै तन गोरटी, ऐपन आड़ लिलारि।
हूठ्यो दईचलायदृग, करति गँवारि सँवारि ५१५

यह जातिबर्णन नायिका की शोभा नायक सखीसों कहत है॥कबित्त॥ शोभा केसे रसभरी रूप केसे सांचेढरी बिनहू शृंगार छबि कही न परति है। ललित लुनाई सने गात में सरसभरे तरुणाई आनभरी औरहू भरति है ॥ बटुरारे बदन पै ऐपनकी सोहै आड़ तैसीये चिबुकगाड़ मन को हरति है। सहज सुभाय अठिलाय कै गँवारी गोरी हूठ्यो दै चलाय नैन घायल करति है ॥ ५१५ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नाक चढ़ै सीबी करै, जितै छबीले छैल।
फिर फिरि जान वहै गहै, प्यो ककरीलै गैल ५१६

यह जातिबर्णन सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ सखि जातचले दोउ मारग मे उन राहन पांयन रंग ढरैं। वह प्यारे की रीझ रिझावन प्यारी की मोपै न ओहू बखानिपरै ॥ अति नाजुक छैल छबीली तिया

जित नाक सकोरि कै सीबी करैं। कबि कृष्ण कहै यह चाहपग्यो नित जानिकै प्रीतम पांयधरैं ॥ ५१६ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० जालरंध्र मग अगनु को, कछु उजास सो पाय। पीठि दिये जगत्यो रह्यो, डीठि झरोखा लाय ५१७

यह जातिबर्णन नायिका की अंगदीप्ति देखि नायक को और बात सब भूलगई है सो सखी सखीसो कहतहै ॥कबित्त॥ प्यारी खण्डतीसरे रसीली रंग रावटीमे तकि ताकी ओर छकि रह्यो नन्दनन्द है। कालिदास बीचिन दरीचिन ह्वै छलकाति छबिकी मरीचिनकी झलक अमन्द है ॥ लोग देखि भरमें कहा धौं है या घरमें सुरङ्गमग्यो जगमगी जोतिन को कन्द है। लालनको जाल है कि ज्वालन को मालहै कि चामिकरु चपला कि रविहै कि चन्दहै ॥ ५१७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दोऊ चोरमिहींचनी, खेलनि खेल अघात। दुरत हिये लपटाय कै, छुवत हिये लपटात ५१८

यह जातिबर्णन चोरमिहींचनी खेलत दोउन को बिलात सखी सखी सो कहति है ॥ कबित्त ॥ वेपुकै कुमारिकाको ब्रजकी कुमारिकानि मांझमांझ केशौदास त्रास पगपेलिकै। कामकी लतासी चलिये मयासिसी अमल बुधिबल राधिकाके कण्ठ भुजमेलिकै ॥ दुरदुर दूरिदूरि पूरिपूरि अभिलाख लाखलाख भांतिकी अनूप रूप केलि कै। जनीके अजिर आज रजनी में सजनीरी सांची कीनी श्याम चोरमिंहचनी खेलिकै ॥ ५१८ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० दृग मिंहचत मृगलोचनी, भरे उलट भुज बाथ।

जान गई तिय नाथ के, हाथ परस ही हाथ ५१९

यह जातिबर्णन सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बैठीहुती बृषभानुकुमारि अचानक आयो तहां गिरिधारी । प्यारुकै लोचन मीचिलिये उनहूं भुज लौटि भरयो अँकवारी ॥ प्रीतमके करके परसे उमँग्यो उर आनँद बुद्धि बिचारी । याहीते वा मनभावन को पहिंचान हँसी सुविचक्षण प्यारी ॥ ५१९ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० प्रीतम दृग मिंहचत पिया, पानि परस सुख पाय।
जानि पिछानि अजान लौं, नेक न होत जनाय ५२०

यह जातिबर्णन सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ खेलत में कहूं पाछलीघांते अचानकही चलिआये बिहारी । मूंदकै प्राणपियारी के नैन चह्यो चुप ह्वै रसरीति सँचारी ॥ यद्यपि वा मनमोहन को कर लागतही उमँग्यो सुखभारी । तद्यपि जानिकै आपनी गोहि अजान भई बृषभानुदुलारी ॥ ५२० ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० ढीठ परोसिन ईठ ह्वै, कहै जु गहे सयान ।
सबै सँदेशे कहि कह्यो, मुसकाहट में मान ५२१

यह परकीया प्रौढ़ा सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ जाइ परोसिन के दुख पीसो झुकी ललना रिसजीमे ढिठाई । सोही परोसिन ढीठ यहांलग ईठहै याहि मनावन आई ॥ प्रीतमके जे सँदेशे हुते वे कहे सबही करिकै चतुराई । एते पै मान कह्यो मुसकाय यहै कहि प्यारो खरी कै रिसाई ॥ ५२१ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चित तरसत मिलत न बनत, बसि परोस के बास।

छाती फाटी जात सुनि, टाटी ओठ उसास ५२२

यह परकीया अनुराग नायक को अथवा नायिका को बचन सखी सों ॥ कबित्त ॥ नीची डीठि आपनपै कौलग चितैये बलि कैसेहू न देखे जाहु जेतो शोच करिये । मुरलीकी धुनि सुनि द्वारे उझकी निसेख मनके डरैते तनही में कांप डरिये ॥ लाजन की भीर पल पैड़ोहू न पावै नैन धीरे धीरे सकुच बचाई पांव धरिये । कीजै कहा कान्हर कनौड़े भये जींवों नाहिं नातो एक बासमें उसास लेले मरिये ॥५२२॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० ढीठ्यो दै बोलत हँसत, प्रौढ़ बिलास अपोढ़ ।
त्यों त्यों चलत न पिय नयन, छकिये छकी नवोढ़ ५२३

यह मदपान समय सखी को बचन सखी सों ॥ कबित्त ॥ आज बरु तीकी बारुनीकी मे बिलोकी वह शोभा मेरे नैननमें अबलो बसाति है । ज्यों ज्यौं वह ढीठ्यो देकै बोलत सरसबैन नागर नवेली हेरिहेरि कै हँसति है ॥ कहै कबिकृष्ण गर लागिबे को ललकति प्रौढ़ा के सुसकल बिलास बिलसति है । त्यों त्यो छकि तियने छकाई ऐसे पीके नैन पलकनिहू की भूली गति दरसति है ॥ ५२३ ॥

अहिवर अक्षर ३८ गुरु ५ लघु ३३ ॥

दो० हँसि हँसि हेरत नवल तिय, मदकेमदउमदाति ।
बलकिबलकिबोलतबचन, ललकिललकिलपटाति ५२४

कबित्त ॥ छिनकमें हँसै छिन रोवै छिन देखिरहै छिनकमें बैठि छिन लेटि लेटि जात है । छिनकमें ठाढ़ी हैकै सखिनसों बातै करै छिनक में झूमि झूमि मुरि मुसकात है ॥ गातकी न सुधि न सम्हार कछू अंचर की छिनक मे आलीहू के अंग लपटात हैं । छिनकमें रीझि रीझि बार को बदन चूमे छिनक में फेरि फेरि बूझै वही बात है ॥ ५२४ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मिलि चन्दन बेंदी रही, गोरे मुँह न लखाय।
ज्यों ज्यों मद लाली चढ़ै, त्यों त्यों उघरत जाय ५२५

यह मदपान समय नायिका की शोभा नायकको कहै अथवा सखी सखी सो कहै ॥ सवैया ॥ कछु आज लखी मदपान समै ललना कि प्रभा जियतें न टरै। कविकृष्ण कहैं बलकै छलकै मनमोहन को हँसि अंकभरै॥ द्युति चन्दन की बिंदुलीकी रही मिलि गोरे लिलार न जानिपरै। अरुणाई चढ़ै मदकी मुख ज्योंहीं ज्यों त्योंहीत्यों जात खरी उघरै ॥ ५२५ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० निपट लजीली नवल तिय, बहकि बारुनी सेय।
त्यों त्यों अति मीठी लगे, ज्यों ज्यों ढीठी देय ५२६

यह मदपान समय सखी को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ लाज भरी अतिही नवनागरि जाकी सुधाई सुधाईकै गाई। ता हिय की छबि देखिबे को पिय प्यारे भुराय कै बारुनि छाई॥ ज्यों ज्यो उमंग उठै मदकी तिय त्यों त्यों निशंक ह्वै देत ढिठाई। ढीठ्योही लागत नीकी महा वह मानौ भरी बहुभांति मिठाई ॥ ५२६ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० मान तमासो कर रही, बिबश बारुनी सेय।
झुकतिहँसतिहँसिहँसिझुकति, झुकिझुकिहँसिहँसिदेय

यह मदपान नायिकाकी शोभा नायक सों कहति है सखी सखीहू सों कहै ॥ कबित्त ॥ बारुनी बिबश मनमोहन सों मानठान आज मृगलोचनि तमाशे को लसति है। चारु तरुणाई में निकाई छबिछाई त्यों त्यों गोरे मुख पर अरुणाई सरसति है ॥ कबहूं बदन पट घूंघटको

ढांकिलेत कबहूं उघारिदेत रंग बरसति है। झुकति हँसति हाँसि झुकति झुकति हँसि हँसि हाँसि झुकै झुकि झुकिकै हँसति है ॥ ५२७ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रूप सुधा आसव छक्यो, आसव पियत बनैन ।
प्याले ओठ पिया बदन, रह्यो लगाये नैन ५२८

यह मदपान समय नायिका की शोभा देखि नायक छक रह्यो सखी सखी सो कहति है ॥ सवैया ॥ बारुनी को बनिआयो समो कहते न बनै कछु कौतुक भारो । प्यावत रंगभरी मृगनैनि रह्यो द्युति को भरि भौन उजारो ॥ आसव रूप सुधाके छक्यो मद पीवे को भूलि गयो सुधि प्यारो । प्याले सों ओठ पियामुख नैन लगाये रह्यो छबि को मतवारो ॥ ५२८ ॥

मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० खलितबचनअधखुलितदृग, ललितस्वेदकनजोति ।
अरुण बदन छबि मद छकी, खरी छबीलीहोति ५२९

यह मदपान समय नायिका की शोभा सखी सखी सो कहति है ॥ सवैया ॥ नैन कछू उघरे से मुँदे अरु बैनन मे शिथिलाई रसीली । स्वेद के बूँदन सो झलकै अरुणाद्युति आनन पै चटकीली ॥ तैसीये रूप उजागरि नागरि सोहत शोभासनी गरबीली । चारु जगी तन यौवन जोति छकै मद होत खरीये छबीली ॥ ५२९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छकि रसाल सौरभ सने, मधुर माधुरी गन्ध ।
ठौर ठौर झौरत झपत, भौंर भौंरमधु अन्ध ५३०

यह बसन्तऋतु समय जो मानी नायक सों सखी कहै तो मनायबो होय जो नायिका नायक सों कहै तो स्वयंदूती होय ऐसे नायकहू को कहिबो

सम्भव है जो नायक सखी सों कहै तो अपनी अवस्था प्रयोजन नायिका मिलाप ॥ सवैया ॥ फूलन के रसके चसके अवगाहि थके सब बेलि जितावन । माधुरी के मृदुगन्ध सने अरविन्द पराग सों पागि रहे तन ॥ मंजुरसाल के सौरभ सों मिल मत्त भये सुरत्यो न रही मन । ठौरनि ठौरनि भोरनि भूमि झुके मधुअन्ध मधुव्रत के गन ॥ ५२० ॥

वारन अक्षर २८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० फिर घर को नूतन पथिक, चले चकित चित भागि।
फूल्यो देख पलाश बन, समुही समुझि दवागि ५२१

यह बसन्त समय नायिका को बचन नायिका सों होय तो प्रोषितपतिका सखी को बचन नायक सो होय ॥ कबित्त ॥ देखो ऋतुराज को समाज बन बागन मे प्रफुलित सुमन रहे है जोति जागिकै । कुसुम पलाश के अँगार जानि चहूं ओर चोंचन सों चापत चकोर अनुरागिकै ॥ आगे तै बिलोकि फूले मैनमद चित ऊले नूतन पथिक भूले भरम दवागिकै । परी उरऐल परदेश की बिसारी गैल लौटि चले घरको चकित चित भागिकै ॥ ५२१ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० बन बाटन पिक बटपरा, लखि बिरहनिमतिमैन ।
कुहो कुहो करिकरि उठत, करिकरि रातेनैन ५२२

यह बसन्त समय सखी को बचन सखी सों होय तो अपनी अवस्था जतायबो होय ॥ सवैया ॥ मैन महीप को मानिमतो द्रुमडारि च्चढे चहुँ ओरनि टूकत । देखतही बिरहीजन को करि लोचन लाल कुहो कुहो कूकत ॥ बीस बिसे बन बाढ़न में बटपार बसे पिक भूलत भूकत । प्राणपती बिन क्यों बाचिबो अब दांवपरे रिपु क्यों टुक चूकत ॥ ५२२ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० दिशिदिशिकुसुमितदेखियत, उपबनबिपिनसमाज।
मनो बियोगिन को कियो, शरपंजर ऋतुराज ५३३

यह बसन्त समय है सखी को बचन नायक सों होय तो मनायबो नायक सों होय तो प्रवत्स्यत्पतिका ॥ कबित्त ॥ आयो है मदन क्षितिपाल को हुकुम पाइ आमल प्रबल ऐसो अमल चलायो है। मानगढ़ तोरिबे को अधिक प्रचण्ड वह देखो सबही के अनुराग उमँगायो है॥ बन उपबन जित तित अवलोकियत दिशि दिशि कुसुम समूह छबि छायो है। बैरसाधि बिषम बियोगिन के रोकिबे को मानो ऋतुराज शरपंजर बनायो है॥ ५३३॥

करभ अक्षर २८ गुरु २० लघु ८॥

दो० ही औरै सी ह्वै रही, टरी अवधि के नाम।
दूजे कर डारी खरी, बौरी बौरे आम ५३४

यह बसन्त समय नायिका की अवस्था सखी नायक सों कहति है सखी सखीहू सो कहै ॥सवैया॥ मोहन सों बिछुरी जबते तबते न लही कल एक घरी है। नैनन नीर ढरै निशिवासर व्याकुल बाल अचेत खरी है॥ ऐसी दशा पहलेही हुती पुन औरै भई सुधि औधि टरी है। तापर बौर रसालन देख्यो बसन्त के मोसरबौरी करी है॥ ५३४॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० कहलाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोबन सों कियो, दीरघदाघ निदाघ ५३५

यह ग्रीष्मसमय नायिका को वचन नायक सों हेठ अतो प्रवत्स्यत्पतिका सखी को वचन नायक सों नायकहू सो होय॥ पटपद॥ एक भूतमय होत भूत तजि पंचभूत भ्रम। अनिल अम्बु आकाश अवनि

ह्वैजात आगिसम ॥ पन्थ थकित मद मुकित सुखित सिन्धुरस जोवत । काकोदर करिकोस उदरतर केहरि सोवत ॥ प्रिय प्रबल जिये यह बिधि अबल सकल बिकल जल थल रहत । तजि केशवदास उदासमति जेठमास जेठे कहत ॥ ५३५ ॥

पयोधर अक्षर ३८ गुरु १२ लघु २६ ॥

दो० बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन तन मांह।
देखि दुपहरी जेठ की, छांहौं चाहत छांह ५३६

यह ग्रीष्म समय नायिकाको वचन नायकसों स्वयंदूत ऐसे नायकको वचन नायिकों सो जो नायिका की सखी नायकसों कहै तो परदेश को निवारण होय ॥ कवित्त ॥ तरवर लता वन ऐसे मुरझाय गये जैसे कामिनी को मुख कन्त विन भयो हैं । सरिता भई है छीन ऐसे सरजल हीन प्यारी दीन होती जो बिदेश पति गयो है ॥ अवनि अकाश पानी ताहबिन ऐसे जैसे नाह के बियोग भामिनी ज्यों तन तयो है । जेठकी जरनि मांह छांहहु तकति छांह एहो रिझवार परदेश कौनु गयोहै ॥५३६॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नाहिंन ये पावक प्रबल,लुवैं चलत चहुँ पास ।
मानहुँ बिरह बसन्त के, ग्रीषम लेत उसास ५३७

यह ग्रीष्मसमय नायिका प्रोषितपतिका नायिकाको बचन सखीसो॥ कवित्त ॥ चन्दकर मण्डलते मण्डके अखण्डधार बरषत पावक प्रचण्ड किधौं यहरी । कृष्ण प्राण प्यारे की दुहाई किधौं आय बड़वानलकी लूवै ताते तचति दुपहरी ॥ चण्डकर मण्डलौते पावक न वरपत लूवै न चलत जिन्है देख मत हहरी । मेरे जान प्रीतम बसन्त के बियोगभयें ग्रीषम बिरहनी उसासें लेत गहरी ॥ ५३७ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लै चुभकी चलि जात जित, तित जल केलि अधीर।
कीजत केसर नीर से, तित तितके सरनीर ५३८

यह जलकेलि सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ मोहन सो जलकेलि रची बृषभानुसुताहि तरंगमे बोरी। कृष्ण कहै कबिता छबिपै रतिकामकी वारौ करोरि के जोरी ॥ चूभक लै गहरै जलहू चलिकै जितही जित जात किशोरीं। केसरि के जल केसरि केसरि नीर करै तितही तित गोरी ॥ ५३८ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० पावस घन अँधियार महि, रह्यो भेद नहिं आन।
रात द्योस जान्यो परत, लखि चकई चकवान ५३९

यह वर्षा समय स्वयंदूत नायक को बचन नायिका प्रति नायिका को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ अम्बर आनि दिशा बिदिशा सगरे तमही को बितान सो तान्यो। मेचक रंग बसै जगमे अतिमोद हिये निशिचार न मान्यो ॥ पावस के घन के अँधियार में भेद कछू न परै पहिचान्यो। द्योस निशाको बिबेक सुतौ चकई चकवान के बोलते जान्यो ॥ ५३९ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० तजि कुढंग को रँग रली, करति युवति जग जोय।
पावस गूढ़ न मूढ़ यह, बूढ़न हू रँग होय ५४०

यह बर्षा समय सखी को बचन नायिका से मनायबो ॥ सवैया ॥ पावस आवतही खग पुंजनि मोद सों कुंकुम चाय दई है। चायभरी बहु भाय भरी मिलि रंगरली बनितान ठई है ॥ कोप प्रसंग कुढंग निवार निहारि घटा उनई जु नई है। गूढ़न है यह बात गुसाय न बूढ़न देखि सुरंग भई है ॥ ५४० ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० धुरवा होहिं न लखि उठे, धुवांधरन चहुँ कोद ।
जारत आवत जगत को, पावस प्रथम पयोद ५४१

यह बर्षासमय नायिका प्रोषितपतिका नायिका को वचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ मेरो कह्यो मानि जिय नेहचौकै जानि आली प्रथमही पावस के बल बघरत है । शीतल समीर मिल्यो तैसोई सहायक रु बिरही बिचारे कहिं कैसे उबरत है ॥ जगहि जरावत ये आवत उमड़घन ताही त्रास खगकुल शोर ये करत है । चपलान चपल झरप ज्वाल जालनिकी तेई धूम धार ये न धुरवा परत है ॥ ५४१ ॥

चल अक्षर २७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० वेऊ चिरजीवी अमर, निधरक फिरो कहाय ।
छिन बिछुरे जिनकी नहिन, पावस आव सराय ५४२

यह बर्षा समय सखी को बचन नायिकासों नायिका को बचन सखी सों कबि की उक्ति ॥ सवैया ॥ घोर घटा घुमड़ी चहुँओर करै बहु भांतिन शोर बिरावो । भूमि हरी वह शीत समीर गहे गति मन्द सुगन्ध सुभावो ॥ ऐसे समय छिन एक बिछोह भई जिनकी गई छूटि न आवो । वे चिरजीवी भये जगमें अजरामर क्यों न निशङ्क कहावो ॥ ५४२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अब तजि नाउ उपाउ को, आयो सावन मास ।
खेल न रहिबो खेम सों, केम कुसुम की बास ५४३

यह बर्षा समय प्रोषितपतिका नायिकाको बचन सखी सों ॥कबित्त॥ जौलौं मन रह्यो हाथ तौलौ न उसासी गाथ आगयो बिरह दुख खलन को सहिबो । प्यारे नँदनन्दन की आवन अवधि आश जैसे तैसे रह्यो

जीव अब कहा कहिबो ॥ आयो सखी सावन न आयो मनभावन री अब तू उपावन को छोंड़ि बृथा बहिबो। कदम कुसुमकी सुबासको प्रकास भयो खलु है न प्राननको कुशलसों रहिबो ॥ ५४३ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० तिय तरसोहैं मुनि किये, कर सरसोहैं नेह ।
धर परसोहैं ह्वैरहे, झर बरसोहैं मेह ५४४

यह वर्षा समय है कबिकी उक्ति औ स्वयंदूती नायिका को बचन नायक सों॥ कबित्त॥ हरित पुहुमि जल भरे बन उपबन चहूँओर सौरभ के उमँगि उदै रहे। उमही है लता लहलही छबिछायरही कुंज कुंज खग कुल कोलाहल कैरहे॥ उमड़ि घुमड़ि परसत से पुहुमि पर सोहैं बरसोहै भूमि बारिधार ह्वै रहे। हेरि हेरि गुनि मन तिय तरसो है होत इत घन बृन्द अनुराग के उतै रहे॥ ५४४॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० चलित ललित श्रम स्वेदकण, कलित अरुणमुखतैन।
बन बिहार थाकी तरुणि, खरे थकाये नैन ५४५

यह बनबिहार नायिका की शोभा नायककी स्तुति सखी सखी सो कहति है॥ कबित्त॥ सुषमा कलित तरुणाई की गुराई मांझ उमँगि प्रकाश अरुणाई के सुहाये हैं। तैसेई ललित श्रम स्वेदकण झलकत जगमग ज्योति के समूह सरसाये है॥ कहै कबिकृष्ण देखिरहे अनिमेष ह्वैके चालत न क्योहूं पग ऐसे रीझि धाये है। बिपिनबिहारी रसछाकी ब्रजबाल बांकी थकित प्रभान खरे लोचन थकाये है॥ ५४५॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बरजे दूनी हठ चढ़ै, ना सकुचै न सकाय ।
टूटत कटि दुमची मचकि, लचकि लचकि बचिजाय ५४६

यह सखी समय हिंडोरेकी शोभा नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ रही खसि शीशते सारीसुरंग सम्हारे नहीं जकजूटति है । छलसों अव-लोकति नन्दललाहि लगी रहे रेनु अछूटति है ॥ उछरै कवरी छलकै छवि पीठि में डीठि महासुख लूटति है । चमकै मृगलोचनि केलिभरी लचकै कटि यों जनु टूटति है ॥ ५४६ ॥

चल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० घनघेरो छुटिगो हरषि, चली चहूँ दिशि राह ।
कियो सुचैनो आइ जग, शरदसूर नरनाह ५४७

यह शरद समय राजनीति प्रसंग कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ छूटि गयो ब्रजनु चलनु अपमारग को अपने अपने सतमारग समीति है । सोहत परमहंस सूर शुभ कलानिधि गाइ द्विज देवतानि पूजिवे की प्रीति है ॥ बाढ़त हरष सब जनन जगत बीच कीच गो सुखाय भागी भभरि जु भीति है । केशौराय सबही के हृदय कमल फूले सोहत शरद किधौं आछी राजनीति है ॥ ५४७ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० अरुण सरोरुह कर चरन, दृग खंजन मुखचन्द ।
समयआयसुन्दर शरद, काहि न करत अनन्द ५४८

यह शरदसमय कविकी उक्ति है ॥ कवित्त ॥ सोहत अरुण सरसी-रुह चरण कर जिनहिं जगतश्रिय तरुनपना वई । कला परिपूरण सुधा-निधि बदन लसैं जाकी अदभुत छवि कहत न आवई । देखियत खञ्जन तरल कजरारे नैन कहैं कविकृष्ण देखि जीव सचु पावई । समै सुखपुञ्ज सनी सुन्दर शरद आई कौन के न उर में अनन्द सरसावई ॥ ५४८ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० कियो सबै जग काम बश, जाते जिते अजेय ।

कुसुम शराहि शर धनुष करि, अगहनु गहन न देय ५४९

यह हेमन्त समय कामोद्दीपन अधिक होता है सु नायक अथवा नायिका सखी सों कहै ऐसोही सखीको वचनहू सम्भव है कविकी उक्ति होय॥ कवित्त ॥ शृंगी से मुनीश सिद्ध ईश शतक्रतु केसे केते कीने बिकल गनैये कहौ काहि काहि । मानियत जाको नऊखण्ड में अखण्डधाकु जीते महिमण्डल के अजित जितीक आहि ॥ कहै कविकृष्ण जिन फूलही के आयुधसों कैसे कैसे वली भेदे साहसुइतेकु चाहि । जीते जिहि तीनोलोक ऐसो बली मनमथ अगहन गहन न देत शरचाप ताहि ॥ ५४९ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० ज्यों ज्यों बढ़ति बिभावरी, त्यों त्यों बढ़त अनन्त ।
ओक ओक सब लोक सुख, कोक सोक हेमन्त ५५०

यह हेमन्तसमय कवि की उक्ति मुख्य है संयोग शृंगार में बनै विप्रलम्भहू में कोक शोकको प्रसंग अन्योक्तिहू जानिये ॥ कवित्त ॥ हिमऋतु आइभई शीत सरसायु देखि भाजिगई गरम उरोज अचलन में । वासर की लघुता विलोकि मुरझात कौल सुछिप्र ह्वै रह्यो तेज तपनके तन में ॥ कहै कविकृष्ण ज्यों ज्यो रजनी बढ़त त्यों त्यों उमँगत मोद अनुरागिन के मनमें । लौक लौक वाढ़त अपार सुख देखियत शोकहै वियोगी कै कि कोकन के गनमें ॥ ५५० ॥

मदकल अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० मिलि बिहरत बिछुरत मरत, दम्पति अति रसलीन ।
नूतन बिधि हेमन्त सब, जबै जुराफा कीन ५५१

यह हेमन्तसमय सखीको वचन नायिकासों होय तो मानवती और कवि की उक्ति होय ॥ कवित्त ॥ दोऊ एकै देखिये दुहूँन बीच एकै प्राण

हितकी उमंग नई नई ये गहत है । अतिरस लीन दोऊ मिले ही विहार करै कहैं कबिकृष्ण चित अति उमँगत है ॥ बिछुरे जो नेकहू तो जीबे को भरोसो नाहिं अति अकुलाय मैन बिथा न सहत है । और एक देखो हिमऋतु की नवल रीति जगत में सबही जुराफा हू रहतहै ॥५५१॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० आवत जात न जानियत, तेजहि तजि सियरान ।
घरहि जमाई लौं घट्यो, खरो पूस दिनमान ५५२

यह शिशिरसमय दोउनकी हितकाई है सुरात्रिही आछी लगति है सो सखी दिनकी लघुता कहति है बिरहीहू दिनकी निन्दा करै ॥कबित्त॥ बावनकी डग ह्वै बिभावरी बढ़त ज्योंही त्योंही त्यों बियोगिनको हियो अकुलात है । दम्पति उमंग अनुरागनि झिलत बर एक ह्वै रहत मिलि दुहुँन को गात है ॥ पूसको दिवस लघुमान भयो ऐसे जैसे ससुर के घर में जमाई सकुचात है । तेज को न लेश रह्यो शीतल सुभाव गह्यो जानत न कोऊ कब आयो कब जात है ॥ ५५२ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० रह न सकी सब जगत में, शिशिर शीत के त्रास ।
गरम भाजि गढ़ में भई, तिय कुच अचल मवास ५५३

कबित्त ॥ सूरै तजि भाजो बात कातिकमें जब सुनी हिम की हिमाचलते चमू उतराति है । आये अगहन कीनो गहन दहनहू की तितहूतें चलो कहूं धीर न धरति है ॥ हिय में परीहै हूल दौरि गहि ताजि तूल अब निजमूल सेनापति सुमिराति है । पूस में तियाके कुच ऊँचे कनकाचलन गरमगढ़ौई भई शीतसों लरति है ॥ ५५३ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तपन तेज तपता तपति, अतुल तुलाई माह *।

* पाठान्तर—तिल तमोर तेलौ तपनि तेज तुलाई माह ।

शिशिर शीत क्योंहु न घटै, बिन लपटे तिय नाह ५५४

यह शिशिरऋतु सखी को बचन नायिका सों नायकको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ मोल बिशालकी ओढ़ दुलास दिनेश को तेज इते पर होऊ। राखहु छाइ निहालिनुमें तन पावक पुंज अँगीठी सँजोऊ॥ माह को शीत बिहात न कैसेहू कोटि उपाय करो किन कोऊ। जौ लग पीव पिया सचुपाय रहै लपटाय न एक है दोऊ ॥ ५५४ ॥

त्रिकल अक्षर ३१ गुरु १ लघु ३० ॥

दो० लगतसुभगशीतलकिरनि, निशिदिनसुखअवगाहि
माह शशी भ्रम सूर त्यों, रहत चकोरी चाहि ५५५

यह शिशिरऋतु कबि कबिकी उक्ति मुख्य है ॥ कबित्त ॥ शिशिर में शशि को स्वरूप पावै सबिता सुघामहूं मे चांदनी की द्युति दमकति है। सेनापति होत शीतलता है सहसगुनी रजनी की बासर में झाईं झलकति है ॥ चाहत चकोर सूर और दृग छोर करि चकवाकी छाती ताजि धार धसकति है। चन्द के भरम होतु मोद है कुमोदनी को शशि शङ्क पङ्कजनी फूली पै रहति है ॥ ५५५ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० दियो जुपिय लखि चखन में, खेलत फाग खियाल।
बाढ़त हू अति पीर सुनि, काढ़त बनन गुलाल ५५६

सवैया ॥ हरि खेलत फाग बधूगण में घस बासव केसरिरंग सनै। इत चाहभरी बृषभानुसुता उमँग्यो हरिके उत मोद मनै ॥ जब नैनन मे तकि डारयो लला अपने करसो बहराय घनै। अति बाढ़त है जऊ पीर तऊ वह काढ़त पै न गुलाल बनै ॥ ५५६ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पीठि दिये ही नेकु मुरि, करि घूंघट पट टारि।

भरि गुलाल की मूठ सों, गई मूठि सी मारि ५५७

यह होरी खेलने को समय नायिका की शोभा नायक सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ मापै कछू कहते न बनै करि जैसी दशा ब्रजनारि गई है । पीठि दियेही मुरी मचलै वह फागन खेलि खिलार गई है ॥ घूंघट को पट टारिकै भौंह उसारिकै नेकु निहारि गई है । यों भरि मूठि गुलालसों प्यारी अचानक मूठिसी मारिगई ॥ ५५७ ॥

दो० ज्यों ज्यों पट झटकति हँसति, हठति नचावति नैन ।
त्यों त्यों निपट उदार हू, फगुवा देत बनै न ५५८

यह नायिका प्रौढ़ा होरी खेलको समाज नायककी शोभा देखिवे को लोभ लाग्यो है सो सखी सखीसों कहति है ॥ कबित्त ॥ फागुन के खेलको समाज बनिआयो जैसो तैसो एक रसना सों कहत वनै न है । सांकरीगली में नन्दलाल को पकरि बाल मनभाये करत वढ़ावै चित चैन है ॥ ज्यों ज्यों नेह चाह भरि लोचन नचाय पटु झटकि कहत हँसि हँसि मृदु वैन है । त्यों त्यों चित्त लालनको निपट उदार तऊँ फगुवा को देबो क्योंहूं मानतु मनै न है ॥ ५५८ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० छुटत मुठिन सँग ही छुटे, लोकलाज कुल चाल ।
लगत दुहुँन इकबेरही, चलचितु नैन गुलाल ५५९

यह होरी खेलको समय सखी सखीसों कहति है ॥ कबित्त ॥ होरी को समाज बरसाने को वगर आजु कहा कहौं आली बनिआयो नीको ख्यालरी । इत गण युवती में राधिका किशोरी उत सहित सखान वन्यो मदनगुपालरी ॥ छुटत मुठी के संग छूटत है एकै बेर डर गुरुजन लोकलाज कुलचालरी । कहैं कबिकृष्ण त्योहीं लागत दुहूँके तन एकै साथ चालाचित लोचन गुलालरी ॥ ५५९ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ज्यों ज्यों झुकि झांपत बदन, बिहँसत अति सतराय।
त्यों गुलाल झूठी मुठी, झुटकावत प्यो जाय ५६०

यह होरी खेलत नायिका की चेष्टा देखि नायक रीझ्यो है सो नायक युक्ति करत है सो सखी सखीसों कहति है ॥ कबित्त ॥ आज ब्रज देख्यो होरी खेल को समाज वह शोभा मेरे नयन में रही है बिहरिकै। राधा बनमाली को बिलास लखि आली सच मववाके कोरिकै गुमान जातगरिकै ॥ ज्यों ज्यो प्यारी झुकि झुकि झांपत बदन बिहँसत सत-रात रिसकोसो रुख करिकै। त्यों त्यों छबि देखि छक्यो कृष्ण प्राणप्यारो झिझकावत गुलाल मूठी झूठी भरि भरिकै ॥ ५६० ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० रस भिजये दोऊ दुहुन, तौ टिक रहे टरै न।
छबिसों छिरकत प्रेमरँग, भरि पिचकारी नैन ५६१

यह दोउन को परस्परावलोकन है सो सखी सखीसों होरीके ख्याल की समता देकरि कहति है ॥ कबित्त ॥ आज बृषभान की कुँवारी मनमोहन को नैनन मे राख्यो होरी कोसो ख्याल करिकै। भरे हित-चाय कोऊ चूकत न दाय टिक रहै टकलाय कोऊ जानत न टरिकै ॥ भिजये बनाय अति रस में परसपागे रंग अनुराग के गुलाल ढरि ढरिकै। कृष्ण कहैं छिरकत छबिसो छबीले दोऊ नैन पिचकारी प्रेम-रंग भरि भरिकै ॥ ५६१ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० गिरे कम्प कछु कछु रहै, करु पसीज लपटाय।
लै यों मुठी गुलाल भरि, छुटत झुठी ह्वै जाय ५६२

यह होरी खेलको समय सखी सखीसों कहति है दोउन के सात्विक

भाव कम्पन है ।। कवित्त ।। मेरो कह्यो मान री उताली चलि देखि नेकु आज ब्रज धूम होरी खेलकी अनूठी है । केसरिसों सने रस रसिक रसीले जहां बरसा तहांई सब सुखन अगूठी है ।। यद्यपि परस-पर दोऊ मुखमांढिबे को लेइ अति चायसों गुलाल भरि मूठी है । कछू कर पंकज पसीजे लपटात कछू कांपे गिरिजात तातें खोले होत झूठी है ।। ५६२ ।।

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।।

दो० रही रुकी क्योंहूं सु चलि, आधिक राति पधारि ।
हरति ताप सबद्योसको, उरलगि यारि बयारि५६३

यह बायु बर्णन कवि उक्ति ।। कवित्त ।। ऐसीरही रुकि क्योंहूं आवने न पायो जाके बिनमिले प्राननकी गति अकुलाति है । लोचन चकित जाको आगम बिलोकिबे को चहूंओर चितवत छाती होत ताति है ।। क्योंहूं क्योंहूं चलिकै अचानकही आधीराति आयगई ब्यार जैसे प्यारि आय जाति है । हरति तपति सब द्योसकी हियेसों लागि कहैं कबिकृष्ण सुखसिन्धु सरसाति है ।। ५६३ ।।

चल अक्षर २७ गुरु ११ लघु २६ ।।

दो० चुवत स्वेद मकरन्द कण, तरु तरु तर बिरमाय ।
आवत दक्षिण तें चल्यो, थक्यो बटोही बाय ५६४

यह पवन बर्णन कवि की उक्ति ।। कवित्त ।। नीझर तड़ाग जलयन्त्रनके बिमल सलिल परसत ऐसे ढार सों ढरें ढरें । कृष्ण कहैं जहां तहां सीरी छांह देखि देखि बिरमि रहत तरु तरुके तरे तरे ।। सुमन पराग रज पागि रह्यो अंग अंग स्वेदकण बूंद मकरन्दके धरें धरें । सुरभि समूह छाक्यो दक्षिण दिशातें बायु थाक्यो सों बटोही चल्यो आवत हरे हरें ।। ५६४ ।।

कच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० बिकसत नव मल्ली कुसुम, निकसत परमल पाय।
परसिय जारत बिरह हिय, बरसि रहे की बाय ५६५

यह पवन बर्णन बिरह के प्रसंग मे नायिका अथवा नायक सखी सों कहै है मान के प्रसंग मे सखी नायक सो कहै ॥ कबित्त ॥ मञ्जु लता बेलिन के सघन निकुंजनि ते हरे हरे निकसत सबही सुहाति है । सुमन कदम्बनि के सुखद परागराग सनि जाहि मिलि भौर पांति हुलसाति है ॥ मुकुलित मल्लिका के कुसुम नवीननुते निकसति सुरभि सहित सरसाति है । बरसि रहेकी सीरी आवत बयार देखो परसि हिये जरै बियोगिन की छाति है ॥ ५६५ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रुक्यो सांकरे कुंज मग, करत झांझ झुकरात ।
मन्द मन्द मारुत तुरँग, खुदरत आवत जात ५६६

यह बायु वर्णन ॥ कबित्त ॥ सोहत शृंगार बहुभांतिन जराव साज रंग रग कुसुम तरल अति अगु है । करिकाललित भ्रमरावली लसति मुख पुहुप पराग ढक्यो उमँग अनंगु है ॥ झझकत सांकरे निकुंज मग निरखतु झांझसी करत भरयो कर्करात रंगु है । खुदीसी करत मन्द मन्द मलयाचलते आवत पवन कामदेव को तुरगु है ॥ ५६६ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लपटी पुहुप पराग पट, सनी स्वेद मकरन्द ।
आवत नारि नवोढ़ लों, सुखद बाय गति मन्द ५६७

यह बन वर्णन कवि की उक्ति ॥ सवैया ॥ फूलनकी रज अम्बर मे नखते शिखलों लपटी छबि छावति । स्वेद लसे मकरन्द फुही लागे नैनन सों छतियाहि सिरावति ॥ कृष्ण कहै बहुभांतिनुके तनसों रस

चौहूँ दिशा महकावति । मन्द गहैं गति नारि नवोढ़लों व्यारि निकुंज गली तन आवति ॥ ५६७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघ २२ ॥

दो० रणित भृंग घण्टावली, झरत दान मद नीर ।
मन्द मन्द आवत चल्यो, कुंजर कुंज समीर५६८

यह बायु बर्णन कबिकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ घण्टन के शबद अखण्ड तेई सुनियत गुंजत अनंद भर्यो अलिन को वृंद है । सुमन समूहन की धूरसों धुरेटे गात मद जल उमँगि झरत मकरन्द है ॥ रंग रंग फूलनकी झूलमें झपाये तन जगत बिरनियाँ को बिक्रम अमन्द है । मान तरु तोरिबेको आवत गुमान भर्यो मन्द गति पावनु मनोज को गयन्द है ॥ ५६८ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

चन्द्रोदय ।

दो० द्वैज सुधा दीधिति कला, वह लखि डीठि लगाय ।
मनो अकाश अगस्तिया, एकै कली लखाय५६९

यह चन्द्रोदय बर्णन सखी को बचन नायिकासों अगस्तिया के तरुतें संकेत स्थल सूचन दुइजते मिलिबे की अवधि सूचन साधारते कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ देखत वै दुतियाके मयंककी कैसी कला नभज्योति जगी है । सो छबि चाहि चकोरनकी अवली हुलसी हिय मोद पगी है ॥ यों निरखी अरुणाई लिये उपमा कबिके उरमें उमँगी है । मानहुँ ब्योम अगस्तिके रूपहि एककली पहिलेही लगी है ॥ ५६९ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० धनि यह द्वैज जहां लख्यो, तज्यो दृगन दुख दन्द ।
तो भागन पूरब उयो, अहै अपूरब चन्द ५७०

यह चन्द्रोदय सखीको बचन नायकसों प्रयोजन नायिका दिखायबो, अन्योक्तिहू याही प्रसंग मे संभव है ॥ कबित्त ॥ सकल कलानि परिपूरण पियूषनिधि सोहै अकलंक सब सुखनि को कन्द है। जाहि देखि बारिजबदन और तियनके सकुचि मुदति ऐसी प्रभाको अमन्द है ॥ धनि यह द्वैज जहां नीके कै निरखि पायो देखतही दृगनिको गयो दुख द्वन्द है। पूरबकी ओर तुव पूरब सुकृत फल निरखि अपूरब उदित भयो चन्द है ॥ ५७० ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० शीश मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
यहि बानिक मो मन सदा, बसौ बिहारीलाल ५७१

यह श्रीकृष्णजू को ध्यान है कि या बानिक सो मेरे हृदयमें बसो ॥ सवैया ॥ छबिसो कबि शीश किरीट वन्यो सुविशाल हिये बनमाल लसै। करकंजहि मंजु रली मुरली कछनी कटि चारु प्रभाव बसै ॥ कबि कृष्ण कहै लखि सुन्दर मूरति यों अभिलाष हिये सरसै। वह नन्दकिशोर बिहार सदा यह बानिक मोहिय मांझ बसै ॥ ५७१ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० मोर मुकुट की चन्द्रकनि, यों राजत नँदनन्द।
मनुशशिशेखरकी अकस, किय शेखर शतचन्द ५७२

यह श्रीकृष्णजू की मुकुट की शोभा सखी को वचन नायिका सों भक्त को बचन हूं सम्भव है ॥ सवैया ॥ आज लख्यो ब्रजराजकुमार सुदेश शृंगार बने सिगरे है। रूप की रीझ कही न परै अवलोक बिलोचन मोद भरे है ॥ कृष्ण कहैं शिर सोहत मोर किरीट चँदा छबि पुंज धरे हैं। अकस मनो शशिशेखर सो हर शेखर चन्द अनेक करे हैं ॥ ५७२ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० अधर धरत हरि के परत, ओठ दीठि पट जोति ।
हरित बांस की बांसुरी, इन्द्रधनुष रँग होति ५७३

यह श्रीकृष्णजू की मुरली बजावति शोभा होत है सो सखी नायक सों कहति है नायिका सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ चलि देखिरी बानिक सो बनिकै ब्रजराजको लाड़िलो आवत है । मुखचन्द के चारु मरीचिन सों बलि नैन चकोर सिरावत है ॥ जब डीठि को ओठन को पटको मुसकान को रंग मिलावत है । तब बासुरी बांस हरे की लला सुरचाप के रंग दिखावत हैं ॥ ५७३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मकराकृत गोपाल के, शोभित कुण्डल कान ।
मनो धस्यो हिय घर समरु, ड्योढ़ी लसत निशान ५७४

यह श्रीकृष्णजू को ध्यान है तरुणाई आई हृदय में कन्दर्प प्रवेश भयो यह प्रयोजन ॥ सवैया ॥ मैं निरख्यों ब्रजराजलला द्युतिपुंज हिये हित साजि रहे है । कृष्ण कहैं दृगदीरघ देखि प्रभात के पंकज लाजि रहे हैं ॥ मंजुल कानन में मकराकृत कुण्डल यो छबि छाजि रहे हैं । मानों मनोज धस्यो हिय मन्दिर द्वार निशान विराजि रहे है ॥ ५७४ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात ।
मनो नील मणिशैलपर, आतप पस्यो प्रभात ५७५

यह श्रीकृष्णजू को ध्यान पीताम्बर की शोभा नायिका को बचन सखी सों सखी को बचन नायिका सो भक्त को बचन ॥ सवैया ॥ बनि जा छबि सों हरि नैनन मे अरु प्रानन मे अवरोहत है । सखि सुन्दर श्याम कलेवर पै पटपीत लसै मन मोहत है ॥ समता कहँ त

छवि को कहिये सुकियो तिहूँलोक में कोहतु है । मणि नील के शैल के ऊपर मानो प्रभात को आतप सोहतु है ॥ ५७५ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ । भक्त को बचन । उपालंभ ॥

दो० कब को टेरत दीन रट, होत न श्याम सहाय ।
तुमहूं लागी जगत गुरु, जगनायक जग बाय ५७६

यह भक्त बचन भगवान् सो ॥ सवैया ॥ हौ कब को रटलागि रह्यो गहि दीन सुभाव मनो बच कायक । दीन के बन्धु कहावत हौ हरि काहे ते होत न आनि सहायक ॥ काहेते ढीलकरो करुणामय कृष्ण कहै प्रभु हो सब लायक । जानि परी तुमहू को कछू अब ब्यार लगी जंगकी जगनायक ॥ ५७६ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि ।
मनो तज्यो तारन बिरद, बारक बारन तारि ५७७

यह भक्त को बचन भगवान् सो ॥ कबित्त ॥ सेवक को संकट निवारिबे को सावधान कहत तिहारो बेद बिरद पुकारिकै । कहै कबि कृष्ण त्योंहीं दिखराति है सुसाख दीननु के दीने हैं अनेक दुख टारिकै ॥ अनाकनी नीकी करी मेरीरट फीकी परी लगे न गुहारि रहे निठुराय धारिकै । जानियतु तारिबे को प्रण अब छांड्यो तुम जस जीत्यो एक बेर बारण को तारिकै ॥ ५७७ ॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० बन्धु भये का दीनके, को तार्‌यो रघुराय ।
तूठे तूठे फिरत हौ, झूठे बिरद कहाय ५७८

यह भक्तको वचन भगवान् सों ॥ सवैया ॥ कौन से दीन पै कीनी दया अपराधी कहो जग कौन उधार्‌यो । कौन अनाथ के बन्धु भये प्रभु

को तुम दास भये बिन तारयो ॥ ऐसेई कैसे प्रतीत करौं कविकृष्ण कहैं हौं पुकारिकै हारयो। तूठई तूठे निसांक फिरौ तुम झूठेई धाकु अनाहक पारयो ॥ ५७८ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० थोरेई गुन रीझते, बिसराई वह बानि।
तुमहूं कान्ह मनो भये, आज कालिह के दानि ५७९

यह भक्तको बचन भगवान् सों॥ सवैया॥ है अति आरत मैं बिनती बहु बार करी करुणा रसभीनी। कृष्ण कृपानिधि दीन के बन्धु सुनी असुनी तुम काहे को कीनी॥ रीझते रंचकही गुनसों वह बानि बिसारि मनो अब दीनी। जानिपरी तुमहूं प्रभुजू कलिकाल के दानिन की गति लीनी ॥ ५७९ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० ज्यों ह्वैहो त्यों होय गौं, हो हरि अपनी चाल।
हठ न करो अति कठिन है, मो तारिबो गुपाल ५८०

यह भक्तको बचन है अपनो पाप करिबे को पनु उपालम्भसों करत है॥ सवैया॥ हौ उनकी गिनतीन मे हौं प्रभु जे तुम तारे ते आपनी गोंहीं। कृष्ण कहै गिनते न बनै कछु पापिन की परमावधि होहीं॥ होनी है जो कछू है है वहै गति मेरी ये चाल कुचालन सोहीं। खेल न है प्रभु मेरो उधारिबो भूलि न कीजै बृथा हठ योहीं ॥ ५८० ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० हमैं तुमैं बाढ़ी बहस, को जीतै ब्रजराज।
अपने अपने बिरद की, दुहूँ निबाहन लाज ५८१

यह भक्तको बचन भगवान् सो॥ कबित्त॥ तुम जेते तारे तेते मोते न पतित भारे मोसों पूरो पापी कोऊ दूसरो न पेखिये। तुम्हैं बानपरी

प्रभु अधम उधारिबे की मेरे एक पापही की टेक अवरेखिये ॥ दुहुँन को लाज आप आपने बिरदकी है पूरी पैज पारिकै निवाहनी बिशेखिये । कहैं कबिकृष्ण मोसो तुमसो बहस वाढ़ी कौन चलिजाय अब जीते कौन देखिये ॥ ५८१ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कौन भांति रहि है बिरद, अब देखिबी मुरारि।
बीधे मोसों आनि कै, गीधे गीधहि तारि ५८२

यह भक्त को बचन भगवान् सों ॥ कबित्त ॥ पतित उधारन कहत सब कोऊ सोऊ सांच झूठ अब ठहराय गो बनायकै । कहै कबिकृष्ण जिन और के भरम भूलौ हौ तो गरू पापी मन बच अरु कायकै ॥ तास्यो है पखेरू एक गीध ताते गीधे तुम सोही यश राख्यो है जगत बगरायकै । कौन भांति राखिहौ मुरारि अब देखिये जू कठिन बनी है प्रभु बीधे मोसों आयकै ॥ ५८२ ॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

सो० मोहूँ दीजे मोष, ज्यों अनेक अधमन दयो।
जो बांधे ही तोष, तौ बांधौ अपने गुनन ५८३

यह भक्तको बचन भगवान् सों कि मुक्तकरौ बांध राखो तो अपनो करि राखो ॥ कबित्त ॥ भांति भांति आरतकी आरति निवारत हौ प्रकट पुकारत निगमगण साखिये । तातें कबिकृष्ण दीनबन्धु दयासिन्धु जू सों वार बार विनती पुकार यह भाखिये ॥ अधम अनेकन को ज्यों ही दीनी मुखलूम त्योंही मोहूँ मोक्ष देबो चित्त अभिलाखिये । वांधवोई जोपै मनमान्यो महराज तो जू आपनेही गुनन वनाय बांधि राखिये ॥ ५८३ ॥

वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० निज करनी सकुचेहिं कत, सकुचावत इह चाल ।
मोहूं से नित बिमुख त्यों, सनमुख रहि गोपाल ५८४

यह भक्तको वचन अपनी विमुखता भगवान्की भक्तिनसों सन्मुख राहिबे को पनु सुप्रकट करत है ॥ सवैया ॥ जानि परै न तिहारी प्रभू गति वेदहु नीके कै भेद न पावत । संग फिरे ब्रजबालनि के मुनि पावै न ध्यान समाधि लगावत ॥ एकतो हौ अपनी करतूत नहीं सकुच्यो बहुरयो सकुचावत । हू तुमसो नितही बिमुखे तुम दीनदयालुहो सन्मुख आवत ॥ ५८४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नाह गरज नाहर गरज, बोल सुनायो टेरि ।
फँसी फौज में बन्द बिच, हँसी सबन तन हेरि ५८५

यह द्रौपदी को समय कबिकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ आयुध अघट साजे भटन की भीर भारी चारोओर विकट लियेई जाति घेरिकै । नाहरकी गरज गरूरसों गराजियत ताही समय पाछेते सुनायो बोल टेरिकै ॥ वाके अति बिक्रम को भाव जिय जान्यो यह जीतेगो समर एक एक को निबेरिकै । प्रबल चमूके बीच बन्द मे फँसी है तऊ उमँगि उछाहसी है सब तन हेरिकै ॥ ५८५ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० नहिं पावस ऋतुराज यह, तजि तरुवर मति भूल ।
अपत भये बिन पाइहै, क्यों नव दल फल फूल ५८६

यह अन्योक्ति काहू दाता के धोखे सूमपै कछू कोऊ चाहै तहां कहिये झगरे के प्रसंग मे गढ़हू के प्रसंग में ॥ कवित्त ॥ मघवा के जलसों उमँगि अधिकानो वहु पत्रिन को राख्यो ते बसाय समुदाई है । छोड़ि

चित्त भूलि वा भरोसे मत भूलै अब वैसी तो बनक नीठि नीठि बनि आई है ॥ पावस न जानि ऋतुराज को समाज यह योंही कैसे हरित भरित छबि छाई है। सुनि तरुवर जौलौ ह्वैहै न अपत तौलौ नव दल फूल फल सम्पति न पाई है ॥ ५८६ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० को छूट्यो यहि जाल परि, कत *कुलंग अकुलात।
ज्योंज्योंसुरझिभज्योचहत, त्योंत्योंउरझत जात ५८७

यह अन्योक्ति संसारजाल अथवा प्रेमजाल के बन्धन सों कहिये ॥ कवित्त ॥ तबतो न जानो लगि लालच भुलानो चित्त अब परवश परि काहे पछितात है। कहैं कवि कृष्ण याके बन्धन की यहै रीति नेक अटकत अंग अंग बँधिजात हैं॥ देख्यो तै पखेरू कोऊ छूट्यो इहजाल परि काहे को तै बावरे कुलंग अकुलात है। ज्योंहीं ज्यों सुरझि भज्यो चाहत सयान करि त्योंहीं त्यो खरोई खरो उरझत जात है ॥ ५८७ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० यह द्वैही मोती सुगथ, तू नथ गरबि निसांक।
जेहिपहिरेजगदृगग्रसति, लसत हसतसी नाक५८८

यह अन्योक्ति कोऊ थोरेहू से धनसों अथवा गुनसों अधिक सोहत होय तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ स्वर समेत नायिका याहीते कहत मुकतानियुत मुकति पुरी सी दरसाति है। कहै कविकृष्ण मनमोहन के मोहिबे को मोहनी की शिक्षा मानो शोभा सरसाति है ॥ तोहिं पहिरेते जग नयन ग्रसत अति छबि बरसत मानौ नासिका हँसाति है। अहे नथ उर में निसांक तू गरबकरि द्वैही मुकताके गथ सहित लसति है ॥५८८॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु ११ लघु २४ ॥

दो० बेसर मोती धरति तुहि, को पूछै कुल जाति।

---

* पाठान्तर— "कुरंग"

पीबोकरितियअधरको, रसनिधरकदिनराति ५८९

यह अन्योक्ति कोऊ अच्छे कुलते भयो लघु मानस अरु बड़ी ठौर जाय पहुँच्यो तहां कहिये ॥ सवैया ॥ कौन बिनान करै कुल जातिको आपन जीवन है जगमें मनि । है सब ले बड़भागी तुहीं अरु आई है तेरीही बात भली बनि ॥ तैंहीं लह्यो कृत पूरबको फल है तुही बेसरिके मुकता धनि । घोस निशा तियको अधरामृत नीके निसांक है पीबो करै किनि ॥ ५८९ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० पाइ तरुणि कुच उच्च पद, चिरमि ठग्यो सब गांव।
छुटे ठौर रहिहै वहै, जुहो मोल छबि नांव ५९०

यह अन्योक्ति लघु मानस सों बड़े ठिकाने पहुँच्यो तहां कहिये ॥ सवैया ॥ मो सम मोहिं रटै लघुनाम भई उतपत्ति न उत्तम थानो । कौनेहू भाग लह्यो घुंघची नवनागरिके कुच उच्च ठिकानो ॥ याहीते मोह्यो सबै जगको मन वोही गुमान खरयो अधिकानो । ठौर छुटे रहि जैहै वही मुखकालिमा रंग बजार बिकानो ॥ ५९० ॥

बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० मोरचन्द्रिका श्याम शिर, चढ़ि कत करति गुमान।
लखबीपांवनपरलुटति, सुनियत राधा मान ५९१

यह अन्योक्ति कोऊ लघु मानस सों बड़ी ठौर पाय गर्व करै ताको मानभंग होतो जानिये तहां कहिये ॥ सवैया ॥ घनश्यामने आपने शीशपै राखी बनाय कै चायनसों धरिहैं । जिन याको तू जी में गुमान करै अबतो सब जोम लखी परिहैं ॥ कहिं काहेको मोरकी चन्द्रिका ऐंडि ढिठाई के ढार रही ढरिहैं । वृषभानुकुमारि के मान समै तरवान तरे लुटिबो करिहैं ॥ ५९१ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीत बहार ।
अबअलिरही गुलाबमें, अपत कटीली डार ५९२

यह अन्योक्ति कोऊ धनवान् निर्धन भयो होहि तहां धनके लोभी जाकनु कौ कहै तो भ्रमर के संग करि गत यौवनहूँ को कहिबो सम्भव है ॥ कबित्त ॥ जबहो उदित ऋतुराज को प्रताप तीखो कहै कवि कृष्ण जाको बिक्रम अति अपार । तब इत बाटिकान देखे हे सुखद ! मृदु सरस कुसुमभरे अतुल सुगन्ध भार ॥ उही आश लाग्यो इत आ-वत चल्यो क्यों अलि वह तो व्यतीत भई औसर वही बहार । गन्ध मधु मृदुता पराग को न लेश रह्यो अब तो अपत है गुलाबकी कटीली डार ॥ ५९२ ॥

बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बहकि बड़ाई आपनी, कत राचत मति भूल ।
बिनमधुमधुकरके हिये, गड़े न गुड़हर फूल ५९३

यह कोऊ गुणहीन है अरु गर्व अधिक करत है तासों गुड़हर के फूलको प्रसंगकरि अन्योक्ति संभव है ॥ कबित्त ॥ कहा भयो जोपैं पायो सहज अरुण रंग उमँग लालित छबि रही तन छाइहै । बहकि बहकि चित आपनो बड़ाई मे तू काहेको रचत गुरुवाई यो न पाइहै ॥ जाहि रस लेबेही को चसको लग्यो है सो क्यों सुमन सुगन्ध तजि तोपै मड़राइहै । गुड़हर फूल इतरात क्यों तू फूलि फूलि बिन मकरन्द अलि भूलिहू न भाइहै ॥ ५९३ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० स्वारथसुकृत न श्रम बृथा, देखि बिहंग बिचारि ।
बाज पराये पाणि पर, तू पक्षीहि न मारि ५९४

यह अन्योक्ति कोऊ पराई खुशामद करि अपने को बुरो करै तहां कहिये ॥ कबित्त ॥ काहे को बिराने बुरे करत पराये काज ऐसो खोटो करम बिचारत है काहे को । ये तो श्रम नाहक शरीर को तू देत अरु दोऊ लोक आपने बिगारत है काहे को ॥ यामें कछू सुकृत न स्वारथ समुझि देखि पातक को भार शिर धारत है काहे को । कहा भयो जोपै आनि बैठ्योई पराये पानि बाज निज पच्छिन तू मारत है काहे को॥५९४॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० जनम जलधि पानिपु बिमल, तो जग ओपु अपार।
रहै गुनी ह्वै गर पस्यो, भलो न मुक्ताहार ५९५

यह अन्योक्ति कोऊ भयातुर है भली ठौर रहवे लायक अरु छोटी ठौर अनादर सों रहै तहां कहिये॥ कबित्त ॥ जनम जलधि कुल पानिपु बिमल अति तेरी शुभ्र शोभा जगमतिहि सुहाई है । सब कोऊ जगत में चोपकरि चाहै तोहिं तैंहीं बेशकीमत जवाहिर में पाई है ॥ तेरो संगपाय छितिपाल और बालनिकी कैसी नीकी देखियत रूपकी निकाई है । ऐसो गुनी ह्वै तू गरेपरिकै रहत सुनि मुकता के हार यामें कहाधौं भलाई है ॥ ५९५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० गहै न नेको गुण गरब, हँसो सबै संसार ।
कुच उचपद लालचि रहैं, गरे परे हू हार ५९६

यह अन्योक्ति कोऊ आछयो गुणी अथवा भलोमानस आपनी गँव जानि छोटीहू जगै अनादर सों रहै ताको कहिबो संभव है ॥ सवैया ॥ छांड़ी बड़े कुलकी पदवी गुणकी गरुवाई न जीमें धरे । क्यों न सबै हँसबोई करौ जग पानिपहानिहु ते न डरे ॥ हाटन हाट बिकै इह आश बिथायौ हियेपनते न टरे । उच्च उरोजनको सुखलाभ रहै हम याते गरेहू परे॥५९६॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० अति अगाध अति ऊथरो, नदी कूप सर बाय ।
सो ताको सागरजहां, जाकी प्यास बुझाय ५९७

यह अन्योक्ति अपनो कार्य छोटेहूते होय तहां कहिये ॥ सवैया ॥ कूप तड़ाग सरोवर बापी किती महिमें नहिं जात बखानी । छोटी नदीरु बड़ी सरिता नद जो रचना जगदीश ने ठानी ॥ उत्तम मध्यम कोऊ जलाशय होहु अगाधिक ऊथरोपानी । वाको वही कविकृष्ण समुद्र है जाकी तृषा जिहि ठौर सिरानी ॥ ५९७ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बिषम बृषादितकी तृषा, रहैं सबै जल शोधि ।
मरुधर पाय मतीरहू, मारू कहत पयोधि ५९८

यह अन्योक्ति अपनो प्रयोजन काहू छोटेते सिद्धभये अरु बड़े के बहुत समृद्धि है अरु अपने काम आवै नहीं तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ बृषको तरनि तचै बिषम करनि सब सलिल सुखात कहूं औंडेई रहत है । जीव जन्तु थलथल प्रबल अबल सब अकल पकल होत कल न लहत है ॥ आतप के ताये अतिप्यास के सताये जल शोधत फिरत प्राण राखिबो कहत है । ऐसे समै पायो काहू भागते मतीरा तासो मारू लोग जलनिधि न्यायही कहत है ॥ ५९८ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० प्यास दुपहरी जेठ के, जीय मतीरनु शोधि ।
अमित अपारअगाधजल, मारौमूड़ पयोधि ५९९

यह अन्योक्ति अपनो कार्य जैसे तैसे सिद्ध भये पाछे सर्व संपात्ति मिलै तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ कौन काम जगतमें तासुकी बड़ाई भाई ज़ाते कछू गरज सरै न काहूपनमे । छोटेही ते आपनो सफल होय

काजु तौपै वाकी पटतर और कौन त्रिभुवनमें ॥ जाके प्राण दारुण निदाघनकी तृषा माहिं जा मतीरे पाय सियराई भई तनमें । ताके आगे कहौ कोऊ सागरकी बात औंड़ी सलिल अधार कैसे आवै ताके मनमें ॥ ५९९ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० को कहि सकै बड़ेन सों, लखे बड़ीये भूल ।

दीने दई गुलाब की, इन डारन ये फूल ६००

यह अन्योक्ति कोऊ प्रवीन महाजन अनजाने अविवेकको कामकरै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ को यह बात सकै कहि भूलि कै काम करे करतार ने जैसे । एती करी जगकी रचना पै विचार विनान करे नहिं, तैसे ॥ देखिहूंके नवशासन सास बड़े जु करै कछु काम अनैसे । कैसी सकण्टक डार गुलाबकी फूल सुगन्ध दये मृदु ऐसे ॥ ६०० ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० दिन दश आदर पाय कै, करि ले आप बखान ।

जौलगकाग सराधपख, तौ लग तू सनमान ६०१

यह अन्योक्ति कोऊ थोड़े दिननको बढ़वार गर्ब करै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ धूसर कण्ठ कठोरमहा सखरे कड़ी लोचनु रंग है कारो । नीच कहावत पक्षिनमें अरु भक्षकी साजु कुचाल निहारो ॥ आदर पाय दिना दशको अभिमान निसांक घनो चितधारो । बायस जौलौं सराधको पाख है तौलगि है जग आघ तिहारो ॥ ६०१ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मरत प्यास पिंजरा पर्यो, सुवा समय के फेर

आदर दैदै बोलियत, बायस बलि की बेर ६०२

यह अन्योक्ति भलेमानस को दुःख दीजे अरु नीचको आदर होय

तहां कहिये ॥ सवैया ॥ दोषसमैके प्रभावको भाव भयो जग औगुनहीं को रिझौवा । बूझगई गुण बृन्दन की प्रकटे अब कूर कुरूप अगौवा ॥ प्यासो मरै पिजरामे पखो शुक है मृदुबैननिको जु कहौवा। आदरकै बलि देवकी बेर बुलैयत चाह के चायसों कौवा ॥ ६०२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० यहै आश अटक्यो रहै, अलि गुलाब के मूल ।
ऐहै फेरि बसन्त ऋतु, इन डारन वे फूल ६०३

यह अन्योक्ति जानें कहीं कछू पायोहै तहां वैसीई आशा लसो रहै तहां कहिये काकध्वनि तै यह होय कि तू वाही भरोसे क्यों रहै ॥ सवैया ॥ वे इन डारन फूल हुते जिनके रसते सब दुःख भुलानो । बीति बहारगई तिनकी कुसुमावलि चित्तचुभै नहिं आनो ॥ ऐहै बसन्त बहार तबै यहवां सुखसौरभही को ठिकानो । आश यहै जियमें धरि भौंर गुलाबके मूल रहै मड़रानो ॥ ६०३ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० पट पांखैं भखु कांकरैं, सदा परेई संग ।
सुखी परेवा पुहुमि में, ये*द्वै तुही बिहंग ६०४

यह अन्योक्ति जो कोऊ पराधीन अरु परदेशी नरहो तहां कहिये । सवैया ॥ भोजन कांकर बीनकरै न करै जो अधीन ह्वै काहूकी सेवा ॥ पांखन हीं के बने पट चारु विसारको जानत भाव न भेवा ॥ नांके रहै गृहिणी के सदा सँग पूरब पुण्यन को फल लेवा । कौनहू भांति न आश पराई सुखी अवनीपै तुहीहै परेवा ॥ ६०४ ॥

नर अक्षर ३३गुरु १५ लघु१८ ॥

दो० कर लहि सूंघि सराहि हूं, सबै रहे गहि मौन ।

---

*पाठान्तर—"एकै" ।

गन्धी अन्ध गुलाब को, गँवई गाहक कौन ६०५

यह अन्योक्तिको गुणकी बूझ न करै तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ राख्यो है बयार ते अमोलिक अतर आगे जाकेमृदु गन्धसों महाकि रह्यो भौन है । ओड़ ओड़ हाथ सबहीने लियो देखिबेको सूंघि सूंघि सबनि सराहि गह्यो मौनहै ॥ मोल सुनें सबहीने हँसिकै मचाई कूक पन्थगहि अत्र तू करत क्यों न गौनहै । अरे गन्धी आंधरे ! हिये में एतो चेतकर गाहक गुलाब को गमेले गांव कौन है ॥ ६०५ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० वे न यहां नागर बड़े, जिन आदरतो आब ।
फूल्यो अनफूल्यो भयो, गँवई गांव गुलाब ६०६

यह अन्योक्ति अप्रवीण लोगनको समुदाय होय गुणकी बूझ कोऊ न करै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ चायसों आदर तेरो करै अरु तोहींसों राखे हियो अनुकूल्यो । तो मृदु सौरभको सुर लै जिनके मन मोद रहै अति फूल्यो ॥ कीमत तेरी बढ़ावे घनी रिझवान वही जिनकौ तुक भूल्यो । ऐसे गँवारनु के बसिबास में फूल गुलाब भयो अनफूल्यो ॥ ६०६ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० गोधन तू हरष्यो हिये, निधरक लेहु पुजाय ।
समझ परैगी शीश पर, परत पशुन के पाय ६०७

यह अन्योक्ति कोऊ काहूको द्रव्यखात होय अरु पीछे दैवी आवै तहीं कहिये ॥ सवैया ॥ सुनि कोलमुखी कलगावत गीत जे कोकिलकण्ठ सुभायन सों । बहुभांतिन के पकवान बनाय मनावैं सबै सतभायन सों ॥ अब गोधन तू मुदमानि हिये बहुभांति पुजायलै चायन सों । परिहै सुधि तोहिं सबै तबहीं पशु खूंदहिं गे तन पाँयन सों ॥ ६०७ ॥

मंद्कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नागरि बिबिध बिलास तजि, बसी गँवेलिन माह।
मूढ़न में गनबी कितू, हूठ्यो दै इठलाह ६०८

यह अन्योक्ति जहां सब एकसे होहिं तिनमे एक और भांति चलै तहां कहिये ॥ कबित्त ॥ रूपगुन आगरी वे नागरी न होहिं इहां आदरु लहत बहुभांति जिनु तीन मे। चारु चतुराई के बिलास वे दुरायेरहि परगट काहेको करत इन तीन में ॥ अबतो भयो है बास तेरो ह्यां गँवारिनुमें याही ते सिखावतहों करि बिनतीनमे। हूठ्यो देके इनकीसी भाति इठलाहु नातौ मूढ़नि मे अब गनियो गो बिनतीनमे ॥ ६०८ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चले जाहु ह्यां को करै, हाथिन को ब्यापार।
नहिं जानत इहपुरबसत, धोबी और * कुम्हार ६०९

यह अन्योक्ति कोऊ नीचनके बासमें कोऊ भलाई की बात कहै तहां कहिये ॥ कबित्त ॥ जानि बूझि काहेको तू चरचा करत इत बन कदलीन की न बिकट थरीनकी। रचिपचि बन्दन सों काहेको बनाये कुम्भ काहेको ये झूल झलकाये है जरीनकी ॥ चल्यो किनजाय बृथा बासर गवाँवै जिन गाहकी करै को मद मोकल करीनकी। बसत कुम्हार और धोबी इह गाँव येतो करत खरीद खासा खर वो खरीनकी॥६०९॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि।
चुप करि रे गन्धी चतुर, अतर दिखावत काहि ६१०

यह अन्योक्ति मूर्खजानि वासो चतुराई जतावै तासो कहिये ॥कबित्त॥ नगरके बगरते तेरी ऊंची टेर सुनि चोपसों बुलायलीनो कही आगे

* पाठान्तर— "ओड"।

आवरे । बैठाखो निकट अति प्रीतिसों हुकुम कीनों सोंधे बेस कीमती को हमहिं दिखावरे ॥ आचमन करिकै फुलेलको कहत मीठो तै न अजौं जान्यो सुघराई को प्रभावरे । काहेको उघारत गुलाब को अतर गन्धी कहां गई तेरी चतुराई अब बावरे ॥ ६१० ॥

बारण अक्षर २८ गुरु १० लघु २८ ॥

राजा जयसिंह को बचन बर्णन ॥

दो० प्रतिबिम्बित जयशाह द्युति, दीपति दरपण धाम।
सब जग जीतन को कियो, कायव्यूह मनु काम ६११

यह राजाकी सुन्दरता वर्णन कविकी उक्ति सखीको बचन नायक सों नायिका को बचन सखीहूसों होय ॥ सवैया ॥ राजत दर्पण मन्दिर मे महिमण्डनु श्रीजयसिंह सवाई । त्यो प्रतिबिम्बनिकी अवली चहुँओर लसें अतिही छबि छाई ॥ कैधौं अनेक स्वरूपधरे रबिराजत मण्डली मण्डसुहाई । मानहुँ जीतबे को जगमें रचना बपुव्यूहकी काम बनाई ॥ ६११ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चलत पाय निगुनी गुनी, धन मन मुतियन माल।
भेंट भये जयशाह सों, भाग चाहियतु भाल ६१२

यह राजाको दान कबि की उक्ति॥ कबित्त ॥ दीजत मँगायकै तुरंग रंग रंगनके तुरत भंडार शिरपांयन सों भरिये । किम्मत बिशाल शाल-सुरबनमाल लाल हीरा मुकताहल बकस ढार ढरिये ॥ गुनी अनगुनी सब कीजत निहाल हाल याचक की बिपति अनेकभांति हरिये ।भेंटभये नृपति सवाई जयशाहजूसों होत बड़भाग फलभाग कहा करिये॥६१२॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रहत न रण जयशाह मुख, लखि लाखनु की फौज।

यांचि निराखर हू चलै, लै लाखन की मौज ६१३

यह राजाकी शूरता दान कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ कूरमसवाई जयसिह कै अभंग जगमगत दिनेशकोसो तेज अंग अंगमे। लाग्योइ रहत नित सरसत जैको चाव दान करिबेको चितरहत उमंगमे॥ परदल लाखनको नृपको बदन लखि सनमुख रहि न सकत रणरंगमे। आखर न जाने सोऊ लाखन लहत सब यांचै सो अयांचीहोत मौजके प्रसंगमे॥६१३॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० सामां सैन सयान सुख, सबै साह के साथ।
बाहुबली जयशाह जू, फते तिहारे हाथ ६१४

यह राजाकी जयसिद्धि बर्णन कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ जगमग्यो दल छत्रपति को प्रताप नवखण्डमें अखण्ड दाबे अरिनु के माथ है। तेरेई उदण्ड भुजदण्डके भरोसे सोऊ रहत निशंक अवदात यह गाथ है॥ सुभट समाज सामां सयन सयान सुख संचै सब भातिनुकी साहजूके साथ है। रहत सवाई जयसिंह महाराज सदा समर बिजैकी सिद्धि रावरेई हाथ है॥ ६१४ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अनी बड़ी उमड़ी लखे, असिबाहक भट भूप।
मंगल करि मान्यो हिये, भौ महि मंगल रूप ६१५

यह राजाकी शूरता अरु बीररस कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ साभर के खेत आये उमड़ि अमित दल सैपद सुभट महाविक्रमनिधान है। गरजे गरूर गहे निपट कपट आप बिकट कुबड़ सांधि बरषत बान है॥ साहसी सवाई जयशाहभूप ऐसे समै बीररस राच्यो थिरभयो तिहिथान है। उमँगि उछाह महामंगल कै मान्यो हिये बदनको रंगभयो मगल समान है॥ ६१५ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यों दल काढ़े बलख तें, तैं जयसिंह भुवाल। उदर अघासुरके परे, ज्यों हरि गाय गुवाल ६१६

यह राजाकी शूरता पराक्रम ॥ कबित्त ॥ एक रसना सों मोपै कैसे कहै परै जेते बिक्रम अमित कीने नृपति सवाई तै। केशव अघासुरते राख्यो ब्रज जैसे ऐसे हसन अलीकी दिली मिली वगिलाई तै ॥ जेजिया निवाऱ्यो दावानल सो प्रबल दुख बलके बिपति हिन्दुवान की बड़ाई तै। कीली ज्यो कुचाली काटि दूरकीनों मुहकमा कीरति प्रकाश जग ओप्यो उजराई तै ॥ ६१६ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० घर घर तुरकिन हिंदुनी, देत अशीश सराहि। पतिनु राखि चादर चुरी, पति राखी जयशाहि ६१७

यह राजाको पराक्रम सबपै उपकार कविकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ आयो इत उमड़ि अजीतसिंह ऐडायल संगलै त्रिकट सुभटनके समाज को। कहै कविकृष्ण इत दिल्ली के प्रबलदल निकसे सकल साजै समर के साजको ॥ ऐसे सभै वीर त्रिसुनेशके अजितबाहु राखीते दुहूंकी लाज करिके इलाज को। घरघर तुरकिन हिन्दुनी दुनी भे सब देत है अशीश जय शाह महाराज को ॥ ६१७ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

हास्यरस बर्णन ॥

दो० रबि बन्दौं कर जोरिकै, सुने श्याम के बैन। भये हँसो हैं सबन के, अति अनखो हैं नैन ६१८

यह हास्यरस चीरहरणको समय सखीको वचन सखीसो ॥ सवैया ॥

गोपबधूनके चीर चुराय कदम्बपै धाय चढ़यो हरि ज्योंहीं। हाथसों गात छिपाय कै वे सकुचीं सतरायकै मांगत त्योहीं॥ देव दिवाकरको करजोरि प्रणाम करौ कही बात रसोंहीं। यों सुनिकै बिहँसोंही भई सबकी अँखियां जु हुतीं अनखोंहीं॥ ६१८॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० परातिय दोष पुरान सुनि, मुलकि हँसी सुखदानि।
कसु करि राखी मिश्रहू, मुँह आई मुसकानि ६१६

यह हास्यरस पौराणिकको परिहास कबिकी उक्ति॥ सवैया॥ पण्डित राज समाज में बैठि कथा यों प्रसंग पुराणमें भाखी। जात निरैपद बीसबिसे परदारसों जो हितको अभिलाखी॥ सो सुनिकै मुलकी मृगलोचनि जासों ही डीठिमिलायकै राखी। भट्टभुवाहि बिलोकतही उमँगी मुसकानि मरूँकरि राखी॥ ६१९॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० चित पित मारक योग गुनि, भयो भये सुत शोग।
फिरहुलस्योजियज्योतिषी,समभयोजारजयोग ६२०

यह हास्यरस ज्योतिषको परिहास्य कबिकी उक्ति॥ सवैया॥ पूतभयो इक ज्योतिषिके ग्रह शोधत सो चित में हुलसानों। डीठिपरयो पितुघातक योग बिचार हिये अतिंहीं अकुलानों॥ जारजयोग लख्यो तबहीं मुलक्यो बर मानि हुलास सयानो। भूलिगयो दुख फूलिउठ्यो मुख आनँद-पुंज हिये अधिकानों॥ ६२०॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० बहु धन लै अहिसान कै, पारो देत सराहि।
बैदबधू हँस भेद सों, रही नाह मुख चाहि ६२१

हास्यरस बैद्यके परिहास कबिकी उक्ति॥ सवैया॥ बिज्ञ चिकित्सक

भेदन में इक बेद हुतो पुरुषारथ हीनों। काहू नपुंसक को वहकाय घनो धन लै बहुतें थरुदीनों ॥ पारो प्रचण्ड बढ़ावत है चितकेलि कलोलकी चाव नबीनों । एक तिया सुनि वाकी तिया पतिके मुखओर चितै हँसि दीनों ॥ ६२१ ॥

वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० देवर फूल हनै जु सु सु, उठे हरष अँग फूलि ।
हँसी करत ओषधि आलिनु, देह ददोरन भूलि ६२२

यह नायिका सुरता देवरसों आसक्त है सखीको वचन सखीसों हर्ष अरु हास्यसंचारी ॥ सवैया ॥ खेलमे देवरके करके वे जहीं जहीं फूललगे नवला तन । आनँदपुंज उमंग तहीं तहीं फूल उठे अतिकोमल गातन ॥ देह ददोरन भूलि अली उपचार करै लहै भेदकी बातन । जानतहो जियकी बतिया रसबिज्ञ तिया हँसि हेरत वा तन ॥ ६२२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० और सबै हरषी हँसति, गावत भरी उछाह ।
तूही बहु बिलखी फिरै, क्यों देवर के व्याह ६२३

यह नायिका परकीया गुरुजनको वचन देवरसों प्रीति यह व्यंग ॥ सवैया ॥ ये सब साजे अनेक शृंगार बनीठनी डोलैं हुलास उमाहै । गावैं हँसैं हरषै बरषै सुख काहू की शंक धरे चितनाहै ॥ भौन मे मंगल साज भरे वहु सोइ लहै सब जो चित चाहै । देवर के इह व्याह बहू बिलखी सी तुही लखिये कहि काहै ॥ ६२३ ॥

वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० समय पलटि पलटै प्रकृति, को न तजै निजु चाल ।
भो अकूर करुणाकरो, यह कुपूत कलिकाल ६२४

यह परसताव में सम्भव है कलियुग को बर्णन ॥ सवैया ॥ कासों

पुकार करों बिनती इकसार भयो सगरो जगजोऊ । जात समय पलटै प्रकृत्यो फिर क्यों न स्वभाव तजौ सब कोऊ ॥ आरतसिन्धु दया को समुद्र अनाथ को नाथ कहावत होऊ । ह्वै गयो देखो महानिरदै कलिकाल कुपूतहि आवत सोऊ ॥ ६२४ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दीरघ सांस न लेहि दुख, सुख साईं नहिं भूल ।
दई दई क्यों करत है, दई दई सु कबूल ६२५

यह करुणारस भक्त को बचन अपने मन सो ॥ कबित्त ॥ जो तू दुख लहै तो तू जिन अकुलाय लैलै दीरघ उसास चित चिन्ता में न डूलरे । सुख जो लहै तो सब भांति सावधान रहि सम्पति मगन ह्वैकै हरषि न फूलरे ॥ थिर न रहत ये तौ सुख दुख होत जात कृष्ण करुणामयी की सूरति न भूलरे । काहे को करत अति आतुरह्वै दई दई जो दई दई सो भली भांति सो कबूलरे ॥ ६२५ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० दयो सु शीश चढ़ाय लै, आछी भांति अबेर ।
जापै सुख चाहत लह्यो, ताके दुखहि न फेर ६२६

यह भक्त को बचन अपने मन सों ॥सवैया॥ राखतू वाको विश्वास हिये श्रुति जाहि सदा परिपूरण टेरै । रंकते राव करै पल एक में जो वह नेक कृपाकर हेरै ॥ जो कछु तोहिं दयो जगदीश सुशीश चढ़ायके क्यों न अयेरै । जो पै लये सुख चाहत है अब ताके दये दुख को जिन फेरै ॥ ६२६ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कीजै चित सोई तिरै, जिह पतित तिनके साथ ।
मेरे गुण औगुण सबै, गिनो न गोपीनाथ ६२७

भक्त को वचन भगवान् सो ॥ कवित्त ॥ तोसो एक तुही और दूसरो न राजा राम तेरेही रचे हैं लोक सुर नर नागरे । सोई बीतराग जिन कीने तप जप याग सोई बड़भाग जाको तोसों अनुरागरे ॥ आपतनु देखिये न देखौ करतूत मेरी अधम उधारबे की तेरे शिर पागरे । मोसे अपराधी है न तोसे हैं सहनहार मोसे निरगुणी हैं न तोसे गुण-आगरे ॥ ६२७ ॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० भजन कह्यो ताते भज्यो, भज्यो न एको बार ।
दूर भजन जाते कह्यो, सो तैं भज्यो गँवार ६२८

यह भक्त को वचन अपने मन सों ॥ सवैया ॥ मेरीतौ सीख सुनी असुनी करि ते मन औरै मतौ उनियेरे । मैं कही वाहि भली बिधि सों भजि तू तिहतैं भजि दूर भयेरे ॥ जाते कही अति दूरि भज्यो रहि सो तो भज्यो हित साज नयेरे । कृष्ण कहै यह स्यानपते सब एकही बेर कहा बितयेरे ॥ ६२८॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

सो० मैं समझ्यों निरधार, यह जग काचो काच सौं।
एकै रूप अपार, प्रतिबिम्बित लखिये जहाँ ६२९

कवित्त ॥ निपट असार दुख द्वन्द्व को अगार अरु भांति भांति भरयो भय भ्रमनि के भार है । सांचो कोसो ढारयो ताते सांचो सो निहारियतु जौलौं लखियतु मोसों नहिं थिरनारहै ॥ मै तो मनमांझ में तौ समझ्यो बिचार करि यह जग काच ऐसो काचो निरधारहै । जित तित पूर रह्यो पूरण पुरुष वह एकै रूप तहां प्रतिबिम्बित अपार है ॥६२९॥

करभ अक्षर ३२ गुरु१६ लघु १६ ॥

दो० मैं तपाय त्रै ताप सों, राख्यो हियो हमाम ।

मत कबहूं आवै यहां, पलक पसीजे श्याम ६३०

यह भक्त को बचन ॥ कबित्त ॥ गावैं गुण शेष जाको ध्यावत महेश मुनि साधत समाधि बहुभांति चितलायकै । ऐसो कोऊ विधि मोपै आवत न बनि जाते वशकरों त्रिभुवनपति को रिझायकै ॥ एक बात उरधरि अपने हिये में करि राख्यों हैं हमाम तिहु ताप सों तचायकै । वह करुणामयी कहावत है दीनबन्धु मति कहूं पुलाकि पसीजै इत आयकै ॥ ६३० ॥

चल अक्षर २७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ब्रजबासिन को उचित धन, जो धन रुचि तन कोइ ।
सुचित न आयो सुचितई, कहौ कहां ते होइ ६३१

यह भक्त को बचन प्रयोजन यहै है कि बिना श्रीकृष्ण के ध्यान किये सुचिताई नाहीं ॥ कबित्त ॥ जाकी तनशोभा नवनीरदसी देखियत पीतपट दामिनि दमकि छबि छाई है । लोचन ललित लसैं रसभरे तामरस कुंचित अलक अलि अवलि सुहाई है ॥ ऐसो ब्रजवासिन को उचित है धन तामें दीनेते न गनुमति बिष परचाई है । कौन भांति होत सुचिताई जिय तौलों जौलों रूप की निकाई वह जीय में न आई है ॥ ६३१ ॥

करभ अक्षर २८ गुरु २० लघु ८ ॥

दो० लोपैं कोपैं इन्द्रलौं, रोपैं प्रलय अकाल ।
गिरिधारी राखे सबै, गो गोपी गोपाल ६३२

यह बीररस श्रीकृष्णने गोवर्द्धन धरिकै ब्रजवासी सब राखे ॥ कबित्त ॥ लोप्यो बलि भाग सुनि कोप्यो अति सुरपति प्रभुताके उमँगि गुमान मनु आये हैं । आहिकरि कही वारिबाह सब एकत ह्वै ब्रजको बहावो ऐसो चलन चलाये हैं ॥ मढ़ि गोराधार बरसत विकरालघन मानों महाप्रलय के साथ चालि आये हैं । ऐसे समय नन्दके सुवन कर गिरि धरि गोपी ग्वाल गाय बच्छ सबही बचाये हैं ॥ ६३२ ॥

चल अक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२ ॥

दो० प्रलय करन बरसन लगे, जुरि जलधर इक साथ।
सुरपति गरबहर्योहरषि, गिरिधरि गिरिधरहाथ ६३३

यह बीररस गोबर्द्धन को समय ॥ कबित्त ॥ प्रलयके उमड़ि घन आये ब्रजमण्डलपै मण्डिकै अखण्डधार लायो झरअतिको। निरखि बिकल भये गोपी गाय ग्वाल सब काहूके हिये में रह्यो धीरज न रतिको ॥ ताही समै यशुदाको लाल ऐसो हाल देखि हरषि हरैया भयो ब्रजकी बिपतिको। पातलों उठाय राख्यो गिरिवर पाणिपर दूरकीनों सरब गरब सुरपतिको ॥ ६३३ ॥

त्रिकल अक्षर ३१ गुरु १ लघु ३० ॥

दो० कहति न देवर की कुमति, कुलतिय कलह डराय।
पंजर गत मंजार ढिग, शुकलौं सूखत जाय ६३४

यह भँवर सुदेवर की धृष्टता सखी को बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ देवर चपलचित उरमें कुभावधरि कहत अनैसीबात यासों दिनरात है। कहैं कबि कृष्ण यह परम सुशीलबाल सकुचि सकुचि मनमेंही अकुलातहै ॥ कहि न सकत काहू आनसों हिये को भेद कुलतिय कुटुँबके कलह डरात है। निकट बिलावके पखेरू पिंजराको जैसे तैसे यह बाल निशि-दिन सूखीजात है ॥ ६३४ ॥

त्रिकल अक्षर ३१ गुरु १ लघु ३० ॥

दो० मोहन मूरति श्याम की, अति अद्भुत गति जोय।
बसतसुचित अन्तरतऊ, प्रतिबिम्बितजगहोय ६३५

यह अद्भुतरस भगवान्की ब्यापकता बर्णन भक्तको बचन॥ सवैया ॥ ऐसी न और तिहूंपुर में छबि जैसी वा नन्दकिशोर में पेखी। ताहि

बिलोकि मनोज की मूरति को बरणै अतिरूप विशेखी ॥ और कहा कहौं सुन्दर श्यामकी अद्भुत रीति खरी अवरेखी । अन्तरराखि बसाय हियेजु केऊ जगमें प्रतिबिम्बित देखी ॥ ६३५ ॥

बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तिय कत कमनैती पढ़ी, बिन जिह भौंह कमान । चलचितबेधैचुकतिनहिं, बंकबिलोकनिबान ६३६

यह अद्भुतरस सखी और नायकको बचन नायिकासों सखीहूसों संभव है ॥ कबित्त ॥ ऐसी तू कहांते अति अद्भुतगति यह तेरी कमनैती बरणत न बनति है । कहैं कविकृष्ण येतो प्रकट बिलोकियत भृकुटी कमान जिह बिनाई तनति है ॥ तिनतेकढ़े अडीठि कुटिल कटाक्ष-शर चूकत न चलचितबेझेको हनति है । तेरी या बिलोकनिकी निरखी अनोखी रीति मेरी मति अतिहित कौतुक सनति है ॥ ६३६ ॥

कच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० दृग उरझत टूटत कुटुँब, जुरत चतुर चित प्रीति । परत गांठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति ६३७

यह अद्भुतरस द्रष्टानुराग नायक अथवा नायिकाको बचन सखीसो ॥ सवैया ॥ लागी रहै मनमे दिखसाध दई यह रीति नई दुहुँवातो । लोचन प्रीतमकी छबिसों उरझे सबटूटै कुटुंबको नातो ॥ कृष्णकहैं अति चोपके चाय जुरे हियेको हितु होत न हातो ॥ बैरिनके उरमे परै गांठि अनोखो निहाख्यो सनेह को नातो ॥ ६३७ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० तो लखि मो मन जो लही, सो गति कही न जाति । ठोड़ी गाड़ गड़्यो तऊ, उड़्यो रहे दिन राति ६३८

यह अद्भुतरस है द्रष्टानुराग नायकको बचन नायिका सो ॥ कवित्त ॥

तेरे तनराज़ै बृषभानुकी कुँवरि जैसे ऐसे छबिपुंज तिहूंपुरमें नहत है । तामें और अद्भुत रीति अवरेखी ताही सुमिरि सुमिरि अचरज उमहतहै ॥ एक रसनासों मोपै कहत बनै न क्योंहू तोहिंलखि मेरो मन जो गति लहत है । यद्यपि अगम ओड़ी ठोड़ी गाड़ गड्यो मन तऊ देखो आठौ याम उड्योई रहत है ॥ ६३८ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० या अनुरागी चित्तकी, गति समझै नहिं कोय ।
ज्यों ज्यों बूड़ै श्याम रँग, त्यों त्यों उज्वल होय ६३९

यह अद्भुतरस भक्त को बचन सखी सखीहू सों कहै तो सम्भव है ॥ सवैया ॥ नैनन मांझरही खुभिकै वह नन्दकिशोर की उठी सुहाई । प्राणन में तऊ सालत है कबिकृष्ण कहैं सुधिआन भुलाई ॥ या अनुरागपगे चित की कछु अद्भुत रीति कही नहिं जाई । बूड्योरहे रँग श्याम में ज्योंही ज्यों त्यों त्यो गहै अति उज्ज्वलताई ॥ ६३९ ॥

शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० जम करि मुँह तर हरि पर्‌यो, धर धर हरि चितलाय ।
बिषयतृषापरिहरिअज्यो, नरहरिके गुण गाय ६४०

यह शान्तरस भक्त को बचन मन सों भयसंचारी ॥ कबित्त ॥ दशहू दिशान मांझ ब्यापिरह्यो जाको धाकु कहौ वाके बिक्रमको कहांलौं प्रभावरे । तिनुकालों तेरे तीनों लोकके सकल बलि कोऊपै न बच्यो बहु कीयेहू उपावरे ॥ ऐसे काल करिकै परयो तू मुँहतरहरि कृष्ण कहैं यह धरि हरिचित लावरे । हारि मानि बिषय तृषान परिहरि मन नरहरि देवके समुझि गुण गावरे ॥ ६४० ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कोऊ कोटिक संग्रहै, कोऊ लाख हजार ।

मोसम्पति यदुपति सदा, बिपति बिदारनहार ६४१

यह शान्तरस भक्त को बचन ॥ सवैया ॥ संग्रह कोऊ करोरि करोरि भरौ कोऊ लाखके लक्ष भँडारो । कोऊ हजारक जोरि धरौ बहुभांति लहौ मन मे मुदुभारो । कृष्ण कृपानिधि दीनके बन्धु सुरद्रुमदानि प्रताप उज्यारो । संपति मेरे वही यदुपत्ति बिपत्ति सदा जु बिदारनवारो ॥ ६४१ ॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० जात जात बित होत है, ज्यों चित में संतोष ।
होत होत ज्यों होय तो, होय घरी में मोष ६४२

यह परसताव कबिकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ सुरतके अन्तसमै जैसो जाको मन सब ठौरते सिमिटि रहे ज्ञानही की टेक में । ऐसो मन सदा जोपै रहै एक सर तोपै काहे को भरमत फिरै योनिन अनेक में ॥ सम्पति के जातु जात जैसो जाको चित्त ढरि आवत है समुझि संतोष के बिबेक मे । कहै कबि कृष्ण ऐसी होत होई तोपै होय होय अनयास ही मुकतिघरी एक में ॥ ६४२ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यह बरिया नहिं और की, तू करिया वहि शोधि ।
पाहन नाव चढ़ाय जिह, कीने पार पयोधि ६४३

यह शान्तरस भक्त को बचन मन सो ॥ कवित्त ॥ जहां काम क्रोध मद दारुण तिमिंगिलहै सूझत न क्योंहू पार परबे को दावरे । शोच भखो सलिल लहर तामें लोक की है तृष्णा बिकराल भारी भौरन को भावरे ॥ कृष्ण कहैं परयो तू बिकट भवसागर में अब कछू और न उपाय चितलावरे । मेरो कह्यो मान याहि सुखही तरोगो पतवारी करि माला हरिनावैं करि नावरे ॥ ६४३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० हरि कीजत तुम सों यहै, बिनती बार हजार ।
जिह तिह भांति डर्‌यो रह्यो, पर्‌यो रहौं दरबार ६४४

यह शान्तरस भक्त को बचन भगवान् सों ॥ सवैया ॥ दीसत और न कोऊ दयानिधि तेरोइ एक भरोसो गहों । वेद पुराणन की सुनि साखि हिये धरि आस हुलास लहों ॥ दीन उधारण बारहीबार यहै बिनती करजोर कहो । जैसेहूं तैसेहूं डर्‌योहूं पर्‌यो दरबार मुरारि तिहारे रहो ॥ ६४४ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मन मोहन सों मोह करि, तू घनश्याम निहारि ।
कुंजबिहारी सों बिहरि, गिरधारी उर धारि ६४५

यह भक्त को बचन मन सों अरु मानवती नायिका सों सखी को बचन कहिये तो संभवहै ॥ कबित्त ॥ मेरो कह्यो मानि मन मोहन सों मोहकरि सुन्दर रतन घनश्याम को सम्हारिलै । ब्रजवनकुञ्जके बिहारी सों बिहार करि गिरिवरधारी सुखकारी उरधारिलै ॥ भूलिकहूं चित्त बृथाबाद में रचावै मति कहैं कबिकृष्ण यह सुमति बिचारिलै । थिर न रहत धन यौवन भवन तन जानि ब्रजजीवन सो सांचोपन पारिलै ॥ ६४५ ॥

मण्डूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम ।
मन कांचे नाचे बृथा, सांचे रांचे राम ६४६

यह खरा परसतावीक जौलौं मनमें कचाई है तौलौ ऊपर को स्वांग काम नाहीं आवत ॥ सवैया ॥ टीके मनोहर भाल बनायकै मालधरो उरमें किन सौलौं । छापन सों तन मण्डित कै अरु ध्यान लगाय कहो किन कौलौं ॥ नाचत नाच बृथा कबिकृष्ण कचाई रही उरमें भरि तौलौं

काज कळू यह बेष सरै नहिं सांचरची मति नाहिंन जौलौं ॥ ६४६ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० अपने अपने मत लगे, बाद मचावत शोर ।
ज्यों त्यों सब को सेयबो, एकै नन्दकिशोर ६४७

यह भक्तको बचन अरु सर्बको अधीश्वर एक श्रीकृष्ण है यह सिद्धान्त ॥ सवैया ॥ जगमें अपने अपने मतलागि करै बकबाद बृथा भरमें । सबको वह सेयबे नन्दको नन्दनु ब्यापकहै जु चराचर में ॥ बरसौ नभते किन नीरकहूं सब आनि समातहै सागरमें । कबिकृष्ण कहैं न करौ चितखेद धरौ मुरलीधर को धरमें ॥ ६४७ ॥

बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० दूर भजत प्रभु पीठि दै, गुण बिसतारन काल ।
प्रकटत निर्गुण निकट ही, चंग रंग भूपाल ६४८

यह भक्तको बचन जब जाको गुण अभिमान है तब ताते प्रभु दूरिहैं अरु निर्गुण तत्त्वहै तहीं प्रकट हैं यह रीति कलिकाल के राजान की कहिये तो संभव है ॥ सवैया ॥ कृष्णकहै कबि एकसी रीति प्रभू अरु चंग निबाहत सोऊ । पीठिदै दूरहीं दूर भजैं गुणको बिस्तार करैं जब कोऊ ॥ नीकैही क्यों न लह्यो गुणमुक्त ह्वै शोचकैबाद पच्यौ मति कोऊ । निर्गुणता प्रकटै जबहीं अतिहीं निकटै प्रकटै तब दोऊ ॥ ६४८ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० तो अनेक औगुण भरी, चाहै याहि बलाय ।
जो पति संपति हू बिना, यदुपति राखैं जाय ६४९

यह परसतावीक संपति बिना पति नाहीं रहति यह ब्यंग ॥ सवैया ॥ औगुण पुञ्जभरी अतिचञ्चल याहि कहौ जियको अभिलाखै । नन्द-किशोर कृपा करिके वह संपतिहू बिन जो पतिराखै ॥ या बिनकाज

कछू न सरै सब कोऊ यहै निहचै मत भाखै । जानि यहै चितचाहि तियाहि उपायनुके बहुताकत पाखै ॥ ६४९ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० या भव पारावार के, उलँघि पार को जाय ।
तिय छबि छाया ग्राहड़ी, गहै बीचही आय ६५०

यह परसतावीक संसार सागरके पार ह्वैबेको एक स्त्री अवरोध है ॥ कवित्त ॥ लोभ मोह वासना भयावनो भवँर जहां असुर मनोज जाको बिक्रम महतु है । ऐसो भवसागर अपार बिकराल महा कहैं कविकृष्ण को उलँघि निबहतु है ॥ साहस हिये में धरि यतन अनेक करि सब कोऊ याहि तरि पारभौ चहतु है । तरुणीकी छबि छाया ग्राहिणी बिकट गहि राखत प्रबल ताते बीचही रहतु है ॥ ६५० ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जगत जनायो जिहिं सकल, सो हरि जान्यो नाहिं ।
ज्यों आंखिन सब देखिये, आंखि न देखी जाहिं ६५१

यह शान्तरस भक्तको वचन ॥ कवित्त ॥ ताहि तजि क्यों तू भूल्यो भटक बहेरे मन जाते लहियत सब सुखन को गोत है । मानि अनरुचि हरिभजन पियूष छांड़्यो जानिबूझि बिषम बिषहि डरभोत है ॥ जिन सब जगत जनायो भली भाँति वह प्रभूपै न जान्यो ऐसो मोहको उदोत है । देखो जिन आंखिनही सब दरशायो तिन आंखिनको काहूभांति देखिबो न होत है ॥ ६५१ ॥

बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तौलगि या मन सदन में, हरि आवें किहि बाट ।
बिकट जुटे जौलगि निपट, खुलें न कपट कपाट ६५२

शान्तरस भक्तको वचन निर्वेद स्थायीभाव ॥ कवित्त ॥ सरल सुभाव

गहि संतन के संग रहि संग्रह धरम लागि भगत के घाटरे। छोड़ ओट पाय गुणगाय दयासिन्धुजी के यह समझायबेसों काहे तू निराटरे॥ कहैं कबि कृष्ण तूही देखि धौ बिचार मन मन्दिर मे हरितौलौं आवै किहि बाटरे। जड़े है बिकट बृथा बादकी जँजीरन सो जौलौं ये खुलत नाहिं कपट कपाटरे॥ ६५२॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० करौ कुबत जग कुटिलता, तजौं न दीनदयाल।
दुखी होहुगे सरल हिय, बसत त्रिभंगी लाल ६५३

यह भक्तको बचन भगवान् सो॥ सवैया॥ चाहतहौ अपने हिय मांझ बसायो तुम्है प्रभु जैसेहू तैसे। कौन कुबातकरो सिगरो जग मोचित एकहू आवे न वैसे॥ हौ कुटिलाई तजौ न कृपानिधि जानतहौं अपने जिय ऐसे। दीनदयाल कहावतहो उर सूधो नये वसिहो तुम कैसे॥ ६५३॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० कन देबो सौंप्यो ससुर, बहू थुरहथी जानि।
रूप रहचटैं लग लग्यो, माँगतु सब जग आनि ६५४

यह परसतावीक सुमनै की नीति सरफाते खरच अधिक भयो कबि की उक्ति॥ कबित्त॥ सुन्दर सुहाई सुकुमारि शशिवदनीकी शोभाकी निकाई कबि कहै को बखानिकै। ननँद जिठानी सास निरखि सिहात सभै अतिही सराहत है याके वैसवानिकै॥ ससुर ने सरफा बिचार सुख मानि हिय कन देब्रो सौप्यो बहू थुरहथी जानिकै। कहै कबिकृष्ण वाको रूप अवलोकिवे को लोभ लगि मांगन जगत लाग्यो आनिकै॥ ६५४॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० सबै सुहायेई लगत, बसे सुहाये ठाम।

गोरे मुख बेंदी लसै, अरुण पीत सित श्याम ६५५

यह अन्योक्ति आछो ठौर को प्रभाव जो आइ प्राप्त होय सो आछोही लगै ॥ सवैया ॥ नीकेके संग अनीकोऊ नीको लगै यह बात परत्यक्ष निहारी । ठौरसुहाये लसैं ते सुहाये लगैं सबही उमँगे छबिभारी ॥ जैसे बढ़ावत मोदहिये नवनागरि के मुख व्याह में गारी । गोरे लिलार लसै बिंदुली सित रानी हरी पियरी अरु कारी ॥ ६५५ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० पायल पायँ लगी रहै, लगी अमौलिक लाल ।
भोडर हू की भासि है, बेंदी भामिनि भाल ६५६

यह अन्योक्ति नीचके धनहै पै वह नीचीही ठौर रहैगो अरु भलो मानस है अरु निर्द्धन है तउ उँचाई रहैगो ॥ सवैया ॥ जो जिह ठौर के लायकहै तिहको बसुबासु तिही थल ह्वै है । देखो निहारि शृँगार के भेद मे देखिये बात प्रत्यक्ष यही है॥ यद्यपि लाल अमोल लग्यो तऊ पायल पायँनही लगरैहै । है वह भोडर की बिंदुली तउ भामिनि भालही पै छबि पैहै ॥ ६५६ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जो चाहे चटकन घटै, मैलो होय न मित्त ।
रज राजसु न छुवाइए, नेह चीकनो चित्त ६५७

येह परसंतावीक मित्रतामे रजोगुण न लाजे तो सुध है मित्रको बचन ॥ कबित्त ॥ जगत में सबहीते महँगी है प्रीति एक सांच बिन कोऊ ताके लेशहू न दरसै । यही है यतन कबि कृष्ण याके पालिबे को मानो मति दोष जो तू आंखिनहू दरसै ॥ जोपै नेह चीकने हियेको एकरस राख्यो चाहत चटुक उजराइ अतिसरसै । तोपै काहूभांति याहि मैलो मतिकरे मत ऐसे राखि जैसे रजराज मुनि परसै ॥ ६५७ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अजौं तरौंना हीं रहत, श्रुति सेवत इक रंग।
नाक बास बेसर लह्यो, बसि मुक्तन के संग ६५८

यह परसतावीक भक्तको बचन प्रयोजन यह कि इकरंग श्रुतिसेवत रह्यो सुतरयो नाहीं अरु बेसर जो काहूके सम नाहीं तिन नाक बास पायो काहू ध्वनि के कहेते बन्दको दोष दूर होय श्रुति कानहू कहिये तो संभव है ॥ कबित्त ॥ संगलाग्यो एकरंग श्रुतिहीको सेवत भरोसो धरि भारी जिय ऐसो नेम नह्यो है । कहैं कबिकृष्ण तासा सब कोऊ करो हित है जु अजहूंलो तरयो नाहिं तरयो रह्यो है ॥ प्रेमके प्रभाव की यह लों अधिकाई जाके चित आई तिनहीं परम पदु गह्यो है । बिमल सुढार मुकतानि संग बसि लासि नाकको निवासु देखो बेसरिहू गह्यो है ॥ ६५८ ॥

बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० अनियारे दीरघ दृगन, किती न तरुणि समान।
वह चितवन औरे कछू, जिहबश होत सुजान ६५९

यह परसतावीक अन्योक्तिहू बनै कबिकी उक्ति सखी को बचन नायिका सों ॥ कबित्त ॥ कीजिये जु हेत तो निबाहिये जु हितकीसी हितमें कहा है बड़ो हेतहै हितैबे मैं । जानिये शृँगार तो शृँगारिये सबै सम्हारि जो शिर किये हू बिनु भेदतो न कैबे मैं ॥ बोलिये जु बैन मनलैनका समति हूजै बोलि रिसकीजै तो न बोलिबो बुलैबे मैं । दीरघभयेजो नैना तोरभये कहाभये प्रीतम के मोहिबेकी चातुरी चितैबे मै ॥६५९॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० जे शिर धर महिमा मही, लहियत राजा राय।
प्रकटतजड़ताआपनिय, सुमुकुटपहिरत पाय ६६०

यह अन्योक्ति जो आछयो मानस है भले आदर लायक ताहि

निरादर सो राखे तहां कहिये ॥ सवैया ॥ जो बहुजाति जवाहिर लै बहुभांति रच्यो अतिही छविछाई । जाकी जगामग होत प्रभा अति जाहि लखै सबकी ललचाई ॥ जाहि धरैं शिर भूपन के महिमण्डल मे प्रभुता सरसाई । ता मुकुटै पगमें पहिरै प्रकटै तब वाहिकी मूरखनाई॥ ६६०॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चित दै देखि चकोर त्यों, तीजै भजै न भूख ।
चिनगी चुगै अँगार की, चुगै कि चन्द मयूख ६६१

यह अन्योक्ति जाके एक आश्रय होय कै वाकी मिलेके वही को अंगीकार करै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ जाको जहां मन लागत ताहि सबै तजि वाहीको देखबो भावै । कृष्ण कहै बिनु देखे सहै सुबियोग व्यथा तऊ मोद बढ़ावै ॥ दे चित देखि चकोरकी ओर न तीजे उपाय छुधा बहरावै । कै चुगै पावक के कनका कै निशाकर की किरन्यो जब पावै॥ ६६१॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० तू मत मानै मुकतई, दियै कपट बित कोटि ।
ज्यों गुणहीत्योंराखिये, आंखिनमाहिअँगोटि ६६२

यह परसतावीक राजनीति मे संभव है अरु नायिकाभेदमे सखी को बचन नायक सों कहिये तू याहि छांड़िदै मत आंखिन में राखि ॥कबित्त॥ मुक्तई न मानिये निदेईजो कपट बितु कबिकरै तऊ छोड़िबो न अभिलाखिये । कीजिये हमारो कह्यो दीजिये न जानकहूं बार बार बात समझाय यह भाखिये ॥ कहै कबिकृष्ण यही कहत सयाने सब देखो राजनीतिहू के ग्रन्थन मे साखिये । जानिये जो गुणही तो आनिये न और उर नीकेही अगोट करि आंखिन मैं राखिये ॥ ६६२ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० दुचितै चितहलत न चलत, हँसत न झुकत बिचारि ।

लखत चित्र प्रिय लखि चितै, रही चित्रलों नारि ६६३

यह नायककों चित्र देखि चकित ह्वै रही सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ ठाढी ठगीसी हलै न चलै जिय शोचतहै बहुभांति बिचारति । मेरोइ है किधौं आन बधूको यहै निरधार हिये निरधारति ॥ यों चितमें दुचिताई गनै न हँसै न झुकै सुनिमेष न टारति । चित्र बिलोकति यों अवलोकि रही तिय चित्रलिखी सी निहारति ॥ ६६३ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० देह लग्यो ढिग गेह पति, तऊ सनेह निबाहि ।
नीची अँखियन हीं इतै, गई कनखियनु चाहि ६६४

यह नायिका परकीया की चेष्टा नायक सखीसों कहतु है ॥ सवैया ॥ मोपै कछू कहतें न बनै चित चातुरी जैसी बिहार गई है । मै जबते निरखी तबते उर मैन के शायक मारगई है ॥ पास जऊ पति देहलग्यो तऊ रीति सनेहकी पारगई है । नीचीये आंखिन सों यहि ओर कनौखी चितौन निहारगई है ॥ ६६४ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० कैसे छोटे नरन ते, सरत बड़न को काम ।
मढ़्यो दमामो जात है, कहिं चूहा के चाम ६६५

यह परसतावीक छोटेते बड़ेकी गरज न सरै कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ जाको जितो जगदीश रच्यो बल ताके फबै शिर तेतोई भारो । बात बिचार यहै अपने जिय कोऊ बृथा मत शोच बिचारो ॥ छोटेते काम बड़े न सरै वह केतोउ साहस कै पचिहारो । कोटि करो पै चूहा के चामसों क्योंहूं मढ़्यो नहिं जात नगारो ॥ ६६५ ॥

कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० सम्पत केश सुदेश नर, नवत दुहुन इक बानि ।

बिभवसतर कुच नीच नर, नरम बिभौ*की हानि ६६६

परसतावीक कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ केश औ सुदेश नर रहैं सदा एक रस कहैं कबिकृष्ण गहैं एकसी ये बानि हैं। ज्यों ज्यों बढ़िवार लहैं त्योंहीं त्यों नवत दोऊ सकल प्रबीण यह बात उर आनि हैं ॥ और देखो कठिन उरोज अरु नीच नर अकरे रहत करैं काहूकी न कानि है । सम्पत लहत त्यों त्यों रहत तनेने फेर आपुही नरमहोत भये बिभौ हानि है ॥ ६६६ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० शीतलता रस बास की, घटे न महिमा मूर ।
पीनसवारे ज्यों तज्यो, सोरा जानि कपूर ६६७

यह अन्योक्ति कोऊ आछो गुणी है भलोमानस है कोऊ क्रूरने वाको सत्कार न कियो तहां कहिये ॥ सवैया ॥ जो सबभांति तच्योगरबी बिधि ताको बढ़ै जगते सोई तोरा । कृष्णकहै बिन जाने अजानेको पै वह ओघ लहै नहिं थोरा ॥ पीनस रोगते काहू कपूतन छोड्यो कपूर जो जानिकै सोरा । शीतलताई सुगन्ध घटै यह कोऊ करै जियमें जिन भोरा ॥ ६६७ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बड़े न हूजत गुणन बिन, बिरद बड़ाई पाय ।
कनक धतूरे सों कहत, गहनो गढ्यो न जाय ६६८

यह परसतावीक कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ बड़ो जो बनायो जगदीश सो बड़ोई अहै ताहि सब जग चाहै आदर बढ़ायकै । कहै कबि कृष्ण वह तैसोई लहत मोल कंचनको देखो क्यों न कई बेर तायकै ॥ छोटे जोपै बड़े गुणबिन योंही बड़े होत नामकी बड़ाई महिमण्डल में पायकै ।

---
* पाठान्तर—'बिबै' ।

तोपै वह कनक धतूरोऊ कहावत है क्यों न पहरत कोऊ गहनो गढ़ायकै ॥ ६६८ ॥

मरकट अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० वहै सदा पशु नरन को, प्रेम पयोधि पगार ।
गिरिते ऊंचे रसिक मन, बूड़े जहां हजार ६६९

यह प्रस्ताविक प्रेम समुद्रकी अधिकाई कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ जाको प्रमाण कह्यो न परै कछु आजलो काहू न पार लहा है । कृष्ण कहै सुअगाधयहै लगि कैसेहूं कोऊ न पावत थाहै ॥ मेरुते ऊंचे रसज्ञन के मन बूड़े अनेक अचंभो महाहै । सो पशु पामर लोगनको वह प्रेम समुद्र पगार सदा है ॥ ६६९ ॥

मदर्कल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० संगति दोष लगै सबनु, कहते सांचे बैन ।
कुटिलबंक भ्रुव सँग भये, कुटिल बंक गति नैन ६७०

यह प्रस्ताविक संगति दोष लगै दृष्टान्त कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ ओरते जैसई संगरहै जुगहै सुभली बिधि बानि वही है । संगति दोष लगै सबको बिधि है यह आदि अनादि सही है ॥ कृष्णकहै जग में यह बात प्रत्यक्ष प्रवीणन अच्छु चही है । बंक भ्रुवानको पायके संगम नैननहू गति बंक गही है ॥ ६७० ॥

मरकट अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० संगति सुमति न पावई, परे कुमति के धन्ध ।
राखो मेल कपूर में, हींग न होय सुगन्ध ६७१

यह प्रस्ताविक जो दुर्बुद्धि की ढार मे परयो ताको संगति ते सबुध नाही होत ताको दृष्टान्त कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ ओरहीते जो कुपैंड़े चल्यो वह संगते क्योहूं सुबुद्धि न पावै । संग बुरेके भलोऊ रहै

तो भलाई सबै ततकाल कहावै ॥ आपनी वान तजैई तजै वह संगतें क्योंहूं गहै न सुभावै । राख्यो वसाय कपूर के मध्यमें हींगही क्योहूं सुगन्ध न आवै ॥ ६७१ ॥

शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० बढ़त बढ़त सम्पति सलिल, मनसरोज बढ़ि जाय।
घटत घटत पुनि नहिं घटै, बरु समूल कुँभिलाय ६७२

कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ सदन सरोवर मे सुखकी हिलोरन सो संपति सलिल ज्योही ज्योंही सरसात हैं । यह तो प्रगट सब जगत बखानतहै मनहूं सरोज त्योंहीं त्योही अधिकात है ॥ जब जब आनिपरै आपदा अदिन कोऊ जलको प्रमाण फिर निघटत जातहै । घटत घटत फिर नाहिं घटै गति यह बरु वह सहित समूल कुँभिलातहै ॥ ६७२ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० समै समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोय ।
मन की रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होय ६७३

यह प्रस्ताविक कबिकी उक्ति नायिका भेद में सखीको बचन सखीसो ॥ सवैया ॥ सुन्दररूपकहो किहि कामहै जो अपने चितमें नहिं आवै । जो चित मांझ कुरूप चुभ्यो तो वहै उरको अतिमोद बढ़ावै ॥ होत समैई समै सब सुन्दर, रूप कुरूप न कोई लखावै । जाकी जिती जिहि ठौर बढ़ै रुचि सो तिहि ठौर तिती रुचि पावै ॥ ६७३ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० मूड़ चढ़ाये हूं रहै, पर्यो पीठ कच भार ।
रहै गरे पर राखिबो, तऊ हिये पर हार ६७४

यह प्रस्ताविक कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ काहूके मूड़ चढ़े रहिये न यहै गहिये चितमे चतुराई । नीको मतो रहिये जु गरेहू पै तो लहिये

उरकी गरुवाई ॥ मूड़चढ़ेहू परेरहैं पाछेको बंधनकी गति केशन पाई। देखो रह्यो जो गरेहूपरै तौ बिहार करै छतिया पै हराई ॥ ६७४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भावर अन भावर भरै, करै कोटि बकवाद।
अपनी अपनी टेवको, छुटै न सहज सवाद ६७५

यह प्रस्ताविक कबि की उक्ति ॥ सवैया ॥ काहू बुरो लगो काहू भलो लगो खोटी खरी जिय में धरो सोऊ ॥ लाखन क्यों न करो बकवाद अलौकिक लोक जो होय सो होऊ ॥ ओरतें जाको परयो जु स्वभाव सुभाव वहै निबहै जग जोऊ। आपनी आपनी टेवको सिद्ध सवाद छुटै न कितौ करो कोऊ ॥ ६७५ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जेती सम्पति कृपण के, तेती तू मति जोर।
बढ़त जात ज्यों ज्यों उरज, त्योंत्यों होत कठोर ६७६

यह प्रस्ताविक कृपणके जितनी सम्पत्ति तितनीये कृपणता ताको दृष्टान्त कबि की उक्ति ॥ सवैया ॥ कौनहू भाग प्रभायके दायसों सूमने जो कहुँ सम्पति पाई। त्यों वह होत खरोई कठोर बिलोकिय तू मति की सरसाई। ताहि निहारि कह्यो चहिये कछु बात यहै कबिके जिय आई। ज्यों ज्यों उरोज बढ़ै तियके उर त्यो त्यों गहैं अतिही कठिनाई ॥ ६७६ ॥

वारण अक्षर २८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० पियबिछुरनको दुसह दुख, हरष जात प्योसार।
दुर्योधन लों देखियत, तजै प्राण उहिवार ६७७

यह प्रस्ताविक हर्ष दुःख होय एकत्र कबिकी उक्ति नायिकाभेद मे सखी का बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ नेहलग्यो मनभावन सों बसिबो ससुरारिको

जीय सुहानो। नैहरते कोऊ आयो चलावन ताही समै सुनि जी अकु-
लानो॥ प्यौ बिछुरे दुख होत महा सुख मायके को चित शोच समानो।
प्रातको पंकज भो तियको मुख फूल्यो कछूक कछू कुँभिलानो॥६७७॥

बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

लोभकी अधिकाई वर्णन॥

दो० घर घर डोलत दीन ह्वै, जन जन याचत जाय।
दियो लोभ चसमा चखनु, लघु पुनि बड़ो लखाय६७८

यह लोभकी अधिकाई प्रस्ताविक कबि की उक्ति॥ सवैया॥ ठौरहि
ठौर बिघात फिरै लघुता जितही तित आप प्रकासै। यांचत है सब
ही पर जाय बढ़ाय हिये बहुभांति दुरासै॥ लोभको ऐसो धरै चसमा
नर नैननमे भटकै चहुँपासै। यद्यपि है अति सूक्षमहू वह याहि तऊ
अति दीरघ भासै॥ ६७८॥

मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४॥

दो० कालबूत दूती बिना, जुरै न आन उपाय।
फिर ताके टारे बनै, पाके प्रेम लगाय ६७९

यह प्रस्ताविक नित्य प्रेमके करिबेको उपाय कबिकी उक्ति॥ कबित्त॥
मन्दिर लदाव को बनायो चाहै कोऊ सोतो बिना कालबूत क्योंहू बनत
न बानि है। त्योंही प्रेममन्दिरको कालबूत दूती ताहि बीचदिये बिनु
कहौ कैसे ठिक ठानि है॥ कहै कबि कृष्ण परिपक्क होहिं दोऊ तब सकल
प्रबीण यह बात उर आनि है। कालबूत दूती बिच राखिये न एक
आंक टारिये न जौलौ तौलौ सुख ही की हानि है॥ ६७९॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० अहाकि न इहि बहिनापुली, जब तब बीर बिनासु।
बचै न बड़ी सबीलहू, चील्ह घोंसला मांसु ६८०

यह प्रस्ताविक सखीको बचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ अम्ब रहो नितही लड़ाईये करत कहा अरु सम्पत सों जबारोइ जात जान्यो है। पालकर बीछू कोऊ आनत है पातपर रावरे सयाननु हमार मनमान्यो है ॥ तेही करयो ऐसे जबै हरुवो उपाउ कछु वादिबहिनाप्यौ या परोसिनसो ठान्यो है। काहे होत रूसौं मैन तबहीं कहीहीं कछु सेही कोसो कांटौ वेहीला व काज आन्यो है ॥ ६८० ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पिय मन रुचि ह्वैबो कठिन, तन रुचि होत शृँगार।
लाख करौ आंखि न बढ़ै, बढ़ै बढ़ाये बार ६८१

यह प्रस्ताविक नायिकाको बचन सखीसों सौतिको शृंगार देखि याके गर्ब भयो सो ईर्षासों कहत है और सखी याके चित्त को भ्रम निवारण करै सो संभव है ॥ कबित्त ॥ बैठ्यो कुंजसदन बिलोकत है तुवमग तेरो नाम मोहन रटत बार बारही। उठि चलि हिलिमिलि मानरगरली मेरो कह्योमानि मानवती मौन ह्वै कहा रही ॥ पियमन बस करबोई है कठिन अरु तनद्युति सरसात साजेहूँ शृँगारही। कहै कबि कृष्ण कीजे लाखन यतन तऊ लोचन बढ़ात न बढ़ाये बढ़ै बारही ॥ ६८१ ॥

मण्डूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० नीच हिये हुलस्यो रहत, गहे गेंद को पोत।
ज्यों ज्यों माथे मारियत, त्यों त्यों ऊँचो होत ६८२

यह कबिकी अन्योक्ति ॥ कबित्त ॥ जनमतें कबहूं भलाई सों न भेंट भई जगत मे कोटिक धिक्कार धारियत है। सहजसुभाय परकाजलै बिगारडारै औगुण गहै न गुणपुंज टारियत है ॥ नीचनर एते पै हिये में हुलस्योई रहै गेद के सुभाय गहै यों निहारियत है। जितही निचाई देखि तितही ढुरकि जाहि ऊँचे होत त्यो त्यों ज्यो ज्यों माथेमारियत है ॥ ६८२ ॥

मदकल अक्षर २५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कोटि यतन कोऊ करौ, परै न प्रकृतिहि बीच ।
नल बल जल ऊँचो चढ़ै, अन्त नीच को नीच ६८३

यह अन्योक्ति कविकी उक्ति जाको स्वभाव नीच होय ताकीवढ़वारी हू होय पै स्वभाव न छूटै ॥ सवैया ॥ औरते जैसो स्वभाव परयो वह और प्रकार न कैसेहु ह्वै है । कोटिक क्यों न उपाय करौ कवि कृष्ण कहैं निरधार यहै है ॥ सो जगमें लखिये प्रत्यक्ष करो जलयन्त्रन सों निहचै है । केतेऊ ऊँचे चढ़ै नलके बल नीरतऊ ढरि नीचेई ऐहै ॥ ६८३ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० जाके एकत ही कहूं, जग व्यवसाय न कोय ।
सो निदाघ फूलै फलै, आक डहडहो होय ६८४

यह अन्योक्ति काहूके धनबढ़वार बहुत है और काहूके काम नाहीं आवै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ छांह न काहू के बैठबे योग न क्षीर अँचै कोऊ पेट भरै । फूलनते फलते दलते जग में नहीं काहूको काज सरै ॥ भौर न भूलि भ्रमै उहिओर पखेरू न कोऊ बिराम करै । होत हरयो यह आक निकाम निदाघ समै बहु फूलै फरै ॥ ६८४ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० गुनी गुनी सबकोउ कहै, निगुनी गुनी न होत ।
सुन्यो कहूं तरु अर्क तैं, अर्क समान उदोत ६८५

यह प्रस्ताविक है कछु गुण नाहीं अरु सब कोऊ वासों भलै कहै तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ बिन करतूत झूठी पदवी लही तौ उनहीकी न लगत उपहास पेखियत है । गुनीगुनी सबकोऊ कहत पुकारि काहू गुनी निगुनीन मांझ लेखे लेखियत है ॥ जगत बिदित जासों मीठो कहियत सोई निपट विषमविष अवरेखियत है । जऊपेड़ आकको कहावत अरक तऊ अरक समान को उदोत देखियत है ॥ ६८५ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मीत न नीत गलीत है, जो धरिये धन जोरि ।
खाये खरचे जो जुरै, तो जोरिये करोरि ६८६

यह प्रस्ताविक जो सूम है कै धन जोरिधरै तो उचित नाहीं याते खायबो खरचिबो मुख्य है ॥ सवैया ॥ जोपै गलीत भयेहीं जुरै धन तो वह जोरिबो काहू न भावै । नाम सुनै सब मीत है भाजत क्यों जगमें अति सूम कहावै ॥ मीत मतौ जियमें धरिके यह जोरि करोरिलों जो बनिआवै । खाये दिये खरचे जु जुरै कछु सो अतिमोद हिये उमँगावै ॥ ६८६ ॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यद्यपि सुन्दर सुघरऊ, सगुनो दीपक देह ।
तऊ प्रकास करै तितो, भरिये जितो सनेह ६८७

यह प्रस्ताविक नायिकाभेद में अरु सखीको भेद नायक सो सखी कहै कि तेरो सुन्दर तन है गुन हँसतहै पै नेह चाहियतु है ऐसे नायकहू से सखीको बचन संभवहै ॥ सवैया ॥ यद्यपि चारु गहै चिकनाइ सुढार ढरथो सुघरों पुनि होऊ । कृष्ण कहै बहुमण्डितकै गुनजोत जगाय धरै किन सोऊ ॥ है यह बात प्रसिद्ध सबै जग एकसी रीति निबाहत दोऊ । नेह भरथो बिनदीपक देह प्रकाश करै न कितोकरो कोऊ ॥६८७॥

मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अरे परेखो क्यों करै, तुही बिलोकि बिचारि ।
किहि नर किहि सर राखिये, खरे बढ़े पर पारि ६८८

यह प्रस्ताविक संसार व्यवहार पै अति बढ़े ते मर्याद छूटैही छूटै कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ केते भये नर केते भये सर जात कछू गणना नहिं भाखी । जौलौं बढ़ै उनमानगहै मरयाद रहै तबहीं लगि पाखी ॥

कौनको कौन परेखो करै परमान कहा परतक्षको साखी । पै अतिकी बढ़वारभये अपनी परपारि कहो किन राखी ॥ ६८८ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जोन्ह नहीं यह तम वहै, किये जु जगत निकेतु । होत उदय शशि को भयो, मानो शशिहरि सेतु ६८६

यह चन्द्रवर्णन बियोगीको वचन कविहूकी उक्ति ॥ सवैया ॥ पूरि रह्यो अध ऊरधमें धर अम्बरलों जिनदेव ठयो है । जाहि बिलोकि बियोगी डरैं अनुरागन को मनमोद पयो है । होय न जोन्ह वहै तमहै यह जाने सबै जग छाय लयो है । होत उदोत लख्यो शशिको गहि संक्रम को तन श्वेत भयो है ॥ ६८६ ॥

पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चटक न छोंड़त घटतहू, सज्जन नेह गँभीर । फीको परै न बरु फटै, रँग्यो चोल * रँग चीर ६६०

यह प्रस्ताविक कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ सज्जन जे जगदीश रचे तिनकी इकबान दशा निबटै । शील स्वभाव गहै सहजे अनुराग समूह हिये उबटै ॥ नेह करै सु खरो गहरो उनहूं के घटे सु न क्योंहूं घटै । चोलके रंग निचोल रँग्यो सु न फीको परै फटतेहूफटै ॥ ६६० ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय । वह खाये बौराय है, यह पाये बौराय ६६१

यह प्रस्ताविक कबिकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ कनक धतूरो सोनो दोऊ ये कहावत है सोने को धतूरे ते प्रभाव सरसतु है । कहै कबि कृष्ण वाही चाहतु न कोई याहि निरखि निरखि जोइ सोइ तरसतु है ॥ सोने

---

* पाठान्तर—"लोह" ।

मांझ सौगुनो धतूर तें सरस मद यह तो प्रत्यक्ष सब कोऊ दरसतु है। वाहि जब खाय तब बौरई प्रकाश होत बावरो तुरत याहि जोई परसतु है ॥ ६९१ ॥

मदकल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० इक भीजे चहले परे, बूड़े बहे हजार।
किते न औगुन जग करे, नइ बै चढ़ती बार ६९२

यह प्रस्ताविक कबिकी उक्ति अन्योक्तिहू संभवहै ॥ सवैया ॥ एक परे ते फँसे चहले यक भीजिरहे यक बूड़िगये है। एक वहै तिनकी न लही सुधि एकन धीरज छोड़िदये हैं ॥ बोरिदई पाहिली मरयाद बिलोकि किते भयभीत भये है। बैसनदी चढ़ती बिरियां जग औगुनकीने कितेक नये हैं ॥ ६९२ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० सुख सों बीती सब निशा, मनु सोये इकसाथ ॥
मूका मेलि गहे सु छिनु, हाथ न छोड़े हाथ ६९३

यह प्रस्ताविक कबिकी उक्ति नायिकाभेद में परकीयाको हाथस्पर्श को सुमान्यो ताहि सों रात्रि वैसेही बीती सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ रैनि व्यतीत भई सिगरी अति चाय बढ़ै चित पै न अहूटै। दोउन के मन मोद बढ़ै अभिलाषन के दृढ बन्धन खूटै ॥ सोये मनो मिलिकै इक साथही यो बहुभांति हिये सुख लूटै। मूकामें मेलि गहै इक बार सुहाथ ते हाथ छिनौ नहिं छूटै ॥ ६९३ ॥

त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो०जोन जुगत पिय मिलनकी, दूरि*मुकुत मुँह दीन।
जो लहियेतौसजनसुख, धरकनरक हू लीन†६९४

---

* पाठान्तर—" धूरि "।

† पाठान्तर—" कीन "

यह प्रस्ताविक अनुरागी को वचन ॥ कबित्त ॥ वहै ठौर नीकौ जहां मिलिबो है पीको मान यहै मत ठीको मेरे जीको अवदात है । पायो जो मुकतपद दरस्यो न प्राणप्यारो सरस्यो अधिक दुख देख्यो न सुहात है ॥ कहत बनै न क्योंहूं यातना अनेक भांति जाते भांति भांतिन को त्रास अधिकात है । रहिबो बनै जो मनभावन सों मिलि तौ पै नरक निवास हू तौ मन न सकात है ॥ ६९४ ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० गढ़ रचना बरनी अलक, चितवन भौंह कमान ।
अघ बँकाई ही बढ़ै, तरुनि तुरंगम तान ६९५

यह प्रस्ताविक कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ गढ़को बनावबांको होय तो बड़ाई पावै ग्रन्थन मे बात यहै बरनी प्रमानकी । अधिकाई देखिये निकाईकी बँकाईहीते अलक चितौन भौंह बरनी कमान की ॥ कहै कबि कृष्ण रीति जानतप्रमान त्योंही तरुनी की तुककी तुरंगम की तानकी । बांकीही तें पालकीके बांसको बढ़त मोल बांकी रजपूती लहै कीरति कृपानकी ॥ ६९५ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बसै बुराई जासु तन, ताही को सनमान ।
भलो भलो कर छांड़िये, खोटे ग्रह जप दान ६९६

यह प्रस्ताविक कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ जातन मांझ बुराई बसै कछू सो जगमे सनमानही पावै । वाही को जी में सबै डर मानत देखो दुनी मे प्रत्यक्ष प्रभावै ॥ ज्योतिषी जो ग्रहभाषै भलो तो भलेही भले कहिकै बहरावे । जोपै वहै ग्रह खोटो सुनै तब दान करै अरु जाप करावै ॥ ६९६ ॥

बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो॰ पति ऋतु औगुन गुन बढ़त, मान माह को शीत।
जात कठिन ह्वै अति मृदौ, रवनी मनु नवनीत ६९७

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति नायिकाभेद में सखी को बचन सखीसों ।कि नायकके औगुणते नायिकाको मन कठिन होतही है ॥ कवित्त ॥ ऐसे पति औगुणतें बढ़नहै मान जैसे ऋतुगुण शिशिरको शीत सरसात है। मान के भयेते तियगन कठिनात त्योंही शीतके भयेते नवनीत कठिनात है ॥ दोउनको जऊ अति मृदु है सुभाव तऊ और भांति प्रकृति को भाव दरसात है । कहै कबि कृष्ण रीति जानत प्रबीन यह बिनयतताई तें तुरत पघिलात है ॥ ६९७ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो॰ कहत सबै श्रुति अस्मृतिहु, सबै पुरातन लोग।
तीनि दबावें नीसकै, पातक राजा रोग ६९८

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ कहै यहै श्रुति अरु अस्मृति पुराने लोग सकल पुराणन में सुने येई हेत हैं । कहै कबि कृष्ण यह जगत बिदित बात जानत सकल जेते सुमति निकेत हैं ॥ जहां देखैं बल तहां करैं न अमल जहाँ देखे निबलाई ये तहाई दुख देत हैं । पातकरु राजा रोग तीनमे बिचारिये न करत बलाई करै सबल अचेत हैं ॥ ६९८ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो॰ ओछे बड़े न ह्वै सकैं, कहि सतरौंहैं बैन ।
दीरघ होयँ न नेकहू, फारि निहारे नैन ६९९

यह प्रस्ताविक कबि की उक्ति ॥ सवैया ॥ जे जगदीश रचे जिहि भाय ते तैसेई दीसै घटै न बढ़ैना । धींग हिये धरि मन्दगहै गति पै

मगु हंसको मोल लहैना ॥ ओछेसों कैसेहू होत बड़े न बँकाई उँचाई गहौ किन गैना । फारि निहारो कितोकरि हारो पै दीरघ होहिं न कैसे हू नैना ॥ ६९९ ॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मो मिस हांसी में समझ, मुँह चूम्यों ढिग जाय।
हँस्यो खिसानी गलु गह्यो, रही गरे लपटाय ७००

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति नायिका को बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ कुँवर कन्हाई सुखदाई चतुराई करि पौढ़ि रह्यो मिसझूठी रिसको बनायके । हित अधिकाई की उमंग बढ़ि आई जीमें तासों पिउ जानि मुँह चूम्यों ढिग जायके ॥ आरसी में ढारतिनुरंचाति उचारि नैन नाइदांनी बांह गरे उहि मुसुकायके । कहा कहौं आली हूँनो हँसिहू खिसाई तब और न बसाय रही गरे लपटायके ॥ ७०० ॥

चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नये बिससिये लखि नये, दुरजन दुसह सुभाय।
आंटे परि प्राननु हरत, कांटे लौं गड़ि जाय ७०१

यह प्रस्ताविक नायकको बचन सखीसों बिरस नायिका अधीरा खण्डिता नायक राजनीतिके प्रसंगहू में संभवहै ॥ कवित्त ॥ ऊपर तो देखियत अधिक भलाई भरे अन्तरके दुसह बुराईके निकेतहैं । कहै कवि कृष्ण बहुबातन बनाय कहैं दाँउपरे जैसे बनै तैसे दुख देतहैं ॥ देखत हैं नये तऊ मानत बिरोधी नये भूतल न क्योंहूं जे बिचार में सुचेत हैं । कांटेकेसी रीति दुरजन के सुभाइन की आंटे परै पायन हूं लागि प्रान लेत हैं ॥ ७०१ ॥

नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० तन्त्री नाद कबित्त रस, सरस राग रतिरंग।

अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग ७०२

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ तन्त्री की मधुर धुनि तालके बिबिध भेद राग जामें सुरनकी बिबिधतरंग है । वचन बिलास चतुराई के प्रकाशचारु कबितासुदेश जहां रस की उमंगहै ॥ बाग की बहार नवनागरीसों हिलमिल बिहरत अन्तरित सुरत प्रसंग है । जगत मे बूड़े जे न बूड़े इन बातनमें तिरे तेई जेई बूड़े इत अंग अंगहै ॥७०२॥

मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सबै हँसत करतारि दै, नागरिता के नाउँ ।
गयो गरब गुन रूप को, बसे गँवारे गाउँ ७०३

यह अन्योक्ति प्रस्ताविकहू संभव है कबि की उक्ति ॥ सवैया ॥ को समझै रसरीति के भेदहि कौन सुनै नृपनीति उचारै ॥ ज्ञानकी कौन करै चरचा जहँ मूढ़ता के हितसों अतिप्यारै ॥ नागरताई को नाम सुनै सब दै करतार हँसै किलकारै । दूरगुमान गये गुनरूपको बास भयो जब गाँवगँवारै ॥ ७०३ ॥

बारण अंक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० दुसह दुराज प्रजान को, क्यों न बढ़ै दुख द्वन्द ।
अधिक अँधेरो जग करत, मिलि मावस रबिचन्द७०४

यह प्रस्ताविक कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ एक रजाई समै प्रभु द्वै तमोगुन को बहुभाति वढ़ावत । होत महादुखद्वन्द प्रजानको और बि शुभकाज थकावत । कृष्ण कहै दिननाथ निशाकर एकहि मण्डल में ब आवत । देखो प्रत्यक्ष अमावसको अँधियागे कितो जगमें सर-वत ॥ ७०४ ॥

दोहा ।

हूं बिनऊं सब कबिन के, चरणकमल शिरनाय ।
प्रकटकरी तिहुँलोक में, कबिता बहु जिन भाय ७०५
सो कबिता द्वै भांति के, आरष पौरुष जान ।
आरष सुर अरु मुनिन कृत, नर कृत पौरुष मान ७०६
पौरुष कबिता त्रिबिध है, कबि सब कहत बखानि ।
प्रथम देवबाणी बहुरि, प्राकृत भाषा जानि ७०७
देश भेद से होत सो, भाषा बहुत प्रकार ।
बरणत है तिन सबन में, ग्वार परी रस सार ७०८
ब्रजभाषा भाषत सकल, सुरबाणी सम तूल ।
ताहि बखानत सकल कबि, जानि महारस मूल ७०९
ब्रजभाषा बरनी कबिन, बहु बिधि बुद्धि बिलास ।
सबको भूषण सतसई, करी बिहारीदास ७१०
जो कोऊ रसरीति को, समझ्यो चाहे सार ।
पढ़ै बिहारीसतसई, कबिता को शृंगार ७११
उदय अस्त लौं अवनिपै, सबको याकी चाह ।
सुनत बिहारीसतसई, सबही करत सराह ७१२
भांति भांति के अरथ बहु, यामें गूढ़ अगूढ़ ।
जाहि सुने रस रीति को, मग समझत अतिमूढ़ ७१३
बिबिध नायिकाभेद अरु, अलंकार नृपनीति ।

पढ़ै बिहारीसतसई, जानै कबि रसरीति ७१४
रघुबंशी राजा प्रकट, उनमें धर्म अधार।
बिक्रम बिधि जयशाह रिपु, दण्ड बिदण्डनहार ७१५
सुकबि बिहारीदास सों, तिन कीनो अति प्यार।
बहुत भांति सनमान करि, दौलत दई अपार ७१६
राजा श्रीजयसिंह के, प्रकट्यो तेज समाज।
रामसिंह गुन राम सम, नृपति गरीबनिवाज ७१७
कृष्णसिंह तिनके भये, केहरि राजकुमार।
बिष्णुसिंह तिन के भये, सूरज को अवतार ७१८
महाराज बिशनेश के, धर्मधुरन्धर धीर।
प्रकट भये जयशाह नृप, सुमति सवाईबीर ७१९
प्रकट सवाईभूप के, मन्त्री मनि सुखसार।
सागर गुन सत शील को, नागर परम उदार ७२०
आया मल्ल अखण्ड तप, जग सोहत यश ताहि।
राजा कीनो करि कृपा, महाराज जयशाहि ७२१
मम क्रम बच सांचो भगत, हरि भक्तन को दास।
बेद बचन निज धरम को, जाके दृढ़ बिश्वास ७२२
क्षत्री फल क्षिति पै भये, बैरी जग बिख्यात।
पर दुख बैरी खण्डनो, खण्डन गुन अवदात ७२३
लालदास अति ललित गुन, प्रकट भये तिहि बंश।

रामचन्द्र तिनके भये, निजकुल के अवतंश ७२४
महाराज तिनके भये, जिनको यश अवदात ।
रायपंजाब सपूत मति, उपजे तिनके तात ७२५
तिनके प्रकटे तीन सुत, विक्रम बुद्धि निधान ।
रक्षक ब्राह्मण गाय के, निपुण दान करबान ७२६
राजा आयामल्ल जग, बिदित रायशिवदास ।
लसत नरायनदास यश, पूरन पुहुमि प्रकास ७२७
लीला युगलकिशोर की, रस को होय निकेतु ।
राजा आयामल्ल को, ता कबिता सों हेतु ७२८
माथुर बिप्र ककोर कुल, कह्यो कृष्ण कबि नांव ।
सेवक हौं सब कबिन को, बसत मधुपुरी गांव ७२९
राजामल्ल कबि कृष्ण परि, ढर्यो कृपा के ढार ।
भांति भांति बिपदा हरी, दीनी लक्ष्मि अपार ७३०
एकदिना कबि सों नृपति, कही कही को जात ।
दोहा दोहा प्रति कहौ, कबित बुद्धि अवदात ७३१
पहिले हू मेरे यहै, हिय में हुतो बिचार ।
करौं नायिका भेद को, ग्रन्थ सुबुधि अनुसार ७३२
जे नीके पूरब कबिन, सरस ग्रन्थ सुखदाय ।
तिनहिं छांड़ मेरे कबित, को पढ़िहै मनलाय ७३३
जानि यहै अपने हिये, कियो न ग्रन्थप्रकास ।

नृप को आयसु पाइ कै, हिय में भयो हुलास ७३४
करे सातसै दोहरा, सुकबि बिहारीदास।
सब कोऊ तिनको पढ़ै, गुनै सुनै सबिलास ७३५
बड़ो भरोसो जानि मैं, गह्यो आसरो आय।
याते इन दोहान सँग, दीनो कबित लगाय ७३६
उक्ति युक्ति दोहान की, अक्षर जोरि नवीन।
करे सातसै कबित मैं, पढ़ैं सुकबि परवीन ७३७
मैं अतिही ढीठ्यो करी, कबिकुल सरल सुभाय।
भूल चूक कछु होय सो, लीजो समुझि बनाय ७३८

इति श्रीबिहारीलालकबिकृत बिहारीसतसई सटीक
उदाहरणसहित समाप्त॥




इति शुभम् ।